का लिबास पहनाएंगे। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿181﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّ رَجُلًا زَارَ أَخًا لَهُ فِي قَرْيَةٍ أُخْرَى، فَأَرْصَدَ اللهُ لَهُ عَلَى مَدْرَجَتِهِ مَلَكًا، فَلَمَّا أَتَى عَلَيْهِ قَالَ: أَيْنَ تُرِيدُ؟ قَالَ: أُرِيدُ أَخًا لِي فِي هٰذِهِ الْقَرْيَةِ، قَالَ: هَلْ لَكَ عَلَيْهِ مِنْ نِعْمَةٍ تَرُبُّهَا؟ قَالَ: لَا، غَيْرَ أَنِّي أَحْبَبْتُهُ فِي اللهِ عَزَّ وَجَلَّ، قَالَ: فَإِنِّي رَسُولُ اللهِ إِلَيْكَ، بِأَنَّ اللهَ قَدْ أَحَبَّكَ كَمَا أَحْبَبْتَهُ فِيهِ.

رواه مسلم، باب فضل الحب في الله تعالى، رقم: ٦٥٤٩

181. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक शख़्स अपने (मुसलमान) भाई से दूसरी बस्ती में मुलाक़ात के लिए रवाना हुआ। अल्लाह तआला ने उस शख़्स के रास्ते पर एक फ़रिश्ते को बिठा दिया (जब वह शख़्स उस फ़रिश्ते के क़रीब पहुंचा तो) फ़रिश्ते ने उससे पूछा : तुम्हारा कहां जाने का इरादा है? उस शख़्स ने कहा : मैं उस बस्ती में रहने वाले अपने एक भाई से मिलने जा रहा हूं। फ़रिश्ते ने पूछा : क्या तुम्हारा उस पर कोई हक़ है जिसको लेने के लिए जा रहे हो? उस शख़्स ने कहा : नहीं मेरे जाने की वजह सिर्फ़ यह है कि मुझे उससे अल्लाह तआला के लिए मुहब्बत है। फ़रिश्ते ने कहा : मुझे अल्लाह तआला ने तुम्हारे पास यह बताने के लिए भेजा है कि जिस तरह तुम इस भाई से महज़ अल्लाह तआला की वजह से मुहब्बत करते हो अल्लाह तआला भी तुम से मुहब्बत करते हैं। (मुस्लिम)

﴿182﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَجِدَ طَعْمَ الْإِيمَانِ فَلْيُحِبَّ الْمَرْءَ لَا يُحِبُّهُ إِلَّا لِلهِ عَزَّ وَجَلَّ.

رواه احمد والبزار ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ١/٢٦٨

182. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स यह पसन्द करे कि उसे ईमान का ज़ायक़ा हासिल हो जाए तो उसे चाहिए कि महज़ अल्लाह तआला की रज़ा और ख़ुशनूदी के लिए दूसरे (मुसलमान) से मुहब्बत करे। (मुस्नद अहमद, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿183﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ يَعْنِي ابْنَ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنَّ مِنَ الْإِيمَانِ أَنْ يُحِبَّ الرَّجُلُ رَجُلًا لَا يُحِبُّهُ إِلَّا لِلهِ مِنْ غَيْرِ مَالٍ أَعْطَاهُ فَذٰلِكَ الْإِيمَانُ.

رواه الطبراني في الاوسط ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ١٠/٤٨٥

Copyright ©

183. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक ईमान (की निशानियों) में से है कि एक शख़्स दूसरे से सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रज़ा व ख़ुशनूदी के लिए मुहब्बत करे, जबकि दूसरे शख़्स ने उसको माल (व दुन्यावी फ़ायदा वग़ैरह कुछ) नहीं दिया हो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिए मुहब्बत करना यह ईमान (का कामिल दर्जा) है। (तबरानी, मज्मउ़ज़्ज़वाइद)

﴿184﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا تَحَابَّ رَجُلَانِ فِيْ اللهِ تَعَالٰى إِلَّا كَانَ أَفْضَلُهُمَا أَشَدُّ حُبًّا لِصَاحِبِهٖ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبى ٤/١٧١

184. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो दो शख़्स अल्लाह तआ़ला की रज़ा व ख़ुशनूदी के लिए एक दूसरे से मुहब्बत करें, उनमें अफ़ज़ल वह शख़्स है जो अपने साथी से ज़्यादा मुहब्बत करता हो।

(मुस्तदरक हाकिम)

﴿185﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ أَحَبَّ رَجُلًا لِلّٰهِ فَقَالَ: إِنِّيْ أُحِبُّكَ لِلّٰهِ فَدَخَلَا جَمِيْعًا الْجَنَّةَ، فَكَانَ الَّذِيْ أَحَبَّ أَرْفَعَ مَنْزِلَةً مِنَ الْآخَرِ، وَأَحَقَّ بِالَّذِيْ أَحَبَّ لِلّٰهِ. رواه البزار باسناد حسن، الترغيب ٤/١٧

185. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की रज़ा व ख़ुशनूदी के लिए किसी शख़्स से मुहब्बत करे और (इस मुहब्बत का इज़्हार) यह कहकर करे, मैं अल्लाह तआ़ला के लिए तुम से मुहब्बत करता हूं, फिर वे दोनों जन्नत में दाख़िल हों, तो जिस शख़्स ने मुहब्बत की वह दूसरे के मुक़ाबले में ऊंचे दर्जे में होगा और उस दर्जे का ज़्यादा हक़दार होगा। (बज़्ज़ार, तर्ग़ीब)

﴿186﴾ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَرْفَعُهُ قَالَ: مَامِنْ رَجُلَيْنِ تَحَابَّا فِي اللهِ بِظَهْرِ الْغَيْبِ إِلَّا كَانَ أَحَبُّهُمَا إِلَى اللهِ أَشَدَّهُمَا حُبًّا لِصَاحِبِهٖ. رواه الطبرانى فى الاوسط ورجاله رجال الصحيح غير المعافى بن سليمان وهو ثقة، مجمع الزوائد ١٠/٤٨٩

186. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं : जो दो शख़्स आपस में एक दूसरे की ग़ैरमौजूदगी में अल्लाह तआ़ला की रज़ा व ख़ुशनूदी के लिए मुहब्बत करें तो उन दोनों में अल्लाह तआ़ला का ज़्यादा महबूब वह है जो अपने साथी

Copyright ©

से ज़्यादा मुहब्बत करता हो। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿187﴾ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَثَلُ الْمُؤْمِنِيْنَ فِيْ تَوَادِّهِمْ وَتَرَاحُمِهِمْ وَتَعَاطُفِهِمْ، مَثَلُ الْجَسَدِ، إِذَا اشْتَكَى مِنْهُ عُضْوٌ، تَدَاعَى لَهُ سَائِرُ الْجَسَدِ بِالسَّهَرِ وَالْحُمّٰى۔ رواه مسلم باب تراحم المؤمنين ...رقم: ٦٥٨٦

187. हज़रत नोमान बिन बशीर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुसलमानों की मिसाल एक दूसरे से मुहब्बत करने, एक दूसरे पर रहम करने और एक दूसरे पर शफ़क़त व मेहरबानी करने में बदन की तरह है। जब उसका एक उज़्व भी दुखता है तो उस दुखन की वजह से बदन के बाक़ी सारे आज़ा भी बुख़ार व बेख़्वाबी में उसके शरीक हाल हो जाते हैं। (मुस्लिम)

﴿188﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: الْمُتَحَابُّوْنَ فِي اللهِ فِيْ ظِلِّ الْعَرْشِ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّهُ، يَغْبِطُهُمْ بِمَكَانِهِمُ النَّبِيُّوْنَ وَالشُّهَدَاءُ۔

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده جيد ٢/٣٣٨

188. हज़रत मुआज़ ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआला की रज़ा व ख़ुशनूदी के लिए आपस में एक दूसरे से मुहब्बत करने वाले अर्श के साये में होंगे, जिस दिन अर्श के साए के अलावा कोई साया न होगा। अम्बिया और शुहदा उनके ख़ास मर्तबा और मक़ाम की वजह से उन पर रश्क करेंगे। (इब्ने हब्बान)

﴿189﴾ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ عَنْ رَبِّهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: حُقَّتْ مَحَبَّتِيْ عَلَى الْمُتَحَابِّيْنَ فِيَّ، وَحُقَّتْ مَحَبَّتِيْ عَلَى الْمُتَنَاصِحِيْنَ فِيَّ، وَحُقَّتْ مَحَبَّتِيْ عَلَى الْمُتَزَاوِرِيْنَ فِيَّ، وَحُقَّتْ مَحَبَّتِيْ عَلَى الْمُتَبَاذِلِيْنَ فِيَّ، وَهُمْ عَلَى مَنَابِرَ مِنْ نُوْرٍ يَغْبِطُهُمُ النَّبِيُّوْنَ وَالصِّدِّيْقُوْنَ بِمَكَانِهِمْ۔ رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده جيد ٢/٣٣٨، وعند احمد ٥/٢٣٩ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَحُقَّتْ مَحَبَّتِيْ لِلْمُتَوَاصِلِيْنَ فِيَّ۔ وعند مالك ص ٧٢٣ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَجَبَتْ مَحَبَّتِيْ لِلْمُتَجَالِسِيْنَ فِيَّ۔ وعند الطبراني في الثلاثة عَنْ عَمْرِو بْنِ عَبَسَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَقَدْ حُقَّتْ مَحَبَّتِيْ لِلَّذِيْنَ يَتَصَادَقُوْنَ مِنْ أَجْلِيْ۔ مجمع الزوائد ١٠/٤٩٥

189. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ से हदीसे क़ुदसी में अल्लाह तआला का यह इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं : मेरी मुहब्बत उन लोगों के लिए वाजिब

Copyright ©

है जो मेरी वजह से एक दूसरे से मुहब्बत रखते हैं, मेरी मुहब्बत उन लोगों के लिए वाजिब है जो मेरी वजह से एक दूसरे की ख़ैरख़्वाही करते हैं, मेरी मुहब्बत उन लोगों के लिए वाजिब है जो मेरी वजह से एक दूसरे से मुलाक़ात करते हैं और मेरी मुहब्बत उन लोगों के लिए वाजिब है जो मेरी वजह से एक दूसरे पर ख़र्च करते हैं। वे नूर के मिम्बरों पर होंगे, उनके ख़ास मर्तबा की वजह से अम्बिया और सिद्दीक़ीन उन पर रश्क करेंगे। (इब्ने हब्बान)

हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ की रिवायत में है कि मेरी मुहब्बत उन लोगों के लिए वाजिब है जो मेरी वजह से एक दसरे से ताल्लुक़ रखते हैं। (मुस्नद अहमद)

हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ की रिवायत में है कि मेरी मुहब्बत उन लोगों के लिए वाजिब है जो मेरी वजह से एक दूसरे के साथ बैठते हैं। (मुअत्ता इमाम मालिक)

हज़रत अम्र बिन अबसा ﷺ की रिवायत में है कि मेरी मुहब्बत उन लोगों के लिए वाजिब है जो मेरी वजह से एक दूसरे से दोस्ती रखते हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿190﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: قَالَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ: اَلْمُتَحَابُّوْنَ فِيْ جَلَالِيْ لَهُمْ مَنَابِرُ مِنْ نُوْرٍ يَغْبِطُهُمُ النَّبِيُّوْنَ وَالشُّهَدَاءُ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء في الحب في الله، رقم: ٢٣٩٠

190. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह हदीसे क़ुदसी ब्यान करते हुए सुना : अल्लाह तआला फ़रमाते हैं वे बन्दे, जो मेरी अज़मत और जलाल की वजह से आपस में उलफ़त व मुहब्बत रखते हैं उनके लिए नूर के मिम्बर होंगे उन पर अम्बिया और शुहदा भी रश्क करेंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿191﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ لِلّٰهِ جُلَسَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَنْ يَمِيْنِ الْعَرْشِ، وَكِلْتَا يَدَيِ اللهِ يَمِيْنٌ، عَلٰى مَنَابِرَ مِنْ نُوْرٍ وُجُوْهُهُمْ مِنْ نُوْرٍ، لَيْسُوْا بِاَنْبِيَاءَ وَلَا شُهَدَاءَ وَلَا صِدِّيْقِيْنَ قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! مَنْ هُمْ؟ قَالَ: هُمُ الْمُتَحَابُّوْنَ بِجَلَالِ اللهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى.

رواه الطبراني ورجاله وثقوا، مجمع الزوائد ١٠/١٩١

191. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया :

Copyright ©

बेशक क़ियामत के दिन अल्लाह तआला के कुछ बन्दे अल्लाह तआला के हमनशीन होंगे जो अर्श के दाएं जानिब होंगे और अल्लाह तआला के दोनों हाथ दाहिने ही हैं। वह नूर के मेम्बरों पर बैठे होंगे उनके चेहरे नूर के होंगे, वें न अम्बिया होंगे न शुहदा और न सिद्दीक़ीन। अर्ज किया गया : या रसूलुल्लाह! वे कौन होंगे? इर्शाद फ़रमाया : ये वह लोग होंगे जो अल्लाह तआला की अज़मत व जलाल की वजह से एक दूसरे से मुहब्बत रखते थे। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿192﴾ عَنْ اَبِيْ مَالِكٍ الْاَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: يٰاَيُّهَا النَّاسُ
اسْمَعُوْا وَاعْقِلُوْا، وَاعْلَمُوْا اَنَّ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ عِبَادًا لَيْسُوْا بِاَنْبِيَاءَ، وَلَاشُهَدَاءَ، يَغْبِطُهُمُ
الْاَنْبِيَاءُ وَالشُّهَدَاءُ عَلٰى مَجَالِسِهِمْ وَقُرْبِهِمْ مِنَ اللهِ فَجَاءَ رَجُلٌ مِنَ الْاَعْرَابِ مِنْ قَاصِيَةِ
النَّاسِ وَاَلْوٰى بِيَدِهٖ اِلٰى نَبِيِّ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللهِ! نَاسٌ مِنَ النَّاسِ لَيْسُوْا بِاَنْبِيَاءَ، وَلَا
شُهَدَاءَ، يَغْبِطُهُمُ الْاَنْبِيَاءُ وَالشُّهَدَاءُ عَلٰى مَجَالِسِهِمْ وَقُرْبِهِمْ مِنَ اللهِ اِنْعَتْهُمْ لَنَا يَعْنِيْ:
صِفْهُمْ لَنَا، فَسُرَّ وَجْهُ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ لِسُؤَالِ الْاَعْرَابِيِّ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: هُمْ نَاسٌ
مِنْ اَفْنَاءِ النَّاسِ، وَنَوَازِعِ الْقَبَائِلِ لَمْ تَصِلْ بَيْنَهُمْ اَرْحَامٌ مُتَقَارِبَةٌ، تَحَابُّوْا فِي اللهِ وَتَصَافَوْا
يَضَعُ اللهُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَنَابِرَ مِنْ نُوْرٍ فَيُجْلِسُهُمْ عَلَيْهَا، فَيَجْعَلُ وُجُوْهَهُمْ نُوْرًا وَثِيَابَهُمْ
نُوْرًا، يَفْزَعُ النَّاسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يَفْزَعُوْنَ، وَهُمْ اَوْلِيَاءُ اللهِ الَّذِيْنَ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا
هُمْ يَحْزَنُوْنَ. رواه احمد ٥/٣٤٣

192. हज़रत अबू मालिक अशअरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगो! सुनो और समझो, और जान लो कि अल्लाह तआला के कुछ बन्दे ऐसे हैं जो न नबी हैं और न शहीद हैं, उनके बैठने के ख़ास मक़ाम और अल्लाह तआला से उनके ख़ास कुर्ब और ताल्लुक़ की वजह से अम्बिया और शुहदा उन पर रश्क करेंगे। एक देहाती आदमी ने जो मदीना मुनव्वरा से दूर (देहात का) रहने वाला आया हुआ था, (मुतवज्जह करने के लिए) अपने हाथ से रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ़ इशारा किया और अर्ज किया : या रसूलुल्लाह! कुछ लोग ऐसे होंगे जो अम्बिया होंगे और न शुहदा। अम्बिया और शुहदा उनके बैठने के ख़ास मक़ाम और उनके अल्लाह तआला से ख़ास क़ुर्ब और ताल्लुक़ की वजह से उन पर रश्क करेंगे। आप उनका हाल ब्यान फ़रमा दीजिए, यानी उनकी सिफ़ात ब्यान फ़रमा दीजिए। उस देहाती के सवाल से रसूलुल्लाह ﷺ के मुबारक चेहरे पर ख़ुशी के आसार ज़ाहिर हुए। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ये आम लोगों में से गैर मारूफ़ Copyright ©

मुख़्तलिफ़ क़बीलों के लोग होंगे जिनमें कोई क़रीबी रिश्तेदारियां भी नहीं होंगी। उन्होंने अल्लाह तआला की रज़ा व ख़ुशनूदी के लिए एक दूसरे से ख़ालिस व सच्ची मुहब्बत की होगी। अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उनके लिए नूर के मिम्बर रखेंगे, जिन पर उनको बिठाएंगे। फिर अल्लाह तआला उनके चेहरों और कपड़ों को नूर वाला बना देंगे। क़ियामत के दिन जब आम लोग घबरा रहे होंगे उन पर किसी क़िस्म की घबराहट न होगी। वह अल्लाह तआला के दोस्त हैं उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न ही वह ग़मगीन होंगे। (मुस्नद अहमद)

﴿193﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! كَيْفَ تَقُوْلُ فِيْ رَجُلٍ أَحَبَّ قَوْمًا وَلَمْ يَلْحَقْ بِهِمْ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ أَحَبَّ. رواه البخاري باب علامة الحب في الله، رقم: ٦١٦٩

193. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आपका उस शख़्स के बारे में क्या ख़्याल है जिसको एक जमाअत से मुहब्बत है लेकिन वह उनके साथ नहीं हो सका? यानी अमल और हसनात में बिल्कुल उनके क़दम-ब-क़दम न हो सका। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो आदमी जिससे मुहब्बत रखता है उसके साथ ही होगा यानी आख़िरत में उसके साथ कर दिया जाएगा। (बुख़ारी)

﴿194﴾ عَنْ أَبِيْ أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا أَحَبَّ عَبْدٌ عَبْدًا لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ إِلَّا أَكْرَمَ رَبَّهُ عَزَّوَجَلَّ. رواه احمد ٥/٢٥٩

194. हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस बन्दे ने अल्लाह तआला के लिए किसी बन्दे से मुहब्बत की, उसने अपने रब ज़ुलजलाल की ताज़ीम की। (मुस्नद अहमद)

﴿195﴾ عَنْ أَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَفْضَلُ الْأَعْمَالِ الْحُبُّ فِي اللهِ وَالْبُغْضُ فِي اللهِ. رواه ابو داؤد باب مجانبة اهل الأهواء وبغضهم، رقم: ٤٥٩٩

195. हज़रत अबूज़र ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सबसे अफ़ज़ल अमल अल्लाह तआला के लिए किसी से मुहब्बत करना और अल्लाह तआला के लिए किसी से दुश्मनी करना है। (अबूदाऊद)

Copyright ©

﴾196﴿ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ عَبْدٍ اَتٰى اَخَاهُ يَزُوْرُهُ فِي اللهِ اِلَّا نَادَاهُ مَلَكٌ مِنَ السَّمَاءِ اَنْ طِبْتَ، وَطَابَتْ لَكَ الْجَنَّةُ، وَاِلَّا قَالَ اللهُ فِيْ مَلَكُوْتِ عَرْشِهٖ: عَبْدِيْ زَارَ فِيَّ، وَعَلَيَّ قِرَاهُ، فَلَمْ يَرْضَ لَهٗ بِثَوَابٍ دُوْنَ الْجَنَّةِ.

(الحديث) رواه البزار وابو يعلى باسناد جيد، الترغيب ٣٦٤/٣

196. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो बन्दा अपने (मुसलमान) भाई से अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर मुलाक़ात के लिए आता है तो आसमान से एक फ़रिश्ता उसको पुकार कर कहता है, तुम ख़ुशहाली की ज़िन्दगी बसर करो, तुम्हें जन्नत मुबारक हो और अल्लाह तआला अर्श वाले फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं : मेरे बन्दे ने मेरी ख़ातिर मुलाक़ात की, मेरे ज़िम्मे उसकी मेहमानी है और वह यह है कि अल्लाह तआला उसे बदले में जन्नत से कम नहीं देते। (बज़्ज़ार, अबू याला, तर्ग़ीब)

﴾197﴿ عَنْ زَيْدِ بْنِ اَرْقَمَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِذَا وَعَدَ الرَّجُلُ اَخَاهُ وَمِنْ نِيَّتِهٖ اَنْ يَفِيَ فَلَمْ يَفِ وَلَمْ يَجِيءْ لِلْمِيْعَادِ فَلَا اِثْمَ عَلَيْهِ.

رواه ابو داؤد باب في العدة، رقم: ٤٩٩٥

197. हज़रत ज़ैद बिन अरक़म ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब आदमी ने अपने भाई से कोई वादा किया और उसकी नीयत उस वादा को पूरा करने की थी लेकिन वह पूरा न कर सका और वक़्त पर न आ सका तो उस पर कोई गुनाह नहीं है। (अबूदाऊद)

﴾198﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمُسْتَشَارُ مُؤْتَمَنٌ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن باب ما جاء ان المستشار مؤتمن، رقم: ٢٨٢٢

198. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिससे किसी मामले में मशवरा किया जाए उस मामले में उस पर भरोसा किया गया है (लिहाज़ा उसे चाहिए कि मशवरा लेने वाले का राज़ ज़ाहिर न करे और वही मशवरा दे जो मशवरा लेने वाले के लिए ज़्यादा मुफ़ीद हो)। (तिर्मिज़ी)

﴾199﴿ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِذَا حَدَّثَ الرَّجُلُ بِالْحَدِيْثِ ثُمَّ الْتَفَتَ فَهِيَ اَمَانَةٌ.

رواه ابو داؤد باب في نقل الحديث، رقم: ٤٨٦٨

199. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने

Copyright ©

इर्शाद फ़रमाया : जब कोई शख़्स अपनी कोई बात कहे और फिर इधर-उधर देखे तो यह बात अमानत है। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि अगर कोई शख़्स तुम से बात करे और वह तुम से यह न कहे कि उसको राज़ में रखना, लेकिन अगर उसके किसी अन्दाज़ से तुम्हें यह महसूस हो कि वह यह नहीं चाहता कि उसकी यह बात किसी के इल्म में आए मसलन बात करते हुए इधर-उधर देखना वग़ैरह तो उसकी यह बात अमानत ही है और अमानत ही की तरह तुम्हें उसकी हिफ़ाज़त करनी चाहिए। (मआरिफ़ुलहदीस)

﴾200﴿ عَنْ اَبِيْ مُوْسَى الْاَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: اِنَّ اَعْظَمَ الذُّنُوْبِ عِنْدَ اللهِ اَنْ يَلْقَاهُ بِهَا عَبْدٌ بَعْدَ الْكَبَائِرِ الَّتِيْ نَهَى اللهُ عَنْهَا اَنْ يَمُوْتَ رَجُلٌ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ لَا يَدَعُ لَهُ قَضَاءً. رواه ابوداؤد،باب في التشديد في الدين، رقم: ٣٣٤٢

200. हज़रत अबू मूसा अशअ़री ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि उनके कबीरा गुनाहों (शिर्क, ज़िना वग़ैरह) के बाद जिनसे अल्लाह तआ़ला ने सख़्ती से मना फ़रमाया है, सबसे बड़ा गुनाह यह है कि आदमी इस हाल में मरे कि उस पर क़र्ज़ हो और उसने अदाइगी का इन्तज़ाम न किया हो। (अबूदाऊद)

﴾201﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: نَفْسُ الْمُؤْمِنِ مُعَلَّقَةٌ بِدَيْنِهِ حَتّٰى يُقْضٰى عَنْهُ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن،باب ماجاء ان نفس المؤمن ... رقم: ١٠٧٩

201. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन की रूह उसके क़र्ज़ की वजह से लटकी रहती है (राहत व रहमत की उस मंज़िल तक नहीं पहुंचती, जिसका नेक लोगों से वादा है) जब तक कि उसका क़र्ज़ा न अदा कर दिया जाए। (तिर्मिज़ी)

﴾202﴿ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: يُغْفَرُ لِلشَّهِيْدِ كُلُّ ذَنْبٍ، اِلَّا الدَّيْنَ. رواه مسلم،باب من قتل في سبيل الله... رقم: ٤٨٨٣

202. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आ़स ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़र्ज़ के अलावा शहीद के सारे गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे। (मुस्लिम)

﴾203﴿ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ جَحْشٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا جُلُوْسًا بِفِنَاءِ

Copyright ©

الْمَسْجِدِ حَيْثُ تُوضَعُ الْجَنَائِزُ وَرَسُوْلُ اللهِ ﷺ جَالِسٌ بَيْنَ ظَهْرَيْنَا، فَرَفَعَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بَصَرَهُ قِبَلَ السَّمَاءِ، فَنَظَرَ ثُمَّ طَأْطَأَ بَصَرَهُ وَوَضَعَ يَدَهُ عَلَى جَبْهَتِهِ، ثُمَّ قَالَ: سُبْحَانَ اللهِ! سُبْحَانَ اللهِ! مَاذَا نَزَلَ مِنَ التَّشْدِيْدِ! قَالَ: فَسَكَتْنَا يَوْمَنَا وَلَيْلَتَنَا فَلَمْ نَرَهَا خَيْرًا حَتَّى أَصْبَحْنَا، قَالَ مُحَمَّدٌ: فَسَأَلْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ مَا التَّشْدِيْدُ الَّذِي نَزَلَ؟ قَالَ: فِي الدَّيْنِ، وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَوْ أَنَّ رَجُلًا قُتِلَ فِي سَبِيْلِ اللهِ ثُمَّ عَاشَ ثُمَّ قُتِلَ فِي سَبِيْلِ اللهِ ثُمَّ عَاشَ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ مَا دَخَلَ الْجَنَّةَ حَتَّى يُقْضَى دَيْنُهُ. رواه احمد ٥/٢٨٩

203. हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन जहश ﷺ से रिवायत है कि हम लोग एक दिन मस्जिद के मैदान में जहां जनाज़े लाकर रखे जाते थे, बैठे हुए थे। रसूलुल्लाह ﷺ भी हमारे दर्मियान तशरीफ़ फ़रमा थे। आपने आसमान की तरफ़ मुबारक निगाह उठाई और कुछ देखा फिर निगाह नीची फ़रमाई और (एक ख़ास फ़िक्रमन्दाना अन्दाज़ में) अपना हाथ पेशानी मुबारक पर रखा और फ़रमाया : सुब्हानल्लाह! सुब्हानअल्लाह! किस क़द्र सख़्त वईद नाज़िल हुई है! हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि उस दिन और उस रात सुबह तक हम सब ख़ामोश रहे और उस ख़ामोशी को हमने अच्छा न जाना। फिर (सुबह को) मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया : क्या सख़्त वईद नाज़िल हुई थी? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सख़्त वईद क़र्ज़ के बारे में नाज़िल हुई। क़सम है उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है अगर कोई आदमी अल्लाह तआला के रास्ते में शहीद हो, फिर ज़िन्दा हो फिर शहीद हो फिर ज़िन्दा हो और उसके ज़िम्मे क़र्ज़ हो तो वह जन्नत में उस वक़्त तक दाख़िल नहीं हो सकता, जब तक कि उसका क़र्ज़ अदा न कर दिया जाए। (मुस्नद अहमद)

﴿204﴾ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أُتِيَ بِجَنَازَةٍ لِيُصَلِّيَ عَلَيْهَا فَقَالَ: هَلْ عَلَيْهِ مِنْ دَيْنٍ؟ فَقَالُوْا: لَا، فَصَلَّى عَلَيْهِ، ثُمَّ أُتِيَ بِجَنَازَةٍ أُخْرَى فَقَالَ: هَلْ عَلَيْهِ مِنْ دَيْنٍ؟ قَالُوْا: نَعَمْ، قَالَ: فَصَلُّوْا عَلَى صَاحِبِكُمْ، قَالَ أَبُوْقَتَادَةَ: عَلَيَّ دَيْنُهُ يَا رَسُوْلَ اللهِ! فَصَلَّى عَلَيْهِ. رواه البخاري باب من تكفل عن ميت ... رقم: ٢٢٩٥

204. हज़रत सलमा बिन अकवअ् ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ के पास एक जनाज़ा लाया गया ताकि आप ﷺ उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ा दें। आप ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या इस मैय्यत पर किसी का क़र्ज़ है? लोगों ने अर्ज़ किया : नहीं आप ﷺ ने उसके जनाज़ा की नमाज़ पढ़ा दी। फिर दूसरा जनाज़ा लाया गया। आप

Copyright ©

ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : इस मैय्यत पर किसी का क़र्ज़ है? लोगों ने अर्ज़ किया : जी हां ! आप ﷺ ने सहाबा से इर्शाद फ़रमाया : तुम लोग अपने साथी के जनाज़े की नमाज़ पढ़ लो। हज़रत अबू क़तादा ﷺ ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! इसका क़र्ज़ मैंने अपने ज़िम्मे ले लिया। आप ﷺ ने उनके जनाज़े की नमाज़ भी पढ़ा दी। (बुख़ारी)

﴿205﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ أَخَذَ أَمْوَالَ النَّاسِ يُرِيْدُ أَدَاءَ هَا أَدَّى اللهُ عَنْهُ، وَمَنْ أَخَذَ يُرِيْدُ إِتْلَافَهَا أَتْلَفَهُ اللهُ.

رواه البخاري، باب من اخذ اموال الناس......،رقم: ٢٣٨٧

205. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स लोगों से माल (उधार) ले और उसकी नीयत अदा करने की हो, तो अल्लाह तआ़ला उसकी तरफ़ से अदा कर देंगे और जो शख़्स किसी से (उधार) ले और उसका इरादा ही अदा न करने का हो तो अल्लाह तआ़ला उसके माल को ज़ाय कर देंगे। (बुख़ारी)

फ़ायदा : ''अल्लाह तआ़ला उसकी तरफ़ से अदा कर देंगे'' का मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला उधार की अदाइगी में उसकी मदद फ़रमाएंगे। ''अल्लाह तआ़ला उसके माल को ज़ाय कर देंगे'' का मतलब यह है कि इस बुरी नीयत की वजह से उसे जानी या माली नुक़सान उठाना पड़ेगा। (फ़त्हुलबारी)

﴿206﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ جَعْفَرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: كَانَ اللهُ مَعَ الدَّائِنِ حَتَّى يَقْضِيَ دَيْنَهُ مَا لَمْ يَكُنْ فِيْمَا يَكْرَهُ اللهُ.

رواه ابن ماجه، باب من ادّان دينا وهو ينوى قضاءه، رقم: ٢٤٠٩

206. हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला मक़रूज़ के साथ हैं, यहां तक कि वह अपना क़र्ज़ा अदा करे बशर्ते कि यह क़र्ज़ा किसी ऐसे काम के लिए न लिया गया हो जो अल्लाह तआ़ला को नापसन्द है। (इब्ने माजा)

﴿207﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اسْتَقْرَضَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ سِنًّا، فَأَعْطَى سِنًّا فَوْقَهُ، وَقَالَ: خِيَارُكُمْ مَحَاسِنُكُمْ قَضَاءً. رواه مسلم، باب جواز اقتراض الحيوان......،رقم: ٤١١١

Copyright ©

207. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक ऊंट क़र्ज़

लिया। फिर आप ﷺ ने क़र्ज़ की अदायगी में उससे बड़ी उम्र वाला ऊंट दिया और इर्शाद फ़रमाया : तुममें सबसे बेहतर लोग वे हैं जो क़र्ज़ की अदायगी में बेहतर हों। (मुस्लिम)

﴿208﴾ عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ اَبِىْ رَبِيْعَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: اسْتَقْرَضَ مِنِّى النَّبِىُّ ﷺ اَرْبَعِيْنَ اَلْفًا، فَجَاءَهُ مَالٌ فَدَفَعَهُ اِلَىَّ وَقَالَ: بَارَكَ اللّٰهُ لَكَ فِىْ اَهْلِكَ وَمَالِكَ، اِنَّمَا جَزَاءُ السَّلَفِ الْحَمْدُ وَالْاَدَاءُ.

رواه النسائى باب الاستقراض، رقم: ٤٦٨٧

208. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबी रबीया ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने मुझसे चालीस हज़ार क़र्ज़ लिया। फिर आप ﷺ के पास माल आया तो आप ﷺ ने मुझे अ़ता फ़रमा दिया और साथ ही मुझे दुआ़ देते हुए इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला तुम्हारे अह्ल व अ़याल और माल में बरकत दें। क़र्ज़ का बदला यह है कि अदा किया जाए और (क़र्ज़ देने वाले की) तारीफ़ और शुक्र किया जाए। (नसाई)

﴿209﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَوْ كَانَ لِىْ مِثْلُ اُحُدٍ ذَهَبًا مَا يَسُرُّنِىْ اَنْ لَا يَمُرَّ عَلَىَّ ثَلَاثٌ وَعِنْدِىْ مِنْهُ شَىْءٌ اِلَّا شَىْءٌ اُرْصِدُهُ لِدَيْنٍ.

رواه البخارى باب اداء الديون، رقم: ٢٣٨٩

209. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि अगर मेरे पास उहुद पहाड़ जितना भी सोना हो, तो मुझे इसमें ख़ुशी होगी कि तीन दिन भी मुझ पर इस हाल में न गुज़रें कि उसमें से मेरे पास कुछ भी बाक़ी बचे, सिवाए उस मामूली रक़म के जो मैं क़र्ज़ की अदाइगी के लिए रख लूं। (बुख़ारी)

﴿210﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ لَا يَشْكُرِ النَّاسَ لَا يَشْكُرِ اللّٰهَ.

رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء فى الشكر ...، رقم: ١٩٥٤

210. हज़रत अबू हुरैरह ؓ करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोगों का शुक्रगुज़ार नहीं होता, वह अल्लाह तआ़ला का भी शुक्र अदा नहीं करता। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : बाज़ शरह लिखने वालों ने हदीस का यह मतलब ब्यान किया है कि जो एहसान करने वाले बन्दों का शुक्रगुज़ार नहीं होता वह नाशुक्री की इस आदत की वजह से अल्लाह तआ़ला का शुक्रगुज़ार भी नहीं होता।

(मआरिफ़ुलहदीस)

Copyright ©

﴿211﴾ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صُنِعَ إِلَيْهِ مَعْرُوْفٌ فَقَالَ لِفَاعِلِهِ: جَزَاكَ اللهُ خَيْرًا فَقَدْ أَبْلَغَ فِي الثَّنَاءِ۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن جيد غريب، باب ماجاء في الثناء بالمعروف، رقم: ٢٠٣٥

211. हज़रत उसामा बिन ज़ैद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स पर एहसान किया गया और उसने एहसान करने वाले को 'जज़ाकल्लाहु ख़ैरा०' (अल्लाह तआ़ला तुमको उसका बेहतर बदला अ़ता फ़रमाए) कहा तो उसने (इस दुआ़ के ज़रिए) पूरी तारीफ़ की और शुक्र अदा कर दिया। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : इन लफ़्ज़ों में दुआ़ करना गोया इस बात का इज़्हार करना है कि मैं उसका बदला देने से आजिज़ हूं, इसलिए मैं अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करता हूं कि वह तुम्हारे इस एहसान का बेहतर बदला अ़ता फ़रमाए। इस तरह इस दुआ़इया कलिमे में एहसान करने वाले की तारीफ़ है। (मआरिफ़ुलहदीस)

﴿212﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَدِيْنَةَ أَتَاهُ الْمُهَاجِرُوْنَ فَقَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! مَا رَأَيْنَا قَوْمًا أَبْذَلَ مِنْ كَثِيْرٍ وَلَا أَحْسَنَ مُوَاسَاةً مِنْ قَلِيْلٍ مِنْ قَوْمٍ نَزَلْنَا بَيْنَ أَظْهُرِهِمْ لَقَدْ كَفَوْنَا الْمُؤْنَةَ وَأَشْرَكُوْنَا فِي الْمَهْنَإِ، حَتَّى لَقَدْ خِفْنَا أَنْ يَذْهَبُوْا بِالْأَجْرِ كُلِّهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لَا، مَادَعَوْتُمُ اللهَ لَهُمْ وَأَثْنَيْتُمْ عَلَيْهِمْ۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح غريب، باب ثناء المهاجرين... رقم: ٢٤٨٧

212. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि जब नबी करीम ﷺ हिजरत करके मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए, तो (एक दिन) मुहाजिरीन ने रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! जिनके पास हम आए हैं हमने इन-जैसे लोग नहीं देखे, यानी मदीना के अन्सार कि अगर उनके पास फ़राख़ी हो तो ख़ूब ख़र्च करते हैं और अगर कमी हो तो भी हमारी ग़मख़्वारी और मदद करते हैं। उन्होंने मेहनत और मशक़्क़त का हमारा हिस्सा तो अपने ज़िम्मे ले लिया है और नफ़ा में हमको शरीक कर लिया है। (उनके इस ग़ैरमामूली ईसार से) हमको अन्देशा है कि सारा अज्र व सवाब उन्हीं के हिस्से में न आ जाए (और आख़िरत में हम ख़ाली हाथ रह जाएं) आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नहीं ऐसा नहीं होगा जब तक इस एहसान के बदले में तुम उनके लिए दुआ़ करते रहोगे और उनकी तारीफ़ यानी उनका शुक्रिया अदा करते रहोगे। (तिर्मिज़ी)

Copyright ©

﴿213﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ عُرِضَ عَلَيْهِ رَيْحَانٌ، فَلَا يَرُدُّهُ، فَإِنَّهُ خَفِيفُ الْمَحْمِلِ طَيِّبُ الرِّيحِ.

رواه مسلم، باب استعمال المسك..... رقم: ٥٨٨٣

213. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसको हदिए के तौर पर ख़ुशबूदार फूल पेश किया जाए तो उसे चाहिए कि वह उसे रद्द न करे, क्योंकि वह बहुत हल्की और कम क़ीमत चीज़ है और उसकी ख़ुशबू भी अच्छी होती है। (मुस्लिम)

**फ़ायदा :** फूल-जैसी कम क़ीमत चीज़ क़ुबूल करने से अगर इन्कार किया जाए तो इसका भी अन्देशा है कि पेश करने वाले को ख़्याल हो कि मेरी चीज़ कम क़ीमत होने की वजह से क़ुबूल नहीं की गई और उससे उसकी दिल शिकनी हो। (मआरिफ़ुलहदीस)

﴿214﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: ثَلَاثٌ لَا تُرَدُّ: الْوَسَائِدُ وَ الدُّهْنُ وَاللَّبَنُ [ الدُّهْنُ يَعْنِيْ بِهِ الطِّيْبَ]

رواه الترمذي وقال هذا حديث غريب، باب ماجاء في كراهية رد الطيب، رقم: ٢٧٩٠

214. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन चीज़ों को रद्द नहीं करना चाहिए। तकिया, ख़ुशबू और दूध। (तिर्मिज़ी)

﴿215﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ شَفَعَ لِاَخِيْهِ شَفَاعَةً فَاَهْدٰى لَهُ هَدِيَّةً عَلَيْهَا فَقَبِلَهَا فَقَدْ اَتٰى بَابًا عَظِيْمًا مِنْ اَبْوَابِ الرِّبَا.

رواه ابو داؤد، باب في الهدية لقضاء الحاجة، رقم: ٣٥٤١

215. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने अपने मुसलमान भाई के लिए (किसी मामले में) सिफ़ारिश की, फिर अगर उस शख़्स ने उस सिफ़ारिश करने वाले को (सिफ़ारिश के एवज़ में) कोई हदिया पेश किया और उसने वह हदिया क़ुबूल कर लिया, तो वह सूद के दरवाज़ों में से एक बड़े दरवाज़े में दाख़िल हो गया। (अबूदाऊद)

**फ़ायदा :** इसको सूद इस एतबार से फ़रमाया गया है कि वह सिफ़ारिश करने वाले को बग़ैर किसी एवज़ के हासिल हुआ है। ([illegible])

Copyright ©

﴿216﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَا مِنْ مُسْلِمٍ لَهُ ابْنَتَانِ، فَيُحْسِنُ إِلَيْهِمَا مَا صَحِبَتَاهُ أَوْ صَحِبَهُمَا، إِلَّا أَدْخَلَتَاهُ الْجَنَّةَ.

رواه ابن حبّان، قال المحقق: اسناده ضعيف وهو حديث حسن، بشواهده ٢٠٧/٧

216. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस मुसलमान की दो बेटियां हों, फिर जब तक वे उसके पास रहें या यह उनके पास रहे वह उनके साथ अच्छा बरताव करे तो वह दोनों बेटियां उसको ज़रूर जन्नत में दाख़िल करा देंगी। (इब्ने हब्बान)

﴿217﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ مَنْ عَالَ جَارِيَتَيْنِ دَخَلْتُ أَنَا وَهُوَ الْجَنَّةَ كَهَاتَيْنِ، وَأَشَارَ بِإِصْبَعَيْهِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء في النفقة على البنات والاخوات، رقم: ١٩١٤

217. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने दो लड़कियों की परवरिश और देखभाल की वह और मैं जन्नत में इस तरह इकट्ठे दाख़िल होंगे जैसे दो उंगलियां। (यह इर्शाद फ़रमा कर आप ﷺ ने अपनी दोनों उंगलियों से इशारा फ़रमाया।) (तिर्मिज़ी)

﴿218﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ يَلِيْ مِنْ هٰذِهِ الْبَنَاتِ شَيْئًا، فَأَحْسَنَ إِلَيْهِنَّ كُنَّ لَهُ سِتْرًا مِنَ النَّارِ.

رواه البخاري، باب رحمة الولد...... رقم: ٥٩٩٥

218. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने उन बेटियों के किसी मामले की ज़िम्मेदारी ली और उनके साथ अच्छा सुलूक किया तो, ये बेटियां उसके लिए दोज़ख़ की आग से बचाव का सामान बन जाएंगी। (बुख़ारी)

﴿219﴾ عَنْ أَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ كَانَتْ لَهُ ثَلَاثُ بَنَاتٍ أَوْ ثَلَاثُ أَخَوَاتٍ أَوِ ابْنَتَانِ أَوْ أُخْتَانِ فَأَحْسَنَ صُحْبَتَهُنَّ وَاتَّقَى اللّٰهَ فِيْهِنَّ فَلَهُ الْجَنَّةُ.

رواه الترمذي، باب ماجاء في النفقة على البنات والاخوات رقم: ١٩١٦

219. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स की तीन बेटियां या तीन बहनें हों या दो बेटियां या दो बहनें हों और वह उनके साथ अच्छा मामला रखे और उनके हुक़ूक़ के बारे में अल्लाह

Copyright ©

तआला से डरता रहे तो उसके लिए जन्नत है। (तिर्मिज़ी)

﴿220﴾ عَنْ أَيُّوبَ بْنِ مُوسٰى رَحِمَهُ اللهُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَا نَحَلَ وَالِدٌ وَلَدًا مِنْ نَحْلٍ أَفْضَلَ مِنْ أَدَبٍ حَسَنٍ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب،باب ماجاء في ادب الولد، رقم: ١٩٥٢

220. हज़रत ऐय्यूब रहमतुल्लाह अ़लैह अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : किसी बाप ने अपनी औलाद को अच्छी तालीम व तर्बियत से बेहतर कोई तोहफ़ा नहीं दिया। (तिर्मिज़ी)

﴿221﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ وُلِدَتْ لَهُ أُنْثٰى فَلَمْ يَئِدْهَا وَلَمْ يُهِنْهَا وَلَمْ يُؤْثِرْ وَلَدَهُ يَعْنِي الذَّكَرَ عَلَيْهَا أَدْخَلَهُ اللهُ بِهَا الْجَنَّةَ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٤/١٧٧

221. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स के यहां लड़की पैदा हो, फिर वह न तो उसे ज़िन्दा दफ़न करे (जैसा कि जाहिलियत के ज़माने में होता था) और न उससे ज़िल्लत आमेज़ सुलूक करे और न (बरताव में) लड़कों को उस पर तर्जीह दे, यानी उसके साथ वैसा ही बरताव करे, जैसा कि लड़कों के साथ करता है तो अल्लाह तआ़ला लड़की के साथ उस हुस्ने सुलूक के बदले उसको जन्नत में दाख़िल फ़रमाएंगे। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿222﴾ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ أَبَاهُ أَتٰى بِهِ إِلٰى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: إِنِّي نَحَلْتُ ابْنِي هٰذَا غُلَامًا، فَقَالَ: أَكُلَّ وَلَدِكَ نَحَلْتَ مِثْلَهُ؟ قَالَ: لَا، قَالَ: فَارْجِعْهُ.

رواه البخاري،باب الهبة للولد،رقم: ٢٥٨٦

222. हज़रत नोमान बिन बशीर ﷺ से रिवायत है कि मेरे वालिद रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में मुझे लेकर हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि मैंने अपने इस बेटे को गुलाम हदिया किया है। रसूलुल्लाह ﷺ ने उनसे पूछा : क्या तुमने अपने सब बच्चों को भी इतना ही दिया है? उन्होंने अ़र्ज़ किया : नहीं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : गुलाम को वापस ले लो। (बुख़ारी)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि औलाद को हदिया करने में बराबरी होनी चाहिए।

Copyright ©

﴾223﴿ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ وَابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمْ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَنْ وُلِدَ لَہُ وَلَدٌ فَلْیُحْسِنِ اسْمَہُ وَاَدَبَہُ فَاِذَا بَلَغَ فَلْیُزَوِّجْہُ فَاِنْ بَلَغَ وَلَمْ یُزَوِّجْہُ فَاَصَابَ اِثْمًا فَاِنَّمَا اِثْمُہُ عَلٰی اَبِیْہِ.

رواہ البیھقی فی شعب الایمان ٦/٤٠١

223. हज़रत अबू सईद और हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसका कोई बच्चा पैदा हो तो उसका अच्छा नाम रखे और उसकी अच्छी तर्बियत करे। फिर जब वह बालिग़ हो जाए, तो उसका निकाह कर दे। अगर बालिग़ हो जाने के बाद भी (अपनी ग़फ़लत और लापरवाही से) उसका निकाह नहीं किया और वह गुनाह में मुब्तला हो गया तो उसका गुनाह उसके बाप पर होगा। (बैहक़ी)

﴾224﴿ عَنْ عَائِشَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھَا قَالَتْ: جَاءَ اَعْرَابِیٌّ اِلَی النَّبِیِّ ﷺ فَقَالَ: تُقَبِّلُوْنَ الصِّبْیَانَ؟ فَمَا نُقَبِّلُھُمْ، فَقَالَ النَّبِیُّ ﷺ: اَوَ اَمْلِکُ لَکَ اَنْ نَزَعَ اللّٰہُ مِنْ قَلْبِکَ الرَّحْمَۃَ.

رواہ البخاری، باب رحمۃ الولد وتقبیلہ ومعانقتہ، رقم: ٥٩٩٨

224. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि एक देहात के रहने वाले शख़्स नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि तुम लोग बच्चों को प्यार करते हो? हम तो उनको प्यार नहीं करते। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे दिल से रहमत का माद्दा निकाल दिया है तो उसमें मेरा क्या अख़्तियार है। (बुख़ारी)

﴾225﴿ عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: تَھَادَوْا فَاِنَّ الْھَدِیَّۃَ تُذْھِبُ وَحَرَ الصَّدْرِ، وَلَا تَحْقِرَنَّ جَارَۃٌ لِجَارَتِھَا وَلَوْ شِقَّ فِرْسِنِ شَاۃٍ.

رواہ الترمذی وقال: ھذا حدیث غریب، باب فی حث النبی ﷺ علی الھدیۃ، رقم: ٢١٣٠

225. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक दूसरे को हदिया दिया करो, हदिया दिलों की रंजिश को दूर करता है। कोई पड़ोसन अपनी पड़ोसन के हदिया को हक़ीर न समझे, अगरचे वह बकरी के खुर का एक टुकड़ा ही क्यों न हो (इसी तरह देने वाली भी इस हदिया को कम न समझे)। (तिर्मिज़ी)

﴾226﴿ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: لَا یَحْقِرَنَّ اَحَدُکُمْ شَیْئًا مِنَ الْمَعْرُوْفِ، وَاِنْ لَمْ یَجِدْ فَلْیَلْقَ اَخَاہُ بِوَجْہٍ طَلِیْقٍ، وَاِنِ اشْتَرَیْتَ لَحْمًا اَوْ طَبَخْتَ قِدْرًا

Copyright ©

فَأَكْثِرْ مَرَقَتَهُ وَاغْرِفْ لِجَارِكَ مِنْهُ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح باب ماجاء في اكثار ماء المرقة، رقم: ١٨٣٣

226. हज़रत अबूज़र ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से कोई थोड़ी-सी नेकी को भी मामूली न समझे। अगर कोई दूसरी नेकी न हो सके तो यह भी नेकी है कि अपने भाई के साथ ख़न्दापेशानी से मिल लिया करे। जब तुम (पकाने की ग़रज़ से) गोश्त ख़रीदो या सालन की हांडी पकाओ, तो शोरबा बढ़ा दिया करो और उसमें से कुछ निकाल कर अपने पड़ोसी को दे दिया करो।

(तिर्मिज़ी)

﴿227﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ لَا يَأْمَنُ جَارُهُ بَوَائِقَهُ.

رواه مسلم باب بيان تحريم ايذاء الجار، رقم: ١٧٢

227. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह शख़्स जन्नत में दाख़िल न हो सकेगा जिसकी शरारतों से उसका पड़ोसी महफ़ूज़ न हो।

(मुस्लिम)

﴿228﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيُكْرِمْ جَارَهُ قَالُوا: يَارَسُولَ اللهِ! وَمَا حَقُّ الْجَارِ؟ قَالَ: إِنْ سَأَلَكَ فَأَعْطِهِ، وَإِنِ اسْتَغَاثَكَ فَأَغِثْهُ، وَإِنِ اسْتَقْرَضَكَ فَأَقْرِضْهُ، وَإِنْ دَعَاكَ فَأَجِبْهُ، وَإِنْ مَرِضَ فَعُدْهُ، وَإِنْ مَاتَ فَشَيِّعْهُ، وَإِنْ أَصَابَتْهُ مُصِيبَةٌ فَعَزِّهِ، وَلَا تُؤْذِهِ بِقُتَارِ قِدْرِكَ إِلَّا أَنْ تَغْرِفَ لَهُ مِنْهَا، وَلَا تَرْفَعْ عَلَيْهِ الْبِنَاءَ لِتَسُدَّ عَلَيْهِ الرِّيحَ إِلَّا بِإِذْنِهِ.

رواه الاصبهاني في كتاب الترغيب ١/ ٤٨٠،

وقال في الحاشية: عزاه المنذري في الترغيب ٣٥٧/٣ للمصنف بعد ان رواه من طرق اخرى ثم قال المنذري، لا يخفى ان كثرة هذه الطرق تكسبه قوة والله اعلم

228. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, उसके लिए लाज़िम है कि अपने पड़ोसी के साथ इकराम का मामला करे। सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! पड़ोसी का हक़ क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर वह तुम से कुछ मांगे तो उसे दो, अगर वह तुम से मदद चाहे, तो तुम उसकी मदद करो, अगर वह अपनी ज़रूरत के लिए क़र्ज़ मांगे उसे क़र्ज़ दो, अगर वह तुम्हारी दावत करे तो उसे क़ुबूल करो, अगर वह बीमार हो जाए तो उसकी बीमारपुर्सी करो

Copyright ©

अगर उसका इंतिक़ाल हो जाए तो उसके जनाज़े के साथ जाओ, अगर उसे कोई मुसीबत पहुंचे तो उसे तसल्ली दो, अपनी हांडी में गोश्त पकने की महक से उसे तकलीफ़ न पहुंचाओ (क्योंकि हो सकता है कि तंगदस्ती की वजह से वह गोश्त न पका सकता हो) मगर यह कि उसमें से कुछ उसके घर भी भेज दो और अपनी इमारत उसकी इमारत से इस तरह बुलन्द न करो कि उसके घर की हवा रुक जाए मगर यह कि उसकी इजाज़त से हो। (तर्ग़ीब)

﴾229﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَيْسَ الْمُؤْمِنُ الَّذِىْ يَشْبَعُ وَجَارُهُ جَائِعٌ. رواه الطبراني وابو يعلى ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٨/٦ ٣٠

229. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह शख़्स (कामिल) मोमिन नहीं हो सकता जो ख़ुद तो पेट भर कर खाए और उसका पड़ोसी भूखा रहे। (तबरानी, अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾230﴿ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ يَا رَسُوْلَ اللهِ! اِنَّ فُلَانَةَ يُذْكَرُ مِنْ كَثْرَةِ صَلَاتِهَا وَصِيَامِهَا وَصَدَقَتِهَا غَيْرَ اَنَّهَا تُؤْذِىْ جِيْرَانَهَا بِلِسَانِهَا قَالَ: هِىَ فِى النَّارِ قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! فَاِنَّ فُلَانَةَ يُذْكَرُ مِنْ قِلَّةِ صِيَامِهَا وَصَدَقَتِهَا وَصَلَاتِهَا وَاِنَّهَا تَصَدَّقُ بِالْاَثْوَارِ مِنَ الْاَقِطِ وَلَا تُؤْذِىْ جِيْرَانَهَا بِلِسَانِهَا قَالَ: هِىَ فِى الْجَنَّةِ. رواه احمد ٢/٤٤٠

230. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! फ़्लानी औरत के बारे में यह मशहूर है कि वह कसरत से नमाज़, रोज़ा और सदक़ा ख़ैरात करने वाली है, (लेकिन) अपने पड़ोसियों को अपनी ज़ुबान से तकलीफ़ देती है, यानी बुरा-भला कहती हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह दोज़ख़ में है। फिर उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! फ़्लानी औरत के बारे में यह मशहूर है कि वह नफ़्ली रोज़ा, सदक़ा ख़ैरात और नमाज़ तो कम करती है, बल्कि उसका सदक़ा व ख़ैरात पनीर के चन्द टुकड़ों से आगे नहीं बढ़ता, लेकिन अपने पड़ोसियों को अपनी ज़बान से कोई तकलीफ़ नहीं देती। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह जन्नत में है। (मुस्नद अहमद)

﴾231﴿ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ يَاْخُذُ عَنِّىْ هٰؤُلَاءِ الْكَلِمَاتِ فَيَعْمَلُ بِهِنَّ اَوْيُعَلِّمُ مَنْ يَعْمَلُ بِهِنَّ؟ فَقَالَ اَبُوْهُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ: قُلْتُ: اَنَا يَا رَسُوْلَ اللهِ! فَاَخَذَ بِيَدِىْ فَعَدَّ خَمْسًا وَقَالَ: اتَّقِ الْمَحَارِمَ تَكُنْ اَعْبَدَ النَّاسِ، وَارْضَ بِمَا

Copyright ©

قَسَمَ اللّٰهُ لَكَ تَكُنْ اَغْنَى النَّاسِ، وَاَحْسِنْ اِلٰى جَارِكَ تَكُنْ مُؤْمِنًا، وَاَحِبَّ لِلنَّاسِ مَاتُحِبُّ لِنَفْسِكَ تَكُنْ مُسْلِمًا وَلَا تُكْثِرِ الضَّحِكَ فَاِنَّ كَثْرَةَ الضَّحِكِ تُمِيْتُ الْقَلْبَ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب، باب من اتقى المحارم فهو اعبد الناس، رقم: ٢٣٠٥

231. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कौन है जो मुझसे ये बातें सीखे, फिर उन पर अमल करे या उन लोगों को सिखाए जो उन पर अमल करें? हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं, मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं तैयार हूं। आप ﷺ ने (मुहब्बत की वजह से) मेरा हाथ अपने मुबारक हाथ में ले लिया और गिन कर ये पांच बातें इर्शाद फ़रमाईं : हराम से बचो, तुम सबसे बड़े इबादत गुज़ार बन जाओगे। अल्लाह तआला ने जो कुछ तुम्हें दिया है उस पर राज़ी रहो तुम सबसे बड़े ग़नी बन जाओगे। अपने पड़ोसी के साथ अच्छा सुलूक करो तुम मोमिन बन जाओगे। जो अपने लिए पसन्द करते हो वही दूसरों के लिए भी पसन्द करो तुम (कामिल) मुसलमान बन जाओगे। ज़्यादा हँसा न करो, क्योंकि ज़्यादा हँसना दिल को मुर्दा कर देता है। (तिर्मिज़ी)

﴿232﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! كَيْفَ لِيْ اَنْ اَعْلَمَ اِذَا اَحْسَنْتُ وَاِذَا اَسَأْتُ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اِذَا سَمِعْتَ جِيْرَانَكَ يَقُوْلُوْنَ قَدْ اَحْسَنْتَ فَقَدْ اَحْسَنْتَ، وَاِذَا سَمِعْتَهُمْ يَقُوْلُوْنَ قَدْ اَسَأْتَ فَقَدْ اَسَأْتَ.

رواه الطبراني ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/٤٨٠

232. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने दरयाफ़्त किया : या रसूलुल्लाह! मुझे कैसे मालूम हो कि मैंने यह काम अच्छा किया है और यह काम बुरा किया है? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम अपने पड़ोसियों को यह कहते हुए सुनो कि तुमने अच्छा किया तो यक़ीनन तुमने अच्छा किया और जब तुम अपने पड़ोसियों को यह कहते हुए सुनो कि तुमने बुरा किया, तो यक़ीनन तुमने बुरा किया। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿233﴾ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ اَبِيْ قُرَادٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ تَوَضَّاَ يَوْمًا فَجَعَلَ اَصْحَابُهُ يَتَمَسَّحُوْنَ بِوَضُوْئِهِ فَقَالَ لَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ: مَايَحْمِلُكُمْ عَلٰى هٰذَا؟ قَالُوْا: حُبُّ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَنْ سَرَّهُ اَنْ يُحِبَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ اَوْيُحِبُّهُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ فَلْيَصْدُقْ حَدِيْثَهُ اِذَا حَدَّثَ وَلْيُؤَدِّ اَمَانَتَهُ اِذَا اؤْتُمِنَ وَلْيُحْسِنْ جِوَارَمَنْ جَاوَرَهُ.

رواه البيهقي في شعب الايمان، مشكوة المصابيح رقم: ٤٩٩٠

Copyright ©

233. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी क़ुराद ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने एक दिन वुज़ू फ़रमाया तो आप ﷺ के सहाबा किराम ﷺ आप के वुज़ू का बचा हुआ पानी ले कर (अपने चेहरे और जिस्मों पर) मलने लगे। आप ﷺ ने फ़रमाया : कौन-सी चीज़ तुम्हें इस काम पर आमादा कर रही है? उन्होंने अ़र्ज़ किया : अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स इस बात को पसन्द करता है कि वह अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल से मुहब्बत करे या अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल उससे मुहब्बत करें तो उसे चाहिए कि जब बात करे तो सच बोले, जब कोई अमानत उसके पास रखवाई जाए, तो उसको अदा करे और अपने पड़ोसी के साथ अच्छा सुलूक किया करे। (बैहक़ी, मिशकात)

﴿234﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا زَالَ جِبْرِيلُ يُوْصِيْنِي بِالْجَارِ حَتَّى ظَنَنْتُ أَنَّهُ سَيُوَرِّثُهُ.

رواه البخاري، باب الوصاءة بالجار، رقم: ٦٠١٤

234. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिबरील अ़लैहिस्सलाम मुझे पड़ोसी के हक़ के बारे में इस क़द्र वसीयत करते रहे कि मुझे ख़्याल होने लगा कि वह पड़ोसी को वारिस बना देंगे। (बुख़ारी)

﴿235﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَوَّلُ خَصْمَيْنِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ جَارَانِ.

رواه أحمد بإسناد حسن، مجمع الزوائد ٦٣٢/١٠

235. हज़रत उ़क़्बा बिन आ़मिर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन (झगड़ने वालों में) सबसे पहले दो झगड़ने वाले पड़ोसी पेश होंगे, यानी बन्दों के हुक़ूक़ में से सबसे पहला मामला दो पड़ोसियों का पेश होगा। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿236﴾ عَنْ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا يُرِيْدُ أَحَدٌ أَهْلَ الْمَدِيْنَةِ بِسُوْءٍ إِلَّا أَذَابَهُ اللهُ فِي النَّارِ ذَوْبَ الرَّصَاصِ، أَوْ ذَوْبَ الْمِلْحِ فِي الْمَاءِ.

رواه مسلم، باب فضل المدينة ...، رقم: ٣٣١٩

236. हज़रत साद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मदीना वालों के साथ किसी क़िस्म की बुराई का इरादा करेगा, अल्लाह तआ़ला उसको (दोज़ख़ की) आग में इस तरह पिघला देंगे जिस तरह सीसा पिघल जाता है या जिस तरह पानी में नमक घुल जाता है। (मुस्लिम)

Copyright ©

﴾237﴿ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ اَخَافَ اَهْلَ الْمَدِيْنَةِ فَقَدْ اَخَافَ مَابَيْنَ جَنْبَيَّ.

رواه احمد ورجاله رجال الصحيح،مجمع الزوائد ٣/٦٥٨

237. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो मदीना वालों को डराता है, वह मुझे डराता है।

(मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾238﴿ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ اَنْ يَمُوْتَ بِالْمَدِيْنَةِ، فَلْيَمُتْ بِالْمَدِيْنَةِ فَاِنِّيْ اَشْفَعُ لِمَنْ مَاتَ بِهَا.

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ٩/٥٧

238. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो इसकी कोशिश कर सके कि मदीना में उसको मौत आए, तो उसको चाहिए कि वह (इसकी कोशिश करे और) मदीना में मरे, मैं उन लोगों की ज़रूर शफ़ाअ़त करूंगा जो मदीना में मरेंगे (और वहां दफ़न होंगे)। (इब्ने हब्बान)

फ़ायदा : उलमा ने लिखा है शफ़ाअ़त से मुराद ख़ास क़िस्म की शफ़ाअ़त है वरना रसूलुल्लाह ﷺ की आ़म शफ़ाअ़त तो सारे ही मुसलमानों के लिए होगी, कोशिश करने और ताक़त रखने से मुराद यह है कि वहां आख़िर तक रहे।

﴾239﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا يَصْبِرُ عَلٰى لَاْوَاءِ الْمَدِيْنَةِ وَشِدَّتِهَا اَحَدٌ مِنْ اُمَّتِيْ، اِلَّا كُنْتُ لَهٗ شَفِيْعًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَوْ شَهِيْدًا.

رواه مسلم،باب الترغيب في سكنى المدينة... ،رقم: ٣٣٤٧

239. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरा जो उम्मती मदीना तैयबा के क़ियाम की मुशकिलात को बर्दाश्त करके यहां क़ियाम करेगा, मैं क़ियामत के दिन उसका सिफ़ारशी या गवाह बनूंगा। (मुस्लिम)

﴾240﴿ عَنْ سَهْلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَنَا وَكَافِلُ الْيَتِيْمِ فِي الْجَنَّةِ هٰكَذَا، وَاَشَارَ بِالسَّبَّابَةِ وَالْوُسْطٰى وَفَرَّجَ بَيْنَهُمَا شَيْئًا.

رواه البخاري،باب اللعان... ،رقم: ٥٣٠٤

240. हज़रत सहल ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, मैं

Copyright ©

और यतीम की किफ़ालत करने वाला जन्नत में इस तरह (क़रीब) होंगे। नबी करीम ﷺ ने शहादत की और बीच की उंगली से इशारा फ़रमाया और उन दोनों के दर्मियान थोड़ी-सी कुशादगी रखी। (बुख़ारी)

﴿241﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَالِكٍ الْقُشَيْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ ضَمَّ يَتِيْمًا بَيْنَ اَبَوَيْنِ مُسْلِمَيْنِ اِلٰى طَعَامِهٖ وَشَرَابِهٖ حَتّٰى يُغْنِيَهُ اللهُ وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ. رواه احمد والطبراني وفيه: على بن زيد وهو حسن الحديث وبقية رجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٨/٢٩٤

241. हज़रत अम्र बिन मालिक क़ुशैरी ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स ने ऐसे यतीम बच्चे को जिसके मां-बाप मुसलमान थे उसे अपने साथ खाने-पीने में शरीक किया यानी अपनी किफ़ालत में ले लिया, यहां तक कि अल्लाह तआला ने बच्चे को उन (की किफ़ालत से) बेनियाज़ कर दिया यानी वह अपनी ज़रूरतें ख़ुद पूरी करने लगा, तो उस शख़्स के लिए जन्नत वाजिब हो गई। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿242﴾ عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ الْاَشْجَعِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَنَا وَامْرَاَةٌ سَفْعَاءُ الْخَدَّيْنِ كَهَاتَيْنِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَاَوْمَاَ يَزِيْدُ بِالْوُسْطٰى وَالسَّبَّابَةِ، اِمْرَاَةٌ آمَتْ مِنْ زَوْجِهَا ذَاتُ مَنْصِبٍ وَجَمَالٍ، حَبَسَتْ نَفْسَهَا عَلٰى يَتَامَاهَا حَتّٰى بَانُوْا اَوْمَاتُوْا.

رواه ابوداؤد، باب في فضل من عال يتامى، رقم: ٥١٤٩

242. हज़रत औफ़ बिन मालिक अशजई ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं और वह औरत जिसका चेहरा (अपनी औलाद की परवरिश, देखभाल और मेहनत व मशक़्क़त की वजह से) स्याह पड़ गया हो, क़ियामत के दिन इस तरह होंगे। हदीस के रावी हज़रत यज़ीद रह० ने यह हदीस ब्यान करने के बाद शहादत की उंगली और बीच की उंगली से इशारा किया (मतलब यह था कि जिस तरह ये दोनों उंगलियां एक दूसरे के क़रीब हैं उसी तरह क़ियामत के दिन आप ﷺ और वह औरत क़रीब होंगे। रसूलुल्लाह ﷺ ने स्याह चेहरे वाली औरत की तशरीह करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि इससे मुराद) वह औरत है जो बेवा हो गई हो और हुस्न व जमाल, इज़्ज़त व मनसब वाली होने के बावजूद अपने यतीम बच्चों (की परवरिश) की ख़ातिर दूसरा निकाह न करे, यहां तक कि वह बच्चे बालिग़ होने की वजह से अपनी मां के मुहताज न रहें या उन्हें मौत आ जाए।

Copyright ©

﴾243﴿ عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی الْاَشْعَرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَاقَعَدَ یَتِیْمٌ مَعَ قَوْمٍ عَلٰی قَصْعَتِہِمْ فَیَقْرَبُ قَصْعَتَہُمْ شَیْطَانٌ۔

رواہ الطبرانی فی الا وسط، وفیہ: الحسن بن واصل وھو الحسن بن دینار وھو ضعیف لسوء حفظہ، وھو حدیث حسن واللّٰہ اعلم مجمع الزوائد ۸/۲۹۳

243. हज़रत अबू मूसा अशअ़री ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिन लोगों के साथ कोई यतीम उनके बरतन में खाने के लिए बैठे तो शैतान उनके बरतन के क़रीब नहीं आता। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾244﴿ عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ رَجُلًا شَکَا اِلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ ﷺ قَسْوَۃَ قَلْبِہٖ فَقَالَ: امْسَحْ رَاْسَ الْیَتِیْمِ وَاَطْعِمِ الْمِسْکِیْنَ۔

رواہ احمد ورجالہ رجال الصحیح مجمع الزوائد ۸/۲۹۳

244. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से अपनी सख़्तदिली की शिकायत की। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यतीम के सिर पर हाथ फेरा करो और मिस्कीनों को खाना खिलाया करो।

(मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾245﴿ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَیْمٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ یَرْفَعُہُ اِلَی النَّبِیِّ ﷺ: اَلسَّاعِیْ عَلَی الْاَرْمَلَۃِ وَالْمِسْکِیْنِ کَالْمُجَاھِدِ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ اَوْ کَالَّذِیْ یَصُوْمُ النَّھَارَ وَیَقُوْمُ اللَّیْلَ۔

رواہ البخاری باب الساعی علی الارملۃ، رقم: ۶۰۰۶

245. हज़रत सफ़्वान बिन सुलैम ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बेवा औरत और मिस्कीन की ज़रूरत में दौड़-धूप करने वाले का सवाब अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करने वाले के सवाब की तरह है या उसका सवाब उस शख़्स के सवाब की तरह है जो दिन को रोज़ा रखता हो और रात भर इबादत करता हो। (बुख़ारी)

﴾246﴿ عَنْ عَائِشَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: خَیْرُکُمْ خَیْرُکُمْ لِاَھْلِہٖ وَاَنَا خَیْرُکُمْ لِاَھْلِیْ۔ (وھو جزء من الحدیث) رواہ ابن حبان، قال المحقق: اسنادہ صحیح ۹/۴۸۴

246. हज़रत आइशा रज़ियलाहु अ़न्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें बेहतर शख़्स वह है जो अपने घर वालों के लिए सबसे अच्छा

Copyright ©

हो और मैं तुम सबमें अपने घर वालों के लिए ज़्यादा अच्छा हूं। (इब्ने हब्बान)

﴿247﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: جَاءَ تْ عَجُوْزٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ عِنْدِيْ فَقَالَ لَهَا: مَنْ أَنْتِ؟ فَقَالَتْ: أَنَا جُثَامَةُ الْمَدَنِيَّةُ قَالَ: كَيْفَ حَالُكُمْ؟ كَيْفَ أَنْتُمْ بَعْدَنَا؟ قَالَتْ: بِخَيْرٍ بِأَبِيْ أَنْتَ وَأُمِّيْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! فَلَمَّا خَرَجَتْ قُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللّٰهِ تُقْبِلُ عَلٰى هٰذِهِ الْعَجُوْزِ هٰذَا الْإِقْبَالَ فَقَالَ: إِنَّهَا كَانَتْ تَأْتِيْنَا أَيَّامَ خَدِيْجَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا وَإِنَّ حُسْنَ الْعَهْدِ مِنَ الْإِيْمَانِ. اخرجه الحاكم بنحوه وقال حديث صحيح على شرط الشيخين وليس له علة ووافقه الذهبي ١/١٦–الاصابة ٤/٢٧٢

247. हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि एक बूढ़ी औरत नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुई, जबकि आप ﷺ मेरे पास थे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम कौन हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया : मैं जुसामा मदनीया हूं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारा क्या हाल है? हमारे (मदीना आने के) बाद तुम्हारे हालात कैसे रहे? उन्होंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान! सब ख़ैरियत रही। जब वह चली गईं तो मैंने (हैरत से) अ़र्ज़ किया : इस बुढ़िया की तरफ़ आपने इतनी तवज्जोह फ़रमाई। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह ख़दीजा की ज़िन्दगी में हमारे पास आया करती थीं और पुरानी जान पहचान की रियायत करना ईमान (की अ़लामत) है। (इसाबा)

﴿248﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَا يَفْرَكْ مُؤْمِنٌ مُؤْمِنَةً، إِنْ كَرِهَ مِنْهَا خُلُقًا رَضِيَ مِنْهَا آخَرَ أَوْ قَالَ غَيْرَهُ. رواه مسلم باب الوصية بالنساء رقم: ٣٦٤٥

248. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन मर्द की यह शान नहीं कि अपनी मोमिना बीवी से बुग़्ज़ रखे। अगर उसकी एक आदत उसे नापसन्द होगी तो दूसरी पसन्दीदा भी होगी। (मुस्लिम)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ ने इस हदीस शरीफ़ में हुस्ने मुआ़शरत का एक मुख़्तसर उसूल बता दिया कि एक इंसान में अगर कोई बुरी आदत है तो उसमें कुछ ख़ूबियां भी होंगी, ऐसा कौन होगा जिसमें कोई बुराई न हो या कोई ख़ूबी न हो। लिहाज़ा बुराइयों से चश्मपोशी की जाए और ख़ूबियों को देखा जाए। (तर्जमानुस्सुन्नः)

Copyright ©

﴿249﴾ عَنْ قَيْسِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَوْ كُنْتُ آمِرًا أَحَدًا أَنْ يَسْجُدَ لِأَحَدٍ لَأَمَرْتُ النِّسَاءَ أَنْ يَسْجُدْنَ لِأَزْوَاجِهِنَّ لِمَا جَعَلَ اللهُ لَهُمْ عَلَيْهِنَّ مِنَ الْحَقِّ.

رواه ابوداؤد، باب في حق الزوج على المرأة، رقم: ٢١٤٠

249. हज़रत क़ैस बिन साद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर मैं किसी को किसी के सामने सज्दा करने का हुक्म देता, तो औरतों को हुक्म देता कि वह अपने शौहरों को सज्दा करें इस हक़ की वजह से जो अल्लाह तआला ने उनके शौहरों का उन पर मुक़र्रर फ़रमाया है। (अबूदाऊद)

﴿250﴾ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَيُّمَا امْرَأَةٍ مَاتَتْ وَزَوْجُهَا عَنْهَا رَاضٍ، دَخَلَتِ الْجَنَّةَ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ما جاء في حق الزوج على المرأة، رقم: ١١٦١

250. हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस औरत का इस हाल में इंतिक़ाल हो कि उसका शौहर उससे राज़ी हो तो वह जन्नत में जाएगी। (तिर्मिज़ी)

﴿251﴾ عَنِ الْأَحْوَصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: أَلَا وَاسْتَوْصُوْا بِالنِّسَاءِ خَيْرًا، فَإِنَّمَا هُنَّ عَوَانٍ عِنْدَكُمْ لَيْسَ تَمْلِكُوْنَ مِنْهُنَّ شَيْئًا غَيْرَ ذٰلِكَ، إِلَّا أَنْ يَأْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُبَيِّنَةٍ، فَإِنْ فَعَلْنَ فَاهْجُرُوْهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ، وَاضْرِبُوْهُنَّ ضَرْبًا غَيْرَ مُبَرِّحٍ، فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا، أَلَا إِنَّ لَكُمْ عَلَى نِسَائِكُمْ حَقًّا، وَلِنِسَائِكُمْ عَلَيْكُمْ حَقًّا، فَأَمَّا حَقُّكُمْ عَلَى نِسَائِكُمْ فَلَا يُوْطِئْنَ فُرُشَكُمْ مَنْ تَكْرَهُوْنَ، وَلَا يَأْذَنَّ فِي بُيُوْتِكُمْ لِمَنْ تَكْرَهُوْنَ، أَلَا وَحَقُّهُنَّ عَلَيْكُمْ أَنْ تُحْسِنُوْا إِلَيْهِنَّ فِي كِسْوَتِهِنَّ وَطَعَامِهِنَّ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ما جاء في حق المرأة على زوجها، رقم: ١١٦٣

251. हज़रत अह्वस ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ग़ौर से सुनो! औरतों के साथ अच्छा सुलूक किया करो, इसलिए कि वह तुम्हारे पास क़ैदी हैं। तुम उनसे अपनी इस्मत और तुम्हारे माल की हिफ़ाज़त वग़ैरह के अलावा और कुछ अख़्तियार नहीं रखते। हां, अगर वे किसी खुली बेहयाई का इरतिकाब करें तो फिर उनको उनके बिस्तरों पर तन्हा छोड़ दो, यानी उनके साथ सोना छोड़ दो लेकिन घर ही में रहो और हल्की मार मारो। फिर अगर वे तुम्हारी

Copyright ©

फ़रमांबरदारी अख़्तियार कर लें तो उन पर (ज़्यादती करने के लिए) बहाना मत ढूंढो। ग़ौर से सुनो! तुम्हारा हक़ तुम्हारी बीवियों पर है (उसी तरह) तुम्हारी बीवीयों का तुम पर हक़ है। तुम्हारा हक़ उन पर यह है कि वे तुम्हारे बिस्तरों पर किसी ऐसे शख़्स को न आने दें, जिसका आना तुमको नागवार गुज़रे और न वे तुम्हारे घरों में तुम्हारी इजाज़त के बग़ैर किसी को आने दें। ग़ौर से सुनो! उन औरतों का तुम पर हक़ यह है कि तुम उनके साथ उनके लिबास और उनकी ख़ुराक में अच्छा सुलूक करो, यानी अपनी हैसियत के मुताबिक़ उनके लिए उन चीज़ों का इंतज़ाम किया करो।

(तिर्मिज़ी)

﴿252﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَعْطُوا الْاَجِيْرَ اَجْرَهُ، قَبْلَ اَنْ يَجِفَّ عَرَقُهُ.

رواه ابن ماجه، باب اجر الاجراء رقم: ٢٤٤٣

252. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मज़दूर का पसीना ख़ुश्क होने से पहले उसकी मज़दूरी दे दिया करो।

(इब्ने माजा)

Copyright ©

بسم الله الرحمن الرحيم

# सिलारहमी

## क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّ بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِى الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرًا﴾ [النساء ٣٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और तुम सब अल्लाह तआला की इबादत करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करो और मां-बाप के साथ नेक बरताव करो और क़राबतदारों के साथ भी और यतीमों के साथ भी और मिस्कीनों के साथ भी और क़रीब के पड़ोसी के साथ भी और दूर के पड़ोसी के साथ भी और पास के बैठने वाले के साथ भी (मुराद वह शख़्स है जो रोज़ का आने जाने वाला और साथ उठने-बैठने वाला हो) और मुसाफ़िर के साथ भी और उन गुलामों के साथ भी, जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं, हुस्ने सुलूक से पेश आओ। बेशक अल्लाह तआला ऐसे लोगों को पसन्द नहीं करते जो अपने को बड़ा समझे और शेख़ी की बात करे। (निसा : 36)

फ़ायदा : क़रीब के पड़ोसी से मुराद वह पड़ोसी है, जो पड़ोस में रहता हो और उससे रिश्तेदारी भी हो और दूर के पड़ोसी से मुराद वह पड़ोसी है जिस से रिश्तेदारी न हो, दूसरा मतलब यह भी हो सकता है कि क़रीब के पड़ोसी से मुराद वह पड़ोसी जिसका दरवाज़ा अपने दरवाज़े के क़रीब हो और दूर का पड़ोसी वह है जिसका दरवाज़ा दूर हो।

Copyright ©

मुसाफ़िर से मुराद रफ़ीक़े सफ़र, मुसाफ़िर मेहमान और ज़रूरत मन्द मुसाफ़िर है। (कशफुर्रहमान)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَآءِ ذِى الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ﴾ [النحل: ٩٠]

एक जगह इर्शाद है : अल्लाह तआला इन्साफ़ का और भलाई का और क़राबतदारों के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म देते हैं और बेहयाई और बुरी बात और ज़ुल्म से मना करते हैं, तुम लोगों को अल्लाह तआला इसलिए नसीहत करते हैं ताकि तुम नसीहत क़ुबूल करो। (नह्ल : 90)

# नबी ﷺ की हदीसें

﴿253﴾ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: الْوَالِدُ أَوْسَطُ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ، فَإِنْ شِئْتَ فَأَضِعْ ذٰلِكَ الْبَابَ أَوِ احْفَظْهُ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث صحيح،باب ماجاء من الفضل في رضا الوالدين، رقم: ١٩٠٠

253. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : बाप जन्नत के दरवाज़ों में से बेहतरीन दरवाज़ा है। चुनांचे तुम्हें अख़्तियार है ख़्वाह (उसकी नाफ़रमानी करके और दिल दुखा के) इस दरवाज़े को ज़ाया कर दो या (उसकी फ़रमांबरदारी और उसको राज़ी रख कर) इस दरवाज़े की हिफ़ाज़त करो। (तिर्मिज़ी)

﴿254﴾ عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: رِضَا الرَّبِّ فِي رِضَا الْوَالِدِ وَسَخَطُ الرَّبِّ فِي سَخَطِ الْوَالِدِ.

رواه الترمذي،باب ماجاء من الفضل في رضا الوالدين،رقم: ١٨٩٩

254. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला की रज़ामन्दी वालिद की रज़ामन्दी में है और अल्लाह तआला की नाराज़गी वालिद की नाराज़गी में है। (तिर्मिज़ी)

Copyright ©

﴾255﴿ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ أَبَرَّ الْبِرِّ صِلَةُ الْوَلَدِ أَهْلَ وُدِّ أَبِيْهِ۔ رواه مسلم، باب فضل صلة اصدقاء الاب......، رقم: ٦٥١٣

255. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : सबसे बड़ी नेकी यह है कि बेटा (बाप के इंतिक़ाल के बाद) बाप से ताल्लुक़ रखने वालों के साथ अच्छा सुलूक करे। (मुस्लिम)

﴾256﴿ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ أَحَبَّ أَنْ يَصِلَ أَبَاهُ فِيْ قَبْرِهِ، فَلْيَصِلْ إِخْوَانَ أَبِيْهِ بَعْدَهُ۔

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ٢/١٧٥

256. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स अपने वालिद की वफ़ात के बाद उनके साथ सिलारहमी करना चाहे, जबकि वह क़ब्र में हैं तो उसको चाहिए कि अपने बाप के भाइयों के साथ अच्छा सुलूक करे। (इब्ने हब्बान)

﴾257﴿ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ سَرَّهُ أَنْ يُمَدَّ لَهُ فِيْ عُمُرِهِ وَيُزَادَ لَهُ فِيْ رِزْقِهِ فَلْيَبَرَّ وَالِدَيْهِ وَلْيَصِلْ رَحِمَهُ۔ رواه احمد ٣/٢٦٦

257. हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स को यह पसन्द हो कि उसकी उम्र दराज़ की जाए और उसके रिज़्क़ को बढ़ा दिया जाए, उसको चाहिए कि अपने वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करे और रिश्तेदारों के साथ सिलारहमी करे। (मुस्नद अहमद)

﴾258﴿ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ بَرَّ وَالِدَيْهِ طُوْبَى لَهُ زَادَ اللهُ فِيْ عُمُرِهِ۔ رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٤/١٥٤

258. हज़रत मुआज़ رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने अपने वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक किया उसके लिए ख़ुशख़बरी हो कि अल्लाह तआला उसकी उम्र में इज़ाफ़ा फ़रमाएंगे। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾259﴿ عَنْ أَبِيْ أُسَيْدٍ مَالِكِ بْنِ رَبِيْعَةَ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ إِذْ جَاءَهُ رَجُلٌ مِنْ بَنِيْ سَلِمَةَ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! هَلْ بَقِيَ مِنْ بِرِّ أَبَوَيَّ شَيْءٌ أَبَرُّهُمَا بِهِ بَعْدَ مَوْتِهِمَا؟ قَالَ: نَعَمْ، الصَّلٰوةُ عَلَيْهِمَا، وَالْاِسْتِغْفَارُ لَهُمَا، وَإِنْفَاذُ

Copyright ©

عَهْدِهِمَا مِنْ بَعْدِهِمَا، وَصِلَةُ الرَّحِمِ الَّتِي لَا تُوْصَلُ إِلَّا بِهِمَا، وَإِكْرَامُ صَدِيْقِهِمَا.

رواه ابوداؤد، باب فى بر الوالدين، رقم: ٥١٤٢

259. हज़रत अबू उसैद मालिक बिन रबीआ साइदी ﷺ फ़रमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर थे। क़बीला बनू सलिमा के एक शख़्स नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या मेरे लिए अपने वालिदैन के इंतिक़ाल के बाद उन दोनों के साथ हुस्ने सुलूक की कोई सूरत मुम्किन है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हां! उनके लिए दुआएं करना, अल्लाह तआला से उनके लिए मग़्फ़िरत तलब करना, उनके बाद उनकी वसीयत को पूरा करना, जिन लोगों से उनकी वजह से रिश्तेदारी है उनके साथ हुस्ने सुलूक करना और उनके दोस्तों का इकराम करना। (अबूदाऊद)

﴿260﴾ عَنْ مَالِكٍ أَوِ ابْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ أَدْرَكَ وَالِدَيْهِ أَوْ أَحَدَهُمَا ثُمَّ لَمْ يَبَرَّهُمَا، دَخَلَ النَّارَ فَأَبْعَدَهُ اللّٰهُ، وَأَيُّمَا مُسْلِمٍ أَعْتَقَ رَقَبَةً مُسْلِمَةً كَانَتْ فِكَاكَهُ مِنَ النَّارِ.

(وهو بعض الحديث) رواه ابويعلى والطبراني واحمد مختصرا باسناد حسن، الترغيب ٣/٣١٧

260. हज़रत मालिक या इब्ने मालिक ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स ने अपने वालिदैन या उनमें से एक को पाया, फिर उनके साथ बदसलूकी की, तो वह शख़्स दोज़ख़ में दाख़िल होगा और उसको अल्लाह तआला अपनी रहमत से दूर कर देंगे और जो कोई मुसलमान किसी मुसलमान ग़ुलाम को आज़ाद कर दे, यह उसके लिए दोज़ख़ से बचाव का ज़रिया होगा। (अबू याला, मुस्नद अहमद, तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿261﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: رَغِمَ أَنْفُ، ثُمَّ رَغِمَ أَنْفُ، ثُمَّ رَغِمَ أَنْفُ، قِيْلَ: مَنْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ: مَنْ أَدْرَكَ أَبَوَيْهِ عِنْدَ الْكِبَرِ، أَحَدَهُمَا أَوْ كِلَيْهِمَا فَلَمْ يَدْخُلِ الْجَنَّةَ.

رواه مسلم، باب رغم من ادرك ابويه...، رقم: ٦٥١٠

261. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह आदमी ज़लील व ख़्वार हो, फिर ज़लील व ख़्वार हो, फिर ज़लील व ख़्वार हो। अर्ज़ किया गया : या रसूलुल्लाह! कौन (ज़लील व ख़्वार हो)? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह शख़्स जो अपने मां-बाप में से किसी एक को या दोनों को बुढ़ापे की

Copyright ©

पाए, फिर (उनकी ख़िदमत से उनका दिल ख़ुश करके) जन्नत में दाख़िल न हो। (मुस्लिम)

﴾262﴿ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ مَنْ أَحَقُّ بِحُسْنِ صَحَابَتِي؟ قَالَ: أُمُّكَ، قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: أُمُّكَ، قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: أُمُّكَ، قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: ثُمَّ أَبُوْكَ.

رواه البخاري،باب من احق الناس بحسن الصحبة،رقم: ٥٩٧١

262. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होकर दरयाफ़्त किया : मेरे हुस्ने सुलूक का सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ कौन है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारी मां। उसने पूछा फिर कौन? इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारी मां। उसने पूछा, फिर कौन? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : फिर तुम्हारा बाप। (बुख़ारी)

﴾263﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: نِمْتُ فَرَأَيْتُنِي فِي الْجَنَّةِ فَسَمِعْتُ صَوْتَ قَارِئٍ يَقْرَأُ فَقُلْتُ: مَنْ هٰذَا؟ قَالُوْا: هٰذَا حَارِثَةُ بْنُ النُّعْمَانِ فَقَالَ لَهَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: كَذَاكَ الْبِرُّ كَذَاكَ الْبِرُّ وَكَانَ أَبَرَّ النَّاسِ بِأُمِّهِ. رواه احمد ١٥١/٦

263. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं सोया तो मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं जन्नत में हूं। मैंने वहां किसी क़ुरआन पढ़ने वाले की आवाज़ सुनी तो मैंने कहा : यह कौन है (जो यहां जन्नत में क़ुरआन पढ़ रहा है)? फ़रिश्तों ने बताया कि यह हारिसा बिन नोमान हैं। उसके बाद हज़रत आइशा रज़ि० से रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नेकी ऐसी ही होती है, नेकी ऐसी ही होती है यानी नेकी का फल ऐसा ही होता है। हारिसा बिन नोमान अपनी वालिदा के साथ बहुत ही अच्छा सुलूक करने वाले थे। (मुस्नद अहमद)

﴾264﴿ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: قَدِمَتْ عَلَيَّ أُمِّي وَهِيَ مُشْرِكَةٌ فِي عَهْدِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَاسْتَفْتَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ، قُلْتُ: إِنَّ أُمِّي قَدِمَتْ وَهِيَ رَاغِبَةٌ، أَفَأَصِلُ أُمِّي؟ قَالَ: نَعَمْ، صِلِي أُمَّكِ. رواه البخاري،باب الهدية للمشركين،رقم: ٢٦٢٠

264. हज़रत अस्मा बिन्त अबीबक्र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ के ज़माने में मेरी वालिदा जो मुशरिका थीं (मक्का से सफ़र करके) मेरे पास (मदीना) आईं। मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से मसला मालूम किया और पूछा : मेरी वालिदा आई हैं और वह

Copyright ©

इससे मिलना चाहती हैं तो क्या मैं अपनी वालिदा के साथ सिलारहमी कर सकती हूं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हां! अपनी वालिदा के साथ सिलारहमी करो। (बुख़ारी)

﴿265﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَيُّ النَّاسِ اَعْظَمُ حَقًّا عَلَى الْمَرْاَةِ قَالَ: زَوْجُهَا، قُلْتُ: فَاَيُّ النَّاسِ اَعْظَمُ حَقًّا عَلَى الرَّجُلِ قَالَ: اُمُّهُ.

رواه الحاكم في المستدرك ٤/ ١٥٠

265. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है, फ़रमाती हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! औरत पर सबसे ज़्यादा हक़ किसका है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसके शौहर का है। मैंने दरयाफ़्त किया कि मर्द पर सबसे ज़्यादा हक़ किसका है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसकी मां का है। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿266﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَجُلًا اَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: يَارَسُوْلَ اللهِ! اِنِّي اَصَبْتُ ذَنْبًا عَظِيْمًا فَهَلْ لِيْ تَوْبَةٌ؟ قَالَ: هَلْ لَكَ مِنْ اُمٍّ؟ قَالَ: لَا، قَالَ: هَلْ لَكَ مِنْ خَالَةٍ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَبِرَّهَا.

رواه الترمذي باب في بر الخالة، رقم: ١٩٠٤

266. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि एक साहब रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैंने एक बहुत बड़ा गुनाह कर लिया है तो क्या मेरी तौबा क़ुबूल हो सकती है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम्हारी मां ज़िन्दा हैं? उन्होंने अ़र्ज़ किया : नहीं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम्हारी कोई ख़ाला हैं? अ़र्ज़ किया : जी हां। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उनके साथ अच्छा सुलूक करो (अल्लाह तआ़ला उसकी वजह से तुम्हारी तौबा क़ुबूल फ़रमा लेंगे)। (तिर्मिज़ी)

﴿267﴾ عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: صَنَائِعُ الْمَعْرُوْفِ تَقِيْ مَصَارِعَ السُّوْءِ، وَصَدَقَةُ السِّرِّ تُطْفِئُ غَضَبَ الرَّبِّ، وَصِلَةُ الرَّحِمِ تَزِيْدُ فِي الْعُمُرِ.

رواه الطبراني في الكبير واسناده حسن، مجمع الزوائد ٣/ ٢٩٣

267. हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नेकियों का करना बुरी मौत से बचा लेता है, छुप कर सदक़ा देना अल्लाह तआ़ला के गुस्सा को ठंडा करता है और सिलारहमी यानी रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करना उम्र को बढ़ाता है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

Copyright ©

**फ़ायदा :** सिलारहमी में यह बात शामिल है कि आदमी अपनी कमाई से रिश्तेदारों की माली ख़िदमत करे या यह कि अपने वक़्त का कुछ हिस्सा उनके कामों में लगाए। (मआरिफ़ुल क़ुरआन)

﴿268﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ کَانَ یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ فَلْیُکْرِمْ ضَیْفَهٗ، وَمَنْ کَانَ یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ فَلْیَصِلْ رَحِمَهٗ، وَمَنْ کَانَ یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ فَلْیَقُلْ خَیْرًا اَوْلِیَصْمُتْ۔ رواه البخاری،باب اکرام الضیف......رقم: ٦١٣٨

268. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसको चाहिए कि अपने मेहमान का इकराम करे। जो शख़्स अल्लाह तआ़ला पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसको चाहिए कि वह सिलारहमी करे यानी रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करे। जो शख़्स अल्लाह तआ़ला पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसको चाहिए कि भलाई की बात करे वरना ख़ामोश रहे।

(बुख़ारी)

﴿269﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِکٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: مَنْ اَحَبَّ اَنْ یُّبْسَطَ لَهٗ فِیْ رِزْقِهٖ، وَیُنْسَاَ لَهٗ فِیْ اَثَرِهٖ فَلْیَصِلْ رَحِمَهٗ۔

رواه البخاری،باب من بسط له فی الرزق......رقم: ٥٩٨٦

269. हज़रत अनस बिन मालिक ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स यह चाहे कि उसके रिज़्क़ में फ़राख़ी की जाए और उसकी उम्र दराज़ की जाए, उसको चाहिए कि अपने रिश्तेदारों के साथ सिलारहमी करे।

(बुख़ारी)

﴿270﴾ عَنْ سَعِیْدِ بْنِ زَیْدٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ اَنَّهٗ قَالَ: اِنَّ هٰذِهِ الرَّحِمَ شُجْنَةٌ مِنَ الرَّحْمٰنِ عَزَّوَجَلَّ فَمَنْ قَطَعَهَا حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَیْهِ الْجَنَّةَ۔ (وهو بعض الحدیث)

رواه احمد والبزار ورجال احمد رجال الصحیح غیر نوفل بن مساحق وهو ثقة، مجمع الزوائد ٨/٢٧٤

270. हज़रत सईद बिन ज़ैद ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक यह रहम यानी रिश्तेदारी का हक़ अल्लाह तआ़ला के नाम रहमान से लिया गया है, यानी यह रिश्तेदारी रहमान की रहमत की एक शाख़ है जो इस रिश्तेदारी को तोड़ेगा, अल्लाह तआ़ला उस पर जन्नत हराम कर देंगे।

(मुस्नद अहमद, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

Copyright ©

﴾271﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَيْسَ الْوَاصِلُ بِالْمُكَافِئِ، وَلٰكِنِ الْوَاصِلُ الَّذِيْ إِذَا قُطِعَتْ رَحِمُهُ وَصَلَهَا.

رواه البخاري باب ليس الواصل بالمكافئ برقم: ٥٩٩١

271. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह शख़्स सिलारहमी करने वाला नहीं है जो बराबरी का मामला करे यानी दूसरे को अच्छे बरताव करने पर उससे अच्छा बरताव करे, बल्कि सिलारहमी करने वाला तो वह है जो दूसरे के क़तारहमी करने पर भी सिलारहमी करे।

(बुख़ारी)

﴾272﴿ عَنِ الْعَلَاءِ بْنِ خَارِجَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: تَعَلَّمُوْا مِنْ أَنْسَابِكُمْ مَا تَصِلُوْنَ بِهِ أَرْحَامَكُمْ.

رواه الطبراني في الكبير ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ١/٤٥٦

272. हज़रत अला बिन ख़ारिजा ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपने नसब का इल्म हासिल करो, जिसके ज़रिए से तुम अपने रिश्तेदारों से सिलारहमी कर सको।

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾273﴿ عَنْ أَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَمَرَنِيْ خَلِيْلِيْ ﷺ بِسَبْعٍ: أَمَرَنِيْ بِحُبِّ الْمَسَاكِيْنِ وَالدُّنُوِّ مِنْهُمْ وَأَمَرَنِيْ أَنْ أَنْظُرَ إِلٰى مَنْ هُوَ دُوْنِيْ وَلَا أَنْظُرَ إِلٰى مَنْ هُوَ فَوْقِيْ وَأَمَرَنِيْ أَنْ أَصِلَ الرَّحِمَ وَإِنْ أَدْبَرَتْ وَأَمَرَنِيْ أَنْ لَا أَسْأَلَ أَحَدًا شَيْئًا وَأَمَرَنِيْ أَنْ أَقُوْلَ بِالْحَقِّ وَإِنْ كَانَ مُرًّا وَأَمَرَنِيْ أَنْ لَا أَخَافَ فِي اللهِ لَوْمَةَ لَائِمٍ وَأَمَرَنِيْ أَنْ أُكْثِرَ مِنْ قَوْلِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ فَإِنَّهُنَّ مِنْ كَنْزٍ تَحْتَ الْعَرْشِ.

رواه احمد ٥/١٥٩

273. हज़रत अबूज़र ﷺ फ़रमाते हैं कि मुझे मेरे हबीब ﷺ ने सात बातों का हुक्म फ़रमाया : मुझे हुक्म फ़रमाया कि मैं मिस्कीनों से मुहब्बत रखूं और उनसे क़रीब रहूं। मुझे हुक्म फ़रमाया कि मैं दुनिया में उन लोगों पर नज़र रखूं जो (दुन्यावी साज़ व सामान में) मुझसे नीचे दर्जा के हैं और उन पर नज़र न करूं जो (दुन्यावी साज़ व सामान में) मुझ से ऊपर के दर्जा के हैं। मुझे हुक्म फ़रमाया कि मैं अपने रिश्तेदारों के साथ सिलारहमी करूं अगरचे वह मुझसे मुंह मोड़ें। मुझे हुक्म फ़रमाया कि मैं किसी से कोई चीज़ न मांगूं। मुझे हुक्म फ़रमाया कि मैं हक़ बात कहूं अगरचे वह (लोगों के लिए) कड़वी हो। मुझे हुक्म फ़रमाया कि मैं अल्लाह तआ़ला के दीन और उसके पैग़ाम को ज़ाहिर करने में किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरूं

Copyright ©

और मुझे हुक्म फ़रमाया कि मैं 'ला हौ-ल व ला कुव्व त इल्ला बिल्लाह' कसरत से पढ़ा करूं क्योंकि यह कलिमा उस ख़ज़ाना से है जो अ़र्श के नीचे है।

(मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जो शख़्स इस कलिमा को पढ़ने का मामूल रखता है उसके लिए निहायत आला मर्तबे का अज्र व सवाब महफ़ूज़ कर दिया जाता है। (मज़ाहिरे हक़)

﴾274﴿ عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَاطِعٌ.

رواه البخاري، باب اثم القاطع، رقم: ٥٩٨٤

274. हज़रत जुबैर बिन मुतइम ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़तारहमी करने वाला जन्नत में नहीं जाएगा।

(बुख़ारी)

फ़ायदा : क़तारहमी अल्लाह तआ़ला के नज़दीक इतना सख़्त गुनाह है कि इस गुनाह की गन्दगी के साथ कोई जन्नत में न जा सकेगा, हां जब उसको सज़ा देकर पाक कर दिया जाए या किसी वजह से माफ़ कर दिया जाए तो जन्नत में जा सकेगा। (मआ़रिफ़ुल हदीस)

﴾275﴿ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَارَسُوْلَ اللّٰهِ! اِنَّ لِىْ قَرَابَةً، اَصِلُهُمْ وَيَقْطَعُوْنِىْ، وَاُحْسِنُ اِلَيْهِمْ وَيُسِيْئُوْنَ اِلَىَّ، وَاَحْلُمُ عَنْهُمْ وَيَجْهَلُوْنَ عَلَىَّ، فَقَالَ: لَئِنْ كُنْتَ كَمَا قُلْتَ، فَكَاَنَّمَا تُسِفُّهُمُ الْمَلَّ، وَلَا يَزَالُ مَعَكَ مِنَ اللّٰهِ ظَهِيْرٌ عَلَيْهِمْ، مَادُمْتَ عَلٰى ذٰلِكَ.

رواه مسلم، باب صلة الرحم... رقم: ٦٥٢٥

275. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मेरे कुछ रिश्तेदार हैं मैं उनसे ताल्लुक़ जोड़ता हूं वे मुझसे ताल्लुक़ तोड़ते हैं, मैं उनके साथ अच्छा सुलूक करता हूं, वे मुझसे बदसुलूकी करते हैं और मैं उनकी ज़्यादतियों को बरदाश्त करता हूं, वे मेरे साथ जिहालत से पेश आते हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जैसा तुम कह रहे हो अगर ऐसा ही है तो गोया तुम उनके मुंह में गर्म-गर्म राख झोंक रहे हो और जब तक तुम इस ख़ूबी पर क़ायम रहोगे तुम्हारे साथ हर वक़्त अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से एक मददगार रहेगा। (मुस्लिम)

Copyright ©

بسم الله الرحمن الرحيم

# मुसलमानों को तकलीफ़ पहुंचाना

## क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللهُ تَعَالٰى: ﴿وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا﴾ [الاحزاب: ٥٨]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और जो लोग मुसलमान मर्दों को और मुसलमान औरतों को बग़ैर उसके कि उन्होंने कोई (ऐसा) काम किया हो (जिससे वह सज़ा के मुस्तहिक़ हो जाएं) ईज़ा पहुंचाते हैं, तो वे लोग बुहतान और सरीह गुनाह का बोझ उठाते हैं। (अहज़ाब : 58)

फ़ायदा : अगर ईज़ा ज़बानी है तो बुहतान है और अगर अमल से है तो सरीह गुनाह है।

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ۝ وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ۝ اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ۝ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ يَوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾ [المطففين: ١-٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : बड़ी तबाही है नाप-तौल में कमी करने वालों के लिए कि जब लोगों से (अपना हक़) नाप कर लें तो पूरा ले लें और जब लोगों

Copyright ©

को नाप कर या तौल कर दें तो कम कर दें। क्या उन लोगों को इसका यक़ीन नहीं है कि वह एक बड़े सख़्त दिन में ज़िन्दा करके उठाए जाएंगे, जिस दिन तमाम लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे (यानी उस दिन से डरना चाहिए और नाप-तौल में कमी से तौबा करनी चाहिए)। (मुतफ़्फ़िफ़ीन : 1-6)

وَقَالَ تَعَالَى : ﴿وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ﴾ [الهمزة: ١]

एक जगह इर्शाद है : हर ऐसे शख़्स के लिए बड़ी ख़राबी है जो ऐब निकालने वाला और ताना देने वाला हो। (हु म जः 1)

## नबी ﷺ की हदीसें

﴿276﴾ عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّكَ إِنِ اتَّبَعْتَ عَوْرَاتِ النَّاسِ أَفْسَدْتَهُمْ، أَوْكِدْتَ أَنْ تُفْسِدَهُمْ

رواه ابو داؤد، باب في التجسس، رقم: ٤٨٨٨

276. हज़रत मुआविया ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अगर तुम लोगों के ऐब तलाश करोगे, तो तुम उनको बिगाड़ दोगे। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि लोगों में ऐबों को तलाश करने से उनमें नफ़रत, बुग़्ज़ और बहुत-सी बुराइयां पैदा होंगी और मुम्किन है कि लोगों के ऐबों के तलाश करने और उन्हें फैलाने से वे लोग ज़िद में गुनाहों पर जुर्रअत करने लगें। ये सारी बातें उनमें मज़ीद बीगाड़ का सबब होंगी। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿277﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تُؤْذُوا الْمُسْلِمِيْنَ وَلَا تُعَيِّرُوْهُمْ، وَلَا تَطْلُبُوْا عَثَرَاتِهِمْ. (وهو جزء من الحديث) رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده قوي ١٣/٧٥

277. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुसलमानों को सताया न करो, उनको आर न दिलाया करो और उनकी

Copyright ©

लग़्ज़िशों को न तलाश किया करो। (इब्ने हब्बान)

﴿278﴾ عَنْ اَبِیْ بَرْزَةَ الْاَسْلَمِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: يَا مَعْشَرَ مَنْ آمَنَ بِلِسَانِهٖ وَلَمْ يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ قَلْبَهٗ: لَا تَغْتَابُوا الْمُسْلِمِيْنَ وَلَا تَتَّبِعُوْا عَوْرَاتِهِمْ، فَاِنَّهٗ مَنِ اتَّبَعَ عَوْرَاتِهِمْ يَتَّبِعِ اللّٰهُ عَوْرَتَهٗ، وَمَنْ يَتَّبِعِ اللّٰهُ عَوْرَتَهٗ يَفْضَحْهُ فِیْ بَيْتِهٖ.

رواه ابوداؤد، باب فی الغيبة، رقم: ٤٨٨٠

278. हज़रत अबू बरज़ा असलमी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ वो लोगो, जो सिर्फ़ ज़बानी इस्लाम लाए और ईमान उनके दिलों में दाख़िल नहीं हुआ! मुसलमानों की ग़ीबत न किया करो और उनके ऐबों के पीछे न पड़ा करो, क्योंकि जो मुसलमानों के ऐबों के पीछे पड़ता है, अल्लाह उसके ऐब के पीछे पड़ जाते हैं और अल्लाह तआला जिसके ऐब के पीछे पड़ जाते हैं उसे घर बैठे रुस्वा कर देते हैं। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ के पहले जुम्ले से इस बात पर तंबीह की गई है कि मुसलमानों की ग़ीबत करना मुनाफ़िक़ का काम हो सकता है मुसलमानों का नहीं। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿279﴾ عَنْ اَنَسٍ الْجُهَنِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنْ اَبِيْهِ قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ نَبِیِّ اللّٰهِ ﷺ غَزْوَةَ كَذَا وَكَذَا فَضَيَّقَ النَّاسُ الْمَنَازِلَ وَقَطَعُوا الطَّرِيْقَ، فَبَعَثَ النَّبِیُّ ﷺ مُنَادِيًا يُنَادِیْ فِی النَّاسِ: اَنَّ مَنْ ضَيَّقَ مَنْزِلًا اَوْقَطَعَ طَرِيْقًا فَلَا جِهَادَ لَهٗ.

رواه ابوداؤد، باب ما يؤمر من انضمام العسكر وسعته، رقم: ٢٦٢٩

279. हज़रत अनस जुहनी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं नबी करीम ﷺ के साथ एक ग़ज़वे में गया। वहां लोग इस तरह ठहरे कि आने-जाने के लिए रास्ते बन्द हो गए। आप ﷺ ने लोगों में एलान करने के लिए एक आदमी भेजा कि जो इस तरह ठहरा कि आने जाने का रास्ता बन्द कर दिया उसे जिहाद का सवाब नहीं मिलेगा। (अबूदाऊद)

﴿280﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِیُّ ﷺ: مَنْ جَرَّدَ ظَهْرَ امْرِیءٍ مُسْلِمٍ بِغَيْرِ حَقٍّ لَقِیَ اللّٰهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ.

رواه الطبرانی فی الكبير و الاوسط واسناده جيد، مجمع الزوائد ٦/٣٨٤

280. हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद

Copyright ©

फ़रमाया : जिस शख़्स ने किसी मुसलमान की पीठ को नंगा करके नाहक़ मार अल्लाह तआला से इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह तआला उस पर नाराज़ होंगे। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿281﴾ عَنْ اَبِى هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اَتَدْرُوْنَ مَا الْمُفْلِسُ؟ قَالُوْا: الْمُفْلِسُ فِيْنَا مَنْ لَا دِرْهَمَ لَهُ وَلَا مَتَاعَ، فَقَالَ: اِنَّ الْمُفْلِسَ مِنْ اُمَّتِىْ، مَنْ يَّاْتِىْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِصَلَاةٍ وَصِيَامٍ وَزَكٰوةٍ، وَيَاْتِىْ وَقَدْ شَتَمَ هٰذَا، وَقَذَفَ هٰذَا، وَاَكَلَ مَالَ هٰذَا، وَ سَفَكَ دَمَ هٰذَا، وَضَرَبَ هٰذَا فَيُعْطٰى هٰذَا مِنْ حَسَنَاتِهٖ، وَهٰذَا مِنْ حَسَنَاتِهٖ، فَاِنْ فَنِيَتْ حَسَنَاتُهٗ، قَبْلَ اَنْ يُّقْضٰى مَا عَلَيْهِ، اُخِذَ مِنْ خَطَايَاهُمْ فَطُرِحَتْ عَلَيْهِ، ثُمَّ طُرِحَ فِى النَّارِ.

رواه مسلم،باب تحريم الظلم، رقم: ٦٥٧٩

281. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सहाबा ؓ से इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम जानते हो कि मुफ़्लिस कौन है? सहाबा ؓ ने अर्ज़ किया : हमारे नज़दीक मुफ़्लिस वह शख़्स है जिसके पास कोई दिरहम (पैसा) और (दुनिया का) सामान न हो। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी उम्मत का मुफ़्लिस वह शख़्स है जो क़ियामत के दिन बहुत-सी नमाज़, रोज़ा, ज़कात (और दूसरी मक़बूल इबादतें) लेकर आएगा, मगर हाल यह होगा कि उसने किसी को गाली दी होगी, किसी पर तोहमत लगाई होगी, किसी का माल खाया होगा, किसी का ख़ून बहाया होगा और किसी को मारा-पीटा होगा तो उसकी नेकियों में से एक हक़ वाले को (उसके हक़ के बक़द्र) नेकियां दी जाएंगी ऐसे ही दूसरे हक़ वाले को उसकी नेकियों में से (उसके हक़ के बक़द्र) नेकियां दी जाएंगी। फिर अगर दूसरों के हुक़ूक़ चुकाए जाने से पहले उसकी सारी नेकियां ख़त्म हो जाएंगी तो (उन हुक़ूक़ के बक़द्र) हक़दारों और मज़्लूमों के गुनाह (जो उन्होंने दुनिया में किए होंगे) उनसे लेकर उस शख़्स पर डाल दिए जाएंगे और फिर उसको दोज़ख़ में फेंक दिया जाएगा। (मुस्लिम)

﴿282﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: سِبَابُ الْمُسْلِمِ فُسُوْقٌ وَقِتَالُهٗ كُفْرٌ.

رواه البخاري،باب ما ينهى من السباب واللعن، رقم: ٦٠٤٤

282. हज़रत अब्दुल्लाह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुसलमान को गाली देना बेदीनी और क़त्ल करना कुफ़्र है। (बुख़ारी)

फ़ायदा : जो मुसलमान किसी मुसलमान को क़त्ल करता है वह अपने [illegible]

Copyright ©

कामिल होने की नफ़ी करता है और मुम्किन है कि क़त्ल करना कुफ़्र पर मरने का सबब भी बन जाए। (मज़ाहिरे हक़)

﴿283﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا رَفَعَهُ قَالَ: سَابُّ الْمُسْلِمِ كَالْمُشْرِفِ عَلَى الْهَلَكَةِ.

رواه الطبراني في الكبير وهو حديث حسن، الجامع الصغير ٣٨/٢

283. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुसलमानों को गाली देने वाला उस आदमी की तरह है जो हलाकत व बरबादी के क़रीब हो। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿284﴾ عَنْ عِيَاضِ بْنِ حِمَارٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ! الرَّجُلُ مِنْ قَوْمِي يَشْتِمُنِي وَهُوَ دُوْنِي، أَفَأَنْتَقِمُ مِنْهُ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: الْمُسْتَبَّانِ شَيْطَانَانِ يَتَهَاتَرَانِ وَيَتَكَاذَبَانِ.

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ٣٤/١٣

284. हज़रत इयाज़ बिन हिमार ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के नबी! मेरी क़ौम का एक शख़्स मुझे गाली देता है जबकि वह मुझ से कम दर्जे का है क्या मैं उससे बदला लूं? नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आपस में गाली-गलौच करने वाले दो शख़्स दो शैतान हैं जो आपस में फ़हश गोई करते हैं और एक दूसरे को झूठा कहते हैं। (इब्ने हब्बान)

﴿285﴾ عَنْ أَبِي جُرَيٍّ جَابِرِ بْنِ سُلَيْمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ: اعْهَدْ إِلَيَّ، قَالَ: لَا تَسُبَّنَّ أَحَدًا، قَالَ: فَمَا سَبَبْتُ بَعْدَهُ حُرًّا وَلَا عَبْدًا وَلَا بَعِيْرًا وَلَا شَاةً، قَالَ: وَلَا تَحْقِرَنَّ شَيْئًا مِنَ الْمَعْرُوْفِ وَأَنْ تُكَلِّمَ أَخَاكَ وَأَنْتَ مُنْبَسِطٌ إِلَيْهِ وَجْهُكَ، إِنَّ ذٰلِكَ مِنَ الْمَعْرُوْفِ وَارْفَعْ إِزَارَكَ إِلَى نِصْفِ السَّاقِ، فَإِنْ أَبَيْتَ فَإِلَى الْكَعْبَيْنِ، وَإِيَّاكَ وَإِسْبَالَ الْإِزَارِ فَإِنَّهَا مِنَ الْمَخِيْلَةِ وَإِنَّ اللهَ لَا يُحِبُّ الْمَخِيْلَةَ، وَإِنِ امْرُؤٌ شَتَمَكَ وَعَيَّرَكَ بِمَا يَعْلَمُ فِيْكَ فَلَا تُعَيِّرْهُ بِمَا تَعْلَمُ فِيْهِ فَإِنَّمَا وَبَالُ ذٰلِكَ عَلَيْهِ. (وهو بعض الحديث) رواه ابوداؤد باب ماجاء في اسبال الازار رقم: ٤٠٨٤

285. हज़रत अबू जुरैय्य जाबिर बिन सुलैम ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया : मुझे नसीहत फ़रमा दीजिए! आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कभी किसी को गाली न देना। हज़रत अबू जुरैय्य : फ़रमाते हैं कि उसके बाद से मैंने कभी किसी को गाली नहीं दी, न आज़ाद को, न गुलाम को, न ऊंट को न बकरी को। नीज़ रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : किसी नेकी को भी मामूली समझ कर न छोड़ो

Copyright ©

(यहां तक कि) तुम्हारा अपने भाई से ख़न्दापेशानी से बात करना भी नेकी में दाख़िल है। अपना तहबन्द आधी पिन्डलियों तक ऊंचा रखा करो, अगर इतना ऊंचा न रख सको तो (कम-से-कम) टख़नों तक ऊँचा रखा करो। तहबन्द को टख़नों से नीचे लटकाने से बचो, क्योंकि यह तकब्बुर की बात है और अल्लाह तआ़ला को तकब्बुर नापसन्द है। अगर कोई तुम्हें गाली दे और तुम्हें किसी ऐसी बात पर आ़र दिलाए जो तुम में हो और वह उसे जानता हो तो उसको किसी ऐसी बात पर आ़र न दिलाना जो उसमें हो और तुम उसे जानते हो, इस सूरत में उस आ़र दिलाने का वबाल उसी पर होगा। (अबूदाऊद)

﴾286﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَجُلًا شَتَمَ اَبَابَكْرٍ وَالنَّبِیُّ ﷺ جَالِسٌ، فَجَعَلَ النَّبِیُّ ﷺ يَعْجَبُ وَيَتَبَسَّمُ، فَلَمَّا اَكْثَرَ رَدَّ عَلَيْهِ بَعْضَ قَوْلِهٖ، فَغَضِبَ النَّبِیُّ ﷺ وَقَامَ فَلَحِقَهُ اَبُوْبَكْرٍ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! كَانَ يَشْتِمُنِیْ وَاَنْتَ جَالِسٌ فَلَمَّا رَدَدْتُ عَلَيْهِ بَعْضَ قَوْلِهٖ غَضِبْتَ وَقُمْتَ، قَالَ: اِنَّهُ كَانَ مَعَكَ مَلَكٌ يَرُدُّ عَنْكَ، فَلَمَّا رَدَدْتَ عَلَيْهِ بَعْضَ قَوْلِهٖ وَقَعَ الشَّيْطَانُ فَلَمْ اَكُنْ لِاَقْعُدَ مَعَ الشَّيْطَانِ ثُمَّ قَالَ: يَا اَبَا بَكْرٍ ثَلَاثٌ كُلُّهُنَّ حَقٌّ، مَا مِنْ عَبْدٍ ظُلِمَ بِمَظْلَمَةٍ فَيُغْضِیْ عَنْهَا لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ اِلَّا اَعَزَّ اللهُ بِهَا نَصْرَهُ وَمَا فَتَحَ رَجُلٌ بَابَ عَطِيَّةٍ يُرِيْدُ بِهَا صِلَةً اِلَّا زَادَهُ اللهُ بِهَا كَثْرَةً وَمَا فَتَحَ رَجُلٌ بَابَ مَسْاَلَةٍ يُرِيْدُ بِهَا كَثْرَةً اِلَّا زَادَهُ اللهُ عَزَّوَجَلَّ بِهَا قِلَّةً۔ رواہ احمد ٢/٤٣٦

286. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ तशरीफ़ फ़रमा थे, आपकी मौजूदगी में एक शख़्स ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ؓ को बुरा भला कहा। आप ﷺ (उस शख़्स के मुसलसल बुरा-भला कहने और हज़रत अबूबक्र ؓ के सब्र करने और ख़ामोश रहने पर) ख़ुश होते रहे और तबस्सुम फ़रमाते रहे। फिर जब उस आदमी ने बहुत ही ज़्यादा बुरा भला कहा तो हज़रत अबूबक्र ؓ ने उसकी कुछ बातों का जवाब दे दिया। उस पर रसूलुल्लाह ﷺ नाराज़ होकर वहां से चल दिए। हज़रत अबूबक्र ؓ भी आपके पीछे-पीछे आपके पास पहुंचे और अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! (जब तक) वह शख़्स मुझे बुरा भला कहता रहा, आप वहां तशरीफ़ फ़रमा रहे, फिर जब मैंने उसकी कुछ बातों का जवाब दिया, तो आप नाराज़ होकर उठ गए? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (जब तक तुम ख़ामोश थे और सब्र कर रहे थे) तुम्हारे साथ एक फ़रिश्ता था जो तुम्हारी तरफ़ से जवाब दे रहा था। फिर जब तुमने उसकी कुछ बातों का जवाब दिया, तो (वह फ़रिश्ता चला गया और) शैतान बीच में आ गया और मैं शैतान के साथ नहीं बैठता (लिहाज़ा मैं उठकर चल

Copyright ©

बाद आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अबूबक्र! तीन बातें हैं जो सबकी सब बिल्कुल हक़ हैं। जिस बन्दे पर कोई ज़ुल्म या ज़्यादती की जाती है और वह सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिए उससे दरगुज़र कर देता है (और इंतक़ाम नहीं लेता) तो बदले में अल्लाह तआ़ला उसकी मदद करके उसको क़वी कर देते हैं, जो शख़्स सिलारहमी के लिए देने का दरवाज़ा खोलता है अल्लाह तआ़ला उसके बदले उसको बहुत ज़्यादा देते हैं और जो शख़्स दौलत बढ़ाने के लिए सवाल का दरवाज़ा खोलता है अल्लाह तआ़ला उसकी दौलत को और भी कम कर देते हैं। (मुस्नद अहमद)

﴿287﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مِنَ الْكَبَائِرِ شَتْمُ الرَّجُلِ وَالِدَيْهِ، قَالُوْا: يَارَسُوْلَ اللهِ! وَهَلْ يَشْتِمُ الرَّجُلُ وَالِدَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ، يَسُبُّ اَبَا الرَّجُلِ، فَيَسُبُّ اَبَاهُ، وَيَسُبُّ اُمَّهُ، فَيَسُبُّ اُمَّهُ.

رواه مسلم،باب الكبائر واكبرها، رقم: ٢٦٣

287. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र बिन आ़स رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी का अपने वालिदैन को गाली देना कबीरा गुनाहों में से है। सहाबा رضي الله عنهم ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या कोई अपने मां-बाप को भी गाली दे सकता है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हां! (वह इस तरह कि) आदमी गाली दे, फिर वह जवाब में उसकी मां को गाली दे (इस तरह गोया उसने दूसरे के मां-बाप को गाली देकर ख़ुद ही अपने मां-बाप को गाली दिलवाई)। (मुस्लिम)

﴿288﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: اَللّٰهُمَّ! اِنِّيْ اَتَّخِذُ عِنْدَكَ عَهْدًا لَنْ تُخْلِفَنِيْهِ، فَاِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ، فَاَيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ آذَيْتُهُ، شَتَمْتُهُ، لَعَنْتُهُ، جَلَدْتُهُ، فَاجْعَلْهَا لَهُ صَلَاةً وَزَكَاةً وَقُرْبَةً، تُقَرِّبُهُ بِهَا اِلَيْكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. رواه مسلم،باب من لعنه النبي ﷺ......رقم: ٦٦١٩

288. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने यह दुआ़ फ़रमाई : या अल्लाह! मैं आपसे अ़हद लेता हूं आप उसके ख़िलाफ़ न कीजिएगा। वह यह है कि मैं एक इंसान ही हूं लिहाज़ा जिस किसी मोमिन को मैंने तकलीफ़ दी हो, उसको बुरा भला कह दिया हो, लानत की हो, मारा हो तो आप इन सब चीज़ों को उस मोमिन के लिए रहमत और गुनाहों से पाकी और अपनी ऐसी क़ुरबत का ज़रिया बना दीजिए कि उसकी वजह से आप उसको क़ियामत के दिन अपना क़ुर्ब अ़ता फ़रमा दें। (मुस्लिम)

Copyright ©

﴾289﴿ عَنِ الْمُغِيْرَةِ بْنِ شُعْبَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تَسُبُّوْا الْاَمْوَاتَ فَتُؤْذُوا الْاَحْيَاءَ. رواه الترمذي، باب ماجاء في الشتم، رقم: ١٩٨٢

289. हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा ﵁ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुर्दों को बुरा भला मत कहो कि उससे तुम ज़िन्दों को तकलीफ़ पहुंचाओगे। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि मरने वाले को बुरा-भला कहने से उसके अज़ीज़ों को तकलीफ़ होगी और जिसको बुरा भला कहा गया उसे कोई नुक़सान नहीं होगा।

﴾290﴿ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اُذْكُرُوْا مَحَاسِنَ مَوْتَاكُمْ وَكُفُّوْا عَنْ مَسَاوِيْهِمْ. رواه ابوداؤد، باب في النهي عن سب الموتى، رقم: ٤٩٠٠

290. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﵄ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपने (मुसलमान) मुर्दों की ख़ूबियां ब्यान किया करो और उनकी बुराइयां न ब्यान करो। (अबूदाऊद)

﴾291﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ كَانَتْ لَهُ مَظْلَمَةٌ لِاَخِيْهِ مِنْ عِرْضِهِ اَوْ شَيْءٍ فَلْيَتَحَلَّلْهُ مِنْهُ الْيَوْمَ قَبْلَ اَنْ لَا يَكُوْنَ دِيْنَارٌ وَلَا دِرْهَمٌ، اِنْ كَانَ لَهُ عَمَلٌ صَالِحٌ اُخِذَ مِنْهُ بِقَدْرِ مَظْلَمَتِهِ، وَاِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ حَسَنَاتٌ اُخِذَ مِنْ سَيِّاٰتِ صَاحِبِهِ فَحُمِلَ عَلَيْهِ. رواه البخاري، باب من كانت له مظلمة عند الرجل ...، رقم: ٢٤٤٩

291. हज़रत अबू हुरैरह ﵁ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस आदमी पर भी अपने (दूसरे मुसलमान) भाई का उसकी इज़्ज़त व आबरू से मुताल्लिक़ या किसी और चीज़ से मुताल्लिक़ कोई हक़ हो तो उसे आज ही उस दिन के आने से पहले माफ़ करा ले, जिस दिन न दीनार होंगे, न दिरहम (उस दिन सारा हिसाब नेकियों और गुनाहों से होगा लिहाज़ा) अगर उस ज़ुल्म करने वाले के पास कुछ नेक अमल होंगे तो उसके ज़ुल्म के बक़द्र नेकियां लेकर मज़्लूम को दे दी जाएंगी। अगर उसके पास नेकियां नहीं होंगी, तो मज़्लूम के उतने ही गुनाह उस पर डाल दिए जाएंगे। (बुख़ारी)

﴾292﴿ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَاَرْبَى الرِّبَا اسْتِطَالَةُ الرَّجُلِ فِيْ عِرْضِ اَخِيْهِ. (وهو بعض الحديث) رواه الطبراني في الاوسط وهو حديث صحيح، الجامع الصغير ٢٢/٢

Copyright ©

92. हज़रत बरा बिन आ़ज़िब ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बदतरीन सूद अपने मुसलमान भाई की आबरूरेज़ी करना है (यानी उसकी इज़्ज़त को नुक़सान पहुंचाना है चाहे किसी तरीक़े से हो, मसलन ग़ीबत करना, हक़ीर समझना, रुस्वा करना वग़ैरह-वग़ैरह)। (तबरानी, जामेअ़ सग़ीर)

फ़ायदा : मुसलमान की आबरूरेज़ी को बदतरीन सूद इस वजह से कहा गया है कि जिस तरह सूद में दूसरे के माल को नाजायज़ तरीक़े पर लेकर उसे नुक़सान पहुंचाया जाता है उसी तरह मुसलमान की आबरूरेज़ी करने में उसकी इज़्ज़त को नुक़सान पहुंचाया जाता है और चूंकि मुसलमान की इज़्ज़त उसके माल से ज़्यादा मोहतरम है इस वजह से आबरूरेज़ी को बदतरीन सूद फ़रमाया गया है। (फ़ैज़ुल क़दीर, बज़्लुलमज्हूद)

﴿293﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْـهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ مِنْ اَكْبَرِ الْكَبَائِرِ اسْتِطَالَةَ الْمَرْءِ فِیْ عِرْضِ رَجُلٍ مُسْلِمٍ بِغَيْرِ حَقٍّ (الحديث) رواه ابوداؤد، باب فی الغيبة، رقم: ٤٨٧٧

93. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कबीरा गुनाहों में से एक बड़ा गुनाह किसी मुसलमान की इज़्ज़त पर नाहक़ हमला करना है। (अबूदाऊद)

﴿294﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنِ احْتَكَرَ حُكْرَةً يُرِيْدُ اَنْ يُغْلِیَ بِهَا عَلَی الْمُسْلِمِيْنَ فَهُوَ خَاطِیءٌ.

رواه احمد وفيه: ابو معشر وهو ضعيف وقد وثق، مجمع الزوائد ٤/١٨١

94. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने मुसलमानों पर (ग़ल्ला को) महंगा करने के लिए रोके रखा तो वह गुनहगार है। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿295﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنِ احْتَكَرَ عَلَی الْمُسْلِمِيْنَ طَعَامًا ضَرَبَهُ اللهُ بِالْجُذَامِ وَالْاِفْلَاسِ.

رواه ابن ماجه، باب الحكرة والجلب، رقم: ٢١٥٥

95. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स मुसलमानों को ग़ल्ला (खाने पीने की चीज़ों को)

Copyright ©

रोके रखे, यानी बावजूद ज़रूरत के फ़रोख़्त न करे अल्लाह तआला उस पर कोढ़ औ तंगदस्ती को मुसल्लत फ़रमा देते हैं। (इब्ने माजा)

फ़ायदा : रोकने वाले से वह शख़्स मुराद है जो लोगों की ज़रूरत के वक़्त महंगा के इंतज़ार में ग़ल्ले को रोके रखे, जबकि ग़ल्ला आम तौर पर न मिल रहा हो। (मज़ाहिरे हक़

﴾296﴿ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: إِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: الْمُؤْمِنُ أَخُو الْمُؤْمِنِ، فَلَا يَحِلُّ لِلْمُؤْمِنِ أَنْ يَبْتَاعَ عَلَى بَيْعِ أَخِيْهِ، وَلَا يَخْطُبَ عَلَى خِطْبَةِ أَخِيْهِ حَتَّى يَذَرَ.

رواه مسلم، باب تحريم الخطبة على خطبة اخيه ..... رقم: ٣٤٦٤

296. हज़रत उक़्बा बिन आमिर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन मोमिन का भाई है। ईमान वालों के लिए जायज़ नहीं कि अपने भाई के सौदे पर सौदा करे, और इसी तरह अपने भाई के निकाह के पैग़ाम पर अपने निकाह का पैग़ाम दे। अल्बत्ता पहला पैग़ाम भेजने के बाद अगर उनकी बात ख़त्म हो जाए, तो फिर पैग़ाम भेजने में कोई हर्ज नहीं। (मुस्लिम)

फ़ायदा : सौदे पर सौदा करने के कई मतलब हैं, उनमें एक यह है कि दो आदमियों के दर्मियान सौदा हो चुका हो, फिर तीसरा शख़्स बेचने वाले से यह कहे कि उस शख़्स से सौदे को ख़त्म करके मुझसे सौदा कर लो। (नव्वी)

मामलों में अमल के लिए उलमा किराम से मसाइल मालूम किए जाएं।

निकाह के पैग़ाम पर पैग़ाम देने का मतलब यह है कि एक आदमी ने कहीं निकाह का पैग़ाम दिया हो और लड़की वाले उस पैग़ाम पर माइल हो चुके हों, अब दूसरे शख़्स को (अगर उस निकाह के पैग़ाम का इल्म है तो उस शख़्स को) उस लड़की के लिए निकाह का पैग़ाम नहीं देना चाहिए। (फ़त्हुलमुलहिम)

﴾297﴿ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ حَمَلَ عَلَيْنَا السِّلَاحَ فَلَيْسَ مِنَّا.

(الحديث) رواه مسلم، باب قول النبي ﷺ من حمل علينا السلاح ..... رقم: ٢٨٠

297. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स हम पर हथियार उठाए वह हम में से नहीं। (मुस्लिम)

Copyright ©

﴾298﴿ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَا يُشِيْرُ أَحَدُكُمْ عَلٰى أَخِيْهِ بِالسِّلَاحِ فَإِنَّهُ لَا يَدْرِيْ لَعَلَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ فِيْ يَدِهِ فَيَقَعُ فِيْ حُفْرَةٍ مِنَ النَّارِ.

رواه البخاري،باب قول النبي ﷺ من حمل علينا السلاح فليس منا، رقم: ٧٠٧٢

298. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से कोई शख़्स अपने मुसलमान भाई की तरफ़ हथियार से इशारा न करे, इसलिए कि उसको मालूम नहीं कि कहीं शैतान उसके हाथ से हथियार खींच ले और वह (हथियार इशारे-इशारे में मुसलमान भाई के जा लगे और उसकी सज़ा में वह इशारा करने वाला) जहन्नम में जा गिरे। (बुख़ारी)

﴾299﴿ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ أَبُو الْقَاسِمِ ﷺ: مَنْ أَشَارَ إِلٰى أَخِيْهِ بِحَدِيْدَةٍ، فَإِنَّ الْمَلَائِكَةَ تَلْعَنُهُ حَتّٰى يَدَعَهُ وَإِنْ كَانَ أَخَاهُ لِأَبِيْهِ وَأُمِّهِ.

رواه مسلم،باب النهي عن الاشارة بالسلاح الى مسلم، رقم: ٦٦٦٦

299. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि अबुलक़ासिम मुहम्मद ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की तरफ़ लोहे यानी हथियार वग़ैरह से इशारा करता है उस पर फ़रिश्ते उस वक़्त तक लानत करते रहते हैं, जब तक कि वह उस (लोहे से इशारा करने) को छोड़ नहीं देता, अगरचे वह उसका हक़ीक़ी भाई ही क्यों न हो। (मुस्लिम)

फ़ायदा : मतलब यह है कि अगर कोई शख़्स अपने हक़ीक़ी भाई की तरफ़ लोहे से इशारा करता है तो उसका मतलब यह नहीं होता कि वह उसको क़त्ल करने या नुक़सान पहुंचाने का इरादा रखता है, बल्कि उसका तअल्लुक़ मज़ाक़ से ही हो सकता है मगर उसके बावजूद फ़रिश्ते उस पर लानत भेजते हैं। इस इर्शाद का मक़सद किसी मुसलमान पर इशारतन भी हथियार या लोहे उठाने से सख़्ती के साथ रोकना है। (मज़ाहिरे हक़)

﴾300﴿ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ مَرَّ عَلٰى صُبْرَةِ طَعَامٍ، فَأَدْخَلَ يَدَهُ فِيْهَا، فَنَالَتْ أَصَابِعُهُ بَلَلًا، فَقَالَ: مَا هٰذَا يَا صَاحِبَ الطَّعَامِ؟ قَالَ: أَصَابَتْهُ السَّمَاءُ يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: أَفَلَا جَعَلْتَهُ فَوْقَ الطَّعَامِ كَيْ يَرَاهُ النَّاسُ، مَنْ غَشَّ فَلَيْسَ مِنِّيْ.

رواه مسلم،باب قول النبي ﷺ من غشنا فليس منا، رقم: ٢٨٤

300. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ एक

Copyright ©

के पास से गुज़रे। आप ﷺ ने अपना हाथ मुबारक उस ढ़ेर के अन्दर डाला तो हाथ में कुछ तरी महसूस हुई। आप ﷺ ने ग़ल्ला बेचने वाले से पूछा, यह तरी कैसी है? उसने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ग़ल्ले पर बारिश का पानी पड़ गया था। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुमने भीगे हुए ग़ल्ले के ढेर के ऊपर क्यों नहीं रखा, ताकि ख़रीदने वाले उसको देख सकते। जिसने धोखा दिया, वह मेरा नहीं, (यानी मेरी इत्तिबा करने वाला नहीं)। (मुस्लिम)

﴿301﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ أَنَسٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: مَنْ حَمٰى مُؤْمِنًا مِنْ مُنَافِقٍ، أُرَاهُ قَالَ: بَعَثَ اللهُ مَلَكًا يَحْمِيْ لَحْمَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ نَارِ جَهَنَّمَ، وَمَنْ رَمٰى مُسْلِمًا بِشَيْءٍ يُرِيْدُ شَيْنَهُ بِهٖ حَبَسَهُ اللهُ عَلٰى جِسْرِ جَهَنَّمَ حَتّٰى يَخْرُجَ مِمَّا قَالَ.

رواه ابو داؤد، باب الرجل يذب عن عرض اخيه، رقم: ٤٨٨٣

301. हज़रत मुआज़ बिन अनस जुहनी ؓ नबी करीम ﷺ से रिवायत करते हैं कि जो शख़्स किसी मुसलमान (की इज़्ज़त व आबरू) को मुनाफ़िक़ के शर से बचाता है तो अल्लाह तआला क़ियामत के दिन एक फ़रिश्ता मुक़र्रर फ़रमाएंगे, जो उसके गोश्त यानी जिस्म को (दोज़ख़ की आग से) बचाएगा और जो किसी मुसलमान को बदनाम करने के लिए उस पर कोई इलज़ाम लगाता है तो अल्लाह तआला उसको जहन्नम के पुल पर क़ैद करेगा, यहां तक कि (सज़ा पाकर) अपने इलज़ाम (के गुनाह की गन्दगी) से पाक-साफ़ हो जाए। (अबूदाऊद)

﴿302﴾ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيْدَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ ذَبَّ عَنْ عِرْضِ أَخِيْهِ بِالْغِيْبَةِ كَانَ حَقًّا عَلَى اللهِ أَنْ يُعْتِقَهُ مِنَ النَّارِ.

رواه احمد والطبراني واسناد احمد حسن، مجمع الزوائد ٨/١٧٩

302. हज़रत अस्मा बिन्ते यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की ग़ैरमौजूदगी में उसकी इज़्ज़त व आबरू का बचाव करता है (मसलन ग़ीबत करने वाले को इस हरकत से रोकता है) तो अल्लाह तआला ने अपने ज़िम्मे लिया है कि उसको जहन्नम की आग से आज़ाद फ़रमा दें। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿303﴾ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ رَدَّ عَنْ عِرْضِ أَخِيْهِ الْمُسْلِمِ كَانَ حَقًّا عَلَى اللهِ عَزَّ وَجَلَّ أَنْ يَرُدَّ عَنْهُ نَارَ جَهَنَّمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. رواه احمد ٦/٤٤٩

Copyright ©

303. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की आबरू की हिफ़ाज़त के लिए बचाव करता है, तो अल्लाह तआला ने अपने ज़िम्मे लिया है कि उससे क़ियामत के दिन जहन्नम की आग को हटा देंगे। (मुस्नद अहमद)

﴿304﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ حَالَتْ شَفَاعَتُهُ دُوْنَ حَدٍّ مِنْ حُدُوْدِ اللهِ، فَقَدْ ضَادَّ اللهَ، وَمَنْ خَاصَمَ فِيْ بَاطِلٍ وَهُوَ يَعْلَمُهُ لَمْ يَزَلْ فِيْ سَخَطِ اللهِ حَتّٰى يَنْزِعَ عَنْهُ، وَمَنْ قَالَ فِيْ مُؤْمِنٍ مَالَيْسَ فِيْهِ اَسْكَنَهُ اللهُ رَدْغَةَ الْخَبَالِ حَتّٰى يَخْرُجَ مِمَّا قَالَ. رواه ابوداؤد، باب في الرجل يعين على خصومة......رقم: ٣٥٩٧

304. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स की सिफ़ारिश अल्लाह तआला की हदों में से किसी हद के जारी होने में रोक बन गई (मसलन उसकी सिफ़ारिश की वजह से चोर का हाथ न काटा जा सका) उसने अल्लाह तआला से मुक़ाबला किया। जो शख़्स यह जानते हुए कि वह नाहक़ पर है, झगड़ा करता है तो जब तक वह उस झगड़े को छोड़ न दे अल्लाह तआला की नाराज़गी में रहता है और जो शख़्स मोमिन के बारे में ऐसी बुरी बात कहता है जो उसमें नहीं है अल्लाह तआला उसको दोज़ख़ियों की पीप और ख़ून की कीचड़ में रखेंगे, यहां तक कि वह अपने बोहतान की सज़ा पाकर उस गुनाह से पाक हो जाए। (अबूदाऊद)

﴿305﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تَحَاسَدُوْا، وَلَا تَنَاجَشُوا، وَلَا تَبَاغَضُوْا، وَلَا تَدَابَرُوْا، وَلَا يَبِعْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَيْعِ بَعْضٍ، وَكُوْنُوْا عِبَادَ اللهِ اِخْوَانًا، اَلْمُسْلِمُ اَخُو الْمُسْلِمِ، لَا يَظْلِمُهُ، وَلَا يَخْذُلُهُ، وَلَا يَحْقِرُهُ، اَلتَّقْوٰى هٰهُنَا، وَيُشِيْرُ اِلٰى صَدْرِهٖ ثَلَاثَ مِرَارٍ: بِحَسْبِ امْرِئٍ مِنَ الشَّرِّ اَنْ يَحْقِرَ اَخَاهُ الْمُسْلِمَ، كُلُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ حَرَامٌ، دَمُهُ وَمَالُهُ وَعِرْضُهُ.

رواه مسلم، باب تحريم ظلم المسلم، رقم: ٦٥٤١

305. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक दूसरे से हसद न करो, ख़रीद व फ़रोख़्त में ख़रीदारी की नीयत के बग़ैर महज़ धोखा देने के लिए बोली में इज़ाफ़ा न करो, एक दूसरे से बुग़्ज़ न रखो, एक दूसरे से बेरुख़ी अख़्तियार न करो और तुम में से कोई दूसरे के सौदे पर सौदा न करे। अल्लाह के बन्दे बनकर भाई-भाई हो जाओ। मुसलमान-मुसलमान का भाई है, न उस पर

Copyright ©

ज़्यादती करता है और (अगर कोई दूसरा उस पर ज़्यादती करे) तो उसको बे यार व मददगार नहीं छोड़ता और न उसको हक़ीर समझता है (इस मौक़े पर रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने मुबारक सीने की तरफ़ इशारा करके तीन मर्तबा इर्शाद फ़रमाया) तक़्वा यहां होता है। इंसान के बुरा होने के लिए इतना काफ़ी है कि वह अपने मुसलमान भाई को हक़ीर समझे। मुसलमान का ख़ून उसका माल, उसकी इज़्ज़त व आबरू दूसरे मुसलमान के लिए हराम है। (मुस्लिम)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ के इस इर्शाद ''तक़्वा यहां होता है'' का मतलब यह है कि तक़्वा जो अल्लाह तआला के ख़ौफ़ और आख़िरत के हिसाब की फ़िक्र का नाम है वह दिल के अन्दर की एक कैफ़ियत है, ऐसी चीज़ नहीं है जिसे कोई दूसरा आदमी आंखों से देखकर मालूम कर सके कि उस आदमी में तक़्वा है या नहीं है। इसलिए किसी मुसलमान को हक़ नहीं कि वह दूसरे मुसलमान को हक़ीर समझे। क्या ख़बर जिसको ज़ाहिरी मालूमात से हक़ीर समझा जा रहा है, उसके दिल में तक़्वा हो और वह अल्लाह तआला के नज़दीक बड़ी इज़्ज़त वाला हो। (मआरिफ़ुल हदीस)

﴿306﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللہُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: اِیَّاکُمْ وَالْحَسَدَ، فَاِنَّ الْحَسَدَ یَاْکُلُ الْحَسَنَاتِ کَمَا تَاْکُلُ النَّارُ الْحَطَبَ، اَوْ قَالَ: الْعُشْبَ.

رواہ ابوداؤد،باب فی الحسد،رقم: ۴۹۰۳

306. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हसद से बचो। हसद आदमी की नेकियों को इस तरह खा जाता है जिस तरह आग लकड़ी को खा जाती है, या फ़रमाया घास को खा जाती है। (अबूदाऊद)

﴿307﴾ عَنْ اَبِیْ حُمَیْدٍ السَّاعِدِیِّ رَضِیَ اللہُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: لَا یَحِلُّ لِامْرِیءٍ اَنْ یَاْخُذَ عَصَا اَخِیْهِ بِغَیْرِ طِیْبِ نَفْسٍ مِنْهُ. رواہ ابن حبان، قال المحقق: اسنادہ صحیح ۳۱۶/۱۳

307. हज़रत अबू हुमैद साइदी ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : किसी शख़्स के लिए अपने भाई की लाठी (जैसी छोटी चीज़ भी) उसकी रज़ामन्दी के बग़ैर लेना जायज़ नहीं। (इब्ने हब्बान)

﴿308﴾ عَنْ یَزِیْدَ رَضِیَ اللہُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ النَّبِیَّ ﷺ یَقُوْلُ: لَا یَاْخُذَنَّ اَحَدُکُمْ مَتَاعَ اَخِیْهِ لَاعِبًا وَلَا جَادًّا. (الحدیث) رواہ ابوداؤد،باب من یاخذ الشیء من مزاح، رقم: ۵۰۰۳

Copyright ©

308. हज़रत यज़ीद ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : तुममें से कोई शख़्स अपने भाई के सामान को न मज़ाक़ में ले और न हक़ीक़त में (बिला इजाज़त) ले। (अबूदाऊद)

﴿309﴾ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ اَبِیْ لَیْلٰی رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: حَدَّثَنَا اَصْحَابُ مُحَمَّدٍ ﷺ اَنَّهُمْ كَانُوْا یَسِیْرُوْنَ مَعَ النَّبِیِّ ﷺ فَنَامَ رَجُلٌ مِنْهُمْ فَانْطَلَقَ بَعْضُهُمْ اِلٰی حَبْلٍ مَعَهُ فَاَخَذَهُ فَفَزِعَ، فَقَالَ النَّبِیُّ ﷺ: لَا یَحِلُّ لِمُسْلِمٍ اَنْ یُرَوِّعَ مُسْلِمًا.

رواه ابوداؤد، باب من ياخذ الشئ من مزاح، رقم: ٥٠٠٤

309. हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू लैला रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि हमें नबी करीम ﷺ के सहाबा ने यह क़िस्सा सुनाया कि वह एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ के साथ जा रहे थे कि उनमें से एक सहाबी को नींद आ गई। दूसरे आदमी ने जाकर (मज़ाक़ में) उसकी रस्सी ले ली (जब सोने वाले की आंख खुली और उसे अपनी रस्सी नज़र नहीं आई) तो वह परेशान हो गया। उस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : किसी मुसलमान को यह हलाल नहीं है कि वह किसी मुसलमान को डराए। (अबूदाऊद)

﴿310﴾ عَنْ بُرَیْدَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قَتْلُ الْمُؤْمِنِ اَعْظَمُ عِنْدَ اللهِ مِنْ زَوَالِ الدُّنْیَا.

رواه النسائي، باب تعظيم الدم، رقم: ٣٩٩٥

310. हज़रत बुरैदा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन का क़त्ल किया जाना अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सारी दुनिया के ख़त्म हो जाने से ज़्यादा बड़ी बात है। (नसई)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जैसे दुनिया का ख़त्म हो जाना लोगों के नज़दीक बहुत बड़ी बात है अल्लाह तआ़ला के नज़दीक मोमिन का क़त्ल करना उससे भी ज़्यादा बड़ी बात है।

﴿311﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ الْخُدْرِیِّ وَ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا یَذْكُرَانِ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: لَوْ اَنَّ اَهْلَ السَّمَاءِ وَاَهْلَ الْاَرْضِ اشْتَرَكُوْا فِیْ دَمِ مُؤْمِنٍ لَاَكَبَّهُمُ اللهُ فِی النَّارِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب، باب الحكم في الدماء، رقم: ١٣٩٨

311. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी और हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद

Copyright ©

नक़ल फ़रमाते हैं कि अगर आसमान व ज़मीन वाले सबके सब किसी मोमिन के क़त्ल करने में शरीक हो जाएं, तो भी अल्लाह तआला इन सबको औंधे मुंह जहन्नम में डाल देंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿312﴾ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ : كُلُّ ذَنْبٍ عَسَى اللهُ أَنْ يَغْفِرَهُ إِلَّا مَنْ مَاتَ مُشْرِكًا، أَوْ مُؤْمِنٌ قَتَلَ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا.

رواه ابوداؤد،باب فى تعظيم قتل المؤمن،رقم: ٤٢٧٠

312. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : हर गुनाह के बारे में यह उम्मीद है कि अल्लाह तआला उसे माफ़ फ़रमा देंगे सिवाए उस शख़्स के (गुनाह के), जो शिर्क की हालत में मरा हो या उस मुसलमान के (गुनाह के) जिसने किसी मुसलमान को जान-बूझ कर क़त्ल किया हो। (अबूदाऊद)

﴿313﴾ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا فَاغْتَبَطَ بِقَتْلِهِ لَمْ يَقْبَلِ اللهُ مِنْهُ صَرْفًا وَلَا عَدْلًا. رواه ابوداؤد، باب فى تعظيم قتل المؤمن،رقم: ٤٢٧٠ سنن ابى داؤد،طبع دار الباز مكة المكرمة

313. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने किसी मोमिन को क़त्ल किया और उसके क़त्ल पर ख़ुशी का इज़्हार किया अल्लाह तआला उसके न फ़र्ज़ क़ुबूल फ़रमाएंगे, न नफ़्ल। (अबूदाऊद)

﴿314﴾ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ : إِذَا تَوَاجَهَ الْمُسْلِمَانِ بِسَيْفَيْهِمَا، فَالْقَاتِلُ وَالْمَقْتُوْلُ فِي النَّارِ قَالَ: فَقُلْتُ أَوْقِيْلَ: يَارَسُوْلَ اللهِ! هٰذَا الْقَاتِلُ، فَمَا بَالُ الْمَقْتُوْلِ؟ قَالَ: إِنَّهُ قَدْ أَرَادَ قَتْلَ صَاحِبِهِ.

رواه مسلم،باب اذا تواجه المسلمان بسيفيهما،رقم: ٧٢٥٢

314. हज़रत अबूबक्र: ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब दो मुसलमान अपनी तलवारें लेकर एक दूसरे के सामने आएं (और उनमें से एक दूसरे को क़त्ल कर दे) तो क़ातिल और मक़्तूल दोनों (दोज़ख़ की) आग में होंगे। हज़रत अबूबक्र: ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने या किसी और ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क़ातिल का दोज़ख़ में जाना तो ज़ाहिर है, लेकिन मक़्तूल (दोज़ख़ में

Copyright ©

क्यों जाएगा? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इसलिए कि उसने भी तो अपने साथी को क़त्ल करने का इरादा किया था। (मुस्लिम)

﴿315﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الْكَبَائِرِ قَالَ: اَلْاِشْرَاكُ بِاللهِ، وَعُقُوْقُ الْوَالِدَيْنِ، وَقَتْلُ النَّفْسِ، وَشَهَادَةُ الزُّوْرِ.

رواه البخاري، باب ماقيل في شهادة الزور، رقم: ٢٦٥٣

315. हज़रत अनस ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ से कबीरा गुनाहों के बारे में दरयाफ़्त किया गया (कि वह कौन-कौन से हैं?) आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के साथ शिर्क करना, मां-बाप की नाफ़रमानी करना, क़त्ल करना और झूठी गवाही देना। (बुख़ारी)

﴿316﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُوْبِقَاتِ قَالُوْا: يَارَسُوْلَ اللهِ! وَمَا هُنَّ؟ قَالَ: الشِّرْكُ بِاللهِ، وَالسِّحْرُ، وَقَتْلُ النَّفْسِ الَّتِيْ حَرَّمَ اللهُ اِلَّا بِالْحَقِّ، وَاَكْلُ الرِّبَا، وَ اَكْلُ مَالِ الْيَتِيْمِ، وَ التَّوَلِّيْ يَوْمَ الزَّحْفِ، وَقَذْفُ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ الْغَافِلَاتِ.

رواه البخاري،باب قول الله تعالى: ان الذين ياكلون اموال اليتامى......،رقم: ٢٧٦٦

316. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सात हलाक कर देने वाले गुनाहों से बचो। सहाबा किराम : ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! वे सात गुनाह कौन से हैं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक करना, जादू करना,नाहक़ किसी को क़त्ल करना, सूद खाना, यतीम का माल खाना, (अपनी जान बचाने के लिए) जिहाद में इस्लामी लशकर का साथ छोड़कर भाग जाना और पाक दामन, ईमान वाली और बुरी बातों से बेख़बर औरतों पर ज़िना की तोहमत लगाना। (बुख़ारी)

﴿317﴾ عَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الْاَسْقَعِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تُظْهِرِ الشَّمَاتَةَ لِاَخِيْكَ، فَيَرْحَمَهُ اللهُ وَيَبْتَلِيْكَ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب،باب لا تظهر الشماتة لاخيك،رقم: ٢٥٠٦

317. हज़रत वासिला बिन अस्क़अ् ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम अपने भाई की किसी मुसीबत पर ख़ुशी का इज़हार न किया करो। हो सकता है कि अल्लाह तआला उस पर रहम फ़रमा कर उसको उस मुसीबत से नजात दे दें और तुम को मुसीबत में मुब्तला कर दें। (तिर्मिज़ी)

Copyright ©

﴿318﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ عَيَّرَ أَخَاهُ بِذَنْبٍ لَمْ يَمُتْ حَتّٰى يَعْمَلَهُ، قَالَ أَحْمَدُ: قَالُوْا: مِنْ ذَنْبٍ قَدْ تَابَ مِنْهُ.

رواه الترمذي وقال: حديث حسن غريب،باب في وعيد من عيّر أخاه بذنب، رقم: ٢٥٠٥

318. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने अपने (मुसलमान) भाई को किसी ऐसे गुनाह पर आर दिलाई, जिससे वह तौबा कर चुका हो तो वह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक ख़ुद उस गुनाह में मुब्तला न हो जाए। (तिर्मिज़ी)

﴿319﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: أَيُّمَا امْرِئٍ قَالَ لِأَخِيْهِ: يَا كَافِرُ! فَقَدْ بَاءَ بِهَا أَحَدُهُمَا، إِنْ كَانَ كَمَا قَالَ، وَإِلَّا رَجَعَتْ عَلَيْهِ.

رواه مسلم،باب بيان حال ايمان...،رقم: ٢١٦

319. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने अपने मुसलमान भाई को "ऐ काफ़िर" कहा तो कुफ़्र उन दोनों में से एक की तरफ़ ज़रूर लौटेगा। अगर वह शख़्स वाक़ई काफ़िर हो गया था जैसा कि उसने कहा तो ठीक है वरना कुफ़्र कहने वाले की तरफ़ लौट जाएगा। (मुस्लिम)

﴿320﴾ عَنْ أَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: وَمَنْ دَعَا رَجُلًا بِالْكُفْرِ أَوْقَالَ: عَدُوَّ اللّٰهِ! وَلَيْسَ كَذٰلِكَ إِلَّا حَارَ عَلَيْهِ.

(وهو جزء من الحديث) رواه مسلم،باب بيان حال ايمان...،رقم: ٢١٧

320. हज़रत अबूज़र ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिसने किसी शख़्स को काफ़िर या "अल्लाह का दुश्मन" कहकर पुकारा, हालांकि वह ऐसा नहीं है तो उसका कहा हुआ ख़ुद उस पर लौट आता है। (मुस्लिम)

﴿321﴾ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: إِذَا قَالَ الرَّجُلُ لِأَخِيْهِ: يَا كَافِرُ! فَهُوَ كَقَتْلِهِ.

رواه البزار و رجاله ثقات،مجمع الزوائد ١٤١/٨

321. हज़रत इमरान बिन हुसैन ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब किसी शख़्स ने अपने भाई को "ऐ काफ़िर" कहा तो यह उसको क़त्ल करने की तरह है। (बज़्ज़ार, मजमउज़्ज़वाइद)

Copyright ©

﴿322﴾ عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَا يَنْبَغِيْ لِلْمُؤْمِنِ اَنْ يَكُوْنَ لَعَّانًا۔ رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب باب ماجاء في اللعن والطعن رقم: ٢٠١٩

322. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन के लिए मुनासिब नहीं कि वह लानत-मलामत करने वाला हो। (तिर्मिज़ी)

﴿323﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَايَكُوْنُ اللَّعَّانُوْنَ شُفَعَاءَ وَلَا شُهَدَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ۔ رواه مسلم، باب النهي عن لعن الدواب وغيرها، رقم: ٦٦١٠

323. हज़रत अबुद्दर्दा رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ज़्यादा लानत करने वाले क़ियामत के दिन न (गुनहगारों के) सिफ़ारशी बन सकेंगे और न (अम्बिया अलैहिस्सलाम की तब्लीग़ के) गवाह बन सकेंगे। (मुस्लिम)

﴿324﴾ عَنْ ثَابِتِ بْنِ الضَّحَّاكِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَعْنُ الْمُؤْمِنِ كَقَتْلِهِ.

(وهو جزء من الحديث) رواه مسلم، باب بيان غلظ تحريم قتل الانسان نفسه ..... رقم: ٣٠٢

324. हज़रत साबित बिन ज़हहाक رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन पर लानत करना (गुनाह के एतबार से) उसको क़त्ल करने की तरह है। (मुस्लिम)

﴿325﴾ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ غَنْمٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ: خِيَارُ عِبَادِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ اِذَا رُؤُوْا ذُكِرَ اللّٰهُ، وَشِرَارُ عِبَادِ اللّٰهِ الْمَشَّاءُوْنَ بِالنَّمِيْمَةِ، الْمُفَرِّقُوْنَ بَيْنَ الْاَحِبَّةِ الْبَاغُوْنَ لِلْبُرَآءِ الْعَنَتَ۔

رواه احمد وفيه شهر بن حوشب وثقه غير واحد وبقية رجاله رجال الصحيح مجمع الزوائد ٨/١٧٦

325. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ग़न्म رضي الله عنه से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के बेहतरीन बन्दे वे हैं जिनको देखकर अल्लाह तआला याद आए और बदतरीन बन्दे चुग़लियां खाने वाले, दोस्तों में जुदाई डालने वाले और अल्लाह तआला के पाक दामन बन्दों को किसी गुनाह या किसी परेशानी में मुब्तला करने की कोशिश में लगे रहने वाले हैं। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿326﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: مَرَّ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ عَلٰى قَبْرَيْنِ فَقَالَ: اِنَّهُمَا لَيُعَذَّبَانِ وَمَا يُعَذَّبَانِ فِيْ كَبِيْرٍ، اَمَّا هٰذَا فَكَانَ لَا يَسْتَتِرُ مِنْ بَوْلِهِ، وَاَمَّا هٰذَا فَكَانَ

Copyright ©

يَمْشِيْ بِالنَّمِيْمَةِ. (الحديث) رواه البخاري،باب الغيبة......رقم: ٦٠٥٢

326. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ दो क़ब्रों के पास से गुज़रे, तो आपने इर्शाद फ़रमाया : इन दोनों क़ब्र वालों को अज़ाब हो रहा है और अज़ाब भी किसी बड़ी चीज़ पर नहीं हो रहा (कि जिससे बचना मुश्किल हो) उनमें से एक तो पेशाब की छींटों से नहीं बचता था और दूसरा चुग़लख़ोरी करता था। (बुख़ारी)

﴿327﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَمَّا عُرِجَ بِيْ مَرَرْتُ بِقَوْمٍ لَهُمْ أَظْفَارٌ مِنْ نُحَاسٍ يَخْمِشُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَصُدُوْرَهُمْ، فَقُلْتُ: مَنْ هٰؤُلَاءِ يَا جِبْرِيْلُ؟ قَالَ: هٰؤُلَاءِ الَّذِيْنَ يَأْكُلُوْنَ لُحُوْمَ النَّاسِ وَيَقَعُوْنَ فِيْ أَعْرَاضِهِمْ.

رواه ابوداؤد،باب في الغيبة، رقم: ٤٨٧٨

327. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब मैं म'राज पर गया तो मेरा गुज़र कुछ ऐसे लोगों पर हुआ जिनके नाख़ून तांबे के थे, जिनसे ये अपने चेहरों और सीनों को नोच-नोच कर ज़ख़्मी कर रहे थे। मैंने जिबरील से पूछा कि ये कौन लोग हैं? जिबरील ने बताया कि ये लोग इंसानों का गोश्त खाया करते थे, यानी उनकी ग़ीबतें करते थे और उनकी आबरूरेज़ी किया करते थे। (अबूदाऊद)

﴿328﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَارْتَفَعَتْ رِيْحٌ مُنْتِنَةٌ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَتَدْرُوْنَ مَا هٰذِهِ الرِّيْحُ؟ هٰذِهِ رِيْحُ الَّذِيْنَ يَغْتَابُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ.

رواه احمد ورجاله ثقات،مجمع الزوائد٨/١٧٢

328. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि हम नबी करीम ﷺ के साथ थे कि एक बदबू उठी। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जानते हो यह बदबू किसकी है? यह बदबू उन लोगों की है जो मुसलमानों की ग़ीबत करते हैं। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿329﴾ عَنْ أَبِيْ سَعِيْدٍ وَجَابِرِ بْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ قَالَا: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْغِيْبَةُ أَشَدُّ مِنَ الزِّنَا قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! وَكَيْفَ الْغِيْبَةُ أَشَدُّ مِنَ الزِّنَا؟ قَالَ: إِنَّ الرَّجُلَ لَيَزْنِيْ فَيَتُوْبُ فَيَتُوْبُ اللهُ عَلَيْهِ وَإِنَّ صَاحِبَ الْغِيْبَةِ لَا يُغْفَرُ لَهُ حَتّٰى يَغْفِرَهَا لَهُ صَاحِبُهُ.

رواه البيهقي في شعب الايمان ٥/٣٠٦

Copyright ©

329. हज़रत अबू साद और हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ग़ीबत करना ज़िना से ज़्यादा (बुरा) है। सहाबा : ने अ़र्ज किया : या रसूलुल्लाह! ग़ीबत करना ज़िना से ज़्यादा (बुरा) कैसे है? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी अगर ज़िना कर लेता है तो तौबा कर लेता है अल्लाह तआ़ला उसकी तौबा क़ुबूल फ़रमा लेते हैं। मगर ग़ीबत करने वाले को जब तक वह शख़्स माफ़ न कर दे, जिसकी उसने ग़ीबत की है उस वक़्त तक अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उसे माफ़ नहीं किया जाता। (बैहक़ी)

﴿330﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قُلْتُ لِلنَّبِيِّ ﷺ: حَسْبُكَ مِنْ صَفِيَّةَ كَذَا وَكَذَا، تَعْنِي قَصِيْرَةً. فَقَالَ: لَقَدْ قُلْتِ كَلِمَةً لَوْ مُزِجَ بِهَا الْبَحْرُ لَمَزَجَتْهُ، قَالَتْ: وَحَكَيْتُ لَهُ إِنْسَانًا، فَقَالَ: مَا أُحِبُّ أَنِّي حَكَيْتُ إِنْسَانًا وَإِنَّ لِي كَذَا وَكَذَا.

رواه ابوداؤد، باب في الغيبة، رقم: ٤٨٧٥

330. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ से कहा : बस आपको तो सफ़ीया का पस्ता क़द होना काफ़ी है। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुमने ऐसा जुम्ला कहा कि अगर इस जुम्ले को समुंदर में मिला दिया जाए तो इस जुम्ले की कड़वाहट समुंदर की नमकीनी पर ग़ालिब आ जाए। हज़रत आइशा : यह भी फ़रमाती हैं कि एक मौक़ा पर मैंने आप ﷺ के सामने एक शख़्स की नक़ल उतारी तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे इतना-इतना यानी बहुत ज़्यादा माल भी मिले तब भी मुझे पसन्द नहीं कि किसी की नक़ल उतारूं। (अबूदाऊद)

﴿331﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: أَتَدْرُوْنَ مَا الْغِيْبَةُ؟ قَالُوا: اللهُ وَرَسُوْلُهُ أَعْلَمُ قَالَ: ذِكْرُكَ أَخَاكَ بِمَا يَكْرَهُ قِيْلَ: أَفَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ فِي أَخِي مَا أَقُوْلُ؟ قَالَ: إِنْ كَانَ فِيْهِ مَا تَقُوْلُ، فَقَدِ اغْتَبْتَهُ، وَإِنْ لَمْ يَكُنْ فِيْهِ فَقَدْ بَهَتَّهُ.

رواه مسلم، باب تحريم الغيبة، رقم: ٦٥٩٣

331. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम जानते हो कि ग़ीबत किसको कहते हैं? सहाबा : ने अ़र्ज़ किया : अल्लाह और उसके रसूल ही ज़्यादा जानते हैं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपने (मुसलमान) भाई (की ग़ैरमौजूदगी में उस) के बारे में ऐसी बात कहना, जो उसे नागवार गुज़रे (बस यही ग़ीबत है) किसी ने अ़र्ज़ किया : अगर मैं अपने भाई की कोई ऐसी बुराई ज़िक्र करूं जो वाक़ई उसमें हो (तो क्या यह भी ग़ीबत है)? आप ﷺ

Copyright ©

ने इर्शाद फ़रमाया : अगर वह बुराई जो तुम ब्यान कर रहे हो उसमें मौजूद है तो तुमने उसकी ग़ीबत की, और अगर वह बुराई (जो तुम ब्यान कर रहे हो) उसमें मौजूद ही न हो तो फिर तुमने उस पर बोहतान बांधा। (मुस्लिम)

﴿332﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ ذَكَرَ امْرَأً بِشَيْءٍ لَيْسَ فِيْهِ لِيَعِيْبَهُ بِهِ حَبَسَهُ اللهُ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ حَتّٰى يَاْتِيَ بِنَفَاذِ مَا قَالَ فِيْهِ.

رواه الطبراني في الكبير ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٤/٣٦٣

332. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी को बदनाम करने के लिए उसमें ऐसी बुराई ब्यान करे जो उसमें न हो तो अल्लाह तआला उसे दोज़ख़ की आग में क़ैद रखेगा, यहां तक कि वह उस बुराई को साबित कर दे (और कैसे साबित कर सकेगा?)। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿333﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ اَنْسَابَكُمْ هٰذِهِ لَيْسَتْ بِسِبَابٍ عَلٰى اَحَدٍ، وَاِنَّمَا اَنْتُمْ وَلَدُ آدَمَ طَفُّ الصَّاعِ لَمْ تَمْلَؤُوْهُ لَيْسَ لِاَحَدٍ فَضْلٌ اِلَّا بِالدِّيْنِ، اَوْ عَمَلٍ صَالِحٍ حَسْبُ الرَّجُلِ اَنْ يَكُوْنَ فَاحِشًا بَذِيًّا بَخِيْلًا جَبَانًا.

رواه احمد ٤/١٤٥

333. हज़रत उक़्बा बिन आमिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नसब कोई ऐसी चीज़ नहीं है, जिसकी वजह से तुम किसी को बुरा कहो और आर दिलाओ। तुम सबके सब आदम की औलाद हो। तुम्हारी मिसाल उस साअ् (यानी पैमाने) की तरह है, जिसको तुमने भरा न हो, यानी कोई भी तुम में कामिल नहीं है, हर एक में कुछ न कुछ नुक़्स है। (तुममें से) किसी को किसी पर फ़ज़ीलत नहीं है अलबत्ता दीन या नेक अमल की वजह से एक दूसरे पर फ़ज़ीलत है। आदमी (के बुरा होने) के लिए यह बहुत है कि वह फ़हश, बेहूदा बातें करने वाला, बख़ील और बुज़दिल हो। (मुस्नद अहमद)

﴿334﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: اسْتَاْذَنَ رَجُلٌ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: بِئْسَ ابْنُ الْعَشِيْرَةِ، اَوْ بِئْسَ رَجُلُ الْعَشِيْرَةِ، ثُمَّ قَالَ: ائْذَنُوْا لَهُ، فَلَمَّا دَخَلَ اَلَانَ لَهُ الْقَوْلَ، فَقَالَتْ عَائِشَةُ: يَارَسُوْلَ اللهِ! اَلَنْتَ لَهُ الْقَوْلَ وَقَدْ قُلْتَ لَهُ مَاقُلْتَ، قَالَ: اِنَّ شَرَّ النَّاسِ مَنْزِلَةً عِنْدَ اللهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَنْ وَدَعَهُ، اَوْ تَرَكَهُ النَّاسُ لِاتِّقَاءِ فُحْشِهِ.

رواه ابوداؤد، باب في حسن العشرة، رقم: ٤٧٩١

Copyright ©

334. हज़रत आइशा ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स ने नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होने की इजाज़त चाही। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह अपनी क़ौम का बुरा आदमी है, फिर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसको आने की इजाज़त दे दो। जब वह आ गया तो आप ﷺ ने उससे नर्मी से गुफ़्तगू फ़रमाई। उसके जाने के बाद हज़रत आइशा ؓ ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आपने तो उस शख़्स से बड़ी नर्मी से बात की, जबकि पहले आपने उसी के बारे में फ़रमाया था (कि वह अपने क़बीले का बहुत बुरा आदमी है) आप ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन अल्लाह तआला के नज़दीक बदतरीन दर्जे वाला वह शख़्स होगा जिसकी बदकलामी की वजह से लोग उससे मिलना जुलना छोड़ दें। (अबूदाऊद)

**फ़ायदा :** रसूलुल्लाह ﷺ ने आने वाले शख़्स के हक़ में मज़म्मत के जो अल्फ़ाज़ फ़रमाए उसका मक़सद हक़ीक़ते हाल से बाख़बर फ़रमा कर उस शख़्स के फ़रेब से लोगों को बचाना मक़सूद था लिहाज़ा यह ग़ीबत में दाख़िल नहीं और आप ﷺ का उस शख़्स के आने पर नर्मी से गुफ़्तगू करना इस बात की तालीम के लिए था कि ऐसे लोगों के साथ सुलूक किस तरह करना चाहिए, उसमें उसकी इस्लाह का पहलू भी आता है। (मज़ाहिरे हक़)

﴿335﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الْمُؤْمِنُ غِرٌّ كَرِيْمٌ، وَالْفَاجِرُ خَبٌّ لَئِيْمٌ. رواه ابوداؤد باب في حسن العشرة، رقم: ٤٧٩٠

335. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन भोला भाला शरीफ़ होता है और फ़ासिक़ धोखेबाज़ कमीना होता है। (अबूदाऊद)

**फ़ायदा :** हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि मोमिन की तबीयत में चालबाज़ी और मक्कारी नहीं होती, वह लोगों को तकलीफ़ पहुंचाने और उसके बारे में बदगुमानी करने से अपनी तबई शराफ़त की वजह से दूर रहता है। उसके बरख़िलाफ़ फ़ासिक़ की तबीयत ही में धोखादही और मक्कारी होती है, फ़ित्ना-फ़साद फैलाना ही उसकी आदत होती है। (तर्जमानुस्सुन्नः)

﴿336﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ آذَى مُسْلِمًا فَقَدْ آذَانِي، وَمَنْ آذَانِي فَقَدْ آذَى اللهَ. رواه الطبراني في الاوسط وهو حديث حسن فيض القدير ٦/١٩

336. हज़रत अनस ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया :

Copyright ©

जिसने किसी मुसलमान को तकलीफ़ दी उसने मुझे तकलीफ़ दी और जिसने मुझे तकलीफ़ दी, उसने यक़ीनन अल्लाह तआला को तकलीफ़ दी, यानी अल्लाह तआला को नाराज़ किया। (तबरानी, जामेअ् सग़ीर)

﴾337﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ أَبْغَضَ الرِّجَالِ إِلَى اللهِ الْأَلَدُّ الْخَصِمُ. رواه مسلم، باب في الألد الخصم، رقم: ٦٧٨٠

337. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे ज़्यादा नापसन्दीदा शख़्स वह है जो सख़्त झगड़ालू हो। (मुस्लिम)

﴾338﴿ عَنْ أَبِيْ بَكْرٍ الصِّدِّيْقِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَلْعُوْنٌ مَنْ ضَارَّ مُؤْمِنًا أَوْ مَكَرَ بِهِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب، باب ماجاء في الخيانة والغش، رقم: ١٩٤١

338. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी मुसलमान को नुक़सान पहुंचाए या उसको धोखा दे, वह मलऊन है। (तिर्मिज़ी)

﴾339﴿ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ وَقَفَ عَلَى أُنَاسٍ جُلُوْسٍ فَقَالَ: أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِكُمْ مِنْ شَرِّكُمْ؟ قَالَ: فَسَكَتُوْا، فَقَالَ ذٰلِكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، فَقَالَ رَجُلٌ: بَلَى يَارَسُوْلَ اللهِ! أَخْبِرْنَا بِخَيْرِنَا مِنْ شَرِّنَا، قَالَ: خَيْرُكُمْ مَنْ يُرْجَى خَيْرُهُ وَيُؤْمَنُ شَرُّهُ، وَشَرُّكُمْ مَنْ لَا يُرْجَى خَيْرُهُ وَلَا يُؤْمَنُ شَرُّهُ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب حديث خيركم من يرجى خيره ..... رقم: ٢٢٦٣

339. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि कुछ लोग बैठे हुए थे। रसूलुल्लाह ﷺ उनके पास आकर खड़े हुए और इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि तुम में भला शख़्स कौन है और बुरा कौन? हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं, सहाबा : ख़ामोश रहे। आपने तीन मर्तबा यही इर्शाद फ़रमाया। उस पर एक शख़्स ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ज़रूर बताइए कि हम में भला कौन है और बुरा कौन? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम में सबसे भला शख़्स वह है जिससे भलाई की उम्मीद की जाए और उससे बुराई का ख़तरा न हो और तुम में सबसे बुरा शख़्स वह है

Copyright ©

जिससे भलाई की उम्मीद न हो और बुराई का हर वक़्त ख़तरा लगा रहे। (तिर्मिज़ी)

﴿340﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اثْنَتَانِ فِی النَّاسِ هُمَا بِهِمْ كُفْرٌ: الطَّعْنُ فِی النَّسَبِ وَالنِّیَاحَةُ عَلَی الْمَیِّتِ.

رواه مسلم،باب اطلاق اسم الكفر على الطعن.....،رقم: ۲۲۷

340. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगों में दो बातें कुफ़्र की हैं : नसब में तान करना और मुर्दों पर नौहा करना। (मुस्लिम)

﴿341﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: لَا تُمَارِ اَخَاكَ وَلَا تُمَازِحْهُ وَلَا تَعِدْهُ مَوْعِدًا فَتُخْلِفَهُ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب،باب ماجاء في المراء،رقم: ۱۹۹۵

341. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपने भाई से झगड़ा न करो और न उससे (ऐसा) मज़ाक़ करो (जिससे उसको तकलीफ़ पहुंचे) और न ऐसा वादा करो जिसको पूरा न कर सको। (तिर्मिज़ी)

﴿342﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: آیَةُ الْمُنَافِقِ ثَلَاثٌ: اِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَاِذَا وَعَدَ اَخْلَفَ، وَاِذَا اؤْتُمِنَ خَانَ. رواه مسلم،باب خصال المنافق،رقم: ۲۱۱

342. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां हैं। जब बात करे तो झूठ बोले, वादा करे तो उसको पूरा न करे और जब उसके पास अमानत रखवाई जाए, तो ख़्यानत करे। (मुस्लिम)

﴿343﴾ عَنْ حُذَیْفَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِیَّ ﷺ یَقُوْلُ: لَا یَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَتَّاتٌ.

رواه البخاري،باب مايكره من النميمة،رقم: ۶۰۵۶

343. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : चुग़लख़ोर जन्नत में दाख़िल न हो सकेगा। (बुख़ारी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि चुग़लख़ोरी की आदत उन संगीन गुनाहों में से है, जो जन्नत के दाख़िले में रुकावट बनने वाले हैं। कोई आदमी इस गन्दी आदत के साथ जन्नत में दाख़िल न हो सकेगा। हां, अगर अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से किसी को माफ़ करके या इस जुर्म की सज़ा देकर

Copyright ©

उसको पाक कर दें, तो उसके बाद जन्नत में दाख़िला हो सकेगा।

(मआरिफ़ुल हदीस)

﴾344﴿ عَنْ خُرَيْمِ بْنِ فَاتِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: صَلَّى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ صَلَاةَ الصُّبْحِ فَلَمَّا انْصَرَفَ قَامَ قَائِمًا فَقَالَ: عُدِلَتْ شَهَادَةُ الزُّوْرِ بِالْإِشْرَاكِ بِاللهِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ قَرَأَ: "فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ حُنَفَاءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ"

(الحج: ٣٠، ٣١) رواه ابو داؤد، باب في شهادة الزّور، رقم: ٣٥٩٩

344. हज़रत ख़ुरैम बिन फ़ातिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक दिन सुबह की नमाज़ पढ़ी। जब आप ﷺ (नमाज़ से) फ़ारिग़ हुए, तो उठकर खड़े हो गए और इर्शाद फ़रमाया : झूठी गवाही अल्लाह तआला के साथ शिर्क के बराबर कर दी गई है। यह बात आप ﷺ ने तीन मर्तबा इर्शाद फ़रमाई। फिर आप ﷺ ने यह आयत पढ़ी जिसका तर्जुमा यह है : बुतपरस्ती की गन्दगी से बचो और झूठी गवाही से बचो, यक्सूई के साथ बस अल्लाह ही के होकर उसके साथ किसी को शरीक करने वाले न हो। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि झूठी गवाही शिर्क व बुतपरस्ती की तरह गन्दा गुनाह है और ईमान वालों को इससे ऐसे ही परहेज़ करना चाहिए, जैसा कि शिर्क व बुतपरस्ती से परहेज़ किया जाता है। (मआरिफ़ुल हदीस)

﴾345﴿ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنِ اقْتَطَعَ حَقَّ امْرِئٍ مُسْلِمٍ بِيَمِيْنِهٖ، فَقَدْ أَوْجَبَ اللهُ لَهُ النَّارَ، وَحَرَّمَ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ، فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ: وَإِنْ كَانَ شَيْئًا يَسِيْرًا يَارَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ وَإِنْ قَضِيْبٌ مِنْ أَرَاكٍ.

رواه مسلم، باب وعيد من اقتطع حق مسلم ....، رقم: ٣٥٣

345. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने (झूठी) क़सम खाकर किसी मुसलमान का कोई हक़ ले लिया, तो अल्लाह तआला ने ऐसे शख़्स के लिए दोज़ख़ वाजिब कर दी है और जन्नत को उस पर हराम कर दिया है। एक शख़्स ने सवाल किया : या रसूलुल्लाह! अगरचे वह कोई मामूली ही चीज़ हो (तब भी यही सज़ा होगी)? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगरचे पील (के दरख़्त) की एक टहनी ही क्यों न हो। (मुस्लिम)

Copyright ©

﴾346﴿ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَنْ أَخَذَ مِنَ الْأَرْضِ شَيْئًا بِغَيْرِ حَقِّهِ خُسِفَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَى سَبْعِ أَرَضِيْنَ۔

رواه البخاري،باب اثم من ظلم شيئا من الارض،رقم: ٢٤٥٤

346. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने थोड़ी-सी ज़मीन भी नाहक़ ले ली, तो क़ियामत के दिन वह उसकी वजह से सात ज़मीनों तक धंसा दिया जाएगा। (बुख़ारी)

﴾347﴿ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنِ انْتَهَبَ نُهْبَةً فَلَيْسَ مِنَّا۔ (وهو جزء من الحديث)۔ رواه الترمذي وقال: هذاحديث حسن صحيح،باب ماجاء في النهي عن نكاح الشغار،رقم: ١١٢٣

347. हज़रत इमरान बिन हुसैन ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने लूट-मार की वह हम में से नहीं है। (तिर्मिज़ी)

﴾348﴿ عَنْ أَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ثَلَاثَةٌ لَا يُكَلِّمُهُمُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ، وَلَا يُزَكِّيْهِمْ، وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ، قَالَ: فَقَرَأَهَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، قَالَ أَبُوْذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: خَابُوْا وَخَسِرُوْا، مَنْ هُمْ يَارَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: الْمُسْبِلُ إِزَارَهُ وَالْمَنَّانُ وَالْمُنَفِّقُ سِلْعَتَهُ بِالْحَلِفِ الْكَاذِبِ۔

رواه مسلم،باب بيان غلظ تحريم اسبال الازار ...رقم: ٢٩٣

348. हज़रत अबूज़र ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन आदमी ऐसे हैं कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन न उनसे बात फ़रमाएंगे, न उनको रहमत की नज़र से देखेंगे, न उनको गुनाहों से पाक करेंगे और उन्हें दर्दनाक अज़ाब देंगे। यह आयत रसूलुल्लाह ﷺ ने तीन मर्तबा पढ़ी। हज़रत अबूज़र ﷺ ने अर्ज़ किया : ये तो सब नाकाम हुए और ख़सारे में रहे। या रसूलुल्लाह! ये लोग कौन हैं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपना तहबन्द (टख़नों से नीचे) लटकाने वाला, एहसान जताने वाला और झूठी क़समें खाकर अपना सौदा फ़रोख़्त करने वाला। (मुस्लिम)

﴾349﴿ عَنْ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ ضَرَبَ مَمْلُوْكَهُ ظُلْمًا أُقِيْدَ مِنْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ۔ رواه الطبراني ورجاله ثقات،مجمع الزوائد ٤/٤٣٦

Copyright ©

349. हज़रत अम्मार बिन यासिर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो आक़ा अपने ग़ुलाम को नाहक़ मारेगा क़ियामत के दिन उससे बदला लिया जाएगा। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : मुलाज़मीन (नौकर, ख़ादिम, कारिंदों) को मारना भी इस वईद में दाख़िल है। (मआरिफ़ुल हदीस)

मक्तबा-ए-अशरफ़

Copyright ©

بسم الله الرحمن الرحيم

# मुसलमानों के आपसी इख़्तिलाफ़ात को दूर करना

## क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى : ﴿وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّ لَا تَفَرَّقُوْا﴾ [آل عمران: ١٠٣]

अल्लाह तआला का इरशाद है : और तुम सब मिलकर अल्लाह तआला की रस्सी (दीन) को मज़बूत पकड़े रहो और बाहम नाइत्तिफ़ाक़ी मत करो।

(आले इमरान : 103)

## नबी ﷺ की हदीसें

﴿350﴾ عَنْ اَبِى الدَّرْدَاءِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَلَا اُخْبِرُكُمْ بِاَفْضَلَ مِنْ دَرَجَةِ الصِّيَامِ وَالصَّلٰوةِ وَالصَّدَقَةِ؟ فَالُوْا: بَلٰى، قَالَ: صَلَاحُ ذَاتِ الْبَيْنِ، فَاِنَّ فَسَادَ ذَاتِ الْبَيْنِ هِىَ الْحَالِقَةُ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث صحيح، باب في فضل صلاح ذات البين رقم: ٢٥٠٩

350. हज़रत अबुद्दर्दा ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुमको रोज़ा, नमाज़ और सदक़ा ख़ैरात से अफ़ज़ल दर्जा वाली चीज़ न बताऊं? सहाबा ؓ ने अर्ज़ किया : ज़रूर इरशाद फ़रमाइए। आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : बाहमी इत्तिफ़ाक़ सबसे अफ़ज़ल है, क्योंकि आपस में नाइत्तिफ़ाक़ी [illegible]

Copyright ©

वाली है, यानी जैसे उस्तरे से सर के बाल एक दम साफ़ हो जाते हैं ऐसे ही आपस में लड़ाई से दीन ख़त्म हो जाता है। (तिर्मिज़ी)

﴾351﴿ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ عَنْ اُمِّهٖ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: لَمْ يَكْذِبْ مَنْ نَمٰى بَيْنَ اثْنَيْنِ لِيُصْلِحَ۔ رواه ابوداؤد،باب في اصلاح ذات البين،رقم: ٤٩٢٠

351. हज़रत हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान अपनी वालिदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने सुलह कराने के लिए एक फ़रीक़ की तरफ़ से दूसरे को (फ़र्ज़ी बातें) पहुंचाई, उसने झूठ नहीं बोला, यानी उसे झूठ बोलने का गुनाह नहीं होगा। (अबूदाऊद)

﴾352﴿ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ: وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهٖ مَا تَوَادَّ اثْنَانِ فَيُفَرَّقُ بَيْنَهُمَا اِلَّا بِذَنْبٍ يُحْدِثُهٗ اَحَدُهُمَا۔ (وهو طرف من الحديث)

رواه احمد واسناده حسن،مجمع الزوائد ٨/٣٣٦

352. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ इरशाद फ़रमाया करते थे : क़सम है उस ज़ाते आ़ली की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, आपस में एक दूसरे से मुहब्बत करने वाले दो मुसलमानों में फूट पड़ने की वजह इसके अ़लावा कोई नहीं होती कि उनमें से किसी एक से गुनाह सरज़द हो जाए। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾353﴿ عَنْ اَبِيْ اَيُّوْبَ الْاَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: لَا يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ اَنْ يَهْجُرَ اَخَاهُ فَوْقَ ثَلَاثِ لَيَالٍ، يَلْتَقِيَانِ فَيُعْرِضُ هٰذَا وَيُعْرِضُ هٰذَا، وَخَيْرُهُمَا الَّذِيْ يَبْدَاُ بِالسَّلَامِ۔ رواه مسلم،باب تحريم الهجر فوق ثلاثة ايام......رقم: ٦٥٣٢

353. हज़रत अबू ऐय्यूब अन्सारी رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : मुसलमान के लिए जायज़ नहीं कि अपने मुसलमान भाई से तीन रातों से ज़्यादा (क़तातालुक़ी करके) उसे छोड़े रखे कि दोनों मिलें तो यह इधर को मुंह फेर ले और वह उधर को मुंह फेर ले और दोनों में अफ़ज़ल वह है जो (मेल-जोल करने के लिए) सलाम में पहल करे। (मुस्लिम)

﴾354﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَا يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ اَنْ يَهْجُرَ اَخَاهُ فَوْقَ ثَلَاثٍ، فَمَنْ هَجَرَ فَوْقَ ثَلَاثٍ فَمَاتَ دَخَلَ النَّارَ۔

Copyright ©

رواه ابوداؤد،باب في هجرة الرجل اخاه،رقم: ٤٩١٤

354. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया किसी मुसलमान के लिए जायज़ नहीं कि अपने मसुलमान भाई से तीन दिन से ज़्यादा क़तातालुकी करे। जिस शख़्स ने तीन दिन से ज़्यादा क़तातालुक़ रखा और मर गया तो जहन्नम में जाएगा। (अबूदाऊद)

﴿355﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: لَا يَحِلُّ لِمُؤْمِنٍ أَنْ يَهْجُرَ مُؤْمِنًا فَوْقَ ثَلَاثٍ، فَإِنْ مَرَّتْ بِهِ ثَلَاثٌ فَلْيَلْقَهُ فَلْيُسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَإِنْ رَدَّ عَلَيْهِ السَّلَامَ فَقَدِ اشْتَرَكَا فِي الْأَجْرِ، وَإِنْ لَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِ فَقَدْ بَاءَ بِالْإِثْمِ. زَادَ أَحْمَدُ: وَخَرَجَ الْمُسَلِّمُ مِنَ الْهِجْرَةِ.

رواه ابوداؤد،باب فی هجرة الرجل اخاه،رقم: ٤٩١٢

355. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : मोमिन के लिए जायज़ नहीं कि अपने मुसलमान भाई से (क़तातालुक़ करके) उसे तीन दिन से ज़्यादा छोड़े रखे, लिहाज़ा अगर तीन दिन गुज़र जाएं तो अपने भाई से मिल कर सलाम कर लेना चाहिए। अगर उसने सलाम का जवाब दे दिया तो अज्र व सवाब में दोनों शरीक हो गए और अगर सलाम का जवाब न दिया तो वह गुनहगार हुआ और सलाम करने वाला क़तातालुक़ (के गुनाह) से निकल गया। (अबूदाऊद)

﴿356﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا يَكُونُ لِمُسْلِمٍ أَنْ يَهْجُرَ مُسْلِمًا فَوْقَ ثَلَاثَةٍ، فَإِذَا لَقِيَهُ سَلَّمَ عَلَيْهِ ثَلَاثَ مِرَارٍ كُلُّ ذَلِكَ لَا يَرُدُّ عَلَيْهِ، فَقَدْ بَاءَ بِإِثْمِهِ.

رواه ابوداؤد،باب فی هجرة الرجل اخاه،رقم: ٤٩١٣

356. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : किसी मुसलमान के लिए दुरुस्त नहीं कि अपने मसुलमान भाई (से क़ता तालुकी करके) उसे तीन दिन से ज़्यादा छोड़े रखे, लिहाज़ा जब उससे मुलाक़ात हो तो तीन मर्तबा उसको सलाम करे, अगर वह एक मर्तबा भी सलाम का जवाब न दे तो सलाम करने वाले का (तीन दिन क़तातालुकी का) गुनाह भी सलाम का जवाब न देने वाले के ज़िम्मे हो गया। (अबूदाऊद)

﴿357﴾ عَنْ هِشَامِ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: لَا يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ أَنْ يُصَارِمَ مُسْلِمًا فَوْقَ ثَلَاثٍ، وَإِنَّهُمَا نَاكِبَانِ عَنِ الْحَقِّ مَا كَانَا عَلَى صِرَامِهِمَا، وَإِنَّ أَوَّلَهُمَا فَيْئًا يَكُونُ سَبْقُهُ بِالْفَيْءِ كَفَّارَةً لَهُ، وَإِنْ سَلَّمَ عَلَيْهِ فَلَمْ يَقْبَلْ سَلَامَهُ، رَدَّتْ

Copyright ©

عَلَيْهِ الْمَلَائِكَةُ، وَرَدَّ عَلَى الْآخَرِ الشَّيْطَانُ، وَإِنْ مَاتَا عَلَى صِرَامِهِمَا لَمْ يَدْخُلَا الْجَنَّةَ وَلَمْ يَجْتَمِعَا فِي الْجَنَّةِ. رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح على شرط الشيخين ١٢/٤٨٠

357. हज़रत हिशाम बिन आमिर ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना : किसी मुसलमान के लिए जायज़ नहीं कि अपने मुसलमान भाई से तीन दिनों से ज़्यादा क़तातआल्लुक़ रखे और जब तक वह उस क़ता ताल्लुक़ी पर क़ायम रहेंगे हक़ से हटे रहेंगे और उन दोनों में से जो (सुलह करने में) पहल करेगा उसका पहल करना उसके क़तातआल्लुक़ी के गुनाह का कफ़्फ़ारा हो जाएगा। फिर अगर उस पहल करने वाले ने सलाम किया और दूसरे ने सलाम को क़ुबूल न किया और उसका जवाब न दिया तो सलाम करने वाले को फ़रिश्ते जवाब देंगे और दूसरे को शैतान जवाब देगा। अगर उसी (पहली) क़तातआल्लुक़ी की हालत में दोनों मर गए तो न जन्नत में दाख़िल होंगे, न जन्नत में इकट्ठे होंगे।

(इब्ने हब्बान)

﴿358﴾ عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ هَجَرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلَاثٍ فَهُوَ فِي النَّارِ إِلَّا أَنْ يَتَدَارَكَهُ اللهُ بِرَحْمَتِهِ.

رواه الطبراني ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٨/١٣١

358. हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से ज़्यादा क़तातआल्लुक़ करे (अगर इस हाल में मर गया) तो जहन्नम में जाएगा, मगर यह कि अल्लाह तआला अपनी रहमत से उसकी मदद फ़रमाएंगे (तो दोज़ख़ से बच जाएगा)।

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿359﴾ عَنْ أَبِي خِرَاشٍ السُّلَمِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ هَجَرَ أَخَاهُ سَنَةً، فَهُوَ كَسَفْكِ دَمِهِ. رواه ابوداؤد، باب في هجرة الرجل اخاه، رقم: ٤٩١٥

359. हज़रत अबू ख़िराश सुलमी ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स ने (नाराज़गी की वजह से) अपने मुसलमान भाई से एक साल तक मिलना-जुलना छोड़े रखा, उसने गोया उसका ख़ून किया यानी साल भर क़तातआल्लुक़ी का गुनाह और नाहक़ क़त्ल करने का गुनाह क़रीब-क़रीब है।

(अबूदाऊद)

Copyright ©

﴾360﴿ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ الشَّيْطَانَ قَدْ أَيِسَ أَنْ يَعْبُدَهُ الْمُصَلُّوْنَ فِيْ جَزِيْرَةِ الْعَرَبِ، وَلٰكِنْ فِي التَّحْرِيْشِ بَيْنَهُمْ.

رواه مسلم،باب تحريش الشيطان ......،رقم: ٧١٠٣

360. हज़रत जाबिर رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना : शैतान इस बात से तो मायूस हो गया है कि जज़ीरा अरब में मुसलमान उसकी परस्तिश यानी कुफ्र व शिर्क करें लेकिन उनके दर्मियान फ़ित्ना व फ़साद फैलाने और उनको आपस में भड़काने से मायूस नहीं हुआ। (मुस्लिम)

﴾361﴿ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: تُعْرَضُ الْأَعْمَالُ فِيْ كُلِّ يَوْمِ خَمِيْسٍ وَاثْنَيْنِ، فَيَغْفِرُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ فِيْ ذٰلِكَ الْيَوْمِ لِكُلِّ امْرِئٍ لَا يُشْرِكُ بِاللّٰهِ شَيْئًا إِلَّا امْرَأً كَانَتْ بَيْنَهُ وَبَيْنَ أَخِيْهِ شَحْنَاءُ، فَيُقَالُ: ارْكُوْا هٰذَيْنِ حَتّٰى يَصْطَلِحَا، ارْكُوْا هٰذَيْنِ حَتّٰى يَصْطَلِحَا.

رواه مسلم،باب النهي عن الشحناء، رقم: ٦٥٤٦

361. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : हर पीर और जुमारात के दिन अल्लाह तआ़ला के सामने बन्दों के आमाल पेश किए जाते हैं। चुनांचे अल्लाह तआ़ला उस दिन हर उस शख़्स की जो अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक न ठहराता हो मग़्फ़िरत फ़रमाते हैं, अलबत्ता वह शख़्स उस बख़्शिश से महरूम रहता है कि जिसकी अपने किसी (मुसलमान) भाई से दुश्मनी हो। (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से फ़रिश्तों) को कहा जाएगा : उन दोनों को रहने दो, जब तक आपस में सुलह व सफ़ाई न कर लें, उन दोनों को रहने दो जब तक आपस में सुलह व सफ़ाई न कर लें। (मुस्लिम)

﴾362﴿ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يَطَّلِعُ اللّٰهُ إِلٰى جَمِيْعِ خَلْقِهِ لَيْلَةَ النِّصْفِ مِنْ شَعْبَانَ فَيَغْفِرُ لِجَمِيْعِ خَلْقِهِ إِلَّا لِمُشْرِكٍ أَوْ مُشَاحِنٍ.

رواه الطبراني في الكبير والاوسط ورجالهما ثقات، مجمع الزوائد ١٢٦/٨

362. हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल رضي الله عنه से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : पन्द्रह शाबान की रात अल्लाह तआ़ला सारी मख़्लूक़ की तरफ़ मुतवज्जोह फ़रमाते हैं और तमाम मख़्लूक़ की मग़्फ़िरत फ़रमाते हैं, मगर दो शख़्सों की मग़्फ़िरत नहीं होती, एक शिर्क करने वाला या वह शख़्स जो किसी से कीना रखे।

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

Copyright ©

﴾363﴿ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: تُعْرَضُ الْأَعْمَالُ يَوْمَ الْإِثْنَيْنِ وَالْخَمِيْسِ، فَمِنْ مُسْتَغْفِرٍ فَيُغْفَرُ لَهُ، وَمِنْ تَائِبٍ فَيُتَابُ عَلَيْهِ، وَيُرَدُّ أَهْلُ الضَّغَائِنِ بِضَغَائِنِهِمْ حَتَّى يَتُوْبُوْا. رواه الطبراني في الاوسط ورواته ثقات، الترغيب ٣/٤٥٨

363. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : पीर और जुमारात के दिन (अल्लाह तआला की बारगाह में बन्दों के) आमाल पेश किए जाते हैं। मग़्फ़िरत तलब करने वालों की मग़्फ़िरत की जाती है, तौबा करने वालों की तौबा क़ुबूल की जाती है (लेकिन) कीना रखने वालों को उनके कीना की वजह से छोड़े रखा जाता है, यानी उनका इस्तग़्फ़ार क़ुबूल नहीं होता, जब तक कि वे उस (कीना से) तौबा न कर लें। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴾364﴿ عَنْ أَبِيْ مُوْسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الْمُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ يَشُدُّ بَعْضُهُ بَعْضًا وَشَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ. رواه البخاري، باب نصر المظلوم، رقم: ٢٤٤٦

364. हज़रत अबू मूसा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान से तअल्लुक़ एक इमारत की तरह है, जिसका एक हिस्सा दूसरे हिस्से को मज़बूत करता है। फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने एक हाथ की उंगलियां दूसरे हाथ की उंगलियों में डालीं (और इस अमल से यह समझाया कि मुसलमानों को इस तरह आपस में एक दूसरे के साथ जुड़े रहना चाहिए और एक दूसरे की क़ुव्वत का ज़रिया होना चाहिए)। (बुख़ारी)

﴾365﴿ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَيْسَ مِنَّا مَنْ خَبَّبَ امْرَأَةً عَلَى زَوْجِهَا أَوْ عَبْدًا عَلَى سَيِّدِهِ. رواه ابوداؤد، باب فيمن خبب امرأة على زوجها، رقم: ٢١٧٥

365. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी औरत को उसके शौहर के ख़िलाफ़ या किसी ग़ुलाम को उसके आक़ा के ख़िलाफ़ भड़काए, वह हम में से नहीं। (अबूदाऊद)

﴾366﴿ عَنِ الزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: دَبَّ إِلَيْكُمْ دَاءُ الْأُمَمِ قَبْلَكُمْ: الْحَسَدُ وَالْبَغْضَاءُ، هِيَ الْحَالِقَةُ، لَا أَقُوْلُ تَحْلِقُ الشَّعْرَ وَلٰكِنْ تَحْلِقُ الدِّيْنَ.

(الحديث) رواه الترمذي، باب في فضل صلاح ذات البين، رقم: ٢٥١٠

366. हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : तुमसे पहली उम्मतों की बीमारी तुम्हारे अन्दर सरायत

Copyright ©

बीमारी हसद और बुग़्ज़ है जो मूंड देने वाली है। मैं यह नहीं कहता कि बालों के मूंडने वाली है बल्कि यह दीन का सफ़ाया कर देती है (कि इस बीमारी की वजह से इंसान के अख़्लाक़ तबाह व बरबाद हो जाते हैं)। (तिर्मिज़ी)

﴾367﴿ عَنْ عَطَاءِ بْنِ عَبْدِاللهِ الْخُرَاسَانِيِّ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: تَصَافَحُوْا يَذْهَبِ الْغِلُّ تَهَادَوْا تَحَابُّوْا وَتَذْهَبِ الشَّحْنَاءُ.

رواه الامام مالك في الموطا، ماجاء في المهاجرة ص ٧٠٦

367. हज़रत अ़ता बिन अ़ब्दुल्लाह ख़ुरासानी रह० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : आपस में मुसाफ़ा किया करो, (इससे) कीना ख़त्म हो जाता है। आपस में एक दूसरे को हदिया दिया करो, आपस में मुहब्बत होती है और दुश्मनी दूर होती है। (मुअत्ता इमाम मालिक)

Copyright ©

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

# मुसलमानों की माली मदद

## क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ﴾ [البقرة: ٢٦١]

अल्लाह तआला का इरशाद है : जो लोग अपना माल अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करते हैं उन (के माल) की मिसाल उस दाने की-सी है जिससे सात बालें उगीं और हर एक-एक बाल में सौ-सौ दाने हों और अल्लाह तआला जिस (के माल) को चाहता है ज़्यादा करता है और अल्लाह तआला बड़ा फ़ैय्याज़ और बड़ा इल्म वाला है। (बक़रः 261)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ﴾ [البقرة: ٢٧٤]

अल्लाह तआला का इरशाद है : जो लोग अपने माल अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करते हैं, रात को और दिन को, छुपा कर और ज़ाहिर में उन्हीं के लिए अपने रब के हां सवाब है और उन पर न कोई डर है और न वे ग़मगीन होंगे। (बक़रः 274)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ﴾ [آل عمران: ٩٢]

Copyright ©

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है : हरगिज़ नेकी में कमाल हासिल न कर सकोगे, यहां तक कि अपनी प्यारी चीज़ से कुछ ख़र्च करो।(आले इमरान : 92)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّ يَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا۝ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا﴾ [الدهر:٨-٩]

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है : और वे लोग बावजूद खाने की रग़बत और एहतियाज के मिस्कीन को और यतीम को और क़ैदी को खाना खिला देते हैं। कहते हैं हम तो तुम को महज़ अल्लाह तआ़ला की रज़ाजूई की ग़रज़ से खाना खिलाते हैं, हम तुमसे किसी बदला और शुक्रिया के ख़्वाहिशमन्द नहीं हैं। (दह : 8)

# नबी ﷺ की हदीसें

﴿368﴾ عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ اَطْعَمَ اَخَاهُ خُبْزًا حَتّٰى يُشْبِعَهُ وَسَقَاهُ مَاءً حَتّٰى يُرْوِيَهُ بَعَّدَهُ اللّٰهُ عَنِ النَّارِ سَبْعَ خَنَادِقَ، بُعْدُ مَا بَيْنَ خَنْدَقَيْنِ مَسِيْرَةُ خَمْسِمِائَةِ سَنَةٍ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١٢٩/٤

368. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र बिन आ़स ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने (मुसलमान) भाई को पेट भर कर खाना खिलाता है और पानी पिलाता है अल्लाह तआ़ला उसे जहन्नम से सात ख़न्दक़ें दूर फ़रमा देते हैं। दो ख़न्दक़ों का दर्मियानी फ़ासला पांच सौ साल की मुसाफ़त है। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿369﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ مِنْ مُوْجِبَاتِ الْمَغْفِرَةِ اِطْعَامَ الْمُسْلِمِ السَّغْبَانِ. رواه البيهقي في شعب الايمان ٢١٧/٣

369. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद

Copyright ©

फ़रमाया : भूखे मुसलमान को खाना खिलाना मग़फ़िरत को वाजिब करने वाले आमाल में से है। (बैहक़ी)

﴿370﴾ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: أَيُّمَا مُسْلِمٍ كَسَا مُسْلِمًا ثَوْبًا عَلَى عُرْيٍ، كَسَاهُ اللهُ مِنْ خُضْرِ الْجَنَّةِ، وَأَيُّمَا مُسْلِمٍ أَطْعَمَ مُسْلِمًا عَلَى جُوعٍ، أَطْعَمَهُ اللهُ مِنْ ثِمَارِ الْجَنَّةِ، وَأَيُّمَا مُسْلِمٍ سَقَى مُسْلِمًا عَلَى ظَمَاءٍ، سَقَاهُ اللهُ عَزَّوَجَلَّ مِنَ الرَّحِيقِ الْمَخْتُومِ.

رواه ابوداؤد، باب في فضل سقي الماء، رقم: ١٦٨٢

370. हज़रत अबू सईद ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी मुसलमान को नंगेपन की हालत में कपड़ा पहनाता है, अल्लाह तआ़ला उसको जन्नत के सब्ज़ लिबास पहनाएंगे। जो शख़्स किसी मुसलमान को भूख की हालत में खाना खिलाता है अल्लाह तआ़ला उसको जन्नत के फलों में से खिलाएंगे। जो शख़्स किसी मुसलमान को प्यास की हालत में पानी पिलाता है अल्लाह तआ़ला उसको ऐसी ख़ालिस शराब पिलाएंगे, जिस पर मुहर लगी होगी। (अबूदाऊद)

﴿371﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ: أَيُّ الْإِسْلَامِ خَيْرٌ؟ فَقَالَ: تُطْعِمُ الطَّعَامَ، وَتَقْرَأُ السَّلَامَ عَلَى مَنْ عَرَفْتَ وَمَنْ لَمْ تَعْرِفْ.

رواه البخاري، باب اطعام الطعام من الاسلام، رقم: ١٢

371. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से दरयाफ़्त किया : इस्लाम में सबसे बेहतर अमल कौन-सा है? इरशाद फ़रमाया : खाना खिलाना और (हर एक को) सलाम करना, ख़्वाह उससे तुम्हारी जान-पहचान हो या न हो। (बुख़ारी)

﴿372﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: اُعْبُدُوا الرَّحْمٰنَ، وَأَطْعِمُوا الطَّعَامَ، وَأَفْشُوا السَّلَامَ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ بِسَلَامٍ. رواه الترمذي وقال

هذا حديث حسن صحيح، باب ما جاء في فضل اطعام الطعام، رقم: ١٨٥٥

372. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : रहमान की इबादत करते रहो, खाना खिलाते रहो और सलाम फैलाते रहो (इन आमाल की वजह से) जन्नत में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओगे।

(तिर्मिज़ी)

Copyright ©

﴿373﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْحَجُّ الْمَبْرُوْرُ لَيْسَ لَهُ جَزَاءٌ إِلَّا الْجَنَّةُ. قَالُوْا: يَا نَبِيَّ اللهِ! مَا الْحَجُّ الْمَبْرُوْرُ؟ قَالَ: إِطْعَامُ الطَّعَامِ وَإِفْشَاءُ السَّلَامِ.

رواه احمد ٣٢٥/٣

373. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : मबरूर हज का बदला जन्नत के सिवा कुछ नहीं। सहाबा किराम ﷺ ने अ़र्ज़ किया : अल्लाह के नबी! मबरूर हज क्या है? इरशाद फ़रमाया : (जिस हज में) खाना खिलाया जाए और सलाम फैलाया जाए। (मुस्नद अहमद)

﴿374﴾ عَنْ هَانِئٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ لَمَّا وَفَدَ عَلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! أَيُّ شَيْءٍ يُوْجِبُ الْجَنَّةَ؟ قَالَ: عَلَيْكَ بِحُسْنِ الْكَلَامِ وَبَذْلِ الطَّعَامِ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث مستقيم وليس له علة ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٢٣/١

374. हज़रत हानी ﷺ से रिवायत है कि जब वह रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए, तो अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! कौन-सा अ़मल जन्नत को वाजिब करने वाला है? रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : तुम अच्छी तरह बात करने और खाना खिलाने को लाज़िम पकड़ो। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿375﴾ عَنِ الْمَعْرُوْرِ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: لَقِيْتُ أَبَا ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ بِالرَّبَذَةِ وَعَلَيْهِ حُلَّةٌ وَعَلَى غُلَامِهِ حُلَّةٌ فَسَأَلْتُهُ عَنْ ذٰلِكَ فَقَالَ: إِنِّيْ سَابَبْتُ رَجُلًا فَعَيَّرْتُهُ بِأُمِّهِ، فَقَالَ لِيَ النَّبِيُّ ﷺ: يَا أَبَا ذَرٍّ! أَعَيَّرْتَهُ بِأُمِّهِ؟ إِنَّكَ امْرُؤٌ فِيْكَ جَاهِلِيَّةٌ، إِخْوَانُكُمْ خَوَلُكُمْ جَعَلَهُمُ اللهُ تَحْتَ أَيْدِيْكُمْ، فَمَنْ كَانَ أَخُوْهُ تَحْتَ يَدِهِ فَلْيُطْعِمْهُ مِمَّا يَأْكُلُ، وَلْيُلْبِسْهُ مِمَّا يَلْبَسُ، وَلَا تُكَلِّفُوْهُمْ مَا يَغْلِبُهُمْ، فَإِنْ كَلَّفْتُمُوْهُمْ فَأَعِيْنُوْهُمْ.

رواه البخاري باب المعاصي من امر الجاهلية ... رقم: ٣٠

375. हज़रत मारूर रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि मेरी हज़रत अबूज़र ﷺ से मक़ामे रबज़ा में मुलाक़ात हुई। (वह और उनके गुलाम एक ही क़िस्म का लिबास पहने हुए थे, मैंने उनसे इस बारे में पूछा (कि क्या बात है आप के और गुलाम के कपड़ों में कोई फ़र्क़ नहीं है) उस पर उन्होंने यह वाक़िआ ब्यान किया कि एक मर्तबा मैंने अपने गुलाम को बुरा-भला कहा और उसी सिलसिले में उसको मां की ग़ैरत दिलाई। (यह ख़बर रसूलुल्लाह ﷺ को पहुंची) तो आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : अबूज़र! क्या तुमने उसको मां की ग़ैरत दिलाई है? तुममें अभी जाहिलियत का असर

Copyright ©

बाक़ी है। तुम्हारे मातहत (लोग) तुम्हारे भाई हैं। अल्लाह तआला ने उनको तुम्हारा मातहत बनाया है, लिहाज़ा जिसका मातहत उसका भाई हो, उसको वही खिलाए जो ख़ुद खाए और वही पहनाए जो ख़ुद पहने। मातहतों से वह काम न लो जो उन पर बोझ बन जाए और अगर कोई ऐसा काम लो तो उनका हाथ बटाओ। (बुख़ारी)

﴿376﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: مَاسُئِلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ شَيْئًا قَطُّ فَقَالَ: لَا.

رواه مسلم،باب فى سخائه ﷺ،رقم: ٦٠١٨

376. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि ऐसा कभी नहीं हुआ कि रसूलुल्लाह ﷺ से किसी चीज़ का सवाल किया गया हो और आप ﷺ ने इंकार कर दिया हो। (मुस्लिम)

फ़ायदा : मतलब यह है कि आप ﷺ किसी भी हालत में साइल के सामने अपनी ज़बान पर साफ़ इंकार का लफ़्ज़ नहीं लाते थे। अगर आपके पास कुछ होता तो फ़ौरन इनायत फ़रमा देते और अगर देने को न होता तो वादा फ़रमा लेते या ख़ामोशी अख़्तियार कर लेते या मुनासिब अल्फ़ाज़ में उज़्र फ़रमा देते या दुआ वाले जुम्ले इरशाद फ़रमा देते। (मज़ाहिरे हक़)

﴿377﴾ عَنْ اَبِیْ مُوْسَى الْاَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اَطْعِمُوا الْجَائِعَ، وَعُوْدُوا الْمَرِيْضَ، وَفُكُّوا الْعَانِيَ.

رواه البخاری،باب قول اللّٰه تعالٰی: كلوا من طيبات مارزقنٰكم...،رقم: ٥٣٧٣

377. हज़रत अबू मूसा अशअ़री ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : भूखे को खाना खिलाओ, बीमार की इयादत करो और (नाहक़) क़ैदी को रिहाई दिलाने की कोशिश करो। (बुख़ारी)

﴿378﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ يَقُوْلُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: يَا ابْنَ آدَمَ! مَرِضْتُ فَلَمْ تَعُدْنِي، قَالَ: يَا رَبِّ! كَيْفَ اَعُوْدُكَ؟ وَاَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ، قَالَ: اَمَا عَلِمْتَ اَنَّ عَبْدِيْ فُلَانًا مَرِضَ فَلَمْ تَعُدْهُ، اَمَا عَلِمْتَ اَنَّكَ لَوْ عُدْتَهُ لَوَجَدْتَنِيْ عِنْدَهُ، يَا ابْنَ آدَمَ! اسْتَطْعَمْتُكَ فَلَمْ تُطْعِمْنِيْ، قَالَ: يَارَبِّ! وَكَيْفَ اُطْعِمُكَ؟ وَاَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ، قَالَ: اَمَا عَلِمْتَ اَنَّهُ اسْتَطْعَمَكَ عَبْدِيْ فُلَانٌ فَلَمْ تُطْعِمْهُ، اَمَا عَلِمْتَ [illegible] لَوَجَدْتَ ذٰلِكَ عِنْدِيْ؟ يَا ابْنَ آدَمَ اسْتَسْقَيْتُكَ فَلَمْ تَسْقِنِيْ، قَالَ: يَارَبِّ!

Copyright ©

كَيْفَ أَسْقِيْكَ؟ وَأَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ، قَالَ: اسْتَسْقَاكَ عَبْدِيْ فُلَانٌ فَلَمْ تَسْقِهِ، أَمَا إِنَّكَ لَوْ أَسْقَيْتَهُ وَجَدْتَ ذٰلِكَ عِنْدِيْ. رواه مسلم، باب فضل عيادة المريض، رقم: ٦٥٥٦

378. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन फ़रमाएंगे : आदम के बेटे! मैं बीमार हुआ तुमने मेरी बीमारपुर्सी नहीं की? बन्दा अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब! मैं कैसे आपकी बीमारपुर्सी करता आप तो रब्बुल आ़लमीन हैं (बीमार होने के ऐब से पाक हैं)? अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे : क्या तुम्हें मालूम नहीं था कि मेरा फ़लां बन्दा बीमार था, तुमने उसकी बीमारपुर्सी न की। क्या तुम्हें मालूम नहीं था तुम अगर उसकी बीमारपुर्सी करते तो मुझे उसके पास पाते? आदम के बेटे! मैंने तुमसे खाना मांगा तो तुमने मुझे नहीं खिलाया? बन्दा अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब! मैं आपको कैसे खाना खिलाता, आप तो रब्बुल आ़लमीन हैं? अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे : क्या तुम्हें मालूम नहीं था कि मेरे फ़लां बन्दे ने तुमसे खाना मांगा, तुमने उसको खाना नहीं खिलाया, क्या तुम्हें मालूम नहीं था कि तुम अगर उसको खाना खिलाते तो तुम उसका सवाब मेरे पास पाते? आदम के बेटे! मैंने तुमसे पानी मांगा था तुमने मुझे पानी नहीं पिलाया। बन्दा अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब! मैं आपको कैसे पानी पिलाता, आप तो रब्बुल आ़लमीन हैं? अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे : मेरे फ़लां बन्दे ने तुमसे पानी मांगा तो तुमने उसको नहीं पिलाया, अगर तुम उसको पानी पिलाते तो तुम उसका सवाब मेरे पास पाते।

(मुस्लिम)

﴿379﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: إِذَا صَنَعَ لِأَحَدِكُمْ خَادِمُهُ طَعَامَهُ ثُمَّ جَاءَهُ بِهِ، وَقَدْ وَلِيَ حَرَّهُ وَدُخَانَهُ، فَلْيُقْعِدْهُ مَعَهُ، فَلْيَأْكُلْ، فَإِنْ كَانَ الطَّعَامُ مَشْفُوْهًا قَلِيْلًا، فَلْيَضَعْ فِيْ يَدِهِ مِنْهُ أُكْلَةً أَوْ أُكْلَتَيْنِ.

رواه مسلم، باب اطعام المملوك مما يأكل...، رقم: ٤٣١٧

379. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जब तुममें से किसी का ख़ादिम उसके लिए खाना तैयार करे, फिर वह उसके पास लेकर आए जबकि उसने उसके पकाने में गर्मी और धुएं की तकलीफ़ उठाई है तो मालिक को चाहिए कि उस ख़ादिम को भी खाने में अपने साथ बिठाए और वह भी खाए। अगर वह खाना थोड़ा हो (जो दोनों के लिए काफ़ी न हो सके) तो मालिक को चाहिए कि खाने में से एक दो लुक़्मे ही उस ख़ादिम को दे दे। (मुस्लिम)

Copyright ©

﴾380﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ : سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ : مَا مِنْ مُسْلِمٍ كَسَا مُسْلِمًا ثَوْبًا اِلَّا كَانَ فِيْ حِفْظِ اللّٰهِ مَا دَامَ مِنْهُ عَلَيْهِ خِرْقَةٌ۔ رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن غريب،باب ماجاء فى ثواب من كسامسلما، رقم: ٢٤٨٤

380. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना : जो मुसलमान किसी मुसलमान को कपड़ा पहनाता है तो जब तक पहनने वाले के बदन पर उस कपड़े का एक टुकड़ा भी रहता है, पहनाने वाला अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में रहता है। (तिर्मिज़ी)

﴾381﴿ عَنْ حَارِثَةَ بْنِ النُّعْمَانِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مُنَاوَلَةُ الْمِسْكِيْنِ تَقِيْ مِيْتَةَ السُّوْءِ۔ رواه الطبرانى فى الكبير والبيهقى فى شعب الايمان والضياء وهو حديث صحيح، الجامع الصغير ٢/٦٥٧

381. हज़रत हारिसा बिन नोमान रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : मिस्कीन को अपने हाथ से देना बुरी मौत से बचाता है।

(तबरानी, बैहक़ी, ज़िया, जामेअ़ सग़ीर)

﴾382﴿ عَنْ اَبِيْ مُوْسٰى رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ الْخَازِنَ الْمُسْلِمَ الْاَمِيْنَ الَّذِيْ يُنَفِّذُ۔ وَ رُبَّمَا قَالَ يُعْطِيْ۔ مَا اُمِرَ بِهٖ، فَيُعْطِيْهِ كَامِلًا مُوَفَّرًا، طَيِّبَةً بِهٖ نَفْسُهٗ، فَيَدْفَعُهٗ اِلَى الَّذِيْ اُمِرَ لَهٗ بِهٖ اَحَدُ الْمُتَصَدِّقَيْنِ۔ رواه مسلم،باب اجرالخازن الامين......،رقم: ٢٣٦٣

382. हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : वह मुसलमान अमानतदार ख़ज़ान्ची जो मालिक के हुक्म के मुताबिक़ ख़ुशदिली से जितना माल जिसे देने को कहा गया है उतना उसे पूरा-पूरा दे तो उसे भी मालिक की तरह सदक़ा करने का सवाब मिलेगा। (मुस्लिम)

﴾383﴿ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَامِنْ مُسْلِمٍ يَغْرِسُ غَرْسًا اِلَّا كَانَ مَا اُكِلَ مِنْهُ لَهٗ صَدَقَةٌ، وَمَاسُرِقَ مِنْهُ لَهٗ صَدَقَةٌ، وَمَا اَكَلَ السَّبُعُ مِنْهُ فَهُوَ لَهٗ صَدَقَةٌ، وَمَا اَكَلَتِ الطَّيْرُ فَهُوَ لَهٗ صَدَقَةٌ ،وَلَا يَرْزَؤُهٗ اَحَدٌ اِلَّا كَانَ لَهٗ صَدَقَةٌ۔

رواه مسلم،باب فضل الغرس والزرع، رقم: ٣٩٦٨

383. हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जो मसुलमान दरख़्त लगाता है, उसमें से जितना हिस्सा खा लिया जाए वह दरख़्त लगाने वाले के लिए सदक़ा हो जाता है और जो उसमें से चुरा लिया जाए वह भी

Copyright ©

सदक़ा हो जाता है, यानी उस पर भी मालिक को सदक़े का सवाब मिलता है और जितना हिस्सा उसमें से दरिन्दे खा लेते हैं वह भी उसके लिए सदक़ा हो जाता है और जितना हिस्सा उसमें से परिन्दे खा लेते हैं वह भी उसके लिए सदक़ा हो जाता है। (ग़रज़ यह कि) जो कोई उस दरख़्त में से कुछ (भी फल वग़ैरह) कम कर देता है, तो वह उस (दरख़्त लगाने वाले) के लिए सदक़ा हो जाता है। (मुस्लिम)

﴾384﴿ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: مَنْ اَحْيٰى اَرْضًا مَيْتَةً، فَلَهُ فِيْهَا اَجْرٌ. (الحديث) رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده على شرط مسلم ٦١٥/١١

384. हज़रत जाबिर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स बन्जर ज़मीन को काश्त के क़ाबिल बनाता है तो उसे उसका अज्र मिलता है। (इब्ने हब्बान)

﴾385﴿ عَنِ الْقَاسِمِ رَحِمَهُ اللّٰهُ عَنْ اَبِى الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَجُلًا مَرَّ بِهٖ وَهُوَ يَغْرِسُ غَرْسًا بِدِمَشْقَ فَقَالَ لَهُ: اَتَفْعَلُ هٰذَا وَاَنْتَ صَاحِبُ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ، فَقَالَ: لَا تَعْجَلْ عَلَيَّ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ غَرَسَ غَرْسًا لَمْ يَاْكُلْ مِنْهُ آدَمِيٌّ وَلَا خَلْقٌ مِنْ خَلْقِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ اِلَّا كَانَ لَهُ صَدَقَةً. رواه احمد ٦/٤٤٤

385. हज़रत क़ासिम रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि दमिश्क़ में हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ के पास से एक शख़्स गुज़रे। उस वक़्त हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ कोई पौधा लगा रहे थे। उस शख़्स ने अबुद्दर्दा ﷺ से कहा : क्या आप भी ये (दुन्यावी) काम कर रहे हैं, हालांकि आप तो रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबी हैं। हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ ने फ़रमाया : मुझे मलामत करने में जल्दी न करो। मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स पौधा लगाता है और उसमें से कोई इंसान या अल्लाह तआला की मख़्लूक़ में से कोई मख़्लूक़ खाती है तो वह उस (पौदा लगाने वाले) के लिए सदक़ा होता है। (मुस्नद अहमद)

﴾386﴿ عَنْ اَبِى اَيُّوْبَ الْاَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: مَا مِنْ رَجُلٍ يَغْرِسُ غَرْسًا اِلَّا كَتَبَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ لَهُ مِنَ الْاَجْرِ قَدْرَ مَا يَخْرُجُ مِنْ ثَمَرِ ذٰلِكَ الْغِرَاسِ. رواه احمد ٥/٤١٥

386. हज़रत अबू ऐय्यूब अन्सारी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स पौधा लगता है फिर उस दरख़्त से जितना फल पैदा होता

Copyright ©

है अल्लाह तआला फल की पैदावार के बक़द्र पौधा लगाने वाले के लिए अज्र लिख देते हैं। (मुस्नद अहमद)

﴿387﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ يَقْبَلُ الْهَدِيَّةَ وَيُثِيْبُ عَلَيْهَا. رواه البخاري باب المكافأة في الهبة رقم: ٢٥٨٥

387. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हदिया क़ुबूल फ़रमाते थे और उसके जवाब में (ख़्वाह उसी वक़्त या दूसरे वक़्त) ख़ुद भी अता फ़रमाते थे। (बुख़ारी)

﴿388﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ أُعْطِيَ عَطَاءً فَوَجَدَ فَلْيَجْزِ بِهِ، فَإِنْ لَمْ يَجِدْ فَلْيُثْنِ بِهِ، فَمَنْ أَثْنَى بِهِ فَقَدْ شَكَرَهُ وَمَنْ كَتَمَهُ فَقَدْ كَفَرَهُ. رواه ابوداؤد باب في شكر المعروف رقم: ٤٨١٣

388. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जिस शख़्स को हदिया दिया जाए, अगर उसके पास भी देने के लिए कुछ हो तो उसको बदले में हदिया देने वाले को दे देना चाहिए और अगर कुछ न हो तो (बतौर शुक्रिया) देने वले की तारीफ़ करनी चाहिए क्योंकि जिसने तारीफ़ की, उसने शुक्रिया अदा कर दिया। और जिसने (तारीफ़ नहीं की बल्कि एहसान के मामले को) छुपाया उसने नाशुक्री की। (अबूदाऊद)

﴿389﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَا يَجْتَمِعُ الشُّحُّ وَالْإِيْمَانُ فِيْ قَلْبِ عَبْدٍ أَبَدًا. (وهو جزء من الحديث) رواه النسائي باب فضل من عمل في سبيل الله... رقم: ٣١١٢

389. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : बन्दे के दिल में कभी बुख़्ल और ईमान जमा नहीं हो सकते। (नसाई)

﴿390﴾ عَنْ أَبِيْ بَكْرٍ الصِّدِّيْقِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ خَبٌّ وَلَا بَخِيْلٌ وَلَا مَنَّانٌ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ما جاء في البخل، رقم: ١٩٦٣

390. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : धोखेबाज़, बख़ील और एहसान जताने वाला जन्नत में दाख़िल नहीं होगा। (तिर्मिज़ी)

Copyright ©

بسم الله الرحمن الرحيم

# इख़्लासे नीयत यानी तस्हीहे नीयत

अल्लाह तआला के अवामिर को महज़ अल्लाह तआला की रज़ामन्दी के लिए पूरा करना।

## क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿ بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴾ [البقرة:١١٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : हां, जिसने अपना चेहरा अल्लाह तआला के सामने झुका दिया और वह मुख़्लिस भी हो तो ऐसे शख़्स को उसका अज्र उसके रब के पास मिलता है। ऐसे लोगों पर न कोई ख़ौफ़ होगा न वह ग़मगीन होंगे। (बक़रः 112)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿ وَمَا تُنْفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللهِ ﴾ [البقرة:٢٨٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और अल्लाह तआला की रज़ामन्दी ही के लिए ख़र्च किया करो। (बक़रः 282)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿ وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الْآخِرَةِ نُؤْتِهِ مِنْهَا وَسَنَجْزِي الشَّاكِرِينَ ﴾ [آل عمران:١٤٥]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : जो शख़्स दुनिया में अपने अमल का बदला

Copyright ©

चाहेगा उसे दुनिया ही में दे देंगे (और आख़िरत में उसके लिए हिस्सा नहीं होगा) और जो शख़्स आख़िरत का बदला चाहेगा हम उसको आख़िरत का सवाब अता फ़रमाएंगे (और दुनिया में भी देंगे) और हम बहुत जल्द शुक्रगुज़ारों को बदला देंगे यानी उन लोगों को बहुत जल्द बदला देंगे जो आख़िरत के सवाब की नीयत से अमल करते हैं। (आले इमरान : 145)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿وَمَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾

[الشعراء:١٤٥]

(हज़रत सालेह ﷺ ने अपनी क़ौम से फ़रमाया) मैं तुमसे इस तब्लीग़ पर कोई बदला नहीं चाहता। मेरा बदला तो रब्बुलआलमीन ही के ज़िम्मे है। (शुअ़रा : 145)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ﴾

[الروم:٣٩]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : जो सदक़ा महज़ अल्लाह तआ़ला की रज़ाजूई के इरादे से देते हो तो, जो लोग ऐसा करते हैं वही लोग अपना माल और सवाब बढ़ाने वाले हैं। (रूम : 39)

وَقَالَ تَعَالٰی : ﴿وَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ﴾ [الاعراف:٢٩]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और ख़ास उसी की इबादत करो और उसी को पुकारो। (आराफ़ : 29)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿لَنْ يَّنَالَ اللهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰی مِنْكُمْ﴾

[الحج:٣٧]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : अल्लाह तआ़ला के पास न तो उन क़ुरबानियों का गोश्त पहुंचता है और न ही उनका ख़ून, बल्कि उनके पास तो तुम्हारी परहेज़गारी पहुंचती है यानी उनके यहां तो तुम्हारे दिली जज़्बात देखे जाते हैं। (हज्ज : 37)

Copyright ©

# नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 1 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ لَا يَنْظُرُ إِلَى صُوَرِكُمْ وَأَمْوَالِكُمْ، وَلٰكِنْ يَنْظُرُ إِلَى قُلُوْبِكُمْ وَأَعْمَالِكُمْ.

رواه مسلم، باب تحريم ظلم المسلم......، رقم: ٦٥٤٣

1. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक अल्लाह तआ़ला तुम्हारी सूरतों और तुम्हारे मालों को नहीं देखते, बल्कि तुम्हारे दिलों को और तुम्हारे आमाल को देखते हैं। (मुस्लिम)

फ़ायदा : यानी अल्लाह तआ़ला के यहां रज़ामन्दी का फ़ैसला तुम्हारी सूरतों और तुम्हारे मालों की बुनयाद पर नहीं होगा, बल्कि तुम्हारे दिलों और आमाल को देखकर होगा कि दिल में कितना इख़्लास था।

﴿ 2 ﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّةِ، وَإِنَّمَا لِامْرِئٍ مَا نَوٰى، فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى اللهِ وَرَسُوْلِهِ فَهِجْرَتُهُ إِلَى اللهِ وَرَسُوْلِهِ، وَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى دُنْيَا يُصِيْبُهَا أَوِ امْرَأَةٍ يَتَزَوَّجُهَا، فَهِجْرَتُهُ إِلَى مَا هَاجَرَ إِلَيْهِ.

رواه البخاري، باب النية في الايمان، رقم: ٦٦٨٩

2. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : सारे आमाल का दारो मदार नीयत ही पर है और आदमी को वही मिलेगा, जिसकी उसने नीयत की होगी लिहाज़ा जिस शख़्स ने अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की लिए हिजरत की, यानी अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की ख़ुशनूदी के सिवा उसकी हिजरत की कोई और वजह न थी, तो उसकी हिजरत अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल ही के लिए होगी यानी उसको उस हिजरत का सवाब मिलेगा और जिस शख़्स ने किसी दुन्यावी ग़रज़ या किसी औरत से निकाह करने के लिए हिजरत की, तो (उसकी हिजरत अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल के लिए न होगी, बल्कि) जिस दूसरी ग़रज़ और नीयत से उसने हिजरत की है (अल्लाह तआ़ला के नज़दीक भी) उसकी हिजरत उसी (ग़रज़) के लिए समझी जाएगी। (बुख़ारी)

Copyright ©

﴾ 3 ﴿ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّمَا يُبْعَثُ النَّاسُ عَلَى نِيَّاتِهِمْ. رواه ابن ماجه، باب النية،رقم:٤٢٢٩

3. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (क़ियामत के दिन) लोगों को उनकी नीयतों के मुताबिक़ उठाया जाएगा यानी हर एक के साथ उसकी नीयत के मुताबिक़ मामला होगा। (इब्ने माजा)

﴾ 4 ﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَغْزُوْ جَيْشٌ الْكَعْبَةَ، فَإِذَا كَانُوا بِبَيْدَاءَ مِنَ الْأَرْضِ يُخْسَفُ بِأَوَّلِهِمْ وَآخِرِهِمْ، قَالَتْ: قُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ! كَيْفَ يُخْسَفُ بِأَوَّلِهِمْ وَآخِرِهِمْ، وَفِيهِمْ أَسْوَاقُهُمْ وَمَنْ لَيْسَ مِنْهُمْ؟ قَالَ : يُخْسَفُ بِأَوَّلِهِمْ وَآخِرِهِمْ، ثُمَّ يُبْعَثُوْنَ عَلَى نِيَّاتِهِمْ. رواه البخاري، باب ما ذكر في الاسواق،رقم:٢١١٨

4. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक लश्कर ख़ाना काबा पर चढ़ाई की नीयत से निकलेगा, जब वह एक चटयल मैदान में पहुंचेगा तो उन सबको ज़मीन में धंसा दिया जाएगा। हज़रत आइशा ﷺ फ़रमाती हैं, मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! सब को कैसे धंसा दिया जाएगा जबकि वहीं बाज़ार वाले भी होंगे और वे लोग भी होंगे जो उस लश्कर में शामिल नहीं होंगे? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सबको धंसा दिया जाएगा, फिर अपनी-अपनी नीयतों के मुताबिक़ उनका हश्र होगा यानी क़ियामत वाले दिन उनकी नीयतों के मुताबिक़ उनसे मामला किया जाएगा। (बुख़ारी)

﴾ 5 ﴿ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَقَدْ تَرَكْتُمْ بِالْمَدِيْنَةِ أَقْوَامًا مَا سِرْتُمْ مَسِيْرًا، وَلَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ نَفَقَةٍ، وَلَا قَطَعْتُمْ مِنْ وَادٍ إِلَّا وَهُمْ مَعَكُمْ فِيْهِ قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! وَكَيْفَ يَكُوْنُوْنَ مَعَنَا وَهُمْ بِالْمَدِيْنَةِ؟ قَالَ: حَبَسَهُمُ الْعُذْرُ.

رواه ابو داؤد، باب الرخصة في القعود من العذر، رقم:٢٥٠٨

5. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुमने मदीना में कुछ ऐसे लोगों को छोड़ा है कि जिस रास्ते पर भी तुम चले, जो कुछ भी तुमने ख़र्च किया और जिस वादी से भी तुम गुज़रे वह उन आमाल (के अज्र व सवाब) में तुम्हारे साथ शरीक रहे। सहाबा ﷺ ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! वे कैसे हमारे साथ शरीक रहे, हालांकि वह मदीना में हैं? नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (वह तुम्हारे साथ निकलना चाहते थे, लेकिन) उज़्र ने उनको रोक दिया। (अबूदाऊद)

Copyright ©

﴿6﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِيمَا يَرْوِي عَنْ رَبِّهِ عَزَّوَجَلَّ قَالَ: قَالَ: إِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ كَتَبَ الْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ ثُمَّ بَيَّنَ ذٰلِكَ، فَمَنْ هَمَّ بِحَسَنَةٍ فَلَمْ يَعْمَلْهَا كَتَبَهَا اللهُ لَهُ عِنْدَهُ حَسَنَةً كَامِلَةً، فَإِنْ هَمَّ بِهَا وَعَمِلَهَا كَتَبَهَا اللهُ لَهُ عِنْدَهُ عَشْرَ حَسَنَاتٍ إِلٰى سَبْعِ مِائَةِ ضِعْفٍ إِلٰى أَضْعَافٍ كَثِيرَةٍ، وَمَنْ هَمَّ بِسَيِّئَةٍ فَلَمْ يَعْمَلْهَا كَتَبَهَا اللهُ لَهُ عِنْدَهُ حَسَنَةً كَامِلَةً، فَإِنْ هُوَ هَمَّ بِهَا فَعَمِلَهَا كَتَبَهَا اللهُ لَهُ سَيِّئَةً وَاحِدَةً.

رواه البخاري، باب من هم بحسنة او بسيئة، رقم: ٦٤٩١

6. हज़रत इब्ने अब्बास ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला ने नेकियों और बुराइयों के बारे में एक फ़ैसला फ़रिश्तों को लिखवा दिया, उसकी तफ़्सील यूं ब्यान फ़रमाई कि जो शख़्स नेकी का इरादा करे और फिर (किसी वजह से) न कर सके तो अल्लाह तआला उस के लिए पूरी एक नेकी लिख देते हैं, और अगर इरादा करने के बाद उस नेकी को कर ले तो उसके लिए अल्लाह तआला दस नेकियों से सात सौ तक बल्कि उससे भी आगे कई गुना तक लिख देते हैं और जो शख़्स किसी बुराई का इरादा करे और फिर उसके करने से रुक जाए, तो अल्लाह तआला उसके लिए एक पूरी नेकी लिख देते हैं (क्योंकि उसका बुराई से रुकना अल्लाह तआला के डर की वजह से है) और अगर इरादा करने के बाद उसने वह गुनाह कर लिया, तो अल्लाह तआला उसके लिए एक (ही) गुनाह लिखते हैं। (बुख़ारी)

﴿7﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: لَأَتَصَدَّقَنَّ بِصَدَقَةٍ، فَخَرَجَ بِصَدَقَتِهِ فَوَضَعَهَا فِي يَدِ سَارِقٍ فَأَصْبَحُوا يَتَحَدَّثُونَ: تُصُدِّقَ عَلٰى سَارِقٍ، فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ، لَأَتَصَدَّقَنَّ بِصَدَقَةٍ، فَخَرَجَ بِصَدَقَتِهِ فَوَضَعَهَا فِي يَدِ زَانِيَةٍ، فَأَصْبَحُوا يَتَحَدَّثُونَ: تُصُدِّقَ اللَّيْلَةَ عَلٰى زَانِيَةٍ، فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ، عَلٰى زَانِيَةٍ، لَأَتَصَدَّقَنَّ بِصَدَقَةٍ، فَخَرَجَ بِصَدَقَتِهِ فَوَضَعَهَا فِي يَدِ غَنِيٍّ، فَأَصْبَحُوا يَتَحَدَّثُونَ: تُصُدِّقَ عَلٰى غَنِيٍّ، فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى سَارِقٍ، وَعَلٰى زَانِيَةٍ، وَعَلٰى غَنِيٍّ، فَأُتِيَ فَقِيلَ لَهُ: أَمَّا صَدَقَتُكَ عَلٰى سَارِقٍ، فَلَعَلَّهُ أَنْ يَسْتَعِفَّ عَنْ سَرِقَتِهِ، وَأَمَّا الزَّانِيَةُ فَلَعَلَّهَا أَنْ تَسْتَعِفَّ عَنْ زِنَاهَا، وَأَمَّا الْغَنِيُّ فَلَعَلَّهُ أَنْ يَعْتَبِرَ فَيُنْفِقَ مِمَّا أَعْطَاهُ اللهُ.

رواه البخاري، باب إذا تصدق على غني...... ،رقم: ١٤٢١

7. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया :

Copyright ©

(बनी इसराईल) के एक आदमी ने (अपने दिल में) कहा कि मैं (आज रात चुपके से) सदक़ा करूंगा। चुनांचे (रात को चुपके से सदक़े का माल लेकर निकला और बेख़बरी में) एक चोर के हाथ में दे दिया। सुबह लोगों में चर्चा हुआ (कि रात) चोर को सदक़ा दिया गया। सदक़ा करने वाले ने कहा : या अल्लाह! (चोर को सदक़ा देने में भी) आपके लिए ही तारीफ़ है (कि उससे भी ज़्यादा बुरे आदमी को दिया जाता तो मैं क्या कर सकता था) फिर उसने अ़ज़्म किया कि आज रात (भी) ज़रूर सदक़ा करूंगा (कि पहला तो ज़ाय हो गया) चुनांचे रात को सदक़ा का माल लेकर निकला और (बेख़बरी में) सदक़ा एक बदकार औरत को दे दिया। सुबह चर्चा हुआ कि आज रात बदकार औरत को सदक़ा दिया गया। उसने कहा : ऐ अल्लाह! बदकार औरत (को सदक़ा देने) में भी आपही के लिए तारीफ़ है (कि मेरा माल तो इस क़ाबिल भी न था) फिर (तीसरी मर्तबा) इरादा किया कि आज रात ज़रूर सदक़ा करूंगा। चुनांचे रात को सदक़े का माल लेकर निकला और उसे एक मालदार के हाथ में दे दिया। सुबह चर्चा हुआ कि रात मालदार को सदक़ा दिया गया। सदक़ा देने वाले ने कहा : या अल्लाह! चोर, बदकार औरत और मालदार को सदक़ा देने पर आप ही के लिए तारीफ़ है (कि मेरा माल तो ऐसे लोगों को देने के क़ाबिल भी न था) ख़्वाब में बताया गया कि (तेरा सदक़ा क़ुबूल हो गया है) तेरा सदक़ा चोर पर (इसलिए कराया गया) कि शायद वह अपनी चोरी की आ़दत से तौबा कर ले और बदकार औरत पर इसलिए कि शायद वह बदकारी से तौबा कर ले (जब वह देखेगी कि बदकारी के बग़ैर भी अल्लाह तआ़ला अ़ता फ़रमाते हैं तो उसको ग़ैरत आएगी) और मालदार पर इसलिए, ताकि उसे इबरत हासिल हो (कि अल्लाह तआ़ला के बन्दे किस तरह छुप कर सदक़ा करते हैं, उसकी वजह से) शायद वह भी उस माल में से जो अल्लाह तआ़ला ने उसे अ़ता फ़रमाया है (अल्लाह तआ़ला के रास्ते में) ख़र्च करने लगे। (बुख़ारी)

फ़ायदा : उस शख़्स के इख़्लास की वजह से तीनों सदक़े अल्लाह तआ़ला ने क़ुबूल फ़रमा लिए।

﴿ 8 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: انْطَلَقَ ثَلاثَةُ رَهْطٍ مِمَّنْ كَانَ قَبْلَكُمْ حَتَّى أَوَوُا الْمَبِيْتَ إِلَى غَارٍ فَدَخَلُوْهُ، فَانْحَدَرَتْ صَخْرَةٌ مِنَ الْجَبَلِ فَسَدَّتْ عَلَيْهِمُ الْغَارَ، فَقَالُوْا: إِنَّهُ لَا يُنْجِيْكُمْ مِنْ هٰذِهِ الصَّخْرَةِ إِلَّا أَنْ تَدْعُوا اللهَ بِصَالِحِ أَعْمَالِكُمْ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنْهُمْ: اَللّٰهُمَّ! كَانَ لِيْ أَبَوَانِ شَيْخَانِ كَبِيْرَانِ،

Copyright ©

وَكُنْتُ لَا أَغْبِقُ قَبْلَهُمَا أَهْلًا وَلَا مَالًا فَنَأَى بِي فِي طَلَبِ شَيْءٍ يَوْمًا فَلَمْ أُرِحْ عَلَيْهِمَا حَتَّى نَامَا فَحَلَبْتُ لَهُمَا غَبُوقَهُمَا فَوَجَدْتُهُمَا نَائِمَيْنِ، فَكَرِهْتُ أَنْ أَغْبِقَ قَبْلَهُمَا أَهْلًا أَوْ مَالًا، فَلَبِثْتُ وَالْقَدَحُ عَلَى يَدَيَّ أَنْتَظِرُ اسْتِيقَاظَهُمَا حَتَّى بَرَقَ الْفَجْرُ فَاسْتَيْقَظَا فَشَرِبَا غَبُوقَهُمَا، اَللّٰهُمَّ إِنْ كُنْتُ فَعَلْتُ ذٰلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَفَرِّجْ عَنَّا مَا نَحْنُ فِيهِ مِنْ هٰذِهِ الصَّخْرَةِ، فَانْفَرَجَتْ شَيْئًا لَا يَسْتَطِيعُونَ الْخُرُوجَ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: وَقَالَ الْآخَرُ: اَللّٰهُمَّ! كَانَتْ لِي بِنْتُ عَمٍّ، كَانَتْ أَحَبَّ النَّاسِ إِلَيَّ فَأَرَدْتُهَا عَنْ نَفْسِهَا، فَامْتَنَعَتْ مِنِّي حَتَّى أَلَمَّتْ بِهَا سَنَةٌ مِنَ السِّنِينَ فَجَاءَتْنِي فَأَعْطَيْتُهَا عِشْرِينَ وَمِائَةَ دِينَارٍ عَلَى أَنْ تُخَلِّيَ بَيْنِي وَبَيْنَ نَفْسِهَا فَفَعَلَتْ، حَتَّى إِذَا قَدَرْتُ عَلَيْهَا قَالَتْ: لَا أُحِلُّ لَكَ أَنْ تَفُضَّ الْخَاتَمَ إِلَّا بِحَقِّهِ، فَتَحَرَّجْتُ مِنَ الْوُقُوعِ عَلَيْهَا فَانْصَرَفْتُ عَنْهَا وَهِيَ أَحَبُّ النَّاسِ إِلَيَّ فَتَرَكْتُ الذَّهَبَ الَّذِي أَعْطَيْتُهَا، اَللّٰهُمَّ إِنْ كُنْتُ فَعَلْتُ ذٰلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَافْرُجْ عَنَّا مَا نَحْنُ فِيهِ، فَانْفَرَجَتِ الصَّخْرَةُ غَيْرَ أَنَّهُمْ لَا يَسْتَطِيعُونَ الْخُرُوجَ مِنْهَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: وَقَالَ الثَّالِثُ: اَللّٰهُمَّ! إِنِّي اسْتَأْجَرْتُ أُجَرَاءَ فَأَعْطَيْتُهُمْ أَجْرَهُمْ غَيْرَ رَجُلٍ وَاحِدٍ، تَرَكَ الَّذِي لَهُ وَذَهَبَ، فَثَمَّرْتُ أَجْرَهُ حَتَّى كَثُرَتْ مِنْهُ الْأَمْوَالُ فَجَاءَنِي بَعْدَ حِينٍ فَقَالَ: يَا عَبْدَ اللّٰهِ! أَدِّ إِلَيَّ أَجْرِي، فَقُلْتُ لَهُ: كُلُّ مَا تَرَى مِنْ أَجْرِكَ مِنَ الْإِبِلِ وَالْبَقَرِ وَالْغَنَمِ وَالرَّقِيقِ فَقَالَ: يَا عَبْدَ اللّٰهِ! لَا تَسْتَهْزِئْ بِي، فَقُلْتُ: إِنِّي لَا أَسْتَهْزِئُ بِكَ، فَأَخَذَهُ كُلَّهُ فَاسْتَاقَهُ فَلَمْ يَتْرُكْ مِنْهُ شَيْئًا، اَللّٰهُمَّ! فَإِنْ كُنْتُ فَعَلْتُ ذٰلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَافْرُجْ عَنَّا مَا نَحْنُ فِيهِ، فَانْفَرَجَتِ الصَّخْرَةُ فَخَرَجُوا يَمْشُونَ.

رواه البخاري، باب من استأجر أجيرا فترك أجره، رقم: ٢٢٧٢

8. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : तुमसे पहले किसी उम्मत के तीन शख़्स (एक साथ सफ़र पर) निकले। (चलते-चलते रात हो गई) रात गुज़ारने के लिए वे एक ग़ार में दाख़िल हो गए। उसी दौरान पहाड़ से एक चट्टान गिरी, जिसने ग़ार के मुंह को बन्द कर दिया। (यह देखकर) उन्होंने कहा कि चट्टान से नजात की यही सूरत है कि सबके सब अपने आमाले सालिहा के ज़रिए अल्लाह तआला से दुआ करें (चुनांचे उन्होंने अपने-अपने अमल के वास्ते से दुआएं कीं) उनमें से एक ने कहा : या अल्लाह! (आप जानते हैं कि) मेरे मां-बाप बहुत बूढ़े थे। मैं अह्ल व अयाल और ग़ुलामों को उनसे पहले दूध नहीं पिलाता था। एक दिन मैं एक चीज़ की तलाश में दूर निकल गया, जब वापस लौट कर आया तो वालिदैन सो चुके थे। (फिर भी) मैंने उनके लिए शाम का दूध दूहा (और उसे प्याले में लेकर उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ) तो देखा

Copyright ©

कि वह (उस वक़्त भी) सो रहे हैं। मैंने उनको जगाना पसन्द नहीं किया और उनसे पहले अह्ल व अयाल या ग़ुलामों को दूध पिलाना भी गवारा न किया। मैं दूध का प्याला हाथ में लिए उनके सिरहाने खड़ा उनके जागने का इंतज़ार करता रहा, यहां तक कि सुबह हो गई और वे बेदार हुए, (तो मैंने उन्हें दूध दिया) उस वक़्त उन्होंने अपने शाम के हिस्से का दूध पिया। या अल्लाह! अगर मैंने ये काम सिर्फ़ आपकी ख़ुशनूदी के लिए किया था तो हम इस चट्टान की वजह से जिस मुसीबत में फंस गए हैं, उससे हमें नजात अ़ता फ़रमा दे। इस दुआ के नतीजे में वह चट्टान थोड़ी-सी सरक गई लेकिन बाहर निकलना मुम्किन न हुआ।

रसूलुल्लाह ﷺ इर्शाद फ़रमाते हैं कि दूसरे शख़्स ने दुआ की, या अल्लाह! मेरी एक चचाज़ाद बहन थी जो मुझे सबसे ज़्यादा महबूब थी। मैंने (एक मर्तबा) उससे अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश पूरी करने का इरादा किया, लेकिन वह आमादा नहीं हुई, यहां तक कि एक वक़्त आया कि क़हतसाली ने उसे (मेरे पास) आने पर मजबूर कर दिया। मैंने उसे इस शर्त पर एक सौ बीस दीनार दिए कि वह तन्हाई में मुझसे मिले। वह आमादा हो गई, यहां तक कि जब मैं उस पर क़ाबू पा चुका (और क़रीब था कि मैं अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश पूरी करूं) तो उसने कहा कि मैं तुम्हारे लिए इस बात को हलाल नहीं समझती कि तुम इस मुहर को नाहक़ तोड़ो (यह सुनकर) मैं अपने बुरे इरादे से बाज़ आ गया और मैं उससे दूर हो गया हालांकि मुझे उससे बहुत ज़्यादा मुहब्बत थी और मैंने वे सोने के दीनार भी छोड़ दिए जो उसे दिए थे। या अल्लाह! अगर मैंने यह काम आपकी रज़ा के लिए किया था तो हमारी इस मुसीबत को दूर फ़रमा दे, चुनांचे वह चट्टान कुछ और सरक गई, लेकिन (फिर भी) निकलना मुम्किन न हुआ।

तीसरे ने दुआ की या अल्लाह! कुछ मज़दूरों को मैंने मज़दूरी पर रखा था, सबको मैंने मज़दूरी दे दी, सिर्फ़ एक मज़दूर अपनी मज़दूरी लिए बग़ैर चला गया था। मैंने उसकी मज़दूरी की रक़म को कारोबार में लगा दिया यहां तक कि माल में बहुत कुछ इज़ाफ़ा हो गया। कुछ अ़र्से बाद वह एक दिन आया और आकर कहा : अल्लाह के बन्दे! मुझे मेरी मज़दूरी दे मैंने कहा, ये ऊंट, गाय, बकरियां और ग़ुलाम जो तुम्हें नज़र आ रहे हैं, ये तुम्हारी मज़दूरी हैं, यानी तुम्हारी मज़दूरी को कारोबार में लगाकर ये मुनाफ़े हासिल हुए हैं। उसने कहा : अल्लाह के बन्दे! मज़ाक़ न कर। मैंने कहा, मज़ाक़ नहीं कर रहा

Copyright ©

(हक़ीक़त ब्यान कर रहा हूं) चुनांचे (मेरी वज़ाहत के बाद) वह सारा माल ले गया, कुछ न छोड़ा। या अल्लाह! अगर मैंने यह काम सिर्फ़ आपकी रज़ा की ख़ातिर किया था तो यह मुसीबत जिसमें हम फंसे हुए हैं, दूर फ़रमा दें. चुनांचे वह चट्टान बिल्कुल सरक गई (और ग़ार का मुंह खुल गया) और सब बाहर निकल आए। (बुख़ारी)

﴿ ٩ ﴾ عَنْ أَبِي كَبْشَةَ الْأَنْمَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: ثَلَاثٌ أُقْسِمُ عَلَيْهِنَّ وَأُحَدِّثُكُمْ حَدِيْثًا فَاحْفَظُوْهُ، قَالَ: مَا نَقَصَ مَالُ عَبْدٍ مِنْ صَدَقَةٍ، وَلَا ظُلِمَ عَبْدٌ مَظْلَمَةً صَبَرَ عَلَيْهَا إِلَّا زَادَهُ اللهُ عِزًّا، وَلَا فَتَحَ عَبْدٌ بَابَ مَسْأَلَةٍ إِلَّا فَتَحَ اللهُ عَلَيْهِ بَابَ فَقْرٍ. أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا. وَأُحَدِّثُكُمْ حَدِيْثًا فَاحْفَظُوْهُ، قَالَ: إِنَّمَا الدُّنْيَا لِأَرْبَعَةِ نَفَرٍ: عَبْدٍ رَزَقَهُ اللهُ مَالًا وَعِلْمًا فَهُوَ يَتَّقِيْ رَبَّهُ فِيْهِ وَيَصِلُ بِهِ رَحِمَهُ وَيَعْلَمُ لِلّٰهِ فِيْهِ حَقًّا فَهٰذَا بِأَفْضَلِ الْمَنَازِلِ، وَعَبْدٍ رَزَقَهُ اللهُ عِلْمًا وَلَمْ يَرْزُقْهُ مَالًا فَهُوَ صَادِقُ النِّيَّةِ، يَقُوْلُ: لَوْ أَنَّ لِيْ مَالًا لَعَمِلْتُ فِيْهِ بِعَمَلِ فُلَانٍ فَهُوَ بِنِيَّتِهِ فَأَجْرُهُمَا سَوَاءٌ، وَعَبْدٍ رَزَقَهُ اللهُ مَالًا وَلَمْ يَرْزُقْهُ عِلْمًا فَهُوَ يَخْبِطُ فِيْ مَالِهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ لَا يَتَّقِيْ فِيْهِ رَبَّهُ وَلَا يَصِلُ فِيْهِ رَحِمَهُ، وَلَا يَعْلَمُ لِلّٰهِ فِيْهِ حَقًّا فَهٰذَا بِأَخْبَثِ الْمَنَازِلِ، وَعَبْدٍ لَمْ يَرْزُقْهُ اللهُ مَالًا وَلَا عِلْمًا فَهُوَ يَقُوْلُ: لَوْ أَنَّ لِيْ مَالًا لَعَمِلْتُ فِيْهِ بِعَمَلِ فُلَانٍ فَهُوَ بِنِيَّتِهِ فَوِزْرُهُمَا سَوَاءٌ. رواه الترمذي وقال هذا حديث حسن صحيح، باب ما جاء مثل الدنيا مثل أربعة نفر، رقم: ٢٣٢٥

9. हज़रत अबू कब्शा अन्मारी رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मैं क़सम खाकर तीन चीज़ें ब्यान करता हूं और उसके बाद एक बात ख़ास तौर से तुम्हें बतलाऊंगा उसको अच्छी तरह महफ़ूज़ रखना। (वो तीन बातें जिन पर मैं क़सम खाता हूं उनमें से पहली यह है कि) किसी बन्दे का माल सदक़ा करने से कम नहीं होता। (दूसरी यह कि) जिस शख़्स पर ज़ुल्म किया जाए और वह उस पर सब्र करे तो अल्लाह तआला उस सब्र की वजह से उसकी इज़्ज़त बढ़ाते हैं। (तीसरी यह है कि) जो शख़्स लोगों से मांगने का दरवाज़ा खोलता है अल्लाह तआला उस पर फ़क्र का दरवाज़ा खोल देते हैं। फिर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक बात तुम्हें बतलाता हूं, उसे याद रखो। दुनिया में चार क़िस्म के लोग होते हैं। एक वह शख़्स जिसको अल्लाह तआला ने माल और इल्म अता फ़रमाया हो, वह (अपने इल्म की वजह से) अपने माल के बारे में अल्लाह तआला से डरता

Copyright ©

है (कि उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ ख़र्च नहीं करता बल्कि) सिलारहमी (में ख़र्च) करता है और यह भी जानता है कि इस माल में अल्लाह तआ़ला का हक़ है (इसलिए माल नेक कामों में ख़र्च करता है) यह शख़्स क़ियामत में सबसे बेहतरीन दर्जो में होगा। दूसरा वह शख़्स है, जिसको अल्लाह तआ़ला ने इल्म अ़ता फ़रमाया और माल नहीं दिया वह सच्ची नीयत रखता है और यह तमन्ना करता है कि अगर मेरे पास माल होता तो मैं भी फ़्लां की तरह से (नेक कामों में) ख़र्च करता तो (अल्लाह तआ़ला) उसकी नीयत की वजह से (उसको भी वही सवाब देते हैं जो पहले शख़्स का है) इस तरह उन दोनों का सवाब बराबर हो जाता है। तीसरा वह शख़्स है, जिसको अल्लाह तआ़ला ने माल दिया, मगर इल्म अ़ता नहीं किया, वह अपने माल में इल्म न होने की वजह से गड़बड़ करता है (बेजा ख़र्च करता है) न उस माल में अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ करता है, न सिलारहमी करता है और न यह जानता है कि अल्लाह तआ़ला का इस माल में हक़ है, यह शख़्स क़ियामत में बदतरीन दर्जो में होगा। चौथा वह शख़्स है कि जिसको अल्लाह तआ़ला ने न माल दिया, न इल्म अ़ता किया, वह तमन्ना करता है कि अगर मेरे पास माल होता, मैं भी फ़्लाँ यानी तीसरे आदमी की तरह (बेजा ख़र्च) करता तो उसको उस नीयत का गुनाह होता है और उसका और तीसरे आदमी का गुनाह बराबर हो जाता है, यानी अच्छे या बुरे अ़ज़्म पर उसी जैसा सवाब और गुनाह होता है जो अच्छे या बुरे अ़मल पर होता है। (तिर्मिज़ी)

﴿ 10 ﴾ عَنْ رَجُلٍ مِنْ أَهْلِ الْمَدِيْنَةِ قَالَ: كَتَبَ مُعَاوِيَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ إِلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنِ اكْتُبِيْ إِلَيَّ كِتَابًا تُوْصِيْنِيْ فِيْهِ وَلَا تُكْثِرِيْ عَلَيَّ، قَالَ: فَكَتَبَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا إِلَى مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: سَلَامٌ عَلَيْكَ أَمَّا بَعْدُ فَإِنِّيْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: "مَنِ الْتَمَسَ رِضَا اللهِ بِسَخَطِ النَّاسِ كَفَاهُ اللهُ مُؤْنَةَ النَّاسِ، وَمَنِ الْتَمَسَ رِضَا النَّاسِ بِسَخَطِ اللهِ وَكَلَهُ اللهُ إِلَى النَّاسِ" وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ.

رواه الترمذي، باب منه عاقبة من التمس رضا الناس ... رقم: ٢٤١٤

10. मदीना मुनव्वरा के एक साहब फ़रमाते हैं कि हज़रत मुआ़विया ﷺ ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को ख़त लिखा कि आप मुझको कोई नसीहत लिखकर भेज दें, जो मुख़्तसर हो, ज़्यादा लम्बी न हो। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने सलाम मस्नून और हम्द व सलात के बाद लिखा। मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की ख़ुशनूदी की तलाश में लोगों की नाराज़गी से बेफ़िक्र होकर लगा रहा, अल्लाह तआ़ला लोगों की नाराज़गी के नुक़सान

Copyright ©

से उसकी किफ़ायत फ़रमा देंगे और जो शख़्स अल्लाह तआला की नाराज़गी से बेफ़िक्र होकर लोगों को ख़ुश करने में लगा रहा, अल्लाह तआला उसे लोगों के हवाले कर देंगे। "वस्सलामु अलैक" (तुम पर अल्लाह तआला का सलाम हो)।

(तिर्मिज़ी)

﴿ 11 ﴾ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ الْبَاهِلِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ لَا يَقْبَلُ مِنَ الْعَمَلِ إِلَّا مَا كَانَ لَهُ خَالِصًا وَابْتُغِيَ بِهِ وَجْهُهُ.

رواه النسائي، باب من غزا يلتمس الاجر والذكر، رقم: ٣١٤٢

11. हज़रत अबू उमामा बाहिली ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला आमाल में से सिर्फ़ उसी अमल को क़ुबूल फ़रमाते हैं, जो ख़ालिस उन्हीं के लिए हो और उसमें सिर्फ़ अल्लाह तआला ही की ख़ुशनूदी मक़सूद हो। (नसाई)

﴿ 12 ﴾ عَنْ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّمَا يَنْصُرُ اللهُ هٰذِهِ الْأُمَّةَ بِضَعِيْفِهَا بِدَعْوَتِهِمْ وَصَلَاتِهِمْ وَإِخْلَاصِهِمْ.

رواه النسائي، باب الاستنصار بالضعيف، رقم: ٣١٨٠

12. हज़रत साद ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला इस उम्मत की मदद (उसकी क़ाबलियत और सलाहियत की बुनयाद पर नहीं फ़रमाते बल्कि) कमज़ोर और ख़स्ताहाल लोगों की दुआओं, नमाज़ों और उनके इख़्लास की वजह से फ़रमाते हैं। (नसाई)

﴿ 13 ﴾ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ أَتَى فِرَاشَهُ وَهُوَ يَنْوِي أَنْ يَقُوْمَ يُصَلِّيْ مِنَ اللَّيْلِ فَغَلَبَتْهُ عَيْنَاهُ حَتَّى أَصْبَحَ، كُتِبَ لَهُ مَا نَوَى وَكَانَ نَوْمُهُ صَدَقَةً عَلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ عَزَّوَجَلَّ.

رواه النسائي، باب من اتى فراشه ، رقم: ١٧٨٨

13. हज़रत अबुदर्दा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स (सोने के लिए) अपने बिस्तर पर आए और उसकी नीयत यह हो कि रात को उठकर तहज्जुद पढूंगा, फिर नींद का ऐसा ग़लबा हो जाए कि सुबह ही आंख खुले तो उसके लिए तहज्जुद का सवाब लिख दिया जाता है, और उसका सोना उसके रब की तरफ़ से उसके लिए अतीया होता है। (नसाई)

﴿ 14 ﴾ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ كَانَتْ [illegible] فَرَّقَ اللهُ عَلَيْهِ أَمْرَهُ، وَجَعَلَ فَقْرَهُ بَيْنَ عَيْنَيْهِ، وَلَمْ يَأْتِهِ مِنَ الدُّنْيَا إِلَّا مَا كُتِبَ

Copyright ©

لَهُ، وَمَنْ كَانَتِ الْآخِرَةُ نِيَّتَهُ، جَمَعَ اللهُ لَهُ أَمْرَهُ، وَجَعَلَ غِنَاهُ فِي قَلْبِهِ، وَأَتَتْهُ الدُّنْيَا وَهِيَ رَاغِمَةٌ. رواه ابن ماجه، باب الهم بالدنيا، رقم: ٤١٠٥

14. हज़रत ज़ैद बिन साबित ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स का मक़सद दुनिया बन जाए अल्लाह तआला उसके कामों को बिखेर देते हैं, यानी हर काम में उसको परेशान कर देते हैं, फ़क़्र (का ख़ौफ़) उसकी आंखों के सामने कर देते हैं और दुनिया उसे इतनी ही मिलती है जितनी उसके लिए पहले से मुक़द्दर थी और जिस शख़्स की नीयत आख़िरत की हो, तो अल्लाह तआला उसके कामों को आसान फ़रमा देते हैं, उसके दिल को ग़नी फ़रमा देते हैं और दुनिया ज़लील होकर उसके पास आती है। (इब्ने माजा)

﴿15﴾ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ثَلَاثُ خِصَالٍ لَا يَغِلُّ عَلَيْهِنَّ قَلْبُ مُسْلِمٍ: إِخْلَاصُ الْعَمَلِ لِلّٰهِ، وَمُنَاصَحَةُ وُلَاةِ الْأَمْرِ، وَلُزُومُ الْجَمَاعَةِ، فَإِنَّ دَعْوَتَهُمْ تُحِيطُ مِنْ وَرَائِهِمْ. (وهو بعض الحديث) رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ١/٢٧٠

15. हज़रत ज़ैद बिन साबित ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन आदतें ऐसी हैं कि उनकी वजह से मोमिन का दिल कीना, ख़ियानत (और हर क़िस्म की बुराइ) से पाक रहता है, 1. अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी के लिए अमल करना, 2. हाकिमों की ख़ैरख़्वाही करना, 3. मुसलमानों की जमाअत के साथ चिमटे रहना, क्योंकि जमाअत के साथ रहने वालों को जमाअत के लोगों की दुआएं हर तरफ़ से घेरे रहती हैं (जिनकी वजह से शैतान के शर से हिफ़ाज़त रहती है)। (इब्ने हब्बान)

﴿16﴾ عَنْ ثَوْبَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: طُوبَى لِلْمُخْلِصِينَ، أُولَئِكَ مَصَابِيحُ الدُّجَى، تَتَجَلَّى عَنْهُمْ كُلُّ فِتْنَةٍ ظَلْمَاءَ. رواه البيهقي في شعب الايمان ٥/٣٤٢

16. हज़रत सौबान ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : इख़्लास वालों के लिए ख़ुशख़बरी हो कि वे अंधेरों में चिराग़ हैं, उनकी वजह से सख़्त से सख़्त फ़ित्ने दूर हो जाते हैं। (बैहक़ी)

﴿17﴾ عَنْ أَبِي فِرَاسٍ رَحِمَهُ اللهُ رَجُلٌ مِنْ أَسْلَمَ. قَالَ: نَادَى رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ! مَا الْإِيمَانُ؟ قَالَ: الْإِخْلَاصُ. (وهو جزء من الحديث) رواه البيهقي في شعب الايمان ٥/٣٤٢

17. क़बीला असलम के हज़रत अबू फ़िरास रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि एक

Copyright ©

शख़्स ने पुकार कर पूछा : या रसूलुल्लाह! ईमान क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान इख़्लास है। (बैहक़ी)

﴿ 18 ﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ رَضِیَ اللہُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللہِ ﷺ: صَدَقَةُ السِّرِّ تُطْفِئُ غَضَبَ الرَّبِّ. (وهو طرف من الحديث)

رواه الطبراني في الكبير واسناده حسن، مجمع الزوائد ٣/٢٩٣

18. हज़रत अबू उमामा ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं : पोशीदा तौर पर सदक़ा करना अल्लाह तआ़ला के गुस्सा को ठंडा करना है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 19 ﴾ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللہُ عَنْهُ قَالَ: قِیْلَ لِرَسُوْلِ اللہِ ﷺ: اَرَاَیْتَ الرَّجُلَ یَعْمَلُ الْعَمَلَ مِنَ الْخَیْرِ وَیَحْمَدُهُ النَّاسُ عَلَیْهِ؟ قَالَ: تِلْكَ عَاجِلُ بُشْرَی الْمُؤْمِنِ.

رواه مسلم، باب اذا اثنى على الصالح.....رقم: ٦٧٢١

19. हज़रत अबूज़र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ से दरयाफ़्त किया गया : ऐसे शख़्स के बारे में फ़रमाइए कि जो नेक अमल करता है और उसकी वजह से लोग उसकी तारीफ़ करते हैं (क्या उसे नेक अमल करने का सवाब मिलेगा, लोगों का उसकी तारीफ़ करना रियाकारी में तो दाख़िल नहीं होगा?) आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह तो मोमिन को जल्द मिलने वाली बशारत है। (मुस्लिम)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि एक बशारत तो वह है जो आख़िरत में मिलेगी और एक बशारत यह है कि जो दुनिया में मिल गई कि लोगों ने उसकी तारीफ़ की। यह इस सूरत में है जब उसकी नीयत अमल से महज़ अल्लाह तआ़ला की ख़ुशनूदी ही हो, तारीफ़ कराना मक़सूद न हो।

﴿ 20 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِیَ اللہُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَتْ: سَاَلْتُ رَسُوْلَ اللہِ ﷺ عَنْ هٰذِهِ الْاٰیَةِ "وَالَّذِیْنَ یُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ" [المؤمنون: ٦٠] قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِیَ اللہُ عَنْهَا: اَهُمُ الَّذِیْنَ یَشْرَبُوْنَ الْخَمْرَ وَیَسْرِقُوْنَ؟ قَالَ: لَا، یَا بِنْتَ الصِّدِّیْقِ! وَلٰكِنَّهُمُ الَّذِیْنَ یَصُوْمُوْنَ وَیُصَلُّوْنَ وَیَتَصَدَّقُوْنَ وَهُمْ یَخَافُوْنَ اَنْ لَا یُقْبَلَ مِنْهُمْ "اُولٰٓئِكَ الَّذِیْنَ یُسَارِعُوْنَ فِی الْخَیْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ".

رواه الترمذي، باب ومن سورة المؤمنون، رقم: ٣١٧٥

Copyright ©

20. उम्मुलमोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि मैंने

रसूलुल्लाह ﷺ से आयत का मतलब दरयाफ़्त किया, जिसमें अल्लाह तआला का इर्शाद है, ''और जो लोग देते हैं जो कुछ भी देते हैं और उस पर भी उनके दिल डरते रहते हैं'' हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया : क्या इस आयत में वे लोग मुराद हैं, जो शराब पीते हैं और चोरी करते हैं? (यानी क्या उनका डरना गुनाहों के इरतिकाब की वजह से है?) नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सिद्दीक़ की बेटी! यह मुराद नहीं, बल्कि आयते करीमा में उन लोगों का ज़िक्र है जो रोज़ा रखने और नमाज़ पढ़ने वाले और सदक़ा व ख़ैरात करने वाले हैं और वे इस बात से डरते हैं कि (किसी ख़राबी की वजह से) उनके नेक आमाल क़ुबूल न हों। यही वे लोग हैं जो दौड़-दौड़ कर भलाइयां हासिल कर रहे हैं और यही लोग उन भलाइयों की तरफ़ बढ़ जाने वाले हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿ 21 ﴾ عَنْ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الْعَبْدَ التَّقِيَّ، الْغَنِيَّ، الْخَفِيَّ.

رواه مسلم، باب الدنيا سجن للمؤمن...، رقم ٧٤٣٢

21. हज़रत साद ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआला परहेज़गार, मख़्लूक़ से बेनियाज़, गुमनाम बन्दे को पसन्द फ़रमाते हैं। (मुस्लिम)

﴿ 22 ﴾ عَنْ أَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَوْ أَنَّ رَجُلًا عَمِلَ عَمَلًا فِيْ صَخْرٍ لَا بَابَ لَهَا وَلَا كُوَّةَ، خَرَجَ عَمَلُهُ إِلَى النَّاسِ كَائِنًا مَا كَانَ

رواه البيهقي في شعب الإيمان ٥/٣٥٩

22. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर कोई शख़्स ऐसी चट्टान के अन्दर बैठकर जिसमें न कोई दरवाज़ा हो, न कोई सुराख़ हो, कोई भी अमल करे तो वह लोगों पर ज़ाहिर होकर रहेगा, चाहे वह अमल अच्छा हो या बुरा। (बैहक़ी)

फ़ायदा : जब हर क़िस्म का अमल ख़ुद ज़ाहिर होकर रहेगा तो फिर दीनी अमल में लगने वाले को रियाकारी की नीयत करके अपना अमल बरबाद करने से क्या फ़ायदा? और किसी बुरे को अपनी बुराई के छुपाने से क्या फ़ायदा? दोनों की शोहरत होकर रहेगी। (तर्जमानुस्सुन्नः)

﴿ 23 ﴾ عَنْ مَعْنِ بْنِ يَزِيْدَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ أَبِيْ يَزِيْدُ أَخْرَجَ دَنَانِيْرَ يَتَصَدَّقُ بِهَا، فَوَضَعَهَا عِنْدَ رَجُلٍ فِي الْمَسْجِدِ، فَجِئْتُ فَأَخَذْتُهَا فَأَتَيْتُهُ بِهَا، فَقَالَ: وَاللهِ! مَا إِيَّاكَ

Copyright ©

اَرَدْتُ، فَخَاصَمْتُهُ اِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: لَكَ مَا نَوَيْتَ، يَا يَزِيْدُ! وَلَكَ مَا اَخَذْتَ، يَا مَعْنُ! رواه البخاري، باب اذا تصدق على ابنه وهو لا يشعر، رقم: ١٤٢٢

23. हज़रत मान बिन यज़ीद ﷺ फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद हज़रत यज़ीद ﷺ ने कुछ दीनार सदक़े की नीयत से निकाले और उन्हें मस्जिद में एक आदमी के पास रख आए, (ताकि वह आदमी किसी ज़रूरतमन्द को दे दे।) मैं मस्जिद में आया (और मैं ज़रूरतमन्द था, इसलिए) मैंने उस आदमी से वह दीनार ले लिए और घर ले आया। वालिद साहब ने फ़रमाया : अल्लाह तआला की क़सम! तुम्हें तो देने का मैंने इरादा नहीं किया था। मैं अपने वालिद को नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में ले आया और यह मामला आपके सामने पेश कर दिया। आपने फ़रमाया : यज़ीद! जो तुमने (सदक़ा की) नीयत की थी उसका सवाब तुम्हें मिल गया और मान! जो तुमने ले लिया, वह तुम्हारा हो गया (तुम इसे अपने इस्तेमाल में ला सकते हो)। (बुख़ारी)

﴿ 24 ﴾ عَنْ طَاوُوْسٍ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اِنِّي اَقِفُ الْمَوَاقِفَ اُرِيْدُ وَجْهَ اللهِ، وَاُحِبُّ اَنْ يُرٰى مَوْطِنِيْ، فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ شَيْئًا حَتّٰى نَزَلَتْ عَلَيْهِ هٰذِهِ الْاٰيَةُ ﴿فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا﴾ تفسير ابن كثير ١١٤/٣

24. हज़रत ताऊस रह० फ़रमाते हैं कि एक सहाबी ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं कभी-कभी किसी नेक काम के लिए खड़ा होता हूं और मेरा इरादा उससे अल्लाह तआला ही की रज़ा होती है और उसके साथ दिल में यह ख़्वाहिश भी होती है कि लोग मेरे अमल को देखें। आपने यह सुनकर ख़ामोशी अख़्तियार फ़रमाई, यहां तक कि यह आयत नाज़िल हुई तर्जुमा : जो शख़्स अपने रब से मिलने की आरज़ू रखता हो (और उसका महबूब बनना चाहता हो) तो उसे चाहिए कि वह नेक काम करता रहे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

फ़ायदा : इस आयत में जिस शिर्क से मना किया गया है वह रियाकारी है। और इस बात से भी मना किया गया है कि अगरचे अल्लाह तआला ही के लिए हो, मगर उसके साथ अगर कोई नफ़्सानी ग़रज़ भी शामिल हो तो यह भी एक क़िस्म का शिर्क ख़फ़ी है जो इंसान के अमल को ज़ाय कर देता है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

Copyright ©

بسم الله الرحمن الرحيم

# अल्लाह तआ़ला के वादों पर यक़ीन के साथ और अज्र व इनाम के शौक़ में अ़मल करना

## नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 25 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اَرْبَعُوْنَ خَصْلَةً اَعْلَاهُنَّ مَنِيْحَةُ الْعَنْزِ، مَامِنْ عَامِلٍ يَعْمَلُ بِخَصْلَةٍ مِنْهَا رَجَاءَ ثَوَابِهَا وَتَصْدِيْقَ مَوْعِدِهَا اِلَّا اَدْخَلَهُ اللّٰهُ بِهَا الْجَنَّةَ. رواه البخاري، باب فضل المنيحة، رقم: ٢٦٣١

25. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رضي الله عنهما से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : चालीस नेकियां हैं जिनमें आ़ला दर्जा की नेकी यह है कि (अपनी) बकरी किसी को दे दे कि वह उसके दूध से फ़ायदा उठा कर मालिक को वापस कर दे। फिर जो शख़्स उनमें से किसी बात पर भी इस अ़मल के सवाब की उम्मीद में और उस पर जो अल्लाह तआ़ला का वादा है उस पर यक़ीन के साथ अ़मल करेगा अल्लाह तआ़ला उसकी वजह से उसको जन्नत में दाख़िल करेंगे। (बुख़ारी)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ ने चालीस नेकियों की वज़ाहत बज़ाहिर इस वजह से नहीं फ़रमाई कि आदमी हर नेकी को यह समझ कर करने लगे कि शायद यह नेकी भी उन चालीस में शामिल हो जिनकी फ़ज़ीलत हदीस में ज़िक्र की गई है। (फ़त्हुलबारी)

मक़सूद यह है कि इंसान हर अ़मल को ईमान और एहतिसाब की सिफ़त के साथ करे, यानी उस अ़मल पर अल्लाह तआ़ला के वादों का यक़ीन रखते हुए

Copyright ©

और उस अमल पर बताए गए फ़ज़ाइल के ध्यान के साथ करे।

﴾ 26 ﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ : مَنِ اتَّبَعَ جَنَازَةَ مُسْلِمٍ اِیْمَانًا وَّاحْتِسَابًا وَکَانَ مَعَهُ حَتّٰی یُصَلّٰی عَلَیْهَا، وَیُفْرَغَ مِنْ دَفْنِهَا فَاِنَّهُ یَرْجِعُ مِنَ الْاَجْرِ بِقِیْرَاطَیْنِ کُلُّ قِیْرَاطٍ مِثْلُ اُحُدٍ، وَمَنْ صَلّٰی عَلَیْهَا ثُمَّ رَجَعَ قَبْلَ اَنْ تُدْفَنَ فَاِنَّهُ یَرْجِعُ بِقِیْرَاطٍ. رواه البخاری، باب اتباع الجنائز من الایمان،رقم:٤٧

26. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआला के वादों पर यक़ीन करते हुए और उसके अज्र व इनाम के शौक़ में किसी मुसलमान के जनाज़े के साथ जाए और उस वक़्त तक जनाज़े के साथ रहे जब तक कि उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाए और उसके दफ़न से फ़ारिग़ हो तो वह सवाब के दो क़ीरात लेकर वापस होगा, जिनमें हर क़ीरात गोया उहुद पहाड़ के बराबर होगा और जो शख़्स सिर्फ़ नमाज़े जनाज़ा पढ़कर वापस आ जाए (दफ़न होने तक साथ न रहे) तो वह सवाब का एक क़ीरात लेकर वापस होगा।

(बुख़ारी)

फ़ायदा : क़ीरात दिरहम का बारहवां हिस्सा होता है। चुनांचे उस ज़माने में मज़दूरों को उनके काम की उजरत क़ीरात के हिसाब से दी जाती थी इसलिए रसूलुल्लाह ﷺ ने भी इस मौक़ा पर क़ीरात का लफ़्ज़ इरशाद फ़रमाया और यह भी वाज़ेह फ़रमा दिया कि उसको दुनिया का क़ीरात न समझा जाए, बल्कि यह सवाब आख़िरत के क़ीरात का होगा, जो दुनिया के क़ीरात के मुक़ाबले में इतना बड़ा होगा जितना उहुद पहाड़ उसके मुक़ाबले में बड़ा और अज़ीमुश्शान है। (मआरिफ़ुल हदीस)

﴾ 27 ﴿ عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ یَقُوْلُ: سَمِعْتُ اَبَا الْقَاسِمِ ﷺ یَقُوْلُ: اِنَّ اللّٰهَ قَالَ یَا عِیْسٰی اِنِّیْ بَاعِثٌ مِنْ بَعْدِكَ اُمَّةً اِنْ اَصَابَهُمْ مَا یُحِبُّوْنَ حَمِدُوا اللّٰهَ وَاِنْ اَصَابَهُمْ مَا یَكْرَهُوْنَ احْتَسَبُوْا وَصَبَرُوْا وَلَا حِلْمَ وَلَا عِلْمَ فَقَالَ: یَا رَبِّ کَیْفَ یَکُوْنُ هٰذَا لَهُمْ وَلَا حِلْمَ وَلَا عِلْمَ؟ قَالَ: اُعْطِیْهِمْ مِنْ حِلْمِیْ وَعِلْمِیْ. رواه الحاکم وقال: هذا حدیث صحیح علی شرط البخاری ولم یخرجاه ووافقه الذهبی ٣٤٨/١

27. हज़रत अबूदर्दा ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा ﷺ से फ़रमाया : ईसा! मैं

Copyright ©

तुम्हारे बाद ऐसी उम्मत भेजने वाला हूं, जब उन्हें कोई पसन्दीदा चीज़ यानी नेमत और राहत मिलेगी तो वे उस पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करेंगे और जब उन्हें कोई नागवार चीज़ यानी मुसीबत और तकलीफ़ पहुंचेगी तो उसके बरदाश्त करने पर जो अल्लाह तआला ने सवाब के वादे फ़रमाए हैं उनकी उम्मीद रखेंगे और सब्र करेंगे, जबकि उनमें न हिल्म यानी नर्मी और बरदाश्त होगी न इल्म होगा। हज़रत ईसा ﷺ ने अर्ज़ किया : ऐ मेरे रब! जब उनमें हिल्म और इल्म नहीं होगा तो उनके लिए सब्र और सवाब की उम्मीद रखना कैसे मुमकिन होगा? अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया : मैं उनको अपने हिल्म में से हिल्म और इल्म में से इल्म दूंगा।

(मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 28 ﴾ عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : يَقُوْلُ اللهُ سُبْحَانَهُ: ابْنَ آدَمَ اِنْ صَبَرْتَ وَاحْتَسَبْتَ عِنْدَ الصَّدْمَةِ الْاُوْلٰى، لَمْ اَرْضَ لَكَ ثَوَابًا دُوْنَ الْجَنَّةِ.

رواه ابن ماجه، باب ما جاء في الصبر على المصيبة، رقم:١٥٩٧

28. हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक हदीसे क़ुदसी ब्यान करते हुए इरशाद फ़रमाया : आदम के बेटे! अगर तू (किसी चीज के चले जाने पर) पहली मर्तबा में ही सब्र करे और सवाब की उम्मीद रखे, तो मैं तेरे लिए जन्नत से कम बदले पर राज़ी नहीं हूंगा। (इब्ने माजा)

﴿ 29 ﴾ عَنْ اَبِيْ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : اِذَا اَنْفَقَ الرَّجُلُ عَلٰى اَهْلِهِ يَحْتَسِبُهَا فَهُوَ لَهُ صَدَقَةٌ.

رواه البخاري، باب ما جاء ان الاعمال بالنية والحسبة، رقم:٥٥

29. हज़रत अबू मस्ऊद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जब आदमी अपने घर वालों पर सवाब की नीयत से ख़र्च करता है (उस ख़र्च करने से) उसको सदक़ा का सवाब मिलता है। (बुख़ारी)

﴿ 30 ﴾ عَنْ سَعْدِ بْنِ اَبِيْ وَقَّاصٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّكَ لَنْ تُنْفِقَ نَفَقَةً تَبْتَغِيْ بِهَا وَجْهَ اللهِ اِلَّا اُجِرْتَ عَلَيْهَا حَتّٰى مَا تَجْعَلُ فِيْ فَمِ امْرَاَتِكَ.

رواه البخاري، باب ما جاء ان الاعمال بالنية والحسبة، رقم:٥٦

30. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : तुम जो कुछ अल्लाह तआला को राज़ी करने के लिए ख़र्च करते हो, तुम्हें उसका ज़रूर सवाब दिया जाएगा, यहां तक कि जो लुक़्मा तुम अपनी बीवी

Copyright ©

के मुंह में डालते हो (उस पर भी तुम्हें सवाब मिलेगा)। (बुख़ारी)

﴿ 31 ﴾ عَنْ أُسَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ إِذْ جَاءَهُ رَسُوْلُ إِحْدَى بَنَاتِهِ وَعِنْدَهُ سَعْدٌ وَأُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ وَمُعَاذٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُم أَنَّ ابْنَهَا يَجُوْدُ بِنَفْسِهِ فَبَعَثَ إِلَيْهَا: لِلّٰهِ مَا أَخَذَ، وَلِلّٰهِ مَا أَعْطَى، كُلٌّ بِأَجَلٍ، فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ.

رواه البخاري، باب و كان امر الله قدرا مقدورا، رقم: ٦٦٠٢

31. हज़रत उसामा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं और साद, उबई बिन काब और मुआज़ ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर थे कि आपकी साहबज़ादियों में से किसी एक का क़ासिद यह पैग़ाम लेकर आया कि उनका बच्चा नज़ा की हालत में है। उस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने (साहबज़ादी को) कहला भेजा : अल्लाह तआला ही के लिए है जो उन्होंने ले लिया और अल्लाह तआला ही का है जो उन्होंने अ़ता फ़रमाया है और अल्लाह तआला के यहां हर चीज़ का वक़्त मुक़र्रर है, इसलिए वह सब्र करें और (इस सदमा और इस सब्र पर जो अल्लाह तआला के वादे हैं उनकी) उम्मीद रखें।

(बुख़ारी)

﴿ 32 ﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ لِنِسْوَةٍ مِنَ الْأَنْصَارِ: لَا يَمُوْتُ لِإِحْدَاكُنَّ ثَلَاثَةٌ مِنَ الْوَلَدِ فَتَحْتَسِبَهُ، إِلَّا دَخَلَتِ الْجَنَّةَ: فَقَالَتِ امْرَأَةٌ مِنْهُنَّ: أَوِ اثْنَانِ؟ يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: أَوِ اثْنَانِ. رواه مسلم، باب فضل من يموت له ولد فيحتسبه، رقم: ٦٦٩٨

32. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अन्सार की औरतों से इरशाद फ़रमाया : तुममें से जिसके भी तीन बच्चे मर जाएं और वह उस पर अल्लाह तआला से सवाब की उम्मीद रखे तो यक़ीनन वह जन्नत में दाख़िल होगी। उनमें से एक औरत ने पूछा : या रसूलुल्लाह! अगर दो बच्चे मर जाएं? आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : अगर दो बच्चे मर जाएं तो भी यही सवाब होगा।

(मुस्लिम)

﴿ 33 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ لَا يَرْضَى لِعَبْدِهِ الْمُؤْمِنِ، إِذَا ذَهَبَ بِصَفِيِّهِ مِنْ أَهْلِ الْأَرْضِ فَصَبَرَ وَاحْتَسَبَ وَقَالَ مَا أُمِرَ بِهِ بِثَوَابٍ دُوْنَ الْجَنَّةِ. رواه النسائي، باب ثواب من صبر واحتسب، رقم: ١٨٤٢

33. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र बिन आस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जब अल्लाह तआला मोमिन बन्दे के किसी महबूब को ले

Copyright ©

लेते हैं और वह उस पर सब्र करते हुए सवाब की उम्मीद रखता है और जिस या का हुक्म दिया गया है वही कहता है (मसलन इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैा राजिऊन०) तो अल्लाह तआ़ला उसके लिए जन्नत से कम बदले पर राज़ी नहीं होंगे। (नसाइ

﴿ 34 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! أَخْبِرْنِيْ عَنِ الْجِهَادِ وَالْغَزْوِ، فَقَالَ: يَا عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو! إِنْ قَاتَلْتَ صَابِرًا مُحْتَسِبًا بَعَثَكَ اللهُ صَابِرًا مُحْتَسِبًا، وَإِنْ قَاتَلْتَ مُرَائِيًا مُكَاثِرًا بَعَثَكَ اللهُ مُرَائِيًا مُكَاثِرًا، يَا عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو! عَلٰى أَيِّ حَالٍ قَاتَلْتَ أَوْ قُتِلْتَ بَعَثَكَ اللهُ عَلٰى تِيْكَ الْحَالِ.

رواه ابوداؤد، باب من قاتل لتكون كلمة الله هي العليا، رقم: ٢٥١٩

34. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया : र रसूलुल्लाह! मुझे जिहाद और ग़ज़्वा के बारे में बतलाइए? आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र! अगर तुम इस तरह लड़ो कि सब्र क ने वाले औ सवाब की उम्मीद रखने वाले हो तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें क़ियामत के दिन सब्र करन वाला और सवाब की उम्मीद रखने वाला शुमार करके उठाएंगे और अगर तु दिखलावे, माले ग़नीमत ज़्यादा-से-ज़्यादा लेने के लिए लड़ोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम क़ियामत के दिन दिखलावा करने वाला, माले ग़नीमत ज़्यादा-से-ज़्यादा लेने के लिए लड़ने वाला शुमार करके उठाएंगे (यानी हश्र के मैदान में यह एलान किया जाएग कि यह शख़्स दिखलावे और ज़्यादा माल हासिल करने के लिए लड़ा था)। अ़ब्दुल्लाह! जिस हाल (और नीयत) पर तुम लड़ोगे या मारे जाओगे, अल्लाह तआ़ला उसी हा (और नीयत) पर क़ियामत में तुम्हें उठाएंगे। (अबूदाऊद,

Copyright ©

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

# रियाकारी

## क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿وَاِذَا قَامُوْٓا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى لا يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا﴾ [النساء: ١٤٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और ये मुनाफ़िक़ जब नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो सुस्त बन कर खड़े होते हैं, लोगों को दिखाते हैं और अल्लाह तआला को बहुत कम याद करते हैं। (निसा : 142)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۔ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۔ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ﴾ [الماعون: ٤-٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : ऐसे नमाज़ियों के लिए बड़ी ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं, जो ऐसे हैं कि (जब नमाज़ पढ़ते हैं, तो) दिखलावा करते हैं। (माऊन : 4-6)

**फ़ायदा** : नमाज़ से ग़ाफ़िल होने में क़ज़ा करके पढ़ना या बेध्यानी से पढ़ना या कभी पढ़ना, कभी न पढ़ना सब शामिल है। (कश्फ़ुर्रहमान)

Copyright ©

# नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 35 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: بِحَسْبِ امْرِئٍ مِنَ الشَّرِّ اَنْ يُشَارَ اِلَيْهِ بِالْاَصَابِعِ فِيْ دِيْنٍ اَوْ دُنْيَا اِلَّا مَنْ عَصَمَهُ اللّٰهُ.

رواه الترمذي، باب منه حديث ان لكل شيء شرة، رقم: ٢٤٥٣

35. हज़रत अनस बिन मालिक ﷛ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि इंसान के बुरा होने के लिए इतना काफ़ी है कि दीन या दुनिया के बारे में उसकी तरफ़ उंगलियों से इशारा किया जाए, मगर यह कि किसी को अल्लाह तआला ही महफ़ूज़ रखें। (तिर्मिज़ी)

**फ़ायदा** : उंगलियों से इशारा करने का मतलब मशहूर होना है। हदीस में मुराद यह है कि दीन के मामले में शोहरत का होना दुनिया के बारे में मशहूर होने से ज़्यादा ख़तरनाक है क्योंकि शोहरत हासिल होने के बाद अपनी बड़ाई के एहसास से बचना हर एक के बस का काम नहीं। अलबत्ता अगर किसी की शोहरत ग़ैरअख़्तियारी तौर पर अल्लाह तआला की तरफ़ से हो और अल्लाह तआला उसे महज़ अपने फ़ज़्ल से नफ़्स और शैतान से महफ़ूज़ रखें तो ऐसे मुख़्लिसीन के हक़ में शोहरत ख़तरनाक नहीं है। (मज़ाहिरे हक़)

﴿ 36 ﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ خَرَجَ يَوْمًا اِلَى مَسْجِدِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ، فَوَجَدَ مُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ قَاعِدًا عِنْدَ قَبْرِ النَّبِيِّ ﷺ يَبْكِيْ، فَقَالَ: مَا يُبْكِيْكَ؟ قَالَ: يُبْكِيْنِيْ شَيْءٌ سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ، سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ يَسِيْرَ الرِّيَاءِ شِرْكٌ، وَاِنَّ مَنْ عَادَى لِلّٰهِ وَلِيًّا، فَقَدْ بَارَزَ اللّٰهَ بِالْمُحَارَبَةِ، اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْاَبْرَارَ الْاَتْقِيَاءَ الْاَخْفِيَاءَ، الَّذِيْنَ اِذَا غَابُوْا لَمْ يُفْتَقَدُوْا، وَاِذَا حَضَرُوْا لَمْ يُدْعَوْا وَلَمْ يُعْرَفُوْا، قُلُوْبُهُمْ مَصَابِيْحُ الْهُدَى، يَخْرُجُوْنَ مِنْ كُلِّ غَبْرَاءَ مُظْلِمَةٍ.

رواه ابن ماجه، باب من ترجى له السلامة من الفتن، رقم: ٣٩٨٩

Copyright ©

36. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ से रिवायत है कि वह एक दिन मस्जिदे नब्वी तशरीफ़ ले गए तो देखा हज़रत मुआज़ ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ की क़ब्र मुबारक के पास बैठे रो रहे हैं। हज़रत उमर ﷺ ने पूछा : आप क्यों रो रहे हैं? उन्होंने कहा : मुझे एक बात की वजह से रोना आ रहा है जो मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुनी थी। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया था : थोड़ा-सा दिखावा भी शिर्क है और जिस शख़्स ने अल्लाह तआला के किसी दोस्त से दुश्मनी की, तो उसने अल्लाह तआला को जंग की दावत दी और बेशक अल्लाह तआला ऐसे लोगों से मुहब्बत फ़रमाते हैं, जो नेक हों, मुत्तक़ी हों और ऐसे छुपे हुए हों कि जब मौजूद न हों तो उनको तलाश न किया जाए और अगर मौजूद हों तो न उन्हें बुलाया जाए और न उन्हें पहचाना जाए, उनके दिल हिदायत के रौशन चिराग़ हैं, वे फ़ित्नों की काली आंधियों से (दिल की रौशनी की वजह से अपने दीन को बचाते हुए) निकल जाते हैं। (इब्ने हब्बान)

﴿ 37 ﴾ عَنْ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا ذِئْبَانِ جَائِعَانِ أُرْسِلَا فِيْ غَنَمٍ بِأَفْسَدَ لَهَا مِنْ حِرْصِ الْمَرْءِ عَلَى الْمَالِ وَالشَّرَفِ لِدِيْنِهِ. رواه الترمذي وقال:

هذا حديث حسن صحيح باب حديث ما ذئبان جائعان ارسلا في غنم، رقم ٢٣٧٦

37. हज़रत मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वे दो भूखे भेड़िये जिन्हें बकरियों के रेवड़ में छोड़ दिया जाए बकरियों को इतना नुक़सान नहीं पहुंचाते, जितना आदमी के दीन को, माल का हिर्स और बड़ा बनने की चाहत नुक़सान पहुंचाती है। (तिर्मिज़ी)

﴿ 38 ﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ طَلَبَ الدُّنْيَا حَلَالًا مُفَاخِرًا مُكَاثِرًا مُرَائِيًا لَقِيَ اللهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ، وَمَنْ طَلَبَ الدُّنْيَا حَلَالًا اِسْتِعْفَافًا عَنِ الْمَسْأَلَةِ وَسَعْيًا عَلَى عِيَالِهِ وَتَعَطُّفًا عَلَى جَارِهِ لَقِيَ اللهَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَوَجْهُهُ كَالْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ. رواه البيهقي في شعب الايمان ٢٩٨/٧

38. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स दूसरों पर फ़ख़्र करने के लिए, मालदार बनने के लिए, नाम व नुमूद के लिए दुनिया तलब करे, अगरचे हलाल तरीक़े से हो, वह अल्लाह तआला के सामने इस हालत में हाज़िर होगा कि अल्लाह तआला उससे सख़्त नाराज़ होंगे और जो शख़्स दुनिया हलाल तरीक़े से इसलिए हासिल करे, ताकि उसको दूसरों से सवाल न करना पड़े और अपने घर वालों के लिए रोज़ी हासिल कर सके और अपने पड़ोसी के साथ

Copyright ©

एहसान कर सके, तो वह क़ियामत के दिन अल्लाह तआला से इस हाल में मिलेगा कि उसका चेहरा चौदहवीं रात के चांद की तरह चमकता हुआ होगा। (बैहक़ी)

﴿ 39 ﴾ عَنِ الْحَسَنِ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ عَبْدٍ يَخْطُبُ خُطْبَةً إِلَّا اللهُ عَزَّوَجَلَّ سَائِلُهُ عَنْهَا: مَا أَرَادَ بِهَا؟ قَالَ جَعْفَرٌ: كَانَ مَالِكُ بْنُ دِيْنَارٍ إِذَا حَدَّثَ هٰذَا الْحَدِيْثَ بَكَى حَتَّى يَنْقَطِعَ ثُمَّ يَقُوْلُ: يَحْسَبُوْنَ أَنَّ عَيْنِيْ تَقَرُّ بِكَلَامِيْ عَلَيْكُمْ فَأَنَا أَعْلَمُ أَنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ سَائِلِيْ عَنْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا أَرَدْتَ بِهِ. رواه البيهقي في شعب الايمان ٢/٢٨٧

39. हज़रत हसन रहमतुल्लाह अ़लैह रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो बन्दा ब्यान (वाज़ व तक़रीर) करता है तो अल्लाह तआला ज़रूर उससे इस ब्यान के बारे में पूछेंगे कि इस ब्यान करने से उसका क्या मक़सद और क्या नीयत थी? हज़रत जाफ़र रह० ने फ़रमाया कि हज़रत मालिक बिन दीनार रह० जब इस हदीस को ब्यान फ़रमाते तो इस क़द्र रोते कि उनकी आवाज़ बन्द हो जाती, फिर फ़रमाते : लोग समझते हैं कि तुम्हारे सामने बात करने से मेरी आंखें ठंडी होती हैं, यानी मैं ब्यान करने से ख़ुश होता हूं, मुझे मालूम है कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन यक़ीनन मुझसे पूछेंगे कि इस ब्यान करने से तेरा क्या मक़सद था। (बैहक़ी)

﴿ 40 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ أَسْخَطَ اللهَ فِيْ رِضَى النَّاسِ سَخِطَ اللهُ عَلَيْهِ، وَأَسْخَطَ عَلَيْهِ مَنْ أَرْضَاهُ فِيْ سَخَطِهِ، وَمَنْ أَرْضَى اللهَ فِيْ سَخَطِ النَّاسِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، وَأَرْضَى عَنْهُ مَنْ أَسْخَطَهُ فِيْ رِضَاهُ حَتَّى يُزَيِّنَهُ وَيُزَيِّنَ قَوْلَهُ وَعَمَلَهُ فِيْ عَيْنِهِ. رواه الطبراني ورجاله رجال الصحيح غير يحي بن سليمان الجعفي، وقد وثقه الذهبي في آخر ترجمة يحي بن سليمان الجعفي، مجمع الزوائد ١٠/٣٨٦

40. हज़रत इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स लोगों को ख़ुश करने के लिए अल्लाह तआला को नाराज़ करता है तो अल्लाह तआला उस पर नाराज़ होते हैं और उन लोगों को भी नाराज़ कर देते हैं जिन्हें अल्लाह तआला को नाराज़ करके ख़ुश किया था और जो शख़्स अल्लाह तआला को ख़ुश करने के लिए लोगों को नाराज़ करता है तो अल्लाह तआला उससे ख़ुश हो जाते हैं और उन लोगों को भी ख़ुश कर देते हैं जिनको अल्लाह तआला को ख़ुश करने के लिए नाराज़ किया था, यहां तक कि उन नाराज़ होने वाले लोगों की निगाह में उस शख़्स को अच्छा फ़रमा देते हैं, और उस शख़्स के क़ौल और अ़मल को उन लोगों की निगाह में मुज़ैय्यन कर देते हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

Copyright ©

﴿41﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ أَوَّلَ النَّاسِ يُقْضٰى يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَيْهِ، رَجُلٌ اسْتُشْهِدَ، فَأُتِيَ بِهِ فَعَرَّفَهُ نِعَمَهُ، فَعَرَفَهَا، قَالَ: فَمَا عَمِلْتَ فِيْهَا؟ قَالَ: قَاتَلْتُ فِيْكَ حَتّٰى اسْتُشْهِدْتُ، قَالَ: كَذَبْتَ، وَلٰكِنَّكَ قَاتَلْتَ لِأَنْ يُقَالَ جَرِيْءٌ، فَقَدْ قِيْلَ، ثُمَّ أُمِرَ بِهِ فَسُحِبَ عَلٰى وَجْهِهِ حَتّٰى أُلْقِيَ فِي النَّارِ، وَرَجُلٌ تَعَلَّمَ الْعِلْمَ وَعَلَّمَهُ وَقَرَأَ الْقُرْآنَ، فَأُتِيَ بِهِ، فَعَرَّفَهُ نِعَمَهُ، فَعَرَفَهَا قَالَ فَمَا عَمِلْتَ فِيْهَا؟ قَالَ: تَعَلَّمْتُ الْعِلْمَ وَعَلَّمْتُهُ وَقَرَأْتُ فِيْكَ الْقُرْآنَ، قَالَ: كَذَبْتَ وَلٰكِنَّكَ تَعَلَّمْتَ الْعِلْمَ لِيُقَالَ عَالِمٌ، وَقَرَأْتَ الْقُرْآنَ لِيُقَالَ هُوَ قَارِئٌ، فَقَدْ قِيْلَ، ثُمَّ أُمِرَ بِهِ فَسُحِبَ عَلٰى وَجْهِهِ حَتّٰى أُلْقِيَ فِي النَّارِ، وَرَجُلٌ وَسَّعَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَأَعْطَاهُ مِنْ أَصْنَافِ الْمَالِ كُلِّهِ، فَأُتِيَ بِهِ فَعَرَّفَهُ نِعَمَهُ، فَعَرَفَهَا، قَالَ: فَمَا عَمِلْتَ فِيْهَا؟ قَالَ: مَا تَرَكْتُ مِنْ سَبِيْلٍ تُحِبُّ أَنْ يُنْفَقَ فِيْهَا إِلَّا أَنْفَقْتُ فِيْهَا لَكَ، قَالَ: كَذَبْتَ، وَلٰكِنَّكَ فَعَلْتَ لِيُقَالَ هُوَ جَوَادٌ، فَقَدْ قِيْلَ، ثُمَّ أُمِرَ بِهِ فَسُحِبَ عَلٰى وَجْهِهِ ثُمَّ أُلْقِيَ فِي النَّارِ.

رواه مسلم، باب من قاتل للرياء و السمعة استحق النار، رقم: ٤٩٢٣

41. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़ियामत के दिन सबसे पहले जिनके खिलाफ़ फ़ैसला किया जाएगा, उनमें एक वह शख़्स भी होगा जो शहीद हो गया होगा। यह शख़्स अल्लाह तआला के सामने लाया जाएगा, अल्लाह तआला अपनी उस नेमत का इज़्हार फ़रमाएंगे जो उस पर की गई थी वह उसका इक़रार करेगा। फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे : तूने उस नेमत से क्या काम लिया? वह अर्ज़ करेगा : मैंने आपकी रज़ा के लिए क़िताल किया यहां तक कि शहीद कर दिया गया। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे : झूठ बोलता है, तूने जिहाद इसलिए किया था कि लोग बहादुर कहें, चुनांचे कहा जा चुका। फिर उसको हुक्म सुना दिया जाएगा और वह मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। दूसरा वह शख़्स होगा जिसने इल्मे दीन सीखा और दूसरों को सिखाया और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा। उसको अल्लाह तआला के सामने लाया जाएगा, अल्लाह तआला उस पर अपनी दी हुई नेमतों का इज़हार फ़रमाएंगे और वह उनका इक़रार करेगा। फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे : तूने उन नेमतों से क्या काम लिया? वह अर्ज़ करेगा : मैंने तेरी रज़ा के लिए इल्म सीखा और दूसरों को सिखाया और तेरी ही रज़ा के लिए क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे : झूठ बोलता है, तूने इल्मे दीन इसलिए सीखा था कि लोग आ़लिम कहें और क़ुरआन इसलिए पढ़ा था कि लोग क़ारी कहें, चुनांचे कहा जा चुका। फिर उसको हुक्म सुना दिया जाएगा और वह मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में फेंक

Copyright ©

दिया जाएगा। तीसरा शख़्स वह मालदार होगा जिसको अल्लाह तआ़ला ने दुनिया में भरपूर दौलत दी होगी और हर क़िस्म का माल अ़ता फ़रमाया होगा। उसको अल्लाह तआ़ला के सामने लाया जाएगा। अल्लाह तआ़ला उसको अपनी नेमतें बताएंगे और वह उनका इक़रार करेगा। फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे : तूने उन नेमतों से क्या काम लिया? वह अ़र्ज़ करेगा : जिन रास्तों में ख़र्च करना तुझे पसन्द है मैंने तेरा दिया हुआ माल उन सब ही में तेरी रज़ा के लिए ख़र्च किया था। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे : झूठ बोलता है, तूने माल इसलिए ख़र्च किया था कि लोग सख़ी कहें चुनांचे कहा जा चुका। फिर उसको हुक्म सुना दिया जाएगा और वह मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। (मुस्लिम)

﴿ 42 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ تَعَلَّمَ عِلْمًا مِمَّا یُبْتَغٰی بِهٖ وَجْهُ اللّٰهِ، لَایَتَعَلَّمُهٗ اِلَّا لِیُصِیْبَ بِهٖ عَرَضًا مِنَ الدُّنْیَا، لَمْ یَجِدْ عَرْفَ الْجَنَّةِ یَوْمَ الْقِیَامَةِ یَعْنِیْ رِیْحَهَا.

رواہ ابو داؤد، باب فی طلب العلم لغیر اللہ، رقم: ٣٦٦٤

42. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने वह इल्म जो अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिए सीखना चाहिए था दुनिया का माल व मताअ़ हासिल करने के लिए सीखा वह क़यामत के दिन जन्नत की ख़ुशबू भी न सूंघ सकेगा। (अबूदाऊद)

﴿ 43 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ یَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: یَخْرُجُ فِیْ آخِرِ الزَّمَانِ رِجَالٌ یَخْتِلُوْنَ الدُّنْیَا بِالدِّیْنِ، یَلْبَسُوْنَ لِلنَّاسِ جُلُوْدَ الضَّانِ مِنَ اللِّیْنِ، اَلْسِنَتُهُمْ اَحْلٰی مِنَ السُّکَّرِ، وَقُلُوْبُهُمْ قُلُوْبُ الذِّئَابِ یَقُوْلُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ: اَبِیْ یَغْتَرُّوْنَ اَمْ عَلَیَّ یَجْتَرِئُوْنَ؟ فَبِیْ حَلَفْتُ لَاَبْعَثَنَّ عَلٰی اُولٰئِكَ مِنْهُمْ فِتْنَةً تَدَعُ الْحَلِیْمَ مِنْهُمْ حَیْرَانًا

رواہ الترمذی، باب حدیث خاتلی الدنیا بالدین و عقوبتهم، رقم: ٢٤٠٤

الجامع الصحیح وهو سنن الترمذی، دار الباز مکة المکرمة

43. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आख़िरी ज़माने में कुछ ऐसे लोग ज़ाहिर होंगे जो दीन की आड़ में दुनिया का शिकार करेंगे, भेड़ियों की नर्म खाल का लिबास पहनेंगे (ताकि लोग उन्हें दुनिया से बेरग़बत समझें) उनकी ज़बानें शक्कर से ज़्यादा मीठी होंगी मगर उनके दिल भेड़ियों-जैसे होंगे। (उनके बारे में) अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है : क्या वे लोग मेरे

Copyright ©

ढील देने से धोखा खा रहे हैं या मुझसे निडर हो कर मेरे मुक़ाबले में दिलेर बन रहे हैं? मुझे अपनी क़सम है कि मैं उन लोगों में उन्हीं में से ऐसा फ़ित्ना खड़ा करूंगा जो उनके अक़्लमन्द को भी हैरान (व परेशान) बनाकर छोड़ेगा, यानी उन्हीं लोगों में से ऐसे लोगों को मुक़र्रर कर दूंगा जो उनको तरह-तरह के नुक़सान में मुब्तला करेंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿ 44 ﴾ عَنْ أَبِي سَعِيْدِ بْنِ أَبِي فَضَالَةَ الْأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَكَانَ مِنَ الصَّحَابَةِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِذَا جَمَعَ اللهُ النَّاسَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيْهِ، نَادَى مُنَادٍ: مَنْ كَانَ أَشْرَكَ فِي عَمَلٍ عَمِلَهُ لِلّٰهِ أَحَدًا، فَلْيَطْلُبْ ثَوَابَهُ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللهِ، فَإِنَّ اللهَ أَغْنَى الشُّرَكَاءِ عَنِ الشِّرْكِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ومن سورة الكهف، رقم: ٣١٥٤

44. हज़रत अबू सईद बिन अबी फ़ज़ाला अन्सारी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन जिसके आने में कोई शक नहीं है सब लोगों को जमा फ़रमाएंगे, तो एक पुकारने वाला पुकारेगा : जिस शख़्स ने अपने किसी ऐसे अ़मल में जो उसने अल्लाह तआ़ला के लिए किया था किसी और को शरीक किया तो वह उसका सवाब उसी दूसरे से जाकर मांग ले, क्योंकि अल्लाह तआ़ला शिरकत में सब शुरका से ज़्यादा बेनियाज़ हैं। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : "अल्लाह तआ़ला शिरकत में सब शुरका से ज़्यादा बेनियाज़ हैं" इसका मतलब यह है कि जिस तरह और शुरका अपने साथ किसी की शिरकत क़ुबूल कर लेते हैं अल्लाह तआ़ला इस तरह हरगिज़ किसी की शिरकत गवारा नहीं करते।

﴿ 45 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ تَعَلَّمَ عِلْمًا لِغَيْرِ اللهِ أَوْ أَرَادَ بِهِ غَيْرَ اللهِ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب في من يطلب بعلمه الدنيا، رقم: ٢٦٥٥

45. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने इल्म अल्लाह की रज़ा के अलावा किसी और मक़सद (मसलन इज़्ज़त, शोहरत, माल वग़ैरह हासिल करने) के लिए सीखा, तो वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले। (तिर्मिज़ी)

Copyright ©

﴿ 46 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: تَعَوَّذُوْا بِاللّٰهِ مِنْ جُبِّ الْحَزَنِ قَالُوْا: یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! وَمَا جُبُّ الْحَزَنِ؟ قَالَ: وَادٍ فِیْ جَهَنَّمَ یَتَعَوَّذُ مِنْهُ جَهَنَّمُ کُلَّ یَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ قِیْلَ: یَارَسُوْلَ اللّٰهِ! وَمَنْ یَدْخُلُهُ؟ قَالَ: اَلْقُرَّاءُ الْمُرَاؤُوْنَ بِاَعْمَالِهِمْ.

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن غریب، باب ماجاء فی الریاء والسمعة، رقم: ۲۳۸۳

46. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम लोग जुब्बुल हज़न से पनाह मांगा करो। सहाबा रज़ि० ने पूछा : जुब्बुल हज़न क्या चीज़ है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जहन्नम में एक वादी है कि ख़ुद जहन्नम रोज़ाना सौ मर्तबा उससे पनाह मांगती है। अर्ज़ किया गया : या रसूलुल्लाह! उसमें कौन लोग जाएंगे? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वे क़ुरआन पढ़ने वाले, जो दिखलावे के लिए आमाल करते हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿ 47 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ اُنَاسًا مِنْ اُمَّتِیْ سَیَتَفَقَّهُوْنَ فِی الدِّیْنِ، وَیَقْرَءُوْنَ الْقُرْآنَ، وَیَقُوْلُوْنَ: نَاْتِی الْاُمَرَاءَ فَنُصِیْبُ مِنْ دُنْیَاهُمْ وَنَعْتَزِلُهُمْ بِدِیْنِنَا، وَلَا یَکُوْنُ ذٰلِكَ، کَمَا لَا یُجْتَنٰی مِنَ الْقَتَادِ اِلَّا الشَّوْكُ، کَذٰلِكَ لَا یُجْتَنٰی مِنْ قُرْبِهِمْ اِلَّا. قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ: کَاَنَّهُ یَعْنِیْ: اَلْخَطَایَا.

رواه ابن ماجه، ورواته ثقات، الترغیب ۱۹۶/۳

47. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अंक़रीब मेरी उम्मत में कुछ लोग ऐसे होंगे, जो दीन की समझ हासिल करेंगे और क़ुरआन पढ़ेंगे (फिर हुक्काम के पास अपनी ज़ाती गरज़ से जाएंगे) और कहेंगे, हम उन हुक्काम के पास जाकर उनकी दुनिया से फ़ायदा तो उठा लेते हैं, (लेकिन) अपने दीन की वजह से उनके शर से महफ़ूज़ रहते हैं, हालांकि ऐसा कभी नहीं हो सकता (कि उन हुक्काम के पास ज़ाती गरज़ के लिए जाएं और उनसे मुतअस्सिर न हों) जिस तरह ख़ारदार दरख़्त से सिवाए कांटे के और कुछ नहीं मिल सकता, उसी तरह उन हुक्काम की नज़दीकी से सिवाए बुराइयों के और कुछ नहीं मिल सकता। (इब्ने माजा, तर्ग़ीब)

﴿ 48 ﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجَ عَلَیْنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ وَنَحْنُ نَتَذَاکَرُ الْمَسِیْحَ الدَّجَّالَ، فَقَالَ: اَلَا اُخْبِرُکُمْ بِمَا هُوَ اَخْوَفُ عَلَیْکُمْ عِنْدِیْ مِنَ الْمَسِیْحِ الدَّجَّالِ؟ قَالَ، قُلْنَا: بَلٰی، فَقَالَ: اَلشِّرْكُ الْخَفِیُّ: اَنْ یَقُوْمَ الرَّجُلُ یُصَلِّیْ فَیُزَیِّنُ صَلَاتَهُ لِمَا یَرٰی مِنْ نَظَرِ رَجُلٍ.

رواه ابن ماجه، باب الریاء والسمعة، رقم: ٤٢٠٤

Copyright ©

48. हज़रत अबू सईद ؓ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ (अपने मुबारक हुजरे से) निकलकर हमारे पास तशरीफ़ लाए, उस वक़्त हम लोग आपस में मसीह दज्जाल का तज़्किरा कर रहे थे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुमको वह चीज़ न बताऊं जो मेरे नज़दीक तुम्हारे लिए दज्जाल से भी ज़्यादा ख़तरनाक है? हमने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ज़रूर इर्शाद फ़रमाएं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह शिर्के ख़फ़ी है (जिसकी एक मिसाल यह है) कि आदमी नमाज़ पढ़ने के लिए खड़ा हुआ और नमाज़ को संवार कर इसलिए पढ़े कि कोई दूसरा उसको नमाज़ पढ़ते देख रहा है। (इब्ने माजा)

﴿49﴾ عَنْ اُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: بَشِّرْ هٰذِهِ الْاُمَّةَ بِالسَّنَاءِ وَالرِّفْعَةِ وَالنَّصْرِ وَالتَّمْكِيْنِ فِي الْاَرْضِ، وَمَنْ عَمِلَ مِنْهُمْ عَمَلَ الْاٰخِرَةِ لِلدُّنْيَا لَمْ يَكُنْ لَهُ فِي الْاٰخِرَةِ نَصِيْبٌ. رواه احمد ٥/١٣٤

49. हज़रत उबई बिन काब ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस उम्मत को इज़्ज़त, सरबुलन्दी, नुसरत और रूए-ज़मीन में ग़लबा की ख़ुशख़बरी दे दो (ये इनामात तो मज्मूई तौर पर उम्मत को मिल कर रहेंगे फिर हर एक का मामला अल्लाह तआला के साथ उसकी नीयत के मुताबिक़ होगा) चुनांचे जिसने आख़िरत का काम दुन्यवी मुनाफ़ा हासिल करने के लिए किया होगा, आख़िरत में उसका कोई हिस्सा न होगा। (मुस्नद अहमद)

﴿50﴾ عَنْ شَدَّادِ بْنِ اَوْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ صَلّٰى يُرَائِيْ فَقَدْ اَشْرَكَ، وَمَنْ صَامَ يُرَائِيْ فَقَدْ اَشْرَكَ، وَمَنْ تَصَدَّقَ يُرَائِيْ فَقَدْ اَشْرَكَ.

رواه احمد ٤/١٢٦ (وهو بعض الحديث)

50. हज़रत शद्दाद बिन औस ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिसने दिखलाने के लिए नमाज़ पढ़ी उसने शिर्क किया, जिसने दिखलाने के लिए रोज़ा रखा, उसने शिर्क किया और जिसने दिखलाने के लिए सदक़ा किया, उसने शिर्क किया। (मुस्नद अहमद)

**फ़ायदा :** मतलब यह है कि जिन लोगों को दिखलाने के लिए ये अमल किए हैं, उन्हें अल्लाह तआला का शरीक बना लिया, इस हालत में ये आमाल अल्लाह तआला के लिए नहीं रहते, बल्कि उन लोगों के लिए बन जाते हैं जिनको दिखलाने के लिए किए जाते हैं और उनका करने वाला बजाए सवाब के अज़ाब का मुस्तहिक़ हो जाता है।

Copyright ©

﴿ 51 ﴾ عَنْ شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ بَكَى، فَقِيلَ لَهُ: مَا يُبْكِيكَ؟ قَالَ: شَيْئًا سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ يَقُولُهُ، فَذَكَرْتُهُ، فَأَبْكَانِي، سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: أَتَخَوَّفُ عَلَى أُمَّتِي الشِّرْكَ وَالشَّهْوَةَ الْخَفِيَّةَ، قَالَ: قُلْتُ: يَارَسُولَ اللهِ! أَتُشْرِكُ أُمَّتُكَ مِنْ بَعْدِكَ؟ قَالَ: نَعَمْ، أَمَا إِنَّهُمْ لَا يَعْبُدُونَ شَمْسًا، وَلَا قَمَرًا، وَلَا حَجَرًا، وَلَا وَثَنًا، وَلٰكِنْ يُرَاؤُونَ بِأَعْمَالِهِمْ، وَالشَّهْوَةُ الْخَفِيَّةُ أَنْ يُصْبِحَ أَحَدُهُمْ صَائِمًا فَتَعْرِضُ لَهُ شَهْوَةٌ مِنْ شَهَوَاتِهِ فَيَتْرُكُ صَوْمَهُ. رواه احمد ٤/١٢٤

51. हज़रत शद्दाद बिन औस ﷺ के बारे में ब्यान किया गया कि एक मर्तबा वह रोने लगे। लोगों ने उनसे रोने की वजह पूछी, तो उन्होंने जवाब दिया कि मुझे एक बात याद आ गई, जो मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुनी थी उस बात ने मुझे रुला दिया। मैंने आप ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि मुझे अपनी उम्मत के बारे में शिर्क और शहवते ख़ुफ़ीया का डर है। हज़रत शद्दाद रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या आपके बाद आपकी उम्मत शिर्क में मुब्तला हो जाएगी? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हां, (लेकिन) वह न तो सूरज और चांद की इबादत करेगी और न किसी पत्थर और बुत की, बल्कि अपने आमाल में रियाकरी करेगी। शहवते ख़ुफ़ीया यह है कि कोई शख़्स तुममें से सुबह रोज़ादार हो, फिर उसके सामने कोई ऐसी चीज़ आ जाए जो उसको पसन्द हो, जिसकी वजह से वह अपना रोज़ा तोड़ डाले (और इस तरह अपनी ख़्वाहिश पूरी कर ले)।

(मुस्नद अहमद)

﴿ 52 ﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: يَكُونُ فِي آخِرِ الزَّمَانِ أَقْوَامٌ إِخْوَانُ الْعَلَانِيَةِ أَعْدَاءُ السَّرِيرَةِ، فَقِيلَ: يَا رَسُولَ اللهِ! فَكَيْفَ يَكُونُ ذٰلِكَ؟ قَالَ: ذٰلِكَ بِرَغْبَةِ بَعْضِهِمْ إِلَى بَعْضٍ وَرَهْبَةِ بَعْضِهِمْ إِلَى بَعْضٍ. رواه احمد ٥/٢٣٥

52. हज़रत मुआज़ ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आख़िर ज़माने में ऐसे लोग होंगे जो ज़ाहिर में तो दोस्त होंगे, मगर अन्दरूनी तौर पर दुश्मन होंगे। अर्ज़ किया गया : या रसूलुल्लाह! यह किस वजह से होगा? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक दूसरे से ग़रज़ की वजह से ज़ाहिरी दोस्ती होगी और अन्दरूनी दुश्मनी की वजह से वही एक दूसरे से ख़ौफ़ज़दा भी रहेंगे।(मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि लोगों की दोस्ती और दुश्मनी की बुनयाद ज़ाती अग़राज़ पर होगी। अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी हासिल करने के लिए नहीं होगी।

Copyright ©

﴿ 53 ﴾ عَنْ اَبِيْ مُوسَى الْاَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَبَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ، فَقَالَ: يَاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا هٰذَا الشِّرْكَ، فَاِنَّهُ اَخْفٰى مِنْ دَبِيْبِ النَّمْلِ، فَقَالَ لَهُ مَنْ شَاءَ اللهُ اَنْ يَقُوْلَ: وَكَيْفَ نَتَّقِيْهِ، وَهُوَ اَخْفٰى مِنْ دَبِيْبِ النَّمْلِ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: قُوْلُوْا: اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ نُشْرِكَ شَيْئًا نَعْلَمُهُ، وَنَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا نَعْلَمُ. رواه احمد ٤/٤٠٣

53. हजरत अबू मूसा अशअरी ﷺ फ़रमाते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें ब्यान किया, जिसमें यह इर्शाद फ़रमाया : लोगो! इस शिर्क (रियाकारी) से बचते रहो कि यह चींटी के रेंगने की आवाज़ से भी ज़्यादा पोशीदा होता है। एक शख़्स के दिल में सवाल पैदा हुआ, उसने पूछा : या रसूलुल्लाह! हम उससे कैसे बचें जबकि यह चींटी के रेंगने से भी ज़्यादा पोशीदा है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह पढ़ा करो **'अल्लाहुम-म इन्ना नऊज़ु बि-क मिन अन नुश्रि-क शैइन नालमुहू व नस्तग्फ़िरु-क लिमा ला नालमुह०'** तर्जुमा : ऐ अल्लाह! हम आप से पनाह मांगते हैं उस शिर्क से जिसको हम जानते हैं और आपसे माफ़ी मांगते हैं उस शिर्क से जिसको हम नहीं जानते। (मुस्नद अहमद)

﴿ 54 ﴾ عَنْ اَبِيْ بَرْزَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِنَّمَا اَخْشٰى عَلَيْكُمْ شَهَوَاتِ الْغَيِّ فِيْ بُطُوْنِكُمْ وَ فُرُوْجِكُمْ، وَمُضِلَّاتِ الْهَوٰى. رواه احمد والبزار والطبراني في الثلاثة ورجاله رجال الصحيح لان ابا الحكم البناني الراوي عن ابي برزة بينه الطبراني فقال: عن ابي الحكم هو علي بن الحكم، وقد روى له البخاري واصحاب السنن، مجمع الزوائد ١/٤٤٦

54. हजरत अबू बरज़ा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे तुम पर इस बात का अन्देशा है कि तुम ऐसी गुमराहकुन ख़्वाहिशात में पड़ जाओ, जिनका तअल्लुक़ तुम्हारे पेटों और शर्मगाहों से है (जैसे हराम खाना, बदकारी वग़ैरह) और ऐसी ख़्वाहिशात में पड़ जाओ, जो (तुम्हें हक़ के रास्ते से हटा कर) गुमराही की तरफ़ ले जाएं। (मुस्नद अहमद, बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 55 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ سَمَّعَ النَّاسَ بِعَمَلِهِ سَمَّعَ اللهُ بِهِ سَامِعَ خَلْقِهِ، وَصَغَّرَهُ، وَحَقَّرَهُ. رواه الطبراني في الكبير واحد اسانيد الطبراني في الكبير رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/٣٨١

55. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स अपने अ़मल को लोगों के दर्मियान मशहूर करेगा

Copyright ©

तो अल्लाह तआला उसके इस रिया वाले अमल को अपनी मख़्लूक़ के कानों तक पहुंचा देंगे (कि यह शख़्स रियाकार है) और उसको लोगों की निगाह में छोटा और ज़लील कर देंगे। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 56 ﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ عَبْدٍ يَقُوْمُ فِي الدُّنْيَا مَقَامَ سُمْعَةٍ وَرِيَاءٍ إِلَّا سَمَّعَ اللهُ بِهِ عَلَى رُؤُوْسِ الْخَلَائِقِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه الطبراني و اسناده حسن، مجمع الزوائد ١٠/٣٨٣

56. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो बन्दा दुनिया में शोहरत और दिखलाने के लिए कोई नेक अमल करेगा, अल्लाह तआला क़ियामत के दिन इस बात को तमाम मख़्लूक़ के सामने शोहरत देंगे (कि इस शख़्स ने नेक अमल लोगों को दिखलाने के लिए किए थे जिसकी वजह से उसकी रुसवाई होगी)। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 57 ﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يُؤْتَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِصُحُفٍ مُخَتَّمَةٍ، فَتُنْصَبُ بَيْنَ يَدَيِ اللهِ تَبَارَكَ وَ تَعَالَى، فَيَقُوْلُ تَبَارَكَ وَ تَعَالَى: أَلْقُوْا هٰذِهِ، وَاقْبَلُوْا هٰذِهِ، فَتَقُوْلُ الْمَلَائِكَةُ: وَعِزَّتِكَ وَ جَلَالِكَ، مَا رَأَيْنَا إِلَّا خَيْرًا، فَيَقُوْلُ اللهُ عَزَّوَجَلَّ: إِنَّ هٰذَا كَانَ لِغَيْرِ وَجْهِيْ، وَإِنِّيْ لَا أَقْبَلُ الْيَوْمَ إِلَّا مَا ابْتُغِيَ بِهِ وَجْهِيْ. وَفِيْ رِوَايَةٍ: فَتَقُوْلُ الْمَلَائِكَةُ: وَ عِزَّتِكَ، مَا كَتَبْنَا إِلَّا مَا عَمِلَ، قَالَ: صَدَقْتُمْ، إِنَّ عَمَلَهُ كَانَ لِغَيْرِ وَجْهِيْ.

رواه الطبراني في الاوسط باسنادين، ورجال أحدهما رجال الصحيح،

ورواه البزار، مجمع الزوائد ١٠/٦٣٥

57. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन मोहरशुदा आमालनामे लाए जाएंगे और वे अल्लाह तआला के सामने पेश किए जाएंगे। अल्लाह तआला कुछ लोगों के आमालनामे के बारे में फ़रमाएंगे, उनको क़ुबूल कर लो और कुछ लोगों के आमालनामे के बारे में फ़रमाएंगे, उनको फेंक दो। फ़रिश्ते अर्ज़ करेंगे : आपकी इज़्ज़त और जलाल की क़सम! हमने उन आमालनामों में भलाई के अलावा तो कुछ और देखा नहीं? अल्लाह तआला फ़रमाएंगे : वे आमाल मेरे लिए नहीं किए थे और मैं आज के दिन उन्हीं आमाल को क़ुबूल करूंगा जो सिर्फ़ मेरी रज़ा के लिए किए गए थे।

एक रिवायत में है कि फ़रिश्ते अर्ज़ करेंगे : आपकी इज़्ज़त की क़सम! हम

Copyright ©

ने तो वही लिखा जो उसने अ़मल किया (और वे सब आ़माल नेक और अच्छे ही हैं) अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे : फ़रिश्तो! तुम सच कहते हो (लेकिन) उसके आ़माल मेरी रज़ा के अलावा किसी और ग़रज़ के लिए थे।

(तबरानी, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 58 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: وَاَمَّا الْمُهْلِكَاتُ: فَشُحٌّ مُطَاعٌ، وَهَوًى مُتَّبَعٌ، وَاِعْجَابُ الْمَرْءِ بِنَفْسِهِ. (وهو طرف من الحديث) رواه البزار واللفظ له والبيهقي وغيرهما مروي عن جماعة من الصحابة واسانيده وان كان لا يسلم شيء منها من مقال فهو بمجموعها حسن ان شاء الله تعالى، الترغيب ١/٢٨٦

58. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हलाक करने वाली चीज़ें ये हैं : वह बुख़्ल, जिसकी इताअ़त की जाए यानी बुख़्ल किया जाए, वह ख़्वाहिशे नफ़्स, जिस पर चला जाए और आदमी का अपने आपको बेहतर समझना। (बज़्ज़ार, बैहक़ी, तर्ग़ीब)

﴿ 59 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مِنْ اَسْوَءِ النَّاسِ مَنْزِلَةً مَنْ اَذْهَبَ آخِرَتَهُ بِدُنْيَا غَيْرِهِ. رواه البيهقي في شعب الايمان ٣٥٨/٣

59. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बदतरीन शख़्स वह है जो दूसरे की दुनिया के लिए अपनी आख़िरत को बरबाद करे, यानी दूसरे को दुन्यावी फ़ायदा पहुंचाने के लिए अल्लाह तआ़ला को नाराज़ करने वाला काम करके अपनी आख़िरत को बरबाद करे। (बैहक़ी)

﴿ 60 ﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِنِّيْ اَخْوَفُ مَا اَخَافُ عَلٰى هٰذِهِ الْاُمَّةِ مُنَافِقٌ عَلِيْمُ اللِّسَانِ. رواه البيهقي في شعب الإيمان ٢٨٤/٢

60. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे इस उम्मत पर सबसे ज़्यादा डर उस मुनाफ़िक़ का है, जो ज़बान का आ़लिम हो (इल्म की बातें करता हो, लेकिन ईमान और अ़मल से ख़ाली हो)। (बैहक़ी)

फ़ायदा : मुनाफ़िक़ से मुराद रियाकार या फ़ासिक़ है। (मज़ाहिरे हक़)

﴿ 61 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ قَيْسٍ الْخُزَاعِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَامَ رِيَاءً وَسُمْعَةً لَمْ يَزَلْ فِيْ مَقْتِ اللهِ حَتّٰى يَجْلِسَ تفسير ابن كثير ١١٦/٣

Copyright ©

61. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस ख़ुज़ाई ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं : जो शख़्स किसी नेक काम में दिखलावे और शोहरत की नीयत से लगे तो जब तक वह उस नीयत को छोड़ न दे अल्लाह तआ़ला की सख़्त नाराज़गी में रहता है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

﴿ 62 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ لَبِسَ ثَوْبَ شُهْرَةٍ فِي الدُّنْيَا، أَلْبَسَهُ اللهُ ثَوْبَ مَذَلَّةٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ثُمَّ أَلْهَبَ فِيْهِ نَارًا.

رواه ابن ماجه، باب من لبس شهرة من الثياب، رقم: ٣٦٠٧

62. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने दुनिया में शोहरत का लिबास पहना, अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसको ज़िल्लत का लिबास पहना कर उसमें आग भड़का देंगे। (इब्ने माजा)

Copyright ©

بسم الله الرحمن الرحيم

# दावत व तब्लीग़

अपने यक़ीन व अ़मल को दुरुस्त करने और सारे इंसानों को सही यक़ीन व अ़मल पर लाने के लिए रसूलुल्लाह ﷺ वाले मेहनत के तरीक़े को सारे आ़लम में ज़िन्दा करने की कोशिश करना।

# दावत और उसके फ़ज़ाइल

## क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللهُ تَعَالٰى : ﴿وَاللهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ط وَيَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ﴾ [يونس:٢٥]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और अल्लाह तआ़ला सलामती के घर यानी जन्नत की तरफ़ दावत देते हैं और जिसे चाहते हैं, सीधा रास्ता दिखाते हैं। (यूनुस : 25)

وَقَالَ تَعَالٰى : ﴿هُوَ الَّذِىْ بَعَثَ فِى الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ق وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ﴾ [الجمعة:٢]

एक जगह इर्शाद है : अल्लाह तआ़ला वह हैं, जिन्होंने अनपढ़ लोगों में उन्हीं में से एक रसूल मबऊस फ़रमाया, यानी वह रसूल उम्मी और अनपढ़ है, वह रसूल उनको अल्लाह तआ़ला की आयतें पढ़-पढ़कर सुनाते हैं यानी क़ुरआन

Copyright ©

करीम के ज़रिए उनको दावत देते हैं, नसीहत करते हैं और ईमान लाने के लिए उनको आमादा करते हैं (जिससे उनको हिदायत हासिल होती है) और उनकी अख़्लाक़ी इस्लाह करते और उनको सवांरते हैं, उनको क़ुरआन पाक की तालीम देते हैं और सुन्नत और सही समझ-बूझ की तालीम देते हैं। यक़ीनन रसूल की बेसत से पहले ये लोग खुली गुमराही में थे। (जुमा : 2)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِیْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ۔ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا﴾ [الفرقان: ٥١، ٥٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : अगर हम चाहते तो (आपके अलावा उसी ज़माने में) हर बस्ती में एक-एक पैग़म्बर भेज देते (और तन्हा आप पर तमाम काम न डालते लेकिन, चूंकि आपका अज्र बढ़ाना मक़सूद है इसलिए हमने ऐसा नहीं किया तो इस तरह सारा काम तन्हा आपके सुपुर्द करना अल्लाह तआला की नेमत है) (लिहाज़ा इस नेमत के शुक्रिया में) आप काफ़िरों की ख़ुशी का काम न कीजिए यानी काफ़िर तो उससे खुश होंगे कि आप तब्लीग़ न करें या कम करें और क़ुरआन (में जो हक़ की दलीलें हैं उन) से उन कुफ़्फ़ार का ज़ोर व शोर से मुक़ाबला कीजिए (यानी आम और ताम तब्लीग़ कीजिए, सबसे कहिए और बार-बार कहिए और हिम्मत क़वी रखिए)।

(फ़ुरक़ान : 51-52)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ [النحل: ١٢٥]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप अपने रब के रास्ते की तरफ़ हिकमत और अच्छी नसीहत के ज़रिए दावत दीजिए।

(नहल : 125)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ﴾ [الذاريات: ٥٥]

अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : और समझाते रहिए, क्योंकि समझाना ईमान वालों को नफ़ा देता है। (ज़ारियात : 55)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿يٰاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۔ قُمْ فَاَنْذِرْ ۔ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ﴾ [المدثر: ١-٣]

Copyright ©

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : ऐ कपड़ा ओढ़ने वाले! अपनी जगह से उठिए और डराइए और अपने रब की बड़ाइयां ब्यान कीजिए। (मुद्दस्सिर : 1-3)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ﴾ [الشعراء: ٣]

रसूल ﷺ से ख़िताब है : शायद आप उनके ईमान न लाने पर ग़म खाते-खाते अपनी जान दे देंगे। (शुअ़रा : 3)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ﴾ [التوبة: ١٢٨]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : बिलाशुबहा तुम्हारे पास एक ऐसे रसूल तशरीफ़ लाए हैं, जो तुम ही में से हैं, तुम को किसी क़िस्म की तकलीफ़ का पहुंचना उन पर बहुत गिरां गुज़रता है, वह तुम्हारी भलाई के इन्तिहाई ख़्वाहिशमन्द हैं (उनकी यह हालत तो सबके साथ है) बिल्ख़ुसूस मुसलमानों पर बड़े शफ़ीक़ और निहायत मेहरबान हैं। (तौबा : 128)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ﴾ [فاطر: ٨]

अल्लाह तआला ने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : उनके ईमान न लाने पर पछता-पछता कर, कहीं आपकी जान न जाती रहे। (फ़ातिर : 8)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِنَّآ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَاَطِيْعُوْنِ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ اِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ دَعَوْتُ قَوْمِيْ لَيْلًا وَّنَهَارًا ۝ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِيْٓ اِلَّا فِرَارًا ۝ وَاِنِّيْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا اَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَاَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝ ثُمَّ اِنِّيْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝ ثُمَّ اِنِّيْٓ اَعْلَنْتُ لَهُمْ وَاَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا ۝ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۝ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۝ وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ

Copyright ©

لَكُمْ اَنْهٰرًا۝ مَالَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا۝ وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا۝ اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ
خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا۝ وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا۝
وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا۝ ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا۝ وَاللّٰهُ جَعَلَ
لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا۝ لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا﴾ [نوح:١-٢٠]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : बेशक हमने नूह عليه السلام को उनकी क़ौम के पास यह हुक्म देकर भेजा था कि अपनी क़ौम को डराइए, इससे पहले कि उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब आए। चुनांचे उन्होंने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम्हें साफ़ तौर पर नसीहत करता हूं कि अल्लाह तआ़ला की इबादत करो और उनसे डरते रहो और मेरा कहना मानो (ऐसा करने पर) अल्लाह तआ़ला तुम्हारे गुनाह बख़्श देंगे और मौत के मुक़र्रर वक़्त तक अ़ज़ाब को मुअख़्ख़र रखेंगे, यानी दुनिया में भी अ़ज़ाब से हिफ़ाज़त रहेगी और आख़िरत में अ़ज़ाब का न होना तो ज़ाहिर है। जब अल्लाह तआ़ला का मुक़र्रर किया हुआ वक़्त आ जाता है तो फिर उसको पीछे नहीं हटाया जा सकता, यानी ईमान और तक़्वा की बरकत से अ़ज़ाब से तो हिफ़ाज़त हो जाएगी मगर मौत बहरहाल आकर रहेगी। काश! तुम यह बात समझते (जब एक लम्बी मुद्दत तक उन बातों का असर क़ौम पर न हुआ, तो) नूह عليه السلام ने दुआ़ की : मेरे रब! मैं अपनी क़ौम को रात दिन, दावत देता रहा। मगर वह मेरे बुलाने पर दीन से और भी ज़्यादा भागने लगे। जब भी मैं उनको ईमान की दावत देता ताकि उनके ईमान के सबब आप उनको बख़्श दें, तो वे लोग कानों में अपनी उंगलियां ठूंस लेते और अपने कपड़े अपने ऊपर लपेट लेते (ताकि वह मुझको न देखें और मैं उनको न देखूं) और (शरारत पर) अड़ गए और बेहद तकब्बुर किया। फिर (भी मैं उनको मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से नसीहत करता रहा, चुनांचे) मैंने उन्हें बरमला भी बुलाया, फिर मैंने उनको एलानिया समझाया और पोशीदा तौर पर समझाया यानी जो तरीक़ा भी उनकी हिदायत का हो सकता था, उसको छोड़ा नहीं। आम मजमों में मैंने उनको दावत दी, फिर ख़ास तौर पर उनके घरों पर जाकर भी एलानिया खोल-खोल कर ब्यान किया और ख़ामोशी के साथ चुपके-चुपके उनको नफ़ा-नुक़सान से आगाह किया और (उसी समझाने के सिलसिले में) मैंने उनसे कहा कि तुम अपने रब के सामने इस्तग़फ़ार करो, बेशक वह बड़े

Copyright ©

बख़्शने वाले हैं। इस इस्तग़फ़ार पर अल्लाह तआला कसरत से तुम पर बारिशें बरसाएंगे और तुम्हारे माल और औलाद में बरकत देंगे और तुम्हारे लिए बहुत से बाग़ लगा देंगे और तुम्हारे लिए नहरें जारी कर देंगे। तुम्हें क्या हो गया कि तुम अल्लाह तआला की अज़्मत व जलाल का ख़्याल नहीं रखते, हालांकि उन्होंने तुम्हें कई मरहलों में बनाया है। क्या तुम को मालूम नहीं कि अल्लाह तआला ने किस तरह ऊपर तले सात आसमान बनाए हैं और उन आसमानों में चांद को चमकता हुआ बनाया और सूरज को चिराग़ (की तरह रौशन) बना दिया और अल्लाह तआला ही ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया, फिर तुम्हें (मरने के बाद) ज़मीन में ही लौटा देंगे और (क़ियामत में) इस ज़मीन से तुमको बाहर ले आएंगे और अल्लाह तआला ही ने ज़मीन को तुम्हारे लिए फ़र्श बनाया, ताकि तुम उसके कुशादा रास्तों में चलो-फिरो यानी ज़मीन पर चलने फिरने में रास्ता की कोई रुकावट नहीं। (नूह : 1-20)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۞ قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۞ قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗٓ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ۞ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ
اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۞ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ۞ قَالَ رَبُّ
الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴾ (الشعراء: ٢٣-٢٨)

अल्लाह तआला का इर्शाद है : फ़िरऔन ने कहा कि रब्बुल आलमीन क्या चीज़ है? मूसा ﷺ ने फ़रमाया कि वह आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उनके दर्मियान है, सब के रब हैं, अगर तुम्हें यक़ीन आए। फ़िरऔन ने अपने इर्द-गिर्द बैठने वालों से कहा कि क्या तुम सुन रहे हो? (कैसी बेकार बातें कर रहा है, लेकिन मूसा ﷺ ने अल्लाह तआला की सिफ़ात का बयान जारी रखा और) फ़रमाया कि वही तुम्हारे रब हैं और वही तुम्हारे पिछले बाप-दादों के रब हैं। फ़िरऔन अपने लोगों से कहने लगा, यह तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है, बिलाशुब्हा कोई दीवाना है। मूसा ﷺ ने फ़रमाया कि वही मश्रिक़ व मग़रिब और जो कुछ इन दोनों के दर्मियान है, उन सबके रब हैं, अगर तुम कुछ समझ रखते हो। (शुअरा : 23-28)

وَقَالَ تَعَالٰى فِيْ مَوْضِعٍ اٰخَرَ: ﴿ قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ۞ قَالَ رَبُّنَا الَّذِيْٓ اَعْطٰى

Copyright ©

كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدٰى ۝ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ۝ قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ فِيْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّيْ وَلَا يَنْسَى ۝ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ﴾ [طٰه: ٤٩-٥٣]

दूसरे मक़ाम पर अल्लाह तआला ने मूसा ﷺ की दावत को इस तरह ज़िक्र फ़रमाया : फ़िरऔन ने कहा, मूसा (यह बताओ कि) तुम दोनों का रब कौन है? मूसा ﷺ ने जवाब दिया, हम दोनों का (बल्कि सबका) रब वह है जिसने हर चीज़ को उसके मुनासिब सूरत व शक्ल अता फ़रमाई (फिर तमाम मख़्लूक़ात को हर क़िस्म के फ़ायदे हासिल करने की) समझ अता फ़रमाई। (फ़िरऔन ने मूसा ﷺ का माक़ूल जवाब सुनकर बेहूदा सवालात शुरू कर दिए और) कहा अच्छा पिछले लोगों के हालात बताइए। मूसा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उन लोगों का इल्म मेरे रब के पास लौहे महफ़ूज़ में है। मेरे रब (ऐसे जानने वाले हैं कि) न ग़लती करते हैं और न भूलते हैं (उन लोगों के आमाल का सही-सही इल्म मेरे रब को हासिल है। फिर हज़रत मूसा ﷺ ने अल्लाह तआला की ऐसी आम सिफ़ात बयान फ़रमाईं, जिसे हर आमी आदमी भी समझ सकता है। चुनांचे फ़रमाया) वह रब ऐसे हैं जिन्होंने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया और इस ज़मीन में तुम्हारे लिए रास्ते बनाए और आसमान से पानी बरसाया। (ताहा : 49-53)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴾ [ابراهيم: ٥]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और हमने मूसा ﷺ को यह हुक्म देकर भेजा कि अपनी क़ौम को (कुफ़्र की) तारीकियों से (ईमान की) रौशनी की तरफ़ लाओ और अल्लाह तआला की तरफ़ से मुसीबत और राहत के जो वाक़िआत उनको पेश आते रहे हैं, वे वाक़िआत उनको याद दिलाओ, क्योंकि उन वाक़िआत में हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए बड़ी निशानियां हैं। (इब्राहीम : 5)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴾ [الاعراف: ٦٨]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (नूह ﷺ) ने अपनी क़ौम से कहा कि) मैं

Copyright ©

तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचाता हूं और मैं तुम्हारा सच्चा ख़ैरख़्वाह हूं। (आराफ़ : 68)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ۚ يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۡ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ۝ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ۝ تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ۡ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ۝ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝ فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ۭ وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ﴾ [المؤمن:٣٨-٤٥]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (फ़िरऔन की क़ौम में से) वह आदमी जो (मूसा ﷺ पर) ईमान लाया था (और उसने अपना ईमान छुपाया हुआ था) अपनी क़ौम से कहा : मेरे भाइयो! तुम मेरी पैरवी करो, मैं तुम्हें नेकी का रास्ता बताऊंगा। मेरे भाइयो! दुनिया की ज़िन्दगी महज़ चन्द रोज़ा है और ठहरने का मक़ाम तो आख़िरत ही है। जो बुरे काम करेगा उसको बदला भी वैसा ही मिलेगा और जिसने नेक काम किया, चाहे मर्द हो या औरत बशर्ते कि वह मोमिन हो, तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, जहां उन्हें बेहिसाब रोज़ी मिलेगी। मेरे भाइयो! आख़िर क्या बात है कि मैं तुमको नजात की दावत देता हूं और तुम मुझे दोज़ख़ की दावत देते हो। तुम मुझे इस बात की तरफ़ दावत देते हो कि मैं अल्लाह तआला का मुंकिर हो जाऊं और उनके साथ उसे शरीक करूं जिसे मैं जानता भी नहीं और मैं तुम्हें ज़बरदस्त, गुनाह बख़्शने वाले की तरफ़ बुलाता हूं और सच्ची बात तो यह है कि तुम मुझे जिसकी तरफ़ बुलाते हो वह न दुनिया में पुकारे जाने के क़ाबिल है न आख़िरत में और यक़ीनन हम सबको अल्लाह तआला के पास वापस जाना है और बेशक बन्दगी की हद से निकलने वाले ही दोज़ख़ी हैं। मैं तुमसे जो कुछ कह रहा हूं, तुम मेरी इस बात को आगे चल कर याद करोगे और मैं तो अपना मामला अल्लाह तआला के सुपुर्द करता हूं, बेशक तमाम बन्दे अल्लाह

Copyright ©

तआला की निगाह में हैं। (नतीजा यह हुआ कि) अल्लाह तआला ने उस मोमिन को उन लोगों की बुरी चालों से महफ़ूज़ रखा और ख़ुद फ़िरऔनियों पर बदतरीन अज़ाब नाज़िल हुआ। (मोमिन : 38-45)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴾ [لقمن:١٧]

(हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत की, जिसको अल्लाह तआला ने ज़िक्र फ़रमाया) मेरे प्यारे बेटे! नमाज़ पढ़ा करो, अच्छे कामों की नसीहत किया करो, बुरे कामों से मना किया करो और जो मुसीबत तुम पर आए, उसको बरदाश्त किया करो, बेशक ये हिम्मत के काम हैं। (लुक़मान : 17)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمَا ۨ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۭ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۔ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْۗءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۢ بَـِٕيْسٍۢ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴾ [الاعراف:١٦٤-١٦٥]

(बनी इसराईल को हफ़्ता के दिन मछली के शिकार से मना किया गया था, कुछ लोगों ने उस हुक्म पर अमल किया, कुछ लोगों ने नाफ़रमानी की और कुछ लोगों ने नाफ़रमानों को नसीहत की। इस वाक़िआ को इन आयतों में ब्यान किया है, अल्लाह तआला का इर्शाद है) और वह वक़्त ज़िक्र के क़ाबिल है, जब बनी इसराईल की एक जमाअत जो कि नाफ़रमानी नहीं करती थी, (और न ही नाफ़रमानी करने वालों को रोकती थी) उसने उन लोगों से कहा जो नसीहत किया करते थे कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत कर रहे हो जिनको अल्लाह तआला हलाक करने वाले हैं या उनको सख़्त सज़ा देने वाले हैं। उस पर नसीहत करने वालों ने जवाब दिया कि हम इसलिए नसीहत कर रहे हैं ताकि तुम्हारे (और अपने) रब के सामने अपनी ज़िम्मेदारी से सुबकदोश हो सकें (यानी अल्लाह तआला के सामने यह कह सकें कि ऐ अल्लाह, हमने तो कहा था, मगर उन्होंने न सुना, हम माज़ूर हैं) और इस उम्मीद पर भी कि शायद ये बाज़ आ जाएं (और हफ़्ता के दिन शिकार करना छोड़ दें) फिर जब उन लोगों ने इस हुक्म को छोड़े ही रखा जिस हुक्म पर अमल करने की उनको नसीहत की जाती रही थी, हमने उन लोगों को तो बचा लिया जो

Copyright ©

बुरे काम से मना किया करते थे और नाफ़रमानों को नाफ़रमानी की वजह से जो वह किया करते थे शदीद अ़ज़ाब में मुब्तला कर दिया।

(आराफ़ : 164-166)

وَقَالَ تَعَالَىٰ: ﴿ فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ أُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا أُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۞ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّأَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴾

[هود: ١١٦-١١٧]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : जो क़ौमें तुम से पहले हलाक हो चुकी हैं, उनमें ऐसे समझदार लोग क्यों न हुए जो लोगों को मुल्क में फ़साद फैलाने से मना करते अल्बत्ता चन्द आदमी ऐसे थे जो फ़साद से रोकते थे जिन्हें हमने अ़ज़ाब से बचा लिया था (यानी पिछली उम्मतों की हलाकत के जो क़िस्से मज़्कूर हुए हैं उसकी वजह यह हुई कि उनमें ऐसे समझदार लोग न थे जो उनको अम्र बिल्मारूफ़ और नह्यि अ़निलमुन्कर करते, चन्द लोग ये काम करते रहे तो वे अ़ज़ाब से बचा लिए गए) और जो नाफ़रमान थे वे जिस नाज़ व नेमत में थे, उसके पीछे पड़ रहे और वे जराइम के आ़दी हो चुके थे, और आपके रब की यह शान नहीं है कि वह उन बस्तियों को जिनके रहने वाले (अपनी और दूसरों की) इस्लाह में लगे हों, नाहक़ (बिला वजह) तबाह व बरबाद कर दें। (हूद : 116-117)

وَقَالَ تَعَالَىٰ: ﴿ وَالْعَصْرِ ۞ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۞ إِلَّا الَّذِيْنَ آمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ﴾ [العصر: ١-٣]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : ज़माने की क़सम! बेशक इन्सान बड़े ख़सारे में है मगर वे लोग जो ईमान लाए और नेक आ़माल के पाबन्द रहे और एक दूसरे को (हक़) पर क़ायम रहने और एक दूसरे को आमाल की पाबन्दी की ताकीद करते रहे (ये लोग अलबत्ता पूरे-पूरे क़ामयाब हैं)। (अ़स्र)

وَقَالَ تَعَالَىٰ: ﴿ كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ﴾ [آل عمران: ١١٠]

Copyright ©

अल्लाह तआला का इर्शाद है : तुम बेहतरीन उम्मत हो, जो लोगों के फ़ायदे के लिए भेजी गई हो। तुम नेक काम करने को कहते हो और बुरे कामों से रोकते हो और अल्लाह तआला पर ईमान रखते हो। (आले इमरान : 110)

وَقَالَ تَعَالَى :﴿قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ﴾

[يوسف:١٠٨]

रसूल ﷺ से ख़िताब है : आप फ़रमा दीजिए मेरा रास्ता तो यही है कि मैं पूरी बसीरत के साथ अल्लाह तआला की तरफ़ दावत देता रहूं और जो मेरी पैरवी करने वाले हैं वे भी (अल्लाह तआला की तरफ़ दावत देते हैं)।(यूसुफ़ : 108)

وَقَالَ تَعَالَى :﴿وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ط اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ط اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ﴾ [التوبة:٧١]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें आपस में एक दूसरे के दीनी मददगार हैं, जो नेक कामों का हुक्म देते हैं और बुरे कामों से मना करते हैं और नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और ज़कात अदा करते हैं और अल्लाह तआला और उनके रसूल ﷺ के हुक्म पर चलते हैं। यही लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला ज़रूर रहम फ़रमाएंगे। बेशक अल्लाह तआला ज़बरदस्त हैं, हिकमत वाले हैं। (तौबा : 71)

وَقَالَ تَعَالَى :﴿وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ص وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ﴾

[المائدة:٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और नेकी और तक़्वा के कामों में एक दूसरे की मदद किया करो और गुनाह और ज़ुल्म के कामों में एक दूसरे की मदद न किया करो। (माइदा : 2)

وَقَالَ تَعَالَى :﴿وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ط اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ ۝ وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ج وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ﴾ [حم السجدة:٣٣-٣٥]

Copyright ©

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और उससे बेहतर किसकी बात हो सकती है जो (लोगों को) अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाए और ख़ुद भी नेक अमल करे और (फ़रमांबरदारी के इज़हार के लिए) कहे कि मैं फ़रमांबरदारों में से हूं। नेकी और बुराई बराबर नहीं होती (बल्कि हर एक का असर जुदा है) तो आप (और आप के मानने वाले) बुराई का जवाब भलाई से दें (मसलन गुस्सा के जवाब में बुर्दबारी, सख़्ती के जवाब में नर्मी) चुनांचे इस बेहतरीन बरताव का असर यह होगा कि जिस शख़्स को आपसे दुश्मनी थी वह एक दम ऐसा हो जाएगा जैसा कोई हमदर्द दोस्त होता है, और यह बात बरदाश्त करने वालों ही को नसीब होती है, और यह बात बड़ी क़िस्मत वाले ही को मिलती है (इस आयत से मालूम हुआ कि दाई इलल्लाह को बहुत ज़्यादा सब्र व इस्तिक़्लाल और उम्दा अख़्लाक़ की ज़रूरत है)। (हामीम सज्दा : 33-35)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ﴾ [التحريم:٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : ईमान वालो! तुम अपने आप को और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं। उस आग पर ऐसे सख़्त दिल और ज़ोरआवर फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं कि उनको जो हुक्म भी अल्लाह तआला देते हैं वह उसकी नाफ़रमानी नहीं करते और वह वही करते हैं जिसका उनको हुक्म दिया जाता है। (तहरीम : 6)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ط وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ﴾ [الحج:٤١]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : ये मुसलमान लोग ऐसे हैं कि अगर हम उनको दुनिया में हुकूमत दे दें तब भी ये लोग (ख़ुद भी) नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें और (दूसरों को भी) नेक काम करने को कहें और बुरे कामों से मना करें और हर काम का अंजाम तो अल्लाह तआला ही के अख़्तियार में है। (हज : 41)

Copyright ©

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَجَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ۭ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ۭ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرٰهِيْمَ ۭ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ڏ مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَاۗءَ عَلَي النَّاسِ﴾ [الحج:٧٨]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और अल्लाह तआ़ला के दीन के लिए मेहनत किया करो जैसा मेहनत करने का हक़ है। उन्होंने तमाम दुनिया में अपना पैग़ाम पहुंचाने के लिए तुम को चुन लिया है और दीन में तुम पर किसी तरह सख़्ती नहीं की (लिहाज़ा दीन का काम आसान है। और जो इस्लाम के अह्काम तुम को दिए गए हैं, वह दीने इब्राहीमी के मुताबिक़ हैं इसलिए) तुम अपने बाप इब्राहीम के दीन पर क़ायम रहो। अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारा लक़ब क़ुरआन के नाज़िल होने से पहले भी और इस क़ुरआन में भी मुसलमान रखा है, यानी फ़रमांबरदार और वफ़ाशुआर। तुम को हमने इसलिए मुंतख़ब किया है, ताकि मुहम्मद ﷺ तुम्हारे लिए गवाह हों और तुम दूसरे लोगों के मुक़ाबले में गवाह बनो। (हज : 78)

फ़ायदा : मतलब यह है कि क़ियामत के दिन जब दूसरी उम्मतें इंकार करेंगी कि अम्बिया ने हमको तब्लीग़ नहीं की, तो वह अम्बिया उम्मते मुहम्मदिया को बतौरे गवाह पेश करेंगे। यह उम्मत गवाही देगी कि बेशक पैग़म्बरों ने दावत व तब्लीग़ की, जब सवाल होगा कि तुम को कैसे मालूम हुआ? जवाब देंगे कि हमको हमारे नबी ने बताया था और फिर रसूलुल्लाह ﷺ अपनी उम्मत की गवाही के मोतबर होने की तस्दीक़ फ़रमाएंगे।

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने आयत का मफ़हूम यह ब्यान किया है कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : हमने तुम्हें इसलिए चुन लिया है ताकि रसूल तुम को बताएं और सिखाएं और तुम दूसरे लोगों को बताओ और सिखाओ।

(कश्फ़ुर्रहमान)

Copyright ©

# नबी ﷺ की हदीसें

﴿1﴾ عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّمَا اَنَا مُبَلِّغٌ وَاللّٰهُ يَهْدِىْ وَاِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَاللّٰهُ يُعْطِىْ. رواه الطبراني في الكبير وهو حديث حسن الجامع الصغير ٢٦٣١

1. हज़रत मुआविया ؓ रिवायत करते हैं रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : मैं तो अल्लाह तआला का पैग़ाम लोगों तक पहुंचाने वाला हूं और हिदायत तो अल्लाह तआला ही देते हैं, मैं तो माल तक़सीम करने वाला हूं और अ़ता करने वाले तो अल्लाह तआला ही हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿2﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ لِعَمِّهِ: قُلْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، اَشْهَدُ لَكَ بِهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ، قَالَ: لَوْلَا اَنْ تُعَيِّرَنِىْ قُرَيْشٌ يَقُوْلُوْنَ: اِنَّمَا حَمَلَهُ عَلٰى ذٰلِكَ الْجَزَعُ لَاَقْرَرْتُ بِهَا عَيْنَكَ، فَاَنْزَلَ اللّٰهُ: "اِنَّكَ لَا تَهْدِىْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ" الآية. رواه مسلم، باب الدليل على صحة اسلام... رقم: ١٣٥

2. हज़रत अबू हुरैरह ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने चचा (अबू तालिब से उनकी वफ़ात के वक़्त) इर्शाद फ़रमाया : ला इला-ह इल्लल्लाह कह लीजिए, ताकि मैं क़ियामत के दिन आपका गवाह बन जाऊं। अबू तालिब ने जवाब दिया : अगर क़ुरैश के इस ताने का डर न होता कि अबू तालिब ने सिर्फ़ मौत की घबराहट से कलिमा पढ़ा है तो मैं कलिमा पढ़ कर ज़रूर आपकी आंखों को ठंडा कर देता। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई : तर्जुमा : आप जिसको चाहें हिदायत नहीं दे सकते बल्कि अल्लाह तआला जिसको चाहें हिदायत दे दें। (मुस्लिम)

﴿3﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: خَرَجَ اَبُوْ بَكْرٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ يُرِيْدُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ، وَكَانَ لَهُ صَدِيْقًا فِى الْجَاهِلِيَّةِ، فَلَقِيَهُ، فَقَالَ: يَا اَبَا الْقَاسِمِ، فُقِدْتَ مِنْ مَجَالِسِ قَوْمِكَ، وَاتَّهَمُوْكَ بِالْعَيْبِ لِاٰبَائِهَا وَ اُمَّهَاتِهَا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: "اِنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ، اَدْعُوْكَ اِلَى اللّٰهِ" فَلَمَّا فَرَغَ مِنْ كَلَامِهِ اَسْلَمَ اَبُوْبَكْرٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ، فَانْطَلَقَ عَنْهُ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ وَمَا بَيْنَ الْاَخْشَبَيْنِ اَحَدٌ اَكْثَرَ سُرُوْرًا مِنْهُ بِاِسْلَامِ اَبِىْ بَكْرٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ، وَمَضٰى اَبُوْبَكْرٍ فَرَاحَ بِعُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ وَطَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدٍ وَالزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ وَسَعْدِ بْنِ اَبِىْ وَقَّاصٍ

Copyright ©

رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ، فَاَسْلَمُوْا، ثُمَّ جَاءَ الْغَدَ بِعُثْمَانَ بْنِ مَظْعُوْنٍ وَاَبِي عُبَيْدَةَ بْنِ الْجَرَّاحِ وَعَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ عَوْفٍ وَاَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الْاَسَدِ وَالْاَرْقَمِ بْنِ اَبِي الْاَرْقَمِ، فَاَسْلَمُوْا رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ. البداية والنهاية ٣/ ٨٠

3. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत अबूबक्र ﷺ जाहिलियत के ज़माने में रसूलुल्लाह ﷺ के दोस्त थे। एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ की मुलाक़ात के इरादे से घर से निकले। आप ﷺ से मुलाक़ात हुई तो अर्ज़ किया : अबुलक़ासिम! (यह रसूलुल्लाह ﷺ की कुन्नियत है) आप अपनी क़ौम की मज्लिसों में दिखाई नहीं देते और लोग आप पर यह इल्ज़ाम लगा रहे हैं कि आप उनके बाप-दादा में ऐब निकालते हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं अल्लाह तआला का रसूल हूं तुमको अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाता हूं। रसूलुल्लाह ﷺ की बात ख़त्म होते ही हज़रत अबूबक्र ﷺ मुसलमान हो गए। रसूलुल्लाह ﷺ हज़रत अबूबक्र ﷺ के पास से वापस हुए और आप ﷺ हज़रत अबूबक्र ﷺ के इस्लाम लाने पर जितने ख़ुश थे मक्का के दो पहाड़ों के दर्मियान कोई शख़्स किसी बात की वजह से इतना ख़ुश न था। हज़रत अबूबक्र ﷺ वहां से हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान, हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह, हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम और हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास के पास (दावत देने के लिए) तशरीफ़ ले गए, ये हज़रात भी मुसलमान हो गए (ﷺ)। दूसरे रोज़ हज़रत अबूबक्र ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ के पास हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन, हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुल असद और हज़रत अरक़म बिन अबी अरक़म को लेकर हाज़िर हुए और ये सब हज़रात भी मसुलमान हो गए (ﷺ) (दो दिन में हज़रत अबूबक्र ﷺ की दावत से नौ हज़रात ने इस्लाम क़ुबूल किया)। (अल-बिदायः वन्निहायः)

﴿ 4 ﴾ عَنْ اَسْمَاءَ بِنْتِ اَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ (فِي قِصَّةِ اِسْلَامِ اَبِيْ قُحَافَةَ): فَلَمَّا دَخَلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ (مَكَّةَ يَوْمَ الْفَتْحِ) وَدَخَلَ الْمَسْجِدَ اَتَى اَبُوْبَكْرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ بِاَبِيْهِ يَقُوْدُهُ، فَلَمَّا رَآهُ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: هَلَّا تَرَكْتَ الشَّيْخَ فِي بَيْتِهِ حَتّٰى اَكُوْنَ اَنَا آتِيَهِ فِيْهِ؟ فَقَالَ اَبُوْبَكْرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ: يَارَسُوْلَ اللّٰهِ! هُوَ اَحَقُّ اَنْ يَمْشِيَ اِلَيْكَ مِنْ اَنْ تَمْشِيَ اِلَيْهِ، قَالَ: فَاَجْلَسَهُ بَيْنَ يَدَيْهِ، ثُمَّ مَسَحَ صَدْرَهُ، ثُمَّ قَالَ لَهُ: اَسْلِمْ، فَاَسْلَمَ، وَدَخَلَ بِهِ اَبُوْبَكْرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ وَرَاْسُهُ كَاَنَّهَا ثَغَامَةٌ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: غَيِّرُوْا هٰذَا مِنْ شَعْرِهِ. رواه احمد والطبراني ورجالهما ثقات، مجمع الزوائد ٦/ ١٧٤

Copyright ©

हज़रत असमा बिन्त अबीबक्र रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं (फ़त्हे मक्का के ..न) जब रसूलुल्लाह ﷺ मक्का में दाख़िल हुए और मस्जिदे हराम तशरीफ़ ले गए तो हज़रत अबूबक्र ؓ अपने वालिद अबू क़हाफ़ा का हाथ पकड़ कर आपकी ़िदमत में लाए। जब आप ﷺ ने उन्हें देखा तो इर्शाद फ़रमाया : अबूबक्र! इन बड़े मियां को घर में क्यों नहीं रहने दिया कि मैं ख़ुद उनके पास घर आ जाता? उन्होंने र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! इन पर ज़्यादा हक़ बनता है कि यह आपके पास चलकर ..एं, बजाए इसके कि आप इनके पास तशरीफ़ ले जाएं। रसूलुल्लाह ﷺ ने उनको अपने सामने बिठाया और उनके सीने पर हाथ मुबारक फेर कर इर्शाद फ़रमाया : ..प मुसलमान हो जाएं। चुनांचे हज़रत अबू क़हाफ़ा ؓ मुसलमान हो गए। जब हज़रत अबूबक्र ؓ अपने वालिद को रसूलुल्लाह ﷺ के पास लाए तो उनके सर के ..ल, सग़ामा दरख़्त की तरह सफ़ेद थे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इन बालों की ..फ़ेदी को (मेंहदी वग़ैरह लगाकर) बदल दो। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

..यदा : सग़ामा एक दरख़्त है जो बर्फ़ के मानिन्द सफ़ेद होता है।

﴿5﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا اَنْزَلَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ: "وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ" اَتَى النَّبِيُّ ﷺ الصَّفَا فَصَعِدَ عَلَيْهِ، ثُمَّ نَادٰى: يَا صَبَاحَاه، فَاجْتَمَعَ النَّاسُ اِلَيْهِ بَيْنَ رَجُلٍ يَجِيْءُ اِلَيْهِ وَبَيْنَ رَجُلٍ يَبْعَثُ رَسُوْلَهُ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: يَا بَنِيْ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، يَا بَنِيْ فِهْرٍ، يَا بَنِيْ كَعْبٍ، اَرَاَيْتُمْ لَوْ اَخْبَرْتُكُمْ اَنَّ خَيْلًا بِسَفْحِ هٰذَا الْجَبَلِ تُرِيْدُ اَنْ تُغِيْرَ عَلَيْكُمْ صَدَّقْتُمُوْنِيْ؟ قَالُوْا: نَعَمْ! قَالَ: فَاِنِّيْ نَذِيْرٌ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ فَقَالَ اَبُوْ لَهَبٍ ـ لَعَنَهُ اللّٰهُ ـ تَبًّا لَكَ سَائِرَ الْيَوْمِ! اَمَا دَعَوْتَنَا اِلَّا لِهٰذَا؟ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ: "تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ". رواه احمد ١٧٢/١

हज़रत इब्ने अब्बास ؓ फ़रमाते हैं : जब अल्लाह तआला ने 'व अन्ज़िर अशीरतकल अक़रबीन०' आयत नाज़िल फ़रमाई "और आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों ..ो डराइए" तो आप ने सफ़ा पहाड़ी पर चढ़ कर ज़ोर से पुकारा, या सबाहाह! यानी लोगो! सुबह दुश्मन हमला करने वाला है" इसलिए यहां जमा हो जाओ। ..नांचे सब लोग आप ﷺ के पास जमा हो गए। कोई ख़ुद आया, किसी ने अपना ..ासिद भेज दिया। उसके बाद आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बनू अब्दुल मुत्तलिब, बनू फ़िह्र, बनू काब! ज़रा यह तो बताओ, अगर मैं तुम्हें ख़बर दूं कि इस पहाड़ के ..मन में घुड़सवारों का एक लश्कर है, जो तुम पर हमला करना चाहता है, क्या तुम

Copyright ©

मुझे सच्चा मान लोगे? सबने कहा, जी हां। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं तुम्हें ए.. सख़्त अज़ाब आने से पहले उससे डराने वाला हूं। अबू लहब मलऊन बोला (नऊज़ु बिल्लाह) तू हमेशा के लिए बरबाद हो जाए, हमें महज़ इसलिए बुलाया था? इस ' अल्लाह तआला ने सूरत नाज़िल फ़रमाई जिसमें फ़रमाया : अबू लहब के दोनों हाथ टूट जाएं और वह बरबाद हो जाए। (मुस्नद अहमद, अल-बिदाया व निहाय

﴿ 6 ﴾ عَنْ مُنِيْبِ الْاَزْدِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: رَاَيْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ فِي الْجَاهِلِيَّةِ وَهُوَ يَقُوْلُ : يٰاَيُّهَا النَّاسُ قُوْلُوْا " لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ تُفْلِحُوْا" فَمِنْهُمْ مَنْ تَفَلَ فِيْ وَجْهِهٖ، وَمِنْهُمْ مَنْ حَثَا عَلَيْهِ التُّرَابَ، وَمِنْهُمْ مَنْ سَبَّهٗ حَتَّى انْتَصَفَ النَّهَارُ، فَاَقْبَلَتْ جَارِيَةٌ بِعُسٍّ مِنْ مَاءٍ، فَغَسَلَ وَجْهَهٗ وَيَدَيْهِ، وَقَالَ: يَا بُنَيَّةُ! لَا تَخْشَيْ عَلٰى اَبِيْكِ غِيْلَةً وَلَا ذِلَّةً، فَقُلْتُ : مَنْ هٰذِهٖ؟ قَالُوْا : زَيْنَبُ بِنْتُ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ وَهِيَ جَارِيَةٌ وَضِيْئَةٌ . رواه الطبراني وفيه: منيب بن مدرك ولم اعرفه، وبقيه رجاله ثقات مجمع الزوائد ٦/١٨ وفي الحاشية: منيب بن مدرك ترجمه البخاري في تاريخه وابن ابي حاتم ولم يذكرا فيه جرحاً ولا تعديلاً.

6. हज़रत मुनीब अज़्दी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को अपने ज़म जाहिलयत में देखा, आप फ़रमा रहे थे : लोगो! ला इला-ह इल्लल्लाह कहो, कामयाब हो जाओगे। मैंने देखा कि उनमें से कोई तो आपके चेहरे पर थूक रहा और कोई आप पर मिट्टी डाल रहा था और कोई आपको गालियां दे रहा था (अ.. यूं ही होता रहा) यहां तक कि आधा दिन गुज़र गया। फिर एक लड़की पानी का प्याला लेकर आई जिससे आपने अपने चेहरे और दोनों हाथों को धोया और फ़रमाया : मे बेटी! न तो तुम अपने बाप के अचानक क़त्ल होने से डरो और न किसी क़िस्म की ज़िल्लत का ख़ौफ़ रखो। मैंने पूछा, यह लड़की कौन है? लोगों ने बताया ! रसूलुल्लाह ﷺ की बेटी हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा हैं। वह एक ख़ुबसूरत बच्ची थीं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 7 ﴾ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عُثْمَانَ بْنِ حَوْشَبٍ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ جَدِّهٖ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا اَنْ اَظْهَرَ اللّٰهُ مُحَمَّدًا اَرْسَلْتُ اِلَيْهِ اَرْبَعِيْنَ فَارِسًا مَعَ عَبْدِ شَرٍّ فَقَدِمُوْا عَلَيْهِ بِكِتَابِيْ فَقَالَ لَهٗ: مَا اسْمُكَ؟ قَالَ: عَبْدُ شَرٍّ قَالَ: بَلْ اَنْتَ عَبْدُ خَيْرٍ، فَبَايَعَهٗ عَلَى الْاِسْلَامِ وَكَتَبَ مَعَهُ الْجَوَابَ اِلٰى حَوْشَبٍ ذِيْ ظُلَيْمٍ فَاٰمَنَ حَوْشَبٌ. الاصابة ١/٣٨٢

7. हज़रत मुहम्मद बिन उस्मान अपने दादा हज़रत हौशब ﷺ से रिवायत करते

Copyright ©

कि जब अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह को ग़लबा दे दिया तो मैंने अब्दे शर्र के साथ आपकी ख़िदमत में चालीस सवारों की एक जमाअत भेजी। वह मेरा ख़त लेकर रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में पहुंचे। रसूलुल्लाह ﷺ ने पूछा, तुम्हारा नाम क्या है? उन्होंने कहा, (मेरा नाम) अब्दे शर्र (यानी बुराई वाला) है। आपने इर्शाद फ़रमाया : नहीं, बल्कि अब्दे ख़ैर (भलाई वाला) हो (फिर आप ﷺ ने उन्हें इस्लाम की दावत दी। वह मुसलमान हो गए) आप ﷺ ने उनको इस्लाम पर बैअ़त फ़रमा लिया। रावी कहते हैं कि आप ﷺ ने ख़त का जवाब लिखा और उनके हाथ हौशब को भेजा, (जिसमें इस्लाम क़ुबूल करने की दावत थी) हौशब (इस ख़त को पढ़कर) ईमान ले आए। (इसाबा)

﴿ 8 ﴾ عَنْ اَبِىْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِىِّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ رَاٰى مِنْكُمْ مُنْكَرًا فَلْيُغَيِّرْهُ بِيَدِهٖ، فَاِنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَبِلِسَانِهٖ، فَاِنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَبِقَلْبِهٖ، وَذٰلِكَ اَضْعَفُ الْاِيْمَانِ.

رواه مسلم، باب بيان كون النهي عن المنكر من الايمان...، رقم: ١٧٧

8. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स तुममें से किसी बुराई को देखे तो उसको चाहिए कि अपने हाथ से बदल दे, अगर (हाथ से बदलने की) ताक़त न हो, तो ज़बान से उसको बदल दे और अगर उसकी भी ताक़त न हो, तो दिल से उसे बुरा जाने यानी इस बुराई का दिल में ग़म हो और यह ईमान का सबसे कमज़ोर दर्जा है। (मुस्लिम)

﴿ 9 ﴾ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِىِّ ﷺ قَالَ: مَثَلُ الْقَائِمِ عَلٰى حُدُوْدِ اللهِ وَالْوَاقِعِ فِيْهَا كَمَثَلِ قَوْمٍ اسْتَهَمُوْا عَلٰى سَفِيْنَةٍ، فَاَصَابَ بَعْضُهُمْ اَعْلَاهَا وَبَعْضُهُمْ اَسْفَلَهَا، فَكَانَ الَّذِيْنَ فِىْ اَسْفَلِهَا اِذَا اسْتَقَوْا مِنَ الْمَاءِ مَرُّوْا عَلٰى مَنْ فَوْقَهُمْ فَقَالُوْا: لَوْ اَنَّا خَرَقْنَا فِىْ نَصِيْبِنَا خَرْقًا وَلَمْ نُؤْذِ مَنْ فَوْقَنَا، فَاِنْ يَّتْرُكُوْهُمْ وَمَا اَرَادُوْا هَلَكُوْا جَمِيْعًا، وَاِنْ اَخَذُوْا عَلٰى اَيْدِيْهِمْ نَجَوْا وَنَجَوْا جَمِيْعًا.

رواه البخاري، باب هل يقرع في القسمة والاستهام فيه، رقم: ٢٤٩٣

9. हज़रत नोमान बिन बशीर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उस शख़्स की मिसाल जो अल्लाह तआला का फ़रमांबरदार है और उस शख़्स की जो अल्लाह तआला का नाफ़रमान है, उन लोगों की तरह है (जो एक बड़ी कश्ती पर सवार हों)। क़ुरआ से किश्ती की मंज़िलें मुक़र्रर हो गई हों कि बाज़ लोग

Copyright ©

किश्ती के ऊपर के हिस्से में हों और बाज़ लोग नीचे के हिस्से में हों। नीचे की मंज़िल वालों को जब पानी लेने की ज़रूरत होती है तो वह ऊपर आते हैं और ऊपर की मंज़िल पर बैठने वालों के पास से गुज़रते हैं। उन्होंने सोचा कि अगर हम अपने (नीचे के) हिस्से में सुराख़ कर लें (ताकि ऊपर जाने के बजाए सुराख़ से पानी ले लें) और अपने ऊपर वालों को तकलीफ़ न दें (तो क्या ही अच्छा हो)। अब अगर ऊपर वाले नीचे वालों को उनके हाल पर छोड़ दें और उनको उनकी इस इरादे से न रोकें (और ये सुराख़ कर लें) तो सबके सब हलाक हो जाएंगे और अगर वह उनके हाथों को पकड़ लेंगे (सुराख़ नहीं करने देंगे) तो वे ख़ुद भी और दूसरे तमाम मुसाफ़िर भी बच जाएंगे। (बुख़ारी)

**फ़ायदा :** इस हदीस में दुनिया की मिसाल एक किश्ती से दी गई है, जिसमें सब जमाअत एक दूसरे की ग़लती से मुतअस्सिर हुए बग़ैर नहीं रह सकती। सारी दुनिया के इंसान एक क़ौम की तरह एक किश्ती में सवार हैं। इस किश्ती में फ़रमांबरदार भी हैं और नाफ़रमान भी हैं। अगर नाफ़रमानी आम हुई तो उससे सिर्फ़ वही तबक़ा मुतअस्सिर नहीं होगा जो इस नाफ़रमानी में मुब्तला है, बल्कि पूरी क़ौम, पूरी दुनिया मुतअस्सिर होगी। इसलिए इंसानी मुआशरा को तबाही से बचाने के लिए ज़रूरी है कि अल्लाह तआला की नाफ़रमानियों को रोका जाए। अगर ऐसा नहीं हो तो सारा मुआशरा अल्लाह तआला के अज़ाब में गिरफ़्तार हो सकता है।

﴿ 10 ﴾ عَنِ الْعُرْسِ بْنِ عَمِيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ لَا يُعَذِّبُ الْعَامَّةَ بِعَمَلِ الْخَاصَّةِ حَتّٰى تَعْمَلَ الْخَاصَّةُ بِعَمَلٍ تَقْدِرُ الْعَامَّةُ أَنْ تُغَيِّرَهُ، وَلَا تُغَيِّرُهُ، فَذَاكَ حِيْنَ يَأْذَنُ اللهُ فِيْ هَلَاكِ الْعَامَّةِ وَالْخَاصَّةِ. رواه الطبراني ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٧/٥٢٨

10. हज़रत उर्स बिन अमीरा رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला बाज़ लोगों की ग़लतियों पर सबको (जो इस ग़लती में मुब्तला न हों) अज़ाब नहीं देते, अलबत्ता सबको इस सूरत में अज़ाब देते हैं जब कि फ़रमांबरदार बावजूद क़ुदरत के नाफ़रमानी करने वालों को न रोकें। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 11 ﴾ عَنْ أَبِيْ بَكْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ (فِيْ حَدِيْثٍ طَوِيْلٍ) عَنِ الرَّسُوْلِ ﷺ قَالَ: أَلَا هَلْ بَلَّغْتُ؟ قُلْنَا: نَعَمْ! قَالَ: اَللّٰهُمَّ اشْهَدْ فَلْيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ، فَإِنَّهُ رُبَّ مُبَلَّغٍ يُبَلِّغُهُ مَنْ هُوَ أَوْعٰى لَهُ. رواه البخاري، باب قول النبي ﷺ لا ترجعوا بعدي كفارا، رقم: ٧٠٧٨

Copyright ©

11. हज़रत अबू बकरः ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने (हज के मौके पर दस ज़िलहिज्जा को मिना में खुत्बा के आख़िर में) इर्शाद फ़रमाया : क्या मैंने तुम्हें अल्लाह तआला के अहकाम नहीं पहुंचा दिए? (सहाबा ﷺ फ़रमाते हैं) हमने अर्ज़ किया : जी हां, आपने पहुंचा दिए। फिर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोग यहां मौजूद हैं वे उन लोगों तक पहुंचा दें जो यहां मौजूद नहीं हैं, इसलिए कि कभी-कभी दीन की बातें जिसको पहुंचाई जाए, वह पहुंचाने वाले से ज़्यादा याद रखने वाला होता है। (बुख़ारी)

फ़ायदा : इस हदीस शरीफ़ में इस बात की ताकीद फ़रमाई गई है कि अल्लाह तआला और उनके रसूल ﷺ की जो बात सुनी जाए उसे सुनने वाला अपनी ज़ात तक महदूद न रखे, बल्कि उसे दूसरे लोगों तक पहुंचाए, मुम्किन है वे लोग उसे ज़्यादा याद रखने वाले हों। (फ़त्हुलबारी)

﴿ 12 ﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ الْيَمَانِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهٖ لَتَأْمُرُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ وَلَتَنْهَوُنَّ عَنِ الْمُنْكَرِ اَوْ لَيُوْشِكَنَّ اللهُ اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عِقَابًا مِنْهُ ثُمَّ تَدْعُوْنَهٗ فَلَا يَسْتَجِيْبُ لَكُمْ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب ما جاء في الامر بالمعروف والنهي عن المنكر، رقم: ٢١٦٩

12. हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़सम है उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, तुम ज़रूर अम्र बिल्मारूफ़ और नह्य अनिलमुन्कर करते रहो वर्ना अल्लाह तआला अंकरीब तुम पर अपना अज़ाब भेज देंगे, फिर तुम दुआ भी करोगे तो अल्लाह तआला तुम्हारी दुआ क़ुबूल न करेंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿ 13 ﴾ عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَفَنَهْلِكُ وَفِيْنَا الصَّالِحُوْنَ؟ قَالَ: نَعَمْ إِذَا كَثُرَ الْخَبَثُ. رواه البخاري، باب يأجوج ومأجوج، رقم: ٧١٣٥

13. हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा, या रसूलुल्लाह! क्या हम लोग ऐसी हालत में भी हलाक हो जाएंगे जबकि हम में नेक लोग भी हों? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हां, जब बुराई आम हो जाए। (बुख़ारी)

﴿ 14 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ غُلَامٌ يَهُوْدِيٌّ يَخْدُمُ النَّبِيَّ ﷺ فَمَرِضَ فَاَتَاهُ النَّبِيُّ ﷺ يَعُوْدُهٗ، فَقَعَدَ عِنْدَ رَأْسِهٖ فَقَالَ لَهٗ: اَسْلِمْ، فَنَظَرَ اِلٰى اَبِيْهِ وَهُوَ عِنْدَهٗ فَقَالَ لَهٗ: اَطِعْ

Copyright ©

اَبَا الْقَاسِمِ ﷺ، فَاَسْلَمَ فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ وَهُوَ يَقُوْلُ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَنْقَذَهُ مِنَ النَّارِ.

رواه البخاري، باب اذا اسلم الصبي فمات ... رقم: ١٣٥٦

14. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि एक यहूदी लड़का रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत किया करता था। वह बीमार हो गया तो रसूलुल्लाह ﷺ उसकी बीमारपुर्सी के लिए तशरीफ़ ले गए। आप ﷺ उसके सरहाने बैठ गए और फ़रमाया कि मुसलमान हो जाओ। उसने अपने बाप को देखा जो वहीं था। उसने कहा अबुलक़ासिम ﷺ की बात मान लो। चुनांचे वह मसुलमान हो गया। जब रसूलुल्लाह ﷺ बाहर तशरीफ़ लाए तो आप ﷺ फ़रमा रहे थे कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिए हैं, जिन्होंने इस लड़के को (जहन्नम की) आग से बचा लिया। (बुख़ारी)

﴿ 15 ﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ هٰذَا الْخَيْرَ خَزَائِنُ، وَلِتِلْكَ الْخَزَائِنِ مَفَاتِيْحُ فَطُوْبٰى لِعَبْدٍ جَعَلَهُ اللّٰهُ مِفْتَاحًا لِلْخَيْرِ مِغْلَاقًا لِلشَّرِّ وَوَيْلٌ لِعَبْدٍ جَعَلَهُ اللّٰهُ مِفْتَاحًا لِلشَّرِّ مِغْلَاقًا لِلْخَيْرِ. رواه ابن ماجه، باب من كان مفتاحا للخير، رقم: ٢٣٨

15. हज़रत सहल बिन साद ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह दीन नेमतों के ख़ज़ाने हैं। इन नेमतों के ख़ज़ानों के लिए कुंजियां हैं। ख़ुशख़बरी हो उस बन्दे के लिए जिसको अल्लाह तआ़ला भलाई की चाबी (और) बुराई का ताला बना दें, यानी हिदायत का ज़रिया बना दें और तबाही है उस बन्दे के लिए, जिसको अल्लाह तआ़ला बुराई की चाबी (और) भलाई का ताला बना दें, यानी गुमराही का ज़रिया बने। (इब्ने माजा)

﴿ 16 ﴾ عَنْ جَرِيْرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: وَلَقَدْ شَكَوْتُ اِلَى النَّبِيِّ ﷺ اَنِّيْ لَا اَثْبُتُ عَلَى الْخَيْلِ فَضَرَبَ بِيَدِهٖ فِيْ صَدْرِيْ وَقَالَ: اَللّٰهُمَّ ثَبِّتْهُ وَاجْعَلْهُ هَادِيًا مَهْدِيًّا

رواه البخاري، باب من لا يثبت على الخيل ٣/٤، ١١٠ دار ابن كثير، دمشق

16. हज़रत जरीर ﷺ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैंने आप ﷺ से शिकायत की कि मैं घोड़े की सवारी अच्छी तरह नहीं कर पाता तो आप ﷺ ने मेरे सीने पर हाथ मार कर दुआ दी, ऐ अल्लाह! इसे अच्छा घुड़सवार बना दीजिए और ख़ुद सीधे रास्ते पर चलते हुए दूसरों को भी सीधा रास्ता बताने वाला बना दीजिए। (बुख़ारी)

﴿ 17 ﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَا يَحْقِرْ اَحَدُكُمْ نَفْسَهُ، قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! كَيْفَ يَحْقِرُ اَحَدُنَا نَفْسَهُ؟ قَالَ: يَرٰى اَمْرًا لِلّٰهِ عَلَيْهِ فِيْهِ مَقَالٌ،

Copyright ©

ثُمَّ لَا يَقُوْلُ فِيْهِ، فَيَقُوْلُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: مَا مَنَعَكَ اَنْ تَقُوْلَ فِيْ كَذَا وَكَذَا؟ فَيَقُوْلُ: خَشْيَةُ النَّاسِ، فَيَقُوْلُ: فَإِيَّايَ، كُنْتَ اَحَقَّ اَنْ تَخْشٰى۔

رواه ابن ماجه، باب الامر بالمعروف والنهي عن المنكر، رقم: ٤٠٠٨

17. हज़रत अबू सईद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से कोई अपने आप को घटिया न समझे। सहाबा ﷺ ने अर्ज़ किया : अपने आपको घटिया समझने का क्या मतलब है? इर्शाद फ़रमाया : कोई ऐसी बात देखे जिसकी इस्लाह की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआला की तरफ़ से उस पर हो, लेकिन यह उस मामला में कुछ न बोले, तो अल्लाह तआला उसे क़ियामत के दिन फ़रमाएंगे कि तुम्हें किस चीज़ ने फ़्लां-फ़्लां मामले में बात करने से रोका था? वह अर्ज़ करेगा : लोगों के डर की वजह से नहीं बोला था कि वे मुझे तकलीफ़ पहुंचाएंगे। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाएंगे कि मैं इस बात का ज़्यादा हक़दार था कि तुम मुझ ही से डरते। (इब्ने माजा)

फ़ायदा : अल्लाह तआला की तरफ़ से बुराई को रोकने की जो ज़िम्मेदारी डाली गई है, लोगों के डर की वजह से उस ज़िम्मेदारी को पूरा न करना अपने को घटिया समझना है।

﴿18﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ اَوَّلَ مَا دَخَلَ النَّقْصُ عَلٰى بَنِيْ اِسْرَائِيْلَ كَانَ الرَّجُلُ يَلْقَى الرَّجُلَ فَيَقُوْلُ: يَا هٰذَا! اتَّقِ اللّٰهَ وَدَعْ مَا تَصْنَعُ، فَاِنَّهُ لَا يَحِلُّ لَكَ، ثُمَّ يَلْقَاهُ مِنَ الْغَدِ، فَلَا يَمْنَعُهُ ذٰلِكَ اَنْ يَكُوْنَ اَكِيْلَهُ وَشَرِيْبَهُ وَقَعِيْدَهُ، فَلَمَّا فَعَلُوْا ذٰلِكَ ضَرَبَ اللّٰهُ قُلُوْبَ بَعْضِهِمْ بِبَعْضٍ، ثُمَّ قَالَ: "لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِيْ اِسْرَائِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ" اِلٰى قَوْلِهِ "فٰسِقُوْنَ" [المائدة: ٧٨-٨١] ثُمَّ قَالَ: كَلَّا وَاللّٰهِ! لَتَأْمُرُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ وَلَتَنْهَوُنَّ عَنِ الْمُنْكَرِ، وَلَتَأْخُذُنَّ عَلٰى يَدَيِ الظَّالِمِ، وَلَتَأْطِرُنَّهُ عَلَى الْحَقِّ اَطْرًا، وَلَتَقْصُرُنَّهُ عَلَى الْحَقِّ قَصْرًا۔

رواه ابو داؤد، باب الامر والنهي، رقم: ٤٣٣٦

18. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बनी इसराईल में सबसे पहली कमी यह पैदा हुई कि जब एक शख़्स किसी दूसरे से मिलता और उससे कहता, फ़्लाने! अल्लाह तआला से डरो, जो काम तुम कर रहे हो उसे छोड़ दो, इसलिए कि वह काम तुम्हारे लिए जायज़ नहीं। फिर दूसरे दिन उससे मिलता तो उसके न मानने पर भी अपने ताल्लुक़ात की वजह से उसके साथ

Copyright ©

खाने-पीने में उठने-बैठने में वैसा ही मामला करता, जैसा कि उससे पहले था। जब आम तौर पर ऐसा होने लगा और अम्रबिलमारूफ़ और नह्य अ़निलमुन्कर करना छोड़ दिया तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमांबरदारों के दिल नाफ़रमानों की तरह सख़्त कर दिए। रसूलुल्लाह ﷺ ने لُعِنَ الَّذِيْنَ الخ तक पढ़ा (पहली दो आयतों का तर्जुमा यह है) "बनी इसराईल पर हज़रत दाऊद और हज़रत ईसा ﷺ की ज़बानी लानत की गई, यह इस वजह से कि उन्होंने नाफ़रमानी की और हद से निकल जाते थे। जिस बुराई में यह मुब्तला थे, उससे एक दूसरे को मना नहीं करते थे। वाक़ई उनका यह काम बेशक बुरा था"। इसके बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने बड़ी ताकीद से यह हुक्म फ़रमाया कि तुम ज़रूर नेकी का हुक्म करो और बुराई से रोको, ज़ालिम को ज़ुल्म से रोकते रहो और उसको हक़ बात की तरफ़ खींच कर लाते रहो और उसे हक़ पर रोके रखो। (अबूदाऊद)

﴿19﴾ عَنْ أَبِيْ بَكْرٍ الصِّدِّيْقِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ! إِنَّكُمْ تَقْرَءُوْنَ هٰذِهِ الْآيَةَ: ﴿يٰأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ﴾ [المائدة: ١٠٥] وَإِنِّيْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ النَّاسَ إِذَا رَأَوُا الظَّالِمَ فَلَمْ يَأْخُذُوْا عَلٰى يَدَيْهِ أَوْشَكَ أَنْ يَّعُمَّهُمُ اللهُ بِعِقَابٍ مِّنْهُ. رواه الترمذي وقال: حديث صحيح، باب ماجاء في نزول العذاب إذا لم يغير المنكر، رقم: ٢١٦٨

19. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ﷺ ने फ़रमाया : लोगो तुम यह आयत पेश करते हो "ऐ ईमान वालो! अपनी फ़िक्र करो, जब तुम सीधी राह पर चल रहे हो तो जो शख़्स गुमराह है उससे तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं" और मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि जब लोग ज़ालिम को ज़ुल्म करते हुए देखें और उसे ज़ुल्म से न रोकें, तो वह वक़्त दूर नहीं कि अल्लाह तआ़ला उन सबको अपने उमूमी अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमा दें। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ﷺ का मतलब यह था कि तुम आयत का मफ़हूम यह समझते हो कि जब इंसान ख़ुद हिदायत पर हो, तो उसके लिए अम्रबिलमारूफ़ और नह्य अ़निलमुन्कर करना ज़रूरी नहीं, क्योंकि दूसरों के बारे में उससे पूछ-गूछ नहीं होगी। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ﷺ ने हदीस ब्यान फ़रमा कर आयत के इस ग़लत मफ़हूम की तरदीद फ़रमाई है, जिससे यह वाज़ेह हुआ कि हत्तलइम्कान बुराई से रोकना उम्मत की ज़िम्मेदारी और हर-हर फ़र्द का काम है। आयत का सही मफ़हूम यह है

Copyright ©

कि ऐ ईमान वालो! अपनी इस्लाह की फ़िक्र करो। तुम्हारा दीन के रास्ते पर चलना इस तरह हो कि अपनी भी इस्लाह कर रहे हो और दूसरों की इस्लाह की भी कोशिश कर रहे हो, फिर अगर कोई शख़्स तुम्हारी इस्लाह की कोशिश के बावजूद भी गुमराह रहे तो उसके गुमराह रहने से तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं। (ब्यानुल क़ुरआन)

﴿ 20 ﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: تُعْرَضُ الْفِتَنُ عَلَى الْقُلُوْبِ كَالْحَصِيْرِ عُوْدًا عُوْدًا، فَاَيُّ قَلْبٍ اُشْرِبَهَا نُكِتَ فِيْهِ نُكْتَةٌ سَوْدَاءُ، وَاَيُّ قَلْبٍ اَنْكَرَهَا نُكِتَ فِيْهِ نُكْتَةٌ بَيْضَاءُ، حَتّٰى تَصِيْرَ عَلٰى قَلْبَيْنِ، عَلٰى اَبْيَضَ مِثْلِ الصَّفَا، فَلَا تَضُرُّهُ فِتْنَةٌ مَادَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ، وَالْآخَرُ اَسْوَدُ مِرْبَادًّا كَالْكُوْزِ مُجَخِّيًا لَا يَعْرِفُ مَعْرُوْفًا وَلَا يُنْكِرُ مُنْكَرًا اِلَّا مَا اُشْرِبَ مِنْ هَوَاهُ.

رواه مسلم، باب رفع الامانة والايمان من بعض القلوب ..., رقم: ٣٦٩

20. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : लोगों के दिलों पर ऐसे आगे पीछे फ़ित्ने आएंगे जिस तरह चटाई के तिनके आगे पीछे एक दूसरे से जुड़े होते हैं। लिहाज़ा जो दिल उन फ़ित्नों में से किसी एक फ़ित्ने को क़ुबूल कर लेगा तो उस दिल में एक स्याह नुक़्ता लग जाएगा और जो दिल उसको क़ुबूल नहीं करेगा उस दिल में एक सफ़ेद निशान लग जाएगा, यहां तक कि दिल दो क़िस्म के हो जाएंगे। एक सफ़ेद संगमरमर की तरह जिस को कोई फ़ित्ना नुक़सान नहीं पहुंचा सकेगा, जब तक ज़मीन व आसमान क़ायम हैं (यानी जिस तरह संगमरमर पर उसके चिकने होने की वजह से कोई चीज़ नहीं ठहर सकती उसी तरह उसके दिल में ईमान के मज़बूत होने की वजह से कोई फ़ित्ना असर अन्दाज़ नहीं होगा)। दूसरी क़िस्म का दिल स्याह ख़ाकी रंग के उलटे प्याले की तरह होगा, यानी गुनाहों की कसरत से दिल स्याह हो जाएगा और जिस तरह उलटे प्याला में कोई चीज़ बाक़ी नहीं रहती उसी तरह उस दिल में गुनाहों की नफ़रत और ईमान का नूर बाक़ी नहीं रहेगा, जिसकी वजह से जो न नेकी को नेकी और न बुराई को बुराई समझेगा सिर्फ़ अपनी ख़्वाहिशात पर अमल करेगा जो उसके दिल में रच बस गई होंगी। (मुस्लिम)

﴿ 21 ﴾ عَنْ اَبِيْ اُمَيَّةَ الشَّعْبَانِيِّ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: سَاَلْتُ اَبَا ثَعْلَبَةَ الْخُشَنِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: فَقُلْتُ: يَا اَبَا ثَعْلَبَةَ! كَيْفَ تَقُوْلُ فِيْ هٰذِهِ الْآيَةِ؟ (عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ) قَالَ: اَمَا وَاللهِ لَقَدْ سَاَلْتَ

Copyright ©

عَنْهَا خَبِيْرًا، سَأَلْتُ عَنْهَا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: بَلِ ائْتَمِرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ، وَتَنَاهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ، حَتّٰى إِذَا رَأَيْتَ شُحًّا مُطَاعًا، وَهَوًى مُتَّبَعًا، وَدُنْيَا مُؤْثَرَةً، وَإِعْجَابَ كُلِّ ذِيْ رَأْيٍ بِرَأْيِهِ، فَعَلَيْكَ يَعْنِيْ بِنَفْسِكَ، وَدَعْ عَنْكَ الْعَوَامَّ، فَإِنَّ مِنْ وَرَائِكُمْ أَيَّامَ الصَّبْرِ، الصَّبْرُ فِيْهِ مِثْلُ قَبْضٍ عَلَى الْجَمْرِ، لِلْعَامِلِ فِيْهِمْ مِثْلُ أَجْرِ خَمْسِيْنَ رَجُلًا يَعْمَلُوْنَ مِثْلَ عَمَلِهِ فَقَالَ (أَبُوْ ثَعْلَبَةَ): يَا رَسُوْلَ اللهِ! أَجْرُ خَمْسِيْنَ مِنْهُمْ، قَالَ: أَجْرُ خَمْسِيْنَ مِنْكُمْ

رواه ابو داؤد، باب الامر والنهي، رقم: ٤٣٤١

21. हज़रत अबू उमैया शाबानी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अबू सालबा ख़ुशनी ﷺ से पूछा कि आप अल्लाह तआला के इर्शाद : "तुम अपनी फ़िक्र करो" के बारे में क्या फ़रमाते हैं? उन्होंने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह की क़सम! तुम ने ऐसे शख़्स से वह बात पूछी है जो उसके बारे में ख़ूब जानता है। मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ से इस आयत का मतलब पूछा था तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया था (कि यह मतलब नहीं कि सिर्फ़ अपनी ही फ़िक्र करो) बल्कि एक दूसरे को भलाई का हुक्म करते रहो और बुरे कामों से रोकते रहो, यहां तक कि जब देखो कि लोग आम तौर पर बुख़्ल कर रहे हैं, ख़्वाहिशात को पूरा किया जा रहा है, दुनिया को दीन पर तरजीह दी जा रही है और हर शख़्स अपनी राए को पसन्द कर रहा है (दूसरे की नहीं मान रहा) तो उस वक़्त अवाम को छोड़कर अपनी इस्लाह की फ़िक्र में लग जाओ, क्योंकि आख़िरी ज़माने में ऐसे दिन आने वाले हैं जिनमें दीन के अहकामात पर इस्तिक़ामत के साथ अमल करना इतना मुश्किल होगा जैसे अंगारे को पकड़ना। उन दिनों में अमल करने वाले को उसके एक अमल पर इतना सवाब मिलेगा, जितना पचास अफ़राद को उस अमल के करने पर मिलता। हज़रत अबू सालबा ﷺ फ़रमाते हैं, मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! उनमें से पचास का अज्र मिलेगा (या हममें से पचास? क्योंकि सहाबा के अमल का अज्र व सवाब ज़्यादा है) इर्शाद फ़रमाया : तुममें से पचास का अज्र उस एक शख़्स को मिलेगा। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि आख़िरी ज़माने में अमल करने वाला शख़्स अपनी इस ख़ालिस फ़ज़ीलत की वजह से सहाबा किराम ﷺ से दर्जे में बढ़ जाएगा, क्योंकि सहाबा किराम बहरहाल बाक़ी सारी उम्मत से अफ़ज़ल ही हैं।

इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि अम्रबिलमारूफ़ और नह्य अनिलमुन्कर करते रहना ज़रूरी है अलबत्ता अगर ऐसा वक़्त आ जाए जिसमें हक़ बात को

Copyright ©

क़ुबूल करने की इस्तेदाद बिल्कुल ख़त्म हो जाए तो इस सूरत में यक्सू रहने का हुक्म है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अभी वह वक़्त नहीं आया है, क्योंकि इस वक़्त उम्मत में हक़ को क़ुबूल करने की इस्तेदाद मौजूद है।

﴿22﴾ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: إِيَّاكُمْ وَالْجُلُوْسَ بِالطُّرُقَاتِ فَقَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! مَا لَنَا مِنْ مَجَالِسِنَا بُدٌّ نَتَحَدَّثُ فِيْهَا، فَقَالَ: فَإِذَا أَبَيْتُمْ إِلَّا الْمَجْلِسَ فَأَعْطُوا الطَّرِيْقَ حَقَّهُ قَالُوْا: وَمَا حَقُّ الطَّرِيْقِ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: غَضُّ الْبَصَرِ، وَكَفُّ الْأَذَى، وَرَدُّ السَّلَامِ، وَالْأَمْرُ بِالْمَعْرُوْفِ، وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ.

رواه البخاري، باب قول الله تعالى: يايها الذين آمنوا لا تدخلوا بيوتا......رقم:٦٢٢٩

22. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम रास्तों में न बैठा करो। सहाबा ﷺ ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! हमारे लिए उन रास्तों पर बैठना ज़रूरी है, हम वहां बैठकर बातें करते हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर बैठना ही है तो रास्ते के हुक़ूक़ अदा किया करो। सहाबा ﷺ ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! रास्ते के हुक़ूक़ क्या हैं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : निगाहों को नीचे रखना, तकलीफ़देह चीज़ों को रास्ते से हटा देना (या ख़ुद तकलीफ़ पहुंचाने से बाज़ रहना) सलाम का जवाब देना, नेकी की नसीहत करना और बुराई से रोकना। (बुख़ारी)

**फ़ायदा :** सहाबा ﷺ की मुराद यह थी कि रास्तों में बैठने से बचना हमारे लिए मुम्किन नहीं है, क्योंकि हमारे पास कोई ऐसी जगह नहीं है, जहां हम अपनी मज्लिस रखा करें। इसलिए जब हम चन्द लोग कहीं मिल जाते हैं तो वहीं रास्ते में बैठ जाते हैं और अपने दीनी व दुन्यवी उमूर के बारे में आपस में राय-मशवरा करते हैं। एक दूसरे की हालत दरयाफ़्त करते हैं, अगर कोई बीमार होता है तो उसके लिए इलाज मुआलजा तज्वीज़ करते हैं, अगर आपस में कोई रंजिश हो तो सुलह व सफ़ाई करते हैं।

(मज़ाहिरे हक़)

﴿23﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَمْ يَرْحَمْ صَغِيْرَنَا وَيُوَقِّرْ كَبِيْرَنَا وَيَأْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ما جاء في رحمة الصبيان، رقم: ١٩٢١

Copyright ©

23. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह शख़्स हमारी इत्तिबा करने वालों में से नहीं है जो हमारे छोटों पर शफ़क़त न करे, हमारे बड़ों का एहतराम न करे, नेकी का हुक्म न करे और बुराई से मना न करे। (तिर्मिज़ी)

﴾ 24 ﴿ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : فِتْنَةُ الرَّجُلِ فِيْ اَهْلِهِ وَمَالِهِ وَوَلَدِهِ وَجَارِهِ تُكَفِّرُهَا الصَّلَاةُ وَالصَّدَقَةُ وَالْاَمْرُ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّهْىُ عَنِ الْمُنْكَرِ.

(الحديث) رواه البخاري، باب الفتنه التى تموج كموج البحر، رقم: ٧٠٩٦

24. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी का बीवी, माल, औलाद और पड़ोसी के मुतअ़ल्लिक़ अह्कामात के पूरा करने के सिलसिले में जो कोताहियां और गुनाह हो जाते हैं, उनका नमाज़, सदक़ा, अम्र बिल्मारूफ़ और नह्य अ़निलमुन्कर कफ़्फ़ारा बन जाते हैं। (बुख़ारी)

﴾ 25 ﴿ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : اَوْحَى اللهُ عَزَّوَجَلَّ اِلٰى جِبْرِيْلَ عَلَيْهِ السَّلَامُ اَنِ اقْلِبْ مَدِيْنَةَ كَذَا وَكَذَا بِاَهْلِهَا قَالَ : يَارَبِّ اِنَّ فِيْهِمْ عَبْدَكَ فُلَانًا لَمْ يَعْصِكَ طَرْفَةَ عَيْنٍ قَالَ : فَقَالَ : اِقْلِبْهَا عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ فَاِنَّ وَجْهَهُ لَمْ يَتَمَعَّرْ فِيَّ سَاعَةً قَطُّ.

مشكاة المصابيح رقم: ٥١٥٢

25. हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने हज़रत जिबरील ﷺ को हुक्म दिया कि फ़्लां शहर को शहर वालों समेत उलट दो। हज़रत जिबरील ﷺ ने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब! इस शहर में आपका फ़्लां बन्दा भी है, जिसने एक लम्हा भी आपकी नाफ़रमानी नहीं की। रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत जिबरील ﷺ से इर्शाद फ़रमाया कि तुम उस शहर को उस शख़्स समेत सारे शहर वालों पर उलट दो, क्योंकि शहर वालों को मेरी नाफ़रमानी करता हुआ देखकर उस शख़्स के चेहरे का रंग एक घड़ी के लिए भी नहीं बदला। (मिशकातुलमसाबीह)

फ़ायदा : अल्लाह तआ़ला के इर्शाद का हासिल यह है कि बेशक मेरे उस बन्दे ने कभी भी मेरी नाफ़रमानी नहीं की, मगर उसका यह जुर्म ही क्या कम है कि लोग उसके सामने गुनाह करते रहे और वह इत्मीनान के साथ उनको देखता रहा, बुराई फैलती रही और लोग अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी करते रहे, मगर उन बुराइयों और नाफ़रमानी करने वालों को देखकर

Copyright ©

उसके चेहरे पर कभी भी नागवारी के आसार महसूस नहीं हुए। (मिरक़ात)

﴿ 26 ﴾ عَنْ دُرَّةَ ابْنَةِ اَبِيْ لَهَبٍ قَالَتْ: قَامَ رَجُلٌ اِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: يَارَسُوْلَ اللهِ! اَيُّ النَّاسِ خَيْرٌ؟ قَالَ: خَيْرُ النَّاسِ اَقْرَؤُهُمْ وَاَتْقَاهُمْ وَاٰمَرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاَوْصَلُهُمْ لِلرَّحِمِ. رواه احمد وهذا لفظه، والطبراني ورجالهما ثقات وفي بعضهم كلام لا يضر، مجمع الزوائد ٧/٥٢٠

26. हज़रत दुर्रा बिन्त अबी लहब रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक शख़्स ने खड़े होकर सवाल किया : या रसूलुल्लाह! लोगों में बेहतरीन शख़्स कौन-सा है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बेहतरीन शख़्स वह है जो लोगों में सबसे ज़्यादा क़ुरआन शरीफ़ का पढ़ने वाला, सबसे ज़्यादा तक़्वे वाला, सबसे ज़्यादा नेकी के करने और बुराई से बचने को कहने वाला और सबसे ज़्यादा सिलारहमी करने वाला हो। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 27 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ كَتَبَ اِلَى كِسْرٰى، وَاِلَى قَيْصَرَ، وَاِلَى النَّجَاشِيِّ، وَاِلَى كُلِّ جَبَّارٍ، يَدْعُوْهُمْ اِلَى اللهِ تَعَالٰى، وَلَيْسَ بِالنَّجَاشِيِّ الَّذِيْ صَلّٰى عَلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ. رواه مسلم، باب كتب النبي ﷺ الى ملوك الكفار، رقم: ٤٦٠٩

27. हज़रत अनस ؓ फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह ﷺ ने किसरा, क़ैसर, नजाशी और हर बड़े हाकिम को ख़त लिखा। (उन ख़तों में) उन्हें अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाया। यह नजाशी वह नहीं हैं (जो मुसलमान हो गए थे और) रसूलुल्लाह ﷺ ने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई थी (बल्कि वह दूसरा शख़्स था। हब्शा के हर बादशाह का लक़ब नजाशी होता था)। (मुस्लिम)

﴿ 28 ﴾ عَنِ الْعُرْسِ بْنِ عَمِيْرَةَ الْكِنْدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِذَا عُمِلَتِ الْخَطِيْئَةُ فِي الْاَرْضِ كَانَ مَنْ شَهِدَهَا فَكَرِهَهَا كَانَ كَمَنْ غَابَ عَنْهَا، وَمَنْ غَابَ عَنْهَا فَرَضِيَهَا كَانَ كَمَنْ شَهِدَهَا. رواه ابوداؤد، باب الامر والنهي، رقم: ٤٣٤٥

28. हज़रत उर्स बिन अमीरा किन्दी ؓ फ़रमाते हैं कि जब ज़मीन में कोई गुनाह किया जाता है तो जिसने उसे देखा और बुरा समझा वह गुनाह के वबाल से उस शख़्स की तरह महफ़ूज़ रहेगा जो गुनाह की जगह पर मौजूद न था और जो गुनाह की जगह पर मौजूद न था लेकिन उस गुनाह के होने को बुरा न समझा वह उस गुनाह के वबाल में उस शख़्स की तरह शरीक रहेगा जो गुनाह की जगह पर मौजूद था। (अबूदाऊद)

Copyright ©

﴿ 29 ﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَثَلِي وَمَثَلُكُمْ كَمَثَلِ رَجُلٍ أَوْقَدَ نَارًا، فَجَعَلَ الْجَنَادِبُ وَالْفَرَاشُ يَقَعْنَ فِيْهَا، وَهُوَ يَذُبُّهُنَّ عَنْهَا، وَأَنَا آخِذٌ بِحُجَزِكُمْ عَنِ النَّارِ، وَأَنْتُمْ تَفَلَّتُوْنَ مِنْ يَدِيْ. رواه مسلم، باب شفقته ﷺ على امته، رقم: ٥٩٥٨

29. हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी और तुम्हारी मिसाल उस शख़्स की-सी है जिसने आग जलाई तो पतिंगे और परवाने उसमें गिरने लगे और वह उन को आग से हटाने लगा। मैं भी तुम्हारी कमरों से पकड़-पकड़ कर तुम्हें जहन्नम की आग से बचा रहा हूं, लेकिन तुम मेरे हाथों से निकले चले जा रहे हो, यानी जहन्नम की आग में गिरे जा रहे हो। (मुस्लिम)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ में नबी करीम ﷺ की बेइन्तहा शफ़क़त और हिर्स का ब्यान है जो अपनी उम्मत को जहन्नम की आग से बचाने के लिए आप ﷺ के दिल में थी। (नववी)

﴿ 30 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَأَنِّيْ أَنْظُرُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ يَحْكِيْ نَبِيًّا مِنَ الْأَنْبِيَاءِ ضَرَبَهُ قَوْمُهُ فَأَدْمَوْهُ وَهُوَ يَمْسَحُ الدَّمَ عَنْ وَجْهِهِ وَيَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِيْ فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ. رواه البخاري، كتاب احاديث الانبياء، رقم: ٣٤٧٧

30. हज़रत अब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं गोया रसूलुल्लाह ﷺ को देख रहा हूं कि वह एक नबी का वाक़िआ ब्यान फ़रमा रहे हैं कि उनकी क़ौम ने उनको इतना मारा कि लहूलुहान कर दिया और वह अपने चेहरे से ख़ून पोंछ रहे थे और फ़रमा रहे थे : ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम को माफ़ फ़रमा दीजिए, क्योंकि जानते नहीं हैं (इसी तरह का वाक़िआ ख़ुद नबी करीम ﷺ के साथ भी ग़ज़्वा उहुद के मौक़े पर पेश आया)। (बुख़ारी)

﴿ 31 ﴾ عَنْ هِنْدِ بْنِ أَبِيْ هَالَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مُتَوَاصِلَ الْأَحْزَانِ دَائِمَ الْفِكْرَةِ لَيْسَتْ لَهُ رَاحَةٌ طَوِيْلَ السَّكْتِ لَا يَتَكَلَّمُ فِيْ غَيْرِ حَاجَةٍ.

(وهو طرف من الرواية) الشمائل المحمدية والخصائل المصطفوية، رقم: ٢٢٦

31. हज़रत हिन्द बिन अबी हाला ﷺ ने रसूलुल्लाह ﷺ की सिफ़ात ब्यान करते हुए फ़रमाया कि आप ﷺ (उम्मत के बारे में) मुसलसल ग़मगीन और हमेशा फ़िक्रमन्द रहते थे। किसी घड़ी आपको चैन नहीं आता था। अक्सर औक़ात ख़ामोश रहते, बिला ज़रूरत गुफ़्तगू न फ़रमाते थे। (शमाइले तिर्मिज़ी)

Copyright ©

﴾ 32 ﴿ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَحْرَقَتْنَا نِبَالُ ثَقِيْفٍ فَادْعُ اللهَ عَلَيْهِمْ فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ اهْدِ ثَقِيْفًا. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح غريب، باب في ثقيف و بني حنيفة،رقم:٣٩٤٢

32. हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं कि सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क़बीला सक़ीफ़ के तीरों ने तो हमें हलाक कर दिया। आप उनके लिए बद-दुआ फ़रमा दीजिए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ अल्लाह! क़बीला सक़ीफ़ को हिदायत अ़ता फ़रमा दीजिए। (तिर्मिज़ी)

﴾ 33 ﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ تَلَا قَوْلَ اللهِ تَعَالٰى فِيْ اِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ ﴿رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَاِنَّهُ مِنِّيْ﴾ [ابراهيم:٣٦] وَقَالَ عِيْسٰى عَلَيْهِ السَّلَامُ ﴿اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ﴾ [المائدة:١١٨] فَرَفَعَ يَدَيْهِ وَقَالَ: اَللّٰهُمَّ اُمَّتِيْ اُمَّتِيْ، وَبَكٰى، فَقَالَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ: يَا جِبْرِيْلُ! اِذْهَبْ اِلٰى مُحَمَّدٍ، وَرَبُّكَ اَعْلَمُ، فَاسْاَلْهُ مَا يُبْكِيْكَ؟ فَاَتَاهُ جِبْرِيْلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَسَاَلَهُ: فَاَخْبَرَهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِمَا قَالَ، وَهُوَ اَعْلَمُ، فَقَالَ اللهُ: يَا جِبْرِيْلُ! اِذْهَبْ اِلٰى مُحَمَّدٍ فَقُلْ: اِنَّا سَنُرْضِيْكَ فِيْ اُمَّتِكَ وَلَا نَسُوْءُكَ.

رواه مسلم، باب دعاء النبي ﷺ لامته ... ،رقم:٤٩٩

33. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहुमा फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने क़ुरआन करीम की यह आयत तिलावत फ़रमाई, जिसमें अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम ﷺ की दुआ़ ज़िक्र फ़रमाई है "ऐ मेरे रब! उन बुतों ने बहुत-से आदमियों को गुमराह कर दिया (इसलिए अपने और अपनी औलाद के लिए बुतों की इबादत से बचने की दुआ़ करता हूं, उसी तरह क़ौम को भी उनकी इबादत से रोकता हूं) फिर (मेरे कहने-सुनने के बाद) जिसने मेरी बात मान ली, वह तो मेरा है ही (और उसके लिए मग़्फ़िरत का वादा है) और जिसने मेरी बात न मानी तो (उसको आप हिदायत अ़ता फ़रमाइए, क्योंकि) आप बहुत माफ़ करने वाले और बहुत रहम करने वाले हैं। (हज़रत इब्राहीम ﷺ का इस दुआ़ से मक़सद मोमिनीन के हक़ में शफ़ाअ़त करना और ग़ैर मोमिनीन के लिए हिदायत मांगना है)"।

और रसूलुल्लाह ﷺ ने यह आयत भी तिलावत फ़रमाई, जिसमें अल्लाह तआ़ला ने हज़रत ईसा ﷺ की दुआ़ का ज़िक्र फ़रमाया है -------- "अगर

Copyright © O

आप उनको सज़ा दें तो ये आपके बन्दे हैं (और आप उनके मालिक हैं और मालिक को हक़ है कि बन्दों को उनके गुनाहों पर सज़ा दे) और अगर आप उनको माफ़ फ़रमा दें तो आप ज़बरदस्त (क़ुदरत वाले) हैं (लिहाज़ा माफ़ करने पर भी क़ादिर हैं और) हिकमत वाले (भी) हैं (लिहाज़ा आपकी माफ़ी भी हिकमत के मुवाफ़िक़ होगी)''। ये दोनों आयतें तिलावत फ़रमा कर (रसूलुल्लाह ﷺ को अपनी उम्मत याद आ गई और) रसूलुल्लाह ﷺ ने दुआ के लिए हाथ उठाए और अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत! और आप रोने लगे। इस पर अल्लाह तआला का इर्शाद हुआ : जिबरील! मुहम्मद के पास जाओ अगरचे तुम्हारा रब सब कुछ जानता है, मगर फिर भी तुम उनसे पूछो कि उनके रोने का सबब क्या है? चुनांचे हज़रत जिबरील عليه السلام मुहम्मद ﷺ के पास आए और आप से पूछा। आप ﷺ ने जिबरील को बताया कि मुझे अपनी उम्मत के बारे में इस फ़िक्र ने रुलाया कि उनका आख़िरत में क्या होगा? (जिबरील عليه السلام) ने जाकर अल्लाह तआला से इस बात को अर्ज़ किया) अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया : जिबरील! मुहम्मद के पास जाओ, और उनसे कहो कि तुम्हारी उम्मत के बारे में हम तुम्हें ख़ुश कर देंगे और तुम्हें ग़मगीन नहीं करेंगे। (मुस्लिम)

फ़ायदा : बाज़ रिवायात में है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने जिबरील عليه السلام से अल्लाह तआला का यह पैग़ाम सुनकर फ़रमाया, मैं तो तब मुतमइन और ख़ुश हूंगा जब मेरा कोई उम्मती भी दोज़ख़ में न रहे।

अल्लाह तआला को सब कुछ मालूम होने के बावजूद रोने का सबब पूछने के लिए जिबरील عليه السلام को रसूलुल्लाह ﷺ के पास भेजना सिर्फ़ आपके इकराम और एज़ाज़ के तौर पर था। (मआरिफ़ुलहदीस)

﴿ 34 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمَّا رَأَيْتُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ طِيبَ نَفْسٍ قُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ! اُدْعُ اللهَ لِيْ، قَالَ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِعَائِشَةَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهَا وَمَا تَاَخَّرَ، وَمَا اَسَرَّتْ وَمَا اَعْلَنَتْ فَضَحِكَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا حَتّٰى سَقَطَ رَأْسُهَا فِيْ حِجْرِهَا مِنَ الضِّحْكِ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَيَسُرُّكِ دُعَائِيْ؟ فَقَالَتْ: وَمَا لِيْ لَا يَسُرُّنِيْ دُعَاؤُكَ؟ فَقَالَ: وَاللهِ اِنَّهَا لَدَعْوَتِيْ لِاُمَّتِيْ فِيْ كُلِّ صَلَاةٍ. رواه البزار و رجاله رجال الصحيح غير احمد بن منصور الرمادي وهو ثقة، مجمع الزوائد ٩/٣٩٠

Copyright © O

34. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को एक मर्तबा ख़ुश देखा तो अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मेरे लिए अल्लाह तआला से दुआ फ़रमा दें। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अल्लाह! आइशा के अगले-पिछले तमाम गुनाह माफ़ फ़रमा दीजिए और उन गुनाहों को भी माफ़ फ़रमा दीजिए जो उसने छुपकर किए और ऐलानिया किए"। इस दुआ को सुनकर मैं ख़ुशी में इतना हंसी कि मेरा सर मेरी गोद से जा लगा। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम्हें मेरी दुआ से बहुत ख़ुशी हो रही है? मैंने कहा : मुझे आपकी दुआ से ख़ुशी क्यों न हो? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह की क़सम! यह दुआ तो मैं अपनी उम्मत के लिए हर नमाज़ में मांगता हूं। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 35 ﴾ عَنْ عَمْرِوبْنِ عَوْفٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ الدِّيْنَ بَدَاَ غَرِيْبًا وَيَرْجِعُ غَرِيْبًا فَطُوْبٰى لِلْغُرَبَاءِ الَّذِيْنَ يُصْلِحُوْنَ مَاأَفْسَدَ النَّاسُ مِنْ بَعْدِىْ مِنْ سُنَّتِىْ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ما جاء ان الاسلام بدا غريبا... رقم: ٢٦٣٠ (وهو بعض الحديث)

35. हज़रत अम्र बिन औफ़ ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि दीन शुरू में अजनबी था और अंक़रीब फिर पहले की तरह अजनबी हो जाएगा, लिहाज़ा उन मुसलमानों के लिए ख़ुशख़बरी है जिनको दीनी वजह से अजनबी समझा जाएगा। ये वह लोग होंगे जो मेरे इस तरीक़े को दुरुस्त करेंगे, जिसको मेरे बाद लोगों ने बिगाड़ दिया होगा। (तिर्मिज़ी)

﴿ 36 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اُدْعُ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ، قَالَ: اِنِّىْ لَمْ اُبْعَثْ لَعَّانًا وَاِنَّمَا بُعِثْتُ رَحْمَةً.

رواه مسلم، باب النهي عن لعن الدواب وغيرها، رقم: ٦٦١٣

36. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ से मुशरिकीन के लिए बद-दुआ करने की दरख़्वास्त की गई। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे लानत करने वाला बनाकर नहीं भेजा गया, मुझे सिर्फ़ रहमत बनाकर भेजा गया है। (मुस्लिम)

﴿ 37 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَسِّرُوْا وَلَا تُعَسِّرُوْا، وَسَكِّنُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا.

رواه مسلم، باب في الامر بالتيسير... رقم: ٤٥٢٨

Copyright © O

37. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : आसानियां पैदा करो और मुश्किलात पैदा न करो, लोगों को तसल्ली दो और नफ़रत न दिलाओ। (मुस्लिम)

﴿ 38 ﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ رَجُلٍ يَنْعَشُ لِسَانُهُ حَقًّا يُعْمَلُ بِهِ بَعْدَهُ إِلَّا أَجْرَى اللهُ عَلَيْهِ أَجْرَهُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ثُمَّ وَفَّاهُ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ ثَوَابَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. رواه احمد ٣/٢٦٦

38. हज़रत अनस बिन मालिक ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपनी ज़बान से कोई हक़ बात कहे, जिस पर उसके बाद अमल किया जाता रहे, तो क़ियामत तक के लिए अल्लाह तआला उसका अज्र जारी फ़रमा देते हैं, फिर अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसका पूरा-पूरा सवाब अता फ़रमाएंगे। (मुस्नद अहमद)

﴿ 39 ﴾ عَنْ أَبِيْ مَسْعُوْدٍ الْبَدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ دَلَّ عَلَى خَيْرٍ فَلَهُ مِثْلُ أَجْرِ فَاعِلِهِ. (وهو جزء من الحديث) رواه ابوداؤد، باب في الدال على الخير، رقم: ٥١٢٩

39. हज़रत अबू मस्ऊद बदरी ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने भलाई की तरफ़ रहनुमाई की, उसे भलाई करने वाले के बराबर सवाब मिलता है। (अबूदाऊद)

﴿ 40 ﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ دَعَا إِلَى هُدًى كَانَ لَهُ مِنَ الْأَجْرِ مِثْلُ أُجُوْرِ مَنْ تَبِعَهُ لَا يَنْقُصُ ذٰلِكَ مِنْ أُجُوْرِهِمْ شَيْئًا، وَمَنْ دَعَا إِلَى ضَلَالَةٍ كَانَ عَلَيْهِ مِنَ الْإِثْمِ مِثْلُ آثَامِ مَنْ تَبِعَهُ لَا يَنْقُصُ ذٰلِكَ مِنْ آثَامِهِمْ شَيْئًا

رواه مسلم، باب من سن سنة حسنة ...، رقم: ٦٨٠٤

40. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स हिदायत और ख़ैर के कामों की दावत दे, उसको उन तमाम लोगों के अमल के बराबर अज्र मिलता रहेगा, जो इस ख़ैर की पैरवी करेंगे और पैरवी करने वालों के अपने सवाब में कोई कमी न होगी। इसी तरह जो गुमराही के कामों की तरफ़ बुलाएगा उसको उन सबके अमल का गुनाह मिलता रहेगा जो उस गुमराही की पैरवी करेंगे और उसकी वजह से उन पैरवी करने वालों के गुनाहों में कोई कमी न होगी। (मुस्लिम)

Copyright © Ot

﴿41﴾ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَبَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ فَأَثْنَى عَلَى طَوَائِفَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ خَيْرًا، ثُمَّ قَالَ: مَا بَالُ أَقْوَامٍ لَا يُفَقِّهُوْنَ جِيْرَانَهُمْ، وَلَا يُعَلِّمُوْنَهُمْ، وَلَا يَعِظُوْنَهُمْ، وَلَا يَأْمُرُوْنَهُمْ، وَلَا يَنْهَوْنَهُمْ، وَمَا بَالُ أَقْوَامٍ لَا يَتَعَلَّمُوْنَ مِنْ جِيْرَانِهِمْ، وَلَا يَتَفَقَّهُوْنَ، وَلَا يَتَّعِظُوْنَ وَاللهِ لَيُعَلِّمَنَّ قَوْمٌ مِنْ جِيْرَانِهِمْ، وَيَتَفَقَّهُوْنَ، وَيَتَّعِظُوْنَ أَوْ لَأُعَاجِلَنَّهُمُ الْعُقُوْبَةَ، ثُمَّ نَزَلَ فَقَالَ قَوْمٌ: مَنْ تَرَوْنَهُ عَنَى بِهٰؤُلَاءِ؟ قَالُوْا: الْأَشْعَرِيِّيْنَ، هُمْ قَوْمٌ فُقَهَاءُ، وَلَهُمْ جِيْرَانٌ جُفَاةٌ مِنْ أَهْلِ الْمِيَاهِ وَالْأَعْرَابِ فَبَلَغَ ذٰلِكَ الْأَشْعَرِيِّيْنَ، فَأَتَوْا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فَقَالُوْا: يَارَسُوْلَ اللهِ! ذَكَرْتَ قَوْمًا بِخَيْرٍ، وَذَكَرْتَنَا بِشَرٍّ. فَمَا بَالُنَا؟ فَقَالَ: لَيُعَلِّمَنَّ قَوْمٌ جِيْرَانَهُمْ، وَلَيَعِظُنَّهُمْ، وَلَيَأْمُرُنَّهُمْ، وَلَيَنْهَوُنَّهُمْ، وَلَيَتَعَلَّمَنَّ قَوْمٌ مِنْ جِيْرَانِهِمْ، وَيَتَّعِظُوْنَ، وَيَتَفَقَّهُوْنَ أَوْ لَأُعَاجِلَنَّهُمُ الْعُقُوْبَةَ فِي الدُّنْيَا، فَقَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! أَنُفَطِّنُ غَيْرَنَا، فَأَعَادَ قَوْلَهُ عَلَيْهِمْ وَأَعَادُوْا قَوْلَهُمْ، أَنُفَطِّنُ غَيْرَنَا، فَقَالَ ذٰلِكَ أَيْضًا، فَقَالُوْا: أَمْهِلْنَا سَنَةً، فَأَمْهَلَهُمْ سَنَةً لِيُفَقِّهُوْهُمْ، وَيُعَلِّمُوْهُمْ، وَيَعِظُوْهُمْ ثُمَّ قَرَأَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ هٰذِهِ الْآيَةَ: ﴿لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِيْ إِسْرَآئِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ﴾ الْآيَةَ.

رواه الطبراني في الكبير عن بكير بن معروف عن علقمة،

الترغيب ١/١٢٢، بكير بن معروف صدوق فيه لين، تقريب التهذيب

41. हज़रत अलक़मा बिन सईद ﷺ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ ने बयान फ़रमाया, जिसमें कुछ मसुलमान क़ौमों की तारीफ़ फ़रमाई, फिर इर्शाद फ़रमाया : यह क्या बात है कि कुछ क़ौमें अपने पड़ोसियों में न दीन की समझ पैदा करती हैं, न उनको दीन सिखाती हैं, न उनको नसीहत करती हैं, न उनको अच्छी बातों का हुक्म करती हैं और न उनको बुरी बातों से रोकती हैं और क्या बात है कि कुछ क़ौमें अपने पड़ोसियों से न इल्म सीखती हैं, न दीन की समझ हासिल करती हैं और न नसीहत क़ुबूल करती हैं। अल्लाह की क़सम! ये लोग अपने पड़ोसियों को इल्म सिखाएं, उनमें दीन की समझ पैदा करें, उनको नसीहत करें, उन्हें अच्छी बातों का हुक्म करें, बुरी बातों से रोकें और दूसरे लोग अपने पड़ोसियों से दीन सीखें, उनसे दीन की समझ हासिल करें और उनकी नसीहत क़ुबूल करें, अगर ऐसा न हुआ तो मैं उन सब को दुनिया ही में सख़्त सज़ा दूंगा। उसके बाद रसूलुल्लाह ﷺ मिम्बर से नीचे तशरीफ़ लाए। लोगों में उसका चर्चा हुआ कि उससे रसूलुल्लाह ﷺ ने कौन-सी क़ौमें मुराद ली हैं? लोगों ने कहा : अशअ़री क़ौम के लोग मुराद हैं कि वह इल्म वाले हैं और उनके आस-पास के देहाती दीन से नावाक़िफ़ हैं। यह ख़बर अशअ़री लोगों

Copyright © Ot

को पहुंची। यह रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आपने कुछ क़ौमों की तारीफ़ फ़रमाई और हम पर नाराज़गी का इज़्हार फ़रमाया, हमारा क्या क़ुसूर है? रसूलुल्लाह ﷺ ने (दोबारा) इर्शाद फ़रमाया : या ये लोग अपने पड़ोसियों को इल्म सिखाएं, उनको नसीहत करें, उनको अच्छी बातों का हुक्म करें, बुरी बातों से मना करें और ऐसे ही दूसरे लोगों को चाहिए कि वे अपने पड़ोसियों से सीखें, उनसे नसीहत हासिल करें, दीन की समझ-बूझ लें, वरना मैं उ सबको दुनिया ही में सख़्त सज़ा दूंगा। अशअरी लोगों ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या हम दूसरों को समझदार बनाएं? रसूलुल्लाह ﷺ ने फिर अपना वही हुक्म इर्शा फ़रमाया। उन्होंने तीसरी दफ़ा फिर यही अर्ज़ किया। नबी करीम ﷺ ने फिर अपना वही हुक्म इर्शाद फ़रमाया, फिर उन्होंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! एक साल की मोहलत हम को दे दें। नबी करीम ﷺ ने उनको उनके पड़ोसियों की तालीम के लि एक साल की मोहलत दे दी, ताकि उनमें दीन की समझ पैदा करें, उन्हें सिखाएं और उन्हें नसीहत करें। फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने यह आयत तिलावत फ़रमाई : तर्जुमा बनी इसराईल में जो लोग काफ़िर थे उन पर हज़रत दाऊद और हज़रत ईसा عليه السلام की ज़बान से लानत की गई थी और यह लानत इस सबब से हुई कि उन्होंने हुक्म की मुख़ालफ़त की और हद से निकल गए। जिस बुराई में वह मुब्तला थे उससे एक दूसरे को मना नहीं करते थे, उनका यह काम वाक़ई बुरा था। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿ 42 ﴾ عَنْ اُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: يُجَاءُ بِالرَّجُلِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُلْقَى فِى النَّارِ فَتَنْدَلِقُ اَقْتَابُهُ فِى النَّارِ فَيَدُوْرُ كَمَا يَدُوْرُ الْحِمَارُ بِرَحَاهُ، فَيَجْتَمِعُ اَهْلُ النَّارِ عَلَيْهِ فَيَقُوْلُوْنَ: يَا فُلاَنُ! مَا شَأْنُكَ، اَلَيْسَ كُنْتَ تَأْمُرُ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَانَا عَنِ الْمُنْكَرِ؟ قَالَ: كُنْتُ آمُرُكُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَلَا آتِيْهِ وَاَنْهَاكُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَآتِيْهِ.

رواه البخاري، باب صفة النار وانها مخلوقة، رقم: ٣٢٦٧

42. हज़रत उसामा बिन ज़ैद رضي الله عنه से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को या इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़ियामत के दिन एक शख़्स को लाया जाएगा और उसको जहन्नम में फ़ेंक दिया जाएगा, जिससे उसकी अंतड़ियां निकल पड़ेंगी। वह अंतड़ियों के इर्द गिर्द इस तरह घूमेगा जैसा कि चक्की का गधा चक्की के गिर्द घूमता है यानी जैसे जानवर को आटे की चक्की चलाने के लिए चक्की के चारों तरफ़ घुमाया जाता है, उसी तरह यह शख़्स अपनी अंतड़ियों के चारों तरफ़ घूमेगा, Copyright © O उसके चारों तरफ़ जमा हो जाएंगे और उससे पूछेंगे, फ़लाने! तुम्हें क्या हुआ? क्या तुम

अच्छी बातों का हुक्म नहीं करते थे और बुरी बातों से हमको नहीं रोकते थे? वह जवाब देगा : मैं तुमको अच्छी बातों का हुक्म करता था लेकिन ख़ुद उस पर अ़मल नहीं करता था, और बुरी बातों से रोकता था लेकिन उन्हें किया करता था।

(बुख़ारी)

﴿ 43 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَرَرْتُ لَيْلَةَ اُسْرِيَ بِيْ عَلٰى قَوْمٍ تُقْرَضُ شِفَاهُهُمْ بِمَقَارِيْضَ مِنْ نَارٍ قَالَ: قُلْتُ: مَنْ هٰؤُلَآءِ؟ قَالُوْا: خُطَبَاءُ مِنْ اَهْلِ الدُّنْيَا كَانُوْا يَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَيَنْسَوْنَ اَنْفُسَهُمْ وَهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتَابَ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ

رواه احمد ٣/١٢٠

43. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : शबे मे'राज में मेरा गुज़र ऐसी जमाअ़त पर हुआ कि उनके होंठ जहन्नम की आग की क़ैंचियों से कुतरे जा रहे थे। मैंने जिबरील ﷺ से दरयाफ़्त किया कि ये कौन लोग हैं? उन्होंने बताया : ये वह वाइज़ हैं जो दूसरों को नेकी करने के लिए कहते थे और ख़ुद अपने को भुला देते थे, यानी ख़ुद अ़मल नहीं करते थे, हालांकि वे अल्लाह तआ़ला की किताब पढ़ते थे, क्या वे समझदार नहीं थे? (मुस्नद अहमद)

Copyright © O

بسم الله الرحمن الرحيم

# अल्लाह तआला के रास्ते में निकलने के फ़ज़ाइल

## क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ۭ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ﴾ [الانفال: ٧٤]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और जो लोग ईमान लाए और अपने घर छोड़े और अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद किया और जिन लोगों ने उन मुहाजिरीन को अपने यहां ठहराया और उनकी मदद की, ये लोग ईमान का पूरा हक़ अदा करने वाले हैं। उनके लिए मग़्फ़िरत और इज़्ज़त की रोज़ी है।

(अन्फ़ाल : 74)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ﴾

[التوبة: ٢٠ - ٢٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अपने घर छोड़े और अल्लाह तआला के रास्ते में अपने माल व जान से जिहाद किया, अल्लाह तआला के यहां उनके लिए बड़ा दर्जा है, और यही लोग पूरे कामयाब हैं। उन्हें उनके रब ख़ुशख़बरी देते हैं अपनी रहमत और रज़ामन्दी

Copyright © O

और जन्नत के ऐसे बाग़ों की, जिनमें उन्हें हमेशा की नेमतें मिलेंगी, उन जन्नतों में ये लोग हमेशा-हमेशा रहेंगे। बिलाशुब्हा अल्लाह तआला के पास बड़ा अज्र है। (तौबा : 20-22)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَالَّذِيْنَ جٰهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ط وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ﴾

[العنكبوت:٦٩]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और जो लोग हमारे (दीन के) लिए मशक़्क़तें बरदाश्त करते हैं, हम उनको ज़रूर अपने तक पहुंचने की राहें सुझा देंगे (कि उन्हें ये बातें समझाएंगे कि दूसरों को उन बातों का एहसास तक नहीं होगा) और बेशक अल्लाह तआला इख़्लास से अमल करने वालों के साथ हैं। (अंकबूत)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَنْ جٰهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ط اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ﴾

[العنكبوت:٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : जो शख़्स मेहनत करता है वह अपने नफ़ा के लिए मेहनत करता है (वरना) अल्लाह तआला को तो तमाम जहान वालों में से किसी की हाजत नहीं। (अंकबूत : 6)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ﴾ [الحجرات:١٥]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : कामिल ईमान वाले तो वही लोग हैं जो अल्लाह तआला और उनके रसूल ﷺ पर ईमान लाए, फिर (उम्र भर कभी) शक नहीं किया (यानी अल्लाह तआला और उनके रसूल की हर बात को दिल की गहराई से तस्लीम किया और उसमें कभी शक न किया) और अपने मालों और अपनी जानों के साथ अल्लाह तआला के रास्ते में मशक़्क़तें बरदाश्त कीं। यही लोग ईमान में सच्चे हैं। (हुजुरात : 15)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ط

Copyright © O

ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ﴾

[الصف: ١٠-١٢]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : ईमान वालो! क्या मैं तुम्हें ऐसी तिजारत बताऊं, जो तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब से बचा ले (और वह यह है कि) तुम अल्लाह तआ़ला और उनके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह तआ़ला के रास्ते में अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद करो। ये तुम्हारे हक़ में बहुत ही बेहतर है अगर तुम कुछ समझ रखते हो। इस पर अल्लाह तआ़ला तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देंगे और तुमको जन्नत के ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी और उम्दा मकानों में दाख़िल करेंगे जो दाइमी होंगे। यह बहुत बड़ी कामयाबी है। (सफ़ : 10-12)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿قُلْ إِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ نِ اقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ﴾

[التوبة: ٢٤]

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप मुसलमानों से कह दीजिए कि अगर तुम्हारे बाप और बेटे और भाई और बीवियां और तुम्हारी बिरादरी और वह माल जो तुमने कमाए हैं और वह तिजारत जिसके बन्द होने से तुम डरते हो और वे मकानात जिनमें रहना तुम पसन्द करते हो, अगर ये सब चीज़ें तुमको अल्लाह तआ़ला से और उनके रसूल से और अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद करने से ज़्यादा महबूब हैं, तो इंतज़ार करो, यहां तक कि अल्लाह तआ़ला सज़ा का हुक्म भेज दें और अल्लाह तआ़ला हुक्म न मानने वालों की रहबरी नहीं फ़रमाते। (तौबा : 24)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۚ وَاَحْسِنُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ﴾

[البقرة: ١٩٥]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और तुम लोग जान के साथ माल भी अल्लाह तआ़ला के रास्ते में ख़र्च किया करो (और जिहाद से जी चुरा कर) अपने

Copyright © Ot

आपको अपने हाथों से हलाकत में न डालो, और जो काम भी करो अच्छी तरह किया करो, बेशक अल्लाह तआला अच्छी तरह काम करने वालों को पसन्द फ़रमाते हैं। (बक़रः 195)

# नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 44 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَقَدْ اُخِفْتُ فِي اللهِ وَمَا يُخَافُ اَحَدٌ، وَلَقَدْ اُوْذِيْتُ فِي اللهِ مَالَمْ يُؤْذَ اَحَدٌ، وَلَقَدْ اَتَتْ عَلَيَّ ثَلَاثُوْنَ مِنْ بَيْنِ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ وَمَالِيْ وَلِبِلَالٍ طَعَامٌ يَاْكُلُهُ ذُوْكَبِدٍ اِلَّاشَيْءٌ يُوَارِيْهِ اِبِطُ بِلَالٍ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب احاديث عائشة وانس .....رقم:٢٤٧٢

44. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दीन (की दावत) के सिलसिले में मुझे इतना डराया गया कि किसी को उतना नहीं डराया गया और अल्लाह तआला के रास्ते में मुझे इतना सताया गया कि किसी और को इतना नहीं सताया गया। मुझ पर तीस दिन और तीस रातें मुसलसल इस हाल में गुज़री हैं कि मेरे और बिलाल के लिए खाने की कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जिसको कोई जानदार खा सके। सिर्फ़ इतनी चीज़ होती जिसको बिलाल की बग़ल छुपा ले, यानी बहुत थोड़ी मिक़्दार में होती थी। (तिर्मिज़ी)

﴿ 45 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَبِيْتُ اللَّيَالِيَ الْمُتَتَابِعَةَ طَاوِيًا وَاَهْلُهُ لَا يَجِدُوْنَ عَشَاءً، وَكَانَ اَكْثَرُ خُبْزِهِمْ خُبْزَ الشَّعِيْرِ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء في معيشة النبي ﷺ واهله رقم:٢٣٦٠

45. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ और आपके घर वाले बहुत-सी रातें मुसलसल ख़ाली पेट (फ़ाक़े से) गुज़ारते थे, उनके पास रात का खाना नहीं होता था और उनका खाना आम तौर से जौ की रोटी होती थी। (तिर्मिज़ी)

﴿ 46 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا اَنَّهَا قَالَتْ: مَاشَبِعَ آلُ مُحَمَّدٍ ﷺ مِنْ خُبْزِ شَعِيْرٍ، [illegible] حَتّٰى قُبِضَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ.

Copyright © O

رواه مسلم، باب الدنيا سجن للمؤمن و جنة للكافر، رقم: ٧٤٠

46. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ के वफ़ात पा जाने तक आपके घर वालों ने जौ की रोटी भी कभी दो दिन मुसलसल पेट भर कर नहीं खाई। (मुस्लिम)

﴿ 47 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اِنَّ فَاطِمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا نَاوَلَتِ النَّبِيَّ ﷺ كِسْرَةً مِنْ خُبْزِ شَعِيْرٍ فَقَالَ: هٰذَا اَوَّلُ طَعَامٍ اَكَلَهُ اَبُوْكِ مُنْذُ ثَلَاثَةِ اَيَّامٍ رواه احمد والطبراني وزاد فَقَالَ: مَا هٰذِهٖ؟ فَقَالَتْ: قُرْصٌ خَبَزْتُهُ، فَلَمْ تَطِبْ نَفْسِيْ حَتّٰى اَتَيْتُكَ بِهٰذِهِ الْكِسْرَةِ. ورجالهما ثقات، مجمع الزوائد ١٠/٥٦٢

47. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि एक मर्तबा हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने रसूलुल्लाह ﷺ को जौ की रोटी का एक टुकड़ा पेश किया। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन दिन में यह पहला खाना है जिसको तुम्हारे वालिद ने खाया है। (मुसनद अहमद)

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने साहबज़ादी से पूछा, यह क्या है? उन्होंने अ़र्ज़ किया : एक रोटी मैंने पकाई थी, मुझे अच्छा नहीं लगा कि मैं आपके बग़ैर खाऊं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 48 ﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ بِالْخَنْدَقِ وَهُوَ يَحْفِرُ وَنَحْنُ نَنْقُلُ التُّرَابَ، وَبَصُرَ بِنَا فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ لَا عَيْشَ اِلَّا عَيْشُ الْآخِرَةِ فَاغْفِرْ لِلْاَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَةِ. رواه البخاري، باب الصحة والفراغ، رقم: ٦٤١٤

48. हज़रत सह्ल बिन साद साइदी ﷺ फ़रमाते हैं कि हम ग़ज़्वा-ए-ख़न्दक़ में रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे। आप ﷺ ख़न्दक़ खोद रहे थे और हम ख़न्दक़ से मिट्टी निकाल कर दूसरी जगह डाल रहे थे। आप ﷺ ने हमें (इस हाल में) देखकर फ़रमाया : ऐ अल्लाह! ज़िन्दगी तो सिर्फ़ आख़िरत ही की ज़िन्दगी है, आप अन्सार और मुहाजिरीन की मग़्फ़िरत फ़रमा दीजिए। (बुख़ारी)

﴿ 49 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: اَخَذَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِمَنْكِبِيْ فَقَالَ: كُنْ فِي الدُّنْيَا كَاَنَّكَ غَرِيْبٌ اَوْ عَابِرُ سَبِيْلٍ

رواه البخاري، باب قول النبي ﷺ كن في الدنيا كأنك غريب، رقم: ٦٤١٦

49. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने (बात को

Copyright © Ol

अहमियत की वजह से मुतवज्जह करने के लिए) मेरे कांधे को पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया : तुम दुनिया में मुसाफ़िर की तरह या रास्ता चलने वाले की तरह हो। (बुख़ारी)

﴿ 50 ﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: فَوَاللهِ مَا الْفَقْرَ اَخْشٰى عَلَيْكُمْ، وَلٰكِنْ اَخْشٰى عَلَيْكُمْ اَنْ تُبْسَطَ عَلَيْكُمُ الدُّنْيَا كَمَا بُسِطَتْ عَلٰى مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ، فَتَنَافَسُوْهَا كَمَا تَنَافَسُوْهَا وَتُلْهِيَكُمْ كَمَا اَلْهَتْهُمْ. (وهو بعض الحديث) رواه البخارى، باب ما يحذر من زهرة الدنيا......رقم: ٦٤٢٥

50. हज़रत अम्र बिन औफ़ ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह की क़सम! मुझे तुम्हारे बारे में फ़क्र व फ़ाक़ा का डर नहीं, बल्कि इस बात से डरता हूँ कि दुनिया को तुम पर फैला दिया जाए जिस तरह तुम से पहले लोगों पर दुनिया को फैला दिया गया था, फिर तुम भी दुनिया को हासिल करने के लिए एक दूसरे से आगे बढ़ने लगो, जिस तरह तुम से पहले लोग दुनिया को हासिल करने के लिए एक दूसरे से आगे बढ़ते थे, फिर दुनिया तुमको उसी तरह ग़ाफ़िल कर दे जिस तरह उनको ग़ाफ़िल कर दिया। (बुख़ारी)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ के इर्शाद "तुम्हारे बारे में फ़क्र व फ़ाक़ा का डर नहीं" का मतलब यह है कि तुम पर फ़क्र व फ़ाक़ा नहीं आएगा या यह मतलब है कि अगर फ़क्र व फ़ाक़ा की नौबत आई तो उससे तुम्हारे दीन को नुक़सान नहीं पहुंचेगा।

﴿ 51 ﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَوْ كَانَتِ الدُّنْيَا تَعْدِلُ عِنْدَ اللهِ جَنَاحَ بَعُوْضَةٍ مَا سَقٰى كَافِرًا مِنْهَا شَرْبَةَ مَاءٍ. رواه الترمذى وقال: هذا حديث صحيح غريب، باب ما جاء فى هوان الدنيا على الله عزوجل، رقم: ٢٣٢٠

51. हज़रत सह्ल बिन साद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर दुनिया की क़द्र व क़ीमत अल्लाह तआला के नज़दीक एक मच्छर के पर के बराबर भी होती तो अल्लाह तआला किसी काफ़िर को उसमें से एक बूंद पानी न पिलाते (क्योंकि दुनिया की क़ीमत अल्लाह तआला के नज़दीक इतनी भी नहीं है, इसलिए काफ़िर फ़ाजिर को भी दुनिया बेहिसाब दी हुई है)। (तिर्मिज़ी)

Copyright © O

﴿ 52 ﴾ عَنْ عُرْوَةَ رَحِمَهُ اللهُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: أَنَّهَا كَانَتْ تَقُوْلُ: وَاللهِ! يَا ابْنَ أُخْتِيْ! إِنْ كُنَّا لَنَنْظُرُ إِلَى الْهِلَالِ ثُمَّ الْهِلَالِ ثُمَّ الْهِلَالِ، ثَلَاثَةَ أَهِلَّةٍ فِيْ شَهْرَيْنِ، وَمَا أُوْقِدَ فِيْ أَبْيَاتِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ نَارٌ، قَالَ: قُلْتُ: يَا خَالَةُ! فَمَا كَانَ يُعَيِّشُكُمْ؟ قَالَتْ: الْأَسْوَدَانِ: التَّمْرُ وَالْمَاءُ.

(وهو طرف من الرواية) رواه مسلم، باب الدنيا سجن للمؤمن، رقم: ٧٤٥٢

52. हज़रत उरवा रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाया करती थीं : मेरे भांजे! हम एक चांद देखते फिर दूसरा चांद देखते फिर तीसरा चांद देखते, यूं दो महीने में तीन चांद देखते, लेकिन रसूलुल्लाह ﷺ के घरों में आग नहीं जलती थी। मैंने कहा ख़ाला जान! फिर आपका गुज़ारा किस चीज़ पर होता था? उन्होंने फ़रमाया : खुजूर और पानी पर। (मुस्लिम)

﴿ 53 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَا خَالَطَ قَلْبَ امْرِئٍ مُسْلِمٍ رَهَجٌ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ إِلَّا حَرَّمَ اللهُ عَلَيْهِ النَّارَ.

رواه احمد والطبراني في الاوسط ورجال احمد ثقات، مجمع الزوائد ٥/٢٠٥

53. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस के जिस्म के अन्दर अल्लाह तआला के रास्ते का गुबार दाख़िल हो जाए अल्लाह तआला उस पर दोज़ख़ की आग को ज़रूर हराम फ़रमा देंगे। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 54 ﴾ عَنْ أَبِيْ عَبْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنِ اغْبَرَّتْ قَدَمَاهُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ حَرَّمَهُمَا اللهُ عَزَّ وَجَلَّ عَلَى النَّارِ. رواه احمد ٣/٤٧٩

54. हज़रत अबू अब्स ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स के दोनों क़दम अल्लाह तआला के रास्ते में गुबार आलूद हो जाएं, अल्लाह तआला उन्हें दोज़ख़ की आग पर हराम फ़रमा देंगे। (मुस्नद अहमद)

﴿ 55 ﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يَجْتَمِعُ غُبَارٌ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ وَدُخَانُ جَهَنَّمَ فِيْ جَوْفِ عَبْدٍ أَبَدًا وَلَا يَجْتَمِعُ الشُّحُّ وَالْإِيْمَانُ فِيْ قَلْبِ عَبْدٍ أَبَدًا.

رواه النسائي، باب فضل من عمل في سبيل الله على قدمه، رقم: ٣١١٢

55. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के रास्ते का गर्द व गुबार और जहन्नम का धुवां कभी किसी बन्दे

Copyright © O

के पेट में जमा नहीं हो सकते और बुख़्ल और (कामिल) ईमान किसी बन्दे के दिल में कभी जमा नहीं हो सकते। (नसाई)

﴿ 56 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: لَا يَجْتَمِعُ غُبَارٌ فِیْ سَبِيْلِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ، وَدُخَانُ جَهَنَّمَ فِیْ مَنْخَرَیْ مُسْلِمٍ اَبَدًا.

رواه النسائی، باب فضل من عمل فی سبیل الله علی قدمه، رقم:٣١١٥

56. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के रास्ते का गर्द व गुबार और जहन्नम का धुवां कभी किसी मुसलमान के नथुनों में जमा नहीं हो सकते। (नसाई)

﴿ 57 ﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ الْبَاهِلِیِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ: اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ رَجُلٍ يَغْبَارُّ وَجْهُهُ فِیْ سَبِيْلِ اللهِ اِلَّا اٰمَنَ اللهُ وَجْهَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَمَا مِنْ رَجُلٍ يَغْبَارُّ قَدَمَاهُ فِیْ سَبِيْلِ اللهِ اِلَّا اٰمَنَ اللهُ قَدَمَيْهِ مِنَ النَّارِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه البيهقی فی شعب الایمان ٤٣/٤

57. हज़रत अबू उमामा बाहिली ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स का चेहरा अल्लाह तआला की राह में गुबार आलूद हो जाए, अल्लाह तआला उसके चेहरे को क़ियामत के दिन ज़रूर (दोज़ख़ की आग से) महफ़ूज़ फ़रमाएंगे और जिस शख़्स के दोनों क़दम अल्लाह तआला की राह में गुबार आलूद हो जाएं अल्लाह तआला उसके क़दमों को क़ियामत के दिन दोज़ख़ की आग से ज़रूर महफ़ूज़ फ़रमाएंगे। (बैहक़ी)

﴿ 58 ﴾ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: يَوْمٌ فِیْ سَبِيْلِ اللهِ خَيْرٌ مِنْ اَلْفِ يَوْمٍ فِيْمَا سِوَاهُ.

رواه النسائی، باب فضل الرباط، رقم:٣١٧٢

58. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआला के रास्ते का एक दिन उसके अलावा के हज़ार दिनों से बेहतर है। (नसाई)

﴿ 59 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: غَدْوَةٌ فِیْ سَبِيْلِ اللهِ اَوْ رَوْحَةٌ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا.

(وهو بعض الحديث) رواه البخاری، باب صفة الجنة والنار، رقم:٦٥٦٨

Copyright © O

59. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह

तआला के रास्ते में एक सुबह या शाम दुनिया व माफ़ीहा से बेहतर है। (बुख़ारी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि दुनिया और दुनिया में जो कुछ है वह सब अल्लाह तआला की राह में ख़र्च कर दिया जाए, तब भी अल्लाह तआला के रास्ते की एक शाम उससे ज़्यादा अज्र दिलाने वाली है।

﴿ 60 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ رَاحَ رَوْحَةً فِيْ سَبِيْلِ اللهِ، كَانَ لَهُ بِمِثْلِ مَا اَصَابَهُ مِنَ الْغُبَارِ مِسْكًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه ابن ماجه، باب الخروج في النفير، رقم: ٢٧٧٥

60. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआला के रास्ते में एक शाम भी निकले, तो जितना गर्द व ग़ुबार उसे लगेगा, उसके बक़द्र क़ियामत में उसे मुश्क मिलेगा। (इब्ने माजा)

﴿ 61 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مَرَّ رَجُلٌ مِنْ اَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ بِشِعْبٍ فِيْهِ عُيَيْنَةٌ مِنْ مَاءٍ عَذْبَةٌ فَاَعْجَبَتْهُ لِطِيْبِهَا، فَقَالَ: لَوِ اعْتَزَلْتُ النَّاسَ فَاَقَمْتُ فِيْ هٰذَا الشِّعْبِ وَلَنْ اَفْعَلَ حَتّٰى اَسْتَاْذِنَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ، فَذَكَرَ ذٰلِكَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: لَاتَفْعَلْ، فَاِنَّ مَقَامَ اَحَدِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ اَفْضَلُ مِنْ صَلَاتِهِ فِيْ بَيْتِهِ سَبْعِيْنَ عَامًا، اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَغْفِرَ اللهُ لَكُمْ، وَيُدْخِلَكُمُ الْجَنَّةَ؟ اُغْزُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ مَنْ قَاتَلَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ فُوَاقَ نَاقَةٍ وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب ما جاء في الغدو ... رقم: ١٦٥٠

61. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि (एक सफ़र के दौरान) रसूलुल्लाह ﷺ के एक सहाबी किसी पहाड़ी रास्ते में मीठे पानी के एक छोटे से चश्मा पर से गुज़रे। वह चश्मा उम्दा होने की वजह से उनको बहुत अच्छा लगा। उन्होंने (अपने जी में) कहा कि (कैसा अच्छा चश्मा है) क्या ही अच्छा हो कि मैं लोगों से किनाराकश होकर इस घाटी में ही ठहर जाऊं, लेकिन मैं यह काम नबी करीम ﷺ से इजाज़त लिए बग़ैर हरगिज़ न करूंगा। चुनांचे इस ख़्याल का ज़िक्र उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ के सामने किया, तो आपने इर्शाद फ़रमाया : ऐसा न करना, क्योंकि तुममें से किसी भी शख़्स का अल्लाह तआला के रास्ते में (थोड़ी देर) खड़े रहना उसके अपने घर में रहकर सत्तर साल नमाज़ पढ़ने से बेहतर है। क्या तुम लोग नहीं चाहते कि अल्लाह तआला तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमा दें और तुम्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमा दें। अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करो, जो शख़्स इतनी देर भी अल्लाह तआला के रास्ते में जितना वक़्फ़ा एक ऊंटनी के दूध दुहने में दोबारा थन दबाने के दर्मियान होता है,

Copyright © O

तो उसके लिए जन्नत वाजिब हो गई।                                            (तिर्मिज़ी)

﴿ 62 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ صُدِعَ رَاْسُهُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ فَاحْتَسَبَ، غُفِرَلَهُ مَا كَانَ قَبْلَ ذٰلِكَ مِنْ ذَنْبٍ.

رواه الطبراني في الكبير و اسناده حسن، مجمع الزوائد ٣/ ٣٠

62. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के रास्ते में जिस शख़्स के सर में दर्द हो और वह उस पर सवाब की नीयत रखे तो उसके पहले के तमाम गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे।

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 63 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِيْمَا يَحْكِيْ عَنْ رَبِّهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى قَالَ: اَيُّمَا عَبْدٍ مِنْ عِبَادِيْ خَرَجَ مُجَاهِدًا فِيْ سَبِيْلِيْ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِيْ ضَمِنْتُ لَهُ اَنْ اَرْجِعَهُ بِمَا اَصَابَ مِنْ اَجْرٍ وَغَنِيْمَةٍ، وَاِنْ قَبَضْتُهُ اَنْ اَغْفِرَ لَهُ، وَاَرْحَمَهُ، وَاُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ.

رواه احمد ٢/ ١١٧

63. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ एक हदीसे क़ुदसी में अपने रब का यह इर्शाद मुबारक नक़ल फ़रमाते हैं : मेरा जो बन्दा सिर्फ़ मेरी ख़ुशनूदी हासिल करने के लिए मेरे रास्ते में मुजाहिद बनकर निकले तो मैं ज़िम्मेदारी उठाता हूं कि मैं उसे अज्र और माले ग़नीमत के साथ वापस लौटाऊंगा और अगर मैंने उसको अपने पास बुला लिया तो उसकी मग़्फ़िरत करूंगा, उस पर रहम करूंगा और उसको जन्नत में दाख़िल करूंगा।                    (मुस्नद अहमद)

﴿ 64 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: تَضَمَّنَ اللهُ لِمَنْ خَرَجَ فِيْ سَبِيْلِهِ، لَا يُخْرِجُهُ اِلَّا جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ، وَاِيْمَانًا بِيْ وَتَصْدِيْقًا بِرُسُلِيْ، فَهُوَ عَلَيَّ ضَامِنٌ اَنْ اُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ اَوْ اَرْجِعَهُ اِلٰى مَسْكَنِهِ الَّذِيْ خَرَجَ مِنْهُ، نَائِلًا مَا نَالَ مِنْ اَجْرٍ اَوْ غَنِيْمَةٍ، وَالَّذِيْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ! مَامِنْ كَلْمٍ يُكْلَمُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ تَعَالٰى، اِلَّا جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كَهَيْئَتِهِ حِيْنَ كُلِمَ، لَوْنُهُ لَوْنُ دَمٍ وَرِيْحُهُ مِسْكٌ، وَالَّذِيْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَوْلَا اَنْ يَشُقَّ عَلَى الْمُسْلِمِيْنَ، مَا قَعَدْتُ خِلَافَ سَرِيَّةٍ تَغْزُوْ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ اَبَدًا، وَلٰكِنْ لَا اَجِدُ سَعَةً فَاَحْمِلَهُمْ، وَلَا يَجِدُوْنَ سَعَةً وَيَشُقُّ عَلَيْهِمْ اَنْ يَتَخَلَّفُوْا عَنِّيْ، وَالَّذِيْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ! [illegible] فِيْ سَبِيْلِ اللهِ فَاُقْتَلُ، ثُمَّ اَغْزُوْ فَاُقْتَلُ، ثُمَّ اَغْزُوْ فَاُقْتَلُ.

Copyright © O

رواه مسلم، باب فضل الجهاد ... رقم: ٤٨٥٩

64. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआला के रास्ते में निकले (और अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि) उसको घर से निकालने वाली चीज़ मेरे रास्ते में जिहाद करने, मुझ पर ईमान लाने, मेरे रसूलों की तस्दीक़ के अलावा कुछ और न हो, तो मैं इस बात का ज़िम्मेदार हूं कि उसे जन्नत में दाख़िल करूं या उसे अज्र या ग़नीमत के साथ घर वापस लौटाऊं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद ﷺ की जान है अल्लाह तआला के रास्ते में (किसी को) जो कोई भी ज़ख़्म लगता है तो क़ियामत के दिन वह इस हालत में आएगा कि गोया उसे आज ही ज़ख़्म लगा है उसका रंग तो ख़ून का रंग होगा और उसकी महक मुश्क की महक होगी। क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद ﷺ की जान है अगर मुसलमानों पर मशक़्क़त का अन्देशा न होता, तो मैं कभी अल्लाह तआला के रास्ते में निकलने वाले किसी लशकर में शरीक होने से पीछे न रहता, लेकिन मैं इस बात की गुंजाइश नहीं पाता कि तमाम लोगों के लिए सवारी का इंतज़ाम करूं, न वे ख़ुद उसकी गुंजाइश पाते हैं और उन पर यह बात बड़ी गिरां गुज़रती है कि वे मेरे साथ न जाएं (कि मैं तो चला जाऊं और वे घरों में रहें) क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद ﷺ की जान है, मैं तो चाहता हूं कि अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करूं और क़त्ल कर दिया जाऊं, फिर जिहाद करूं फिर क़त्ल कर दिया जाऊं, फिर जिहाद करूं फिर क़त्ल कर दिया जाऊं। (मुस्लिम)

﴿65﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِذَا تَبَايَعْتُمْ بِالْعِيْنَةِ وَاَخَذْتُمْ اَذْنَابَ الْبَقَرِ وَرَضِيْتُمْ بِالزَّرْعِ وَتَرَكْتُمُ الْجِهَادَ، سَلَّطَ اللهُ عَلَيْكُمْ ذُلاًّ لَايَنْزِعُهُ حَتّٰى تَرْجِعُوْا اِلٰى دِيْنِكُمْ.

رواه ابوداؤد، في النهي عن العينة، رقم: ٣٤٦٢

65. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब तुम लोग ख़रीद व फ़रोख़्त और कारोबार में हमातन मशग़ूल हो जाओगे और गाय बैल की दुमों को पकड़ कर खेती बाड़ी में मगन हो जाओगे और जिहाद को छोड़ बैठोगे तो अल्लाह तआला तुम पर ऐसी ज़िल्लत मुसल्लत कर देंगे जो उस वक़्त तक दूर नहीं होगी जब तक तुम अपने दीन की तरफ़ न लौट आओ (जिसमें अल्लाह तआला के रास्ते का जिहाद भी शामिल है)। Copyright © O

(अबूदाऊद)

﴾ 66 ﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ لَقِيَ اللهَ بِغَيْرِ اَثَرٍ مِنْ جِهَادٍ لَقِيَ اللهَ وَفِيْهِ ثُلْمَةٌ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب، باب ماجاء في فضل المرابط، رقم:١٦٦٦

66. हज़रत अबू हुरैरह ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआला के पास इस हाल में हाज़िर हो कि उस पर जिहाद का कोई निशान न हो तो वह अल्लाह तआला से इस हाल में मिलेगा कि उसमें यानी उसके दीन में ख़लल होगा। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : जिहाद की निशानी यह है कि मसलन उसके जिस्म पर कोई ज़ख़्म हो, या अल्लाह तआला के रास्ते का गर्द व ग़ुबार या ख़िदमत वग़ैरह करने की वजह से जिस्म पर पड़ने वाले निशान हों। (शर्हुत्तैयिबी)

﴾ 67 ﴿ عَنْ سُهَيْلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَقَامُ اَحَدِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ سَاعَةً خَيْرٌ لَهُ مِنْ عَمَلِهِ عُمْرَهُ فِيْ اَهْلِهِ. رواه الحاكم ٢٨٢/٣

67. हज़रत सुहैल ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : तुममें से किसी का एक घड़ी अल्लाह तआला के रास्ते में खड़ा रहना उसके अपने घर वालों में रहते हुए सारी उम्र के नेक आमाल से बेहतर है। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾ 68 ﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ عَبْدَ اللهِ بْنَ رَوَاحَةَ فِيْ سَرِيَّةٍ فَوَافَقَ ذٰلِكَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ، فَغَدَا اَصْحَابُهُ فَقَالَ: اَتَخَلَّفُ فَاُصَلِّيْ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ ثُمَّ اَلْحَقُهُمْ، فَلَمَّا صَلَّى مَعَ النَّبِيِّ ﷺ رَآهُ فَقَالَ لَهُ: مَا مَنَعَكَ اَنْ تَغْدُوَ مَعَ اَصْحَابِكَ؟ فَقَالَ: اَرَدْتُ اَنْ اُصَلِّيَ مَعَكَ ثُمَّ اَلْحَقَهُمْ، فَقَالَ: لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَا اَدْرَكْتَ فَضْلَ غَدْوَتِهِمْ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب، باب ماجاء في السفر يوم الجمعة، رقم:٥٢٧

68. हज़रत इब्ने अब्बास ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ؓ को एक जमाअत में भेजा और वह जुमा का दिन था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ؓ के साथी सुबह रवाना हो गए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ؓ ने फ़रमाया, मैं ठहर जाता हूं ताकि रसूलुल्लाह ﷺ के साथ जुमा की नमाज़ पढ़ लूं, फिर अपने साथियों से जा मिलूंगा। जब उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ के

Copyright © O

साथ जुमा की नमाज़ पढ़ी तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें देखकर फ़रमाया : तुम अपने साथियों के साथ सुबह जाने से क्यों ठहर गए? उन्होंने अ़र्ज़ किया, मैंने चाहा कि आपके साथ जुमा पढ़ लूं, फिर उनसे जा मिलूंगा। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर तुम ज़मीन में जो कुछ सबका सब ख़र्च कर दो तो भी सुबह के वक़्त जाने वाले साथियों के बराबर सवाब हासिल नहीं कर सकोगे। (तिर्मिज़ी)

﴿ 69 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: اَمَرَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ بِسَرِيَّةٍ تَخْرُجُ، فَقَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! اَنَخْرُجُ اللَّيْلَةَ اَمْ نَمْكُثُ حَتّٰى نُصْبِحَ؟ فَقَالَ: اَوَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ تَبِيْتُوْا فِیْ خَرِيْفٍ مِنْ خَرَائِفِ الْجَنَّةِ وَالْخَرِيْفُ الْحَدِيْقَةُ. السنن الكبرى ۱۵۸/۹

69. हज़रत अबू हुरैरह ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक जमाअ़त को अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जाने का हुक्म दिया। उन्होंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या हम अभी रात को चले जाएं या ठहर कर सुबह चले जाएं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम यह नहीं चाहते हो कि तुम जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ में यह रात गुज़ारो, यानी अल्लाह तआ़ला के रास्ते में रात गुज़ारना जन्नत के बाग़ में रात गुज़रना है। (सुननेकुब्रा)

﴿ 70 ﴾ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَجُلًا سَاَلَ النَّبِیَّ ﷺ: اَیُّ الْاَعْمَالِ اَفْضَلُ؟ قَالَ: اَلصَّلَاةُ لِوَقْتِهَا، وَبِرُّ الْوَالِدَيْنِ، ثُمَّ الْجِهَادُ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ.

رواه البخاری، باب وسمّی النبی ﷺ الصلاة عملا، رقم: ۷۵۳٤

70. हज़रत इब्ने मस्ऊद ؓ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल किया कि कौन-सा अ़मल सबसे अफ़ज़ल है? आप ﷺने इर्शाद फ़रमाया : वक़्त पर नमाज़ पढ़ना और वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करना और फिर अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद करना। (बुख़ारी)

﴿ 71 ﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: ثَلَاثَةٌ كُلُّهُمْ ضَامِنٌ عَلَى اللّٰهِ، اِنْ عَاشَ رُزِقَ وَكُفِیَ، وَاِنْ مَاتَ اَدْخَلَهُ اللّٰهُ الْجَنَّةَ: مَنْ دَخَلَ بَيْتَهُ فَسَلَّمَ فَهُوَ ضَامِنٌ عَلَى اللّٰهِ، وَمَنْ خَرَجَ اِلَى الْمَسْجِدِ فَهُوَ ضَامِنٌ عَلَى اللّٰهِ، وَمَنْ خَرَجَ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَهُوَ ضَامِنٌ عَلَى اللّٰهِ. رواه ابن حبان، قال المحقق: الحديث صحيح ۲۵۲/۲

71. हज़रत अबू उमामा ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन शख़्स ऐसे हैं जो अल्लाह तआ़ला की ज़िम्मेदारी में हैं। अगर ज़िन्दा रहें तो उन्हें रोज़ी

Copyright © O

दी जाएगी और उनके कामों में मदद की जाएगी और अगर उन्हें मौत आ गई तो अल्लाह तआ़ला उन्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमाएंगे। एक वह जो अपने घर में दाख़िल हो कर सलाम करे; दूसरा वह जो मस्जिद जाए; तीसरा वह जो अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकले। (इब्ने हब्बान)

﴿ 72 ﴾ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلَالٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَجُلٌ مِنَ الطُّفَاوَةِ، طَرِيْقُهُ عَلَيْنَا، يَأْتِيْ عَلَى الْحَيِّ، فَيُحَدِّثُهُمْ، قَالَ: أَتَيْتُ الْمَدِيْنَةَ فِيْ عِيْرٍ لَنَا، فَبِعْنَا بِضَاعَتَنَا، ثُمَّ قُلْتُ: لَأَنْطَلِقَنَّ إِلَى هٰذَا الرَّجُلِ، فَلَآتِيَنَّ مَنْ بَعْدِيْ بِخَبَرِهٖ، قَالَ: فَانْتَهَيْتُ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، فَإِذَا هُوَ يُرِيْنِيْ بَيْتًا، قَالَ: إِنَّ امْرَأَةً كَانَتْ فِيْهِ، فَخَرَجَتْ فِيْ سَرِيَّةٍ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ، وَتَرَكَتْ ثِنْتَيْ عَشْرَةَ عَنْزَةً وَ صِيْصِيَتَهَا الَّتِيْ تَنْسِجُ بِهَا، فَفَقَدَتْ عَنْزًا مِنْ غَنَمِهَا وَ صِيْصِيَتَهَا، قَالَتْ: يَا رَبِّ! (إِنَّكَ) قَدْ ضَمِنْتَ لِمَنْ خَرَجَ فِيْ سَبِيْلِكَ أَنْ تَحْفَظَ عَلَيْهِ، وَإِنِّيْ قَدْ فَقَدْتُ عَنْزًا مِنْ غَنَمِيْ وَصِيْصِيَتِيْ، وَإِنِّيْ أَنْشُدُكَ عَنْزِيْ وَ صِيْصِيَتِيْ، قَالَ: فَجَعَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَذْكُرُ لَهُ شِدَّةَ مُنَاشَدَتِهَا لِرَبِّهَا تَبَارَكَ وَتَعَالَى، قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: فَأَصْبَحَتْ عَنْزُهَا وَمِثْلُهَا، وَصِيْصِيَتُهَا وَمِثْلُهَا، وَهَاتِيْكَ، فَأْتِهَا، فَاسْأَلْهَا إِنْ شِئْتَ، قَالَ: قُلْتُ: بَلْ أُصَدِّقُكَ.

رواه احمد، ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٥/٤٠٤

72. हज़रत हुमैद बिन हिलाल रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि क़बीला तुफ़ावा के एक शख़्स थे। उनके रास्ते में हमारा क़बीला पड़ता था (वह आते जाते हुए) हमारे क़बीले से मिलते और उनको हदीसें सुनाया करते थे। उन्होंने कहा, एक मर्तबा मैं अपने तिजारती क़ाफ़िला के साथ मदीना मुनव्वरा गया। वहां हम ने अपना सामान बेचा। फिर मैंने अपने जी में कहा कि मैं उस शख़्स यानी रसूलुल्लाह ﷺ के पास ज़रूर जाऊंगा और उनके हालात लेकर अपने क़बीले वालों को जाकर बताऊंगा। जब मैं रसूलुल्लाह ﷺ के पास पहुंचा तो आप ﷺ ने मुझे एक घर दिखाकर फ़रमाया कि इस घर में एक औरत थी। वह मुसलमानों की एक जमाअ़त के साथ अल्लाह तआ़ला के रास्ते में गई, और वह घर में बारह बकरियां और अपना एक कपड़ा बुनने का कांटा जिससे वह कपड़ा बुना करती थी, छोड़ कर गई। इस की एक बकरी और कांटा गुम हो गया। वह औरत कहने लगी, या रब! जो आदमी आप के रास्ते में निकले उसकी हर तरह हिफ़ाज़त का आपने ज़िम्मा लिया हुआ है (और मैं आपके रास्ते में गई थी और मेरी ग़ैर मौजूदगी में) मेरी बकरियों में से एक बकरी और कपड़ा बुनने वाला कांटा गुम हो गया है। मैं आपको अपनी बकरी और कांटे के बारे में

Copyright© O

क़सम देती हूं (कि मुझे वापस मिल जाए) रावी कहते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ उस तुफ़ावी आदमी को बताने लगे कि उस औरत ने किस तरह अपने रब से इंतिहाई आजिज़ी से दुआ की। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसकी बकरी और उस जैसी एक और बकरी और उसका कांटा और उस-जैसा एक और कांटा उसको (अल्लाह तआला के ग़ैबी ख़ज़ाने से) मिल गया। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह है वह औरत, अगर तुम चाहो तो जाकर उससे पूछ लो। उस तुफ़ावी आदमी ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया, नहीं (मुझे इस औरत से पूछने की ज़रूरत नहीं है) बल्कि मैं आपसे सुनकर इसकी तस्दीक़ करता हूं (मुझे आपकी बात पर पूरा यक़ीन है)। (मुस्नद अहमद, मजमउज़्ज़वाइद)

﴿ 73 ﴾ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: عَلَيْكُمْ بِالْجِهَادِ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ، فَإِنَّهُ بَابٌ مِنْ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ، يُذْهِبُ اللهُ بِهِ الْهَمَّ وَالْغَمَّ (وَزَادَ فِيْهِ غَيْرُهُ:) وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ الْقَرِيْبَ وَالْبَعِيْدَ، وَأَقِيْمُوْا حُدُوْدَ اللهِ فِي الْقَرِيْبِ وَالْبَعِيْدِ، وَلَا تَأْخُذْكُمْ فِي اللهِ لَوْمَةُ لَائِمٍ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٢/٧٤

73. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद ज़रूर किया करो, क्योंकि ये जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है, अल्लाह तआला उसके ज़रिए से रंज व ग़म दूर फ़रमा देते हैं। एक रिवायत में यह इज़ाफ़ा भी है कि अल्लाह तआला की राह में दूर और क़रीब जाकर जिहाद करो, और क़रीब और दूर वालों में अल्लाह तआला की हदों को क़ायम करो और अल्लाह तआला के मामले में किसी की मुलामत का कुछ भी असर न लो। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 74 ﴾ عَنْ أَبِيْ أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! ائْذَنْ لِيْ بِالسِّيَاحَةِ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِنَّ سِيَاحَةَ أُمَّتِي الْجِهَادُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ.

رواه ابو داؤد، باب في النهي عن السياحة، رقم: ٢٤٨٦

74. हज़रत अबू उमामा ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे सैयाहत की इजाज़त मरहमत फ़रमा दें, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी उम्मत की सैयाहत तो अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करना है। Copyright © Of

(अबूदाऊद)

﴿ 75 ﴾ عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَقْرَبُ الْعَمَلِ إِلَى اللهِ عَزَّ وَجَلَّ الْجِهَادُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ، وَلَا يُقَارِبُهُ شَيْءٌ.

رواه البخاري في التاريخ وهو حديث حسن، الجامع الصغير: ١/٢٠١

75. हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के सबसे ज़्यादा क़ुर्ब का ज़रिया अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद है। कोई अ़मल अल्लाह तआ़ला के क़ुर्ब का ज़रिया होने में जिहाद के अ़मल के क़रीब भी नहीं हो सकता। (बुख़ारी फ़ित्तारीख़, जामेअ़ सग़ीर)

﴿ 76 ﴾ عَنْ أَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سُئِلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَيُّ النَّاسِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: رَجُلٌ يُجَاهِدُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ قَالُوْا: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: ثُمَّ مُؤْمِنٌ فِيْ شِعْبٍ مِنَ الشِّعَابِ يَتَّقِيْ رَبَّهُ وَيَدَعُ النَّاسَ مِنْ شَرِّهِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء اي الناس افضل، رقم: ١٦٦٠

76. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा गया : लोगों में सबसे अफ़ज़ल शख़्स कौन है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह शख़्स है जो अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद करता हो। लोगों ने पूछा, फिर कौन? इर्शाद फ़रमाया : फिर वह शख़्स है जो किसी घाटी यानी तन्हाई में रहता हो, अपने रब से डरता हो और लोगों को अपने शर से महफ़ूज़ रखता हो। (तिर्मिज़ी)

﴿ 77 ﴾ عَنْ أَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ سُئِلَ: أَيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ أَكْمَلُ إِيْمَانًا؟ قَالَ: رَجُلٌ يُجَاهِدُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ بِنَفْسِهِ وَمَالِهِ، وَرَجُلٌ يَعْبُدُ اللهَ فِيْ شِعْبٍ مِنَ الشِّعَابِ، قَدْ كَفَى النَّاسَ شَرَّهُ.

رواه ابو داؤد، باب في ثواب الجهاد، رقم: ٢٤٨٥

77. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा गया : ईमान वालों में सबसे कामिल ईमान वाला कौन है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान वालों में सबसे कामिल ईमान वाला वह शख़्स है जो अपनी जान और माल से अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद करता हो और दूसरा वह शख़्स है जो किसी घाटी में रहकर अल्लाह तआ़ला की इबादत करता हो और लोगों को अपने शर से बचाए हुए हो। (अबूदाऊद)

﴿ 78 ﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَوْقِفُ سَاعَةٍ

Copyright © O

فِيْ سَبِيْلِ اللهِ خَيْرٌ مِنْ قِيَامِ لَيْلَةِ الْقَدْرِ عِنْدَ الْحَجَرِ الْاَسْوَدِ.

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ٤٦٢/١٠

78. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआला के रास्ते में थोड़ी देर खड़ा रहना शबे क़द्र में हज्रे अस्वद के सामने इबादत करने से बेहतर है। (इब्ने हब्बान)

﴿ 79 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لِكُلِّ نَبِيٍّ رَهْبَانِيَّةٌ، وَرَهْبَانِيَّةُ هٰذِهِ الْاُمَّةِ الْجِهَادُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ. رواه احمد ٢٦٦/٣

79. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हर नबी के लिए कोई रहबानियत होती है और मेरी उम्मत की रहबानीयत अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद है। (मुस्नद अहमद)

**फ़ायदा :** दुनिया और उसकी लज़्ज़तों से लातअल्लुक़ होने को रहबानियत कहते हैं।

﴿ 80 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَثَلُ الْمُجَاهِدِ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ، وَاللهُ اَعْلَمُ بِمَنْ يُجَاهِدُ فِيْ سَبِيْلِهِ كَمَثَلِ الصَّائِمِ الْقَائِمِ الْخَاشِعِ الرَّاكِعِ السَّاجِدِ. رواه النسائي، باب مثل المجاهد في سبيل الله عزوجل، رقم: ٣١٢٩

80. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआला के रास्ते में निकलने वाले मुजाहिद की मिसाल, और अल्लाह तआला ही ख़ूब जानते हैं कि कौन (उनकी रज़ा के लिए) उनकी राह में जिहाद करता है, उस शख़्स की-सी है जो रोज़ा रखने वाला, रात को इबादत करने वाला, अल्लाह के ख़ौफ़ की वजह से अल्लाह के सामने आजिज़ी करने वाला रुकूअ्-सज्दा करने वला हो। (नसाई)

﴿ 81 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَثَلُ الْمُجَاهِدِ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ، كَمَثَلِ الصَّائِمِ الْقَائِمِ الْقَانِتِ بِآيَاتِ اللهِ لَا يَفْتُرُ مِنْ صَوْمٍ وَلَا صَدَقَةٍ حَتّٰى يَرْجِعَ الْمُجَاهِدُ اِلٰى اَهْلِهِ. (وهو بعض الحديث) رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ٤٨٦/١٠

81. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के रास्ते में निकले हुए मुजाहिद की मिसाल उस शख़्स की-सी है जो रोज़ा रखने वाला, रात भर नमाज़ में क़ुरआन पाक की तिलावत करने वाला हो

Copyright © O

और उस वक़्त तक रोज़े-सदक़े में मुसलसल मशग़ूल रहे जब तक अल्लाह तआ़ला की राह का मुजाहिद वापस आए यानी ऐसी इबादत करने वाले शख़्स के सवाब के बराबर मुजाहिद को सवाब मिलता है। (इब्ने हब्बान)

﴿ 82 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِذَا اسْتُنْفِرْتُمْ فَانْفِرُوْا.

رواه ابن ماجه، باب الخروج في النفير، رقم: ٢٧٧٣

82. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम से अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकलने को कहा जाए, तो तुम निकल जाया करो। (इब्ने माजा)

﴿ 83 ﴾ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: يَا أَبَا سَعِيْدٍ مَنْ رَضِيَ بِاللهِ رَبًّا، وَبِالْإِسْلَامِ دِيْنًا، وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ نَبِيًّا وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ فَعَجِبَ لَهَا أَبُوْ سَعِيْدٍ فَقَالَ: أَعِدْهَا عَلَيَّ، يَا رَسُوْلَ اللهِ! فَفَعَلَ ثُمَّ قَالَ: وَأُخْرَى يُرْفَعُ بِهَا الْعَبْدُ مِائَةَ دَرَجَةٍ فِي الْجَنَّةِ، مَابَيْنَ كُلِّ دَرَجَتَيْنِ كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ قَالَ: وَمَا هِيَ؟ يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: الْجِهَادُ فِي سَبِيْلِ اللهِ، الْجِهَادُ فِي سَبِيْلِ اللهِ.

رواه مسلم، باب بيان ما اعدّ الله تعالى للمجاهد... رقم: ٤٨٧٩

83. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अबू सईद! जो अल्लाह तआ़ला को रब मानने और इस्लाम को दीन बनाने और मुहम्मद ﷺ के नबी होने पर राज़ी हो तो उसके लिए जन्नत वाजिब हो जाती है। हज़रत अबू सईद ﷺ को यह बात बहुत अच्छी लगी। उन्होंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! दोबारा इर्शाद फ़रमाइए। आप ﷺ ने दोबारा इर्शाद फ़रमाया। फिर फ़रमाया : एक दूसरी चीज़ भी है जिसकी वजह से बन्दे को जन्नत में सौ दर्जा बुलन्द कर दिया जाता है, दो दर्जों का दर्मियानी फ़ासला आसमान व ज़मीन के दर्मियानी फ़ासले के बराबर है। उन्होंने पूछा : या रसूलुल्लाह! वह क्या चीज़ है? इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद है, अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद है। (मुस्लिम)

﴿ 84 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: مَاتَ رَجُلٌ بِالْمَدِيْنَةِ مِمَّنْ وُلِدَ بِهَا فَصَلَّى عَلَيْهِ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ ثُمَّ قَالَ: يَا لَيْتَهُ مَاتَ بِغَيْرِ مَوْلِدِهِ قَالُوْا: وَلِمَ ذَاكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: إِنَّ الرَّجُلَ إِذَا مَاتَ بِغَيْرِ مَوْلِدِهِ قِيْسَ لَهُ مِنْ مَوْلِدِهِ إِلَى مُنْقَطَعِ أَثَرِهِ فِي الْجَنَّةِ.

رواه النسائي، باب الموت بغير مولده، رقم: ١٨٣٣

Copyright © O

84. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ फ़रमाते हैं कि एक साहिब का मदीना मुनव्वरा में इंतिक़ाल हुआ, जो मदीना मुनव्वरा में ही पैदा हुए थे। नबी करीम ﷺ ने उनकी जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई फिर इर्शाद फ़रमाया, काश! ये शख़्स अपनी पैदाइश की जगह के अलावा किसी और जगह वफ़ात पाता। सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप ने ऐसा क्यों इर्शाद फ़रमाया? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी जब अपनी पैदाइश की जगह के अलावा कहीं और वफ़ात पाता है तो पैदाइश की जगह से वफ़ात की जगह तक के फ़ासले की जगह को नाप कर उसे जन्नत में जगह दी जाती है। (नसाई)

﴿ 85 ﴾ عَنْ اَبِی قِرْصَافَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: یٰاَیُّهَا النَّاسُ هَاجِرُوْا وَتَمَسَّكُوْا بِالْاِسْلَامِ، فَاِنَّ الْهِجْرَةَ لَا تَنْقَطِعُ مَا دَامَ الْجِهَادُ.

رواه الطبراني ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٩/٦٥٨

85. हज़रत अबू क़िरसाफ़ा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगो! (अल्लाह तआ़ला के रास्ते में) हिजरत करो और इस्लाम को मज़बूती से थामे रखो, क्योंकि जब तक जिहाद रहेगा (अल्लाह तआ़ला के रास्ते की) हिजरत भी ख़त्म नहीं होगी। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : यानी जैसे जिहाद क़ियामत तक बाक़ी रहेगा उसी तरह हिजरत भी बाक़ी रहेगी, जिसमें दीन फैलाने, दीन सीखने और दीन की हिफ़ाज़त के लिए अपने वतन वग़ैरह को छोड़ना मुश्किल है।

﴿ 86 ﴾ عَنْ مُعَاوِیَةَ وَ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ عَوْفٍ وَ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمْ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: الْهِجْرَةُ خَصْلَتَانِ، اِحْدَاهُمَا: هَجْرُ السَّیِّئَاتِ، وَالْاُخْرٰی: یُهَاجِرُ اِلَی اللهِ وَرَسُوْلِهٖ، وَلَا تَنْقَطِعُ الْهِجْرَةُ مَا تُقُبِّلَتِ التَّوْبَةُ، وَلَا تَزَالُ التَّوْبَةُ مَقْبُوْلَةً حَتّٰی تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنَ الْمَغْرِبِ، فَاِذَا طَلَعَتْ طُبِعَ عَلٰی كُلِّ قَلْبٍ بِمَا فِیْهِ، وَكُفِیَ النَّاسُ الْعَمَلَ.

رواه احمد و الطبراني في الاوسط والصغير ورجال احمد ثقات، مجمع الزوائد ٥/٤٥٦

86. हज़रत मुआ़विया, हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आ़स ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हिजरत की दो क़िस्में हैं : एक हिजरत बुराइयों को छोड़ना है दूसरी हिजरत अल्लाह तआ़ला और उनके रसूल की तरफ़ हिजरत करना है (यानी अपनी चीज़ों छोड़ कर) अल्लाह

Copyright © O

तआला और उनके रसूल के रास्ते में हिजरत करना है। हिजरत उस वक़्त तक बाक़ी रहेगी जब तक तौबा क़ुबूल होगी; तौबा उस वक़्त तक क़ुबूल होगी जब तक सूरज मग़रिब से तुलू न हो जाए। जब सूरज मग़रिब से तुलू हो जाएगा तो उस वक़्त दिल जिस हालत (ईमान या कुफ़्र) पर होंगे उसी पर मुहर लगा दी जाएगी और लोगों के (पिछले) अ़मल ही (हमेशा के लिए कामयाब होने या नाकाम होने के लिए) काफ़ी होंगे। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 87 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَيُّ الْهِجْرَةِ اَفْضَلُ؟ قَالَ: اَنْ تَهْجُرَ مَا كَرِهَ رَبُّكَ عَزَّوَجَلَّ وَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْهِجْرَةُ هِجْرَتَانِ هِجْرَةُ الْحَاضِرِ وَهِجْرَةُ الْبَادِيْ، فَاَمَّا الْبَادِيْ فَيُجِيْبُ اِذَا دُعِيَ وَيُطِيْعُ اِذَا اُمِرَ، وَاَمَّا الْحَاضِرُ فَهُوَ اَعْظَمُهُمَا بَلِيَّةً وَاَعْظَمُهُمَا اَجْرًا. رواه النسائي باب هجرة البادي رقم: ٤١٧٠

87. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स ने पूछा : या रसूलुल्लाह! सबसे अफ़ज़ल कौन-सी हिजरत है? इर्शाद फ़रमाया : तुम अपने रब की नापसन्दीदा चीज़ों को छोड़ दो और इर्शाद फ़रमाया : हिजरत दो क़िस्म की है। शहर में रहने वाले की हिजरत, देहात में रहने वाले की हिजरत। देहात में रहने वाले की हिजरत यह है कि जब उसको (अपनी जगह से) बुलाया जाए तो आ जाए और जब उसे कोई हुक्म दिया जए तो उसको माने (और शहरी की हिजरत भी यही है लेकिन) शहरी की हिजरत आज़माइश के एतबार से बड़ी है और अज्र मिलने के एतबार से भी अफ़ज़ल है। (नसाई)

फ़ायदा : क्योंकि शहर में रहने वाला बावजूद कसरते मशाग़िल और कसरते सामान के सब कुछ छोड़ कर अल्लाह तआला के रास्ते में हिजरत करता है लिहाज़ा उसका अल्लाह तआला की राह में हिजरत करना बड़ी आज़माइश है इसलिए ज़्यादा अज्र मिलने का ज़रिया है।

﴿ 88 ﴾ عَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الْاَسْقَعِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَتُهَاجِرُ؟ قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: هِجْرَةُ الْبَادِيَةِ اَوْهِجْرَةُ الْبَاتَّةِ؟ قُلْتُ: اَيُّهُمَا اَفْضَلُ؟ قَالَ: هِجْرَةُ الْبَاتَّةِ: اَنْ تَثْبُتَ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، وَهِجْرَةُ الْبَادِيَةِ: اَنْ تَرْجِعَ اِلَى بَادِيَتِكَ، وَعَلَيْكَ السَّمْعُ وَالطَّاعَةُ فِيْ عُسْرِكَ وَيُسْرِكَ وَمَكْرَهِكَ وَمَنْشَطِكَ، وَاَثَرَةٍ عَلَيْكَ.

(وهو بعض الحديث) رواه الطبراني و رجاله ثقات، مجمع الزوائد ٤٥٨/٥

Copyright © O

88. हज़रत वासिला बिन असक़अ् ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझसे

पूछा : तुम हिजरत करोगे? मैंने कहा : जी हां! इर्शाद फ़रमाया : हिजरते बादिया या हिजरत बात्ता (कौन-सी हिजरत करोगे?) मैंने अ़र्ज़ किया : उन दोनों में से कौन-सी अफ़ज़ल है? इर्शाद फ़रमाया : हिजरत बात्ता। और हिजरत बात्ता यह है कि तुम (मुस्तक़िल तौर पर अपने वतन को छोड़ कर) रसूलुल्लाह ﷺ के साथ क़ियाम करो (यह हिजरत नबी करीम ﷺ के ज़माने में फ़त्हे मक्का से पहले मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा की तरफ़ थी) और हिजरते बादिया यह है कि तुम (वक़्ती तौर पर दीनी मक़सद के लिए अपने वतन को छोड़ कर अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकलो और फिर) वापस अपने इलाक़े में लौट जाओ। तुम पर (हर हाल में) तंगी हो या आसानी, दिल चाहे या न चाहे और दूसरे को तुम से आगे किया जाए अमीर की बात को सुनना और मानना ज़रूरी है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 89 ﴾ عَنْ أَبِي فَاطِمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: عَلَيْكَ بِالْهِجْرَةِ فَإِنَّهُ لَا مِثْلَ لَهَا. رواه النسائي، باب الحث على الهجرة، رقم: ٤١٧٢

89. हज़रत अबू फ़ातिमा رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम अल्लाह तआ़ला के रास्ते में ज़रूर हिजरत करते रहो, क्योंकि हिजरत जैसा कोई अ़मल नहीं यानी हिजरत सबसे अफ़ज़ल अ़मल है। (नसाई)

﴿ 90 ﴾ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَفْضَلُ الصَّدَقَاتِ ظِلُّ فُسْطَاطٍ فِي سَبِيْلِ اللهِ، وَمَنِيْحَةُ خَادِمٍ فِي سَبِيْلِ اللهِ، أَوْ طَرُوْقَةُ فَحْلٍ فِي سَبِيْلِ اللهِ

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب صحيح، باب ما جاء في فضل الخدمة في سبيل الله، رقم: ١٦٢٧

90. हज़रत अबू उमामा رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बेहतरीन सदक़ा अल्लाह तआ़ला के रास्ते में ख़ेमा के साये का इंतज़ाम करना है और अल्लाह तआ़ला के रास्ते में काम देने वाला ख़ादिम देना है और जवान ऊंटनी अल्लाह तआ़ला की राह में देना है (ताकि वह सवारी वग़ैरह के काम आ सके)। (तिर्मिज़ी)

﴿ 91 ﴾ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ لَمْ يَغْزُ أَوْ يُجَهِّزْ غَازِيًا أَوْ يَخْلُفْ غَازِيًا فِي أَهْلِهِ بِخَيْرٍ، أَصَابَهُ اللهُ بِقَارِعَةٍ. قَالَ يَزِيْدُ بْنُ عَبْدِ رَبِّهِ فِي حَدِيْثِهِ: قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ. رواه أبو داود، باب كراهية ترك الغزو، رقم: ٢٥٠٣

Copyright © O

91. हज़रत अबू उमामा رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : जिस शख़्स ने न जिहाद किया और न किसी मुजाहिद का सामान तैयार किया और न ही किसी मुजाहिद के अल्लाह तआला के रास्ते में जाने के बाद उसके घर वालों की ख़बरगीरी की, तो वह अल्लाह तआला की तरफ़ से किसी-न-किसी मुसीबत में मुब्तला होगा। हदीस के रावी यज़ीद बिन अ़ब्दे रब्बिही कहते हैं कि इससे मुराद क़ियामत से पहले की मुसीबत है। (अबूदाऊद)

﴿ 92 ﴾ عَنْ أَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ بَعَثَ إِلَى بَنِيْ لِحْيَانَ فَقَالَ: لِيَخْرُجْ مِنْ كُلِّ رَجُلَيْنِ رَجُلٌ ثُمَّ قَالَ لِلْقَاعِدِ: أَيُّكُمْ خَلَفَ الْخَارِجَ فِيْ أَهْلِهِ وَمَالِهِ بِخَيْرٍ، كَانَ لَهُ مِثْلُ نِصْفِ أَجْرِ الْخَارِجِ.

رواه مسلم، باب فضل اعانة الغازى فى سبيل الله، رقم: ٤٩٠٧

92. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने क़बीला बनू लिह्यान के पास पैग़ाम भेजा कि हर दो आदमियों में से एक आदमी अल्लाह तआला के रास्ते में निकले। फिर अल्लाह तआला के रास्ते में (इस मौक़े पर) न जाने वालों से इर्शाद फ़रमाया : तुममें से जो अल्लाह तआला के रास्ते में निकले हुए लोगों के अह्ल व अ़याल और माल की उनकी ग़ैर मौजूदगी में अच्छी तरह देखभाल करे, तो उसको अल्लाह तआला के रास्ते में निकलने वाले के अज्र का आधा अज्र मिलता है। (मुस्लिम)

﴿ 93 ﴾ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ جَهَّزَ حَاجًّا، أَوْ جَهَّزَ غَازِيًا، أَوْ خَلَفَهُ فِيْ أَهْلِهِ، أَوْ فَطَّرَ صَائِمًا، فَلَهُ مِثْلُ أَجْرِهِ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَنْقُصَ مِنْ أَجْرِهِ شَيْئًا.

رواه البيهقى فى شعب الايمان ٣/ ٤٨٠

93. हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स हज पर जाने या अल्लाह तआला के रास्ते में निकलने वाले के सफ़र की तैयारी कराए या उसके पीछे उसके घर वालों की देखभाल रखे या किसी रोज़ेदार को इफ़तार कराए, तो उसको अल्लाह तआला के रास्ते में जाने वाले और हज पर जाने वाले और रोज़ेदार के बराबर सवाब मिलता है और उनके सवाब में कुछ कमी नहीं होती। (बैहक़ी)

﴿ 94 ﴾ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ جَهَّزَ غَازِيًا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ فَلَهُ مِثْلُ أَجْرِهِ وَمَنْ خَلَفَ غَازِيًا فِيْ أَهْلِهِ بِخَيْرٍ، وَأَنْفَقَ عَلَى أَهْلِهِ فَلَهُ مِثْلُ أَجْرِهِ.

Copyright © Ot

رواه الطبرانى فى الاوسط و رجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٥/ ٥١٥

94. हज़रत ज़ैद बिन साबित ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकलने वाले के सफ़र की तैयारी कराए उसको अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकलने वाले के बराबर सवाब मिलता है तो जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकले हुए लोगों के घर वालों की अच्छी तरह देखभाल करे और उन पर ख़र्च करे, उसको भी अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकले हुए लोगों के बराबर सवाब मिलता है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 95 ﴾ عَنْ بُرَيْدَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: حُرْمَةُ نِسَاءِ الْمُجَاهِدِيْنَ عَلَى الْقَاعِدِيْنَ كَحُرْمَةِ أُمَّهَاتِهِمْ، وَإِذَا خَلَفَهُ فِيْ أَهْلِهِ فَخَانَهُ قِيْلَ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: هٰذَا خَانَكَ فِيْ أَهْلِكَ فَخُذْ مِنْ حَسَنَاتِهِ مَاشِئْتَ، فَمَا ظَنُّكُمْ؟

رواه النسائي، باب من خان غازيا في اهله،رقم:٣١٩٢

95. हज़रत बुरैदा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकले हुए लोगों की औरतों की इज़्ज़त अल्लाह तआ़ला के रास्ते में न जाने वालों पर ऐसी है जैसी खुद उनकी मांओं की इज़्ज़त उनके लिए है, (लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकलने वालों की औरतों की इज़्ज़त व आबरू का ख़ास तौर पर ख़्याल रखा जाए) अगर अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जाने वाले ने किसी शख़्स को अपने अह्ल व अ़याल का निगरां बनाया फिर उसने उसके अह्ल व अ़याल (की इज़्ज़त व आबरू) में ख़ियानत की तो क़ियामत के दिन उससे कहा जाएगा कि यह है वह शख़्स जिसने (तुम्हारे पीछे) तुम्हारे अह्ल व अ़याल के साथ बुरा मामला किया था, लिहाज़ा उसकी नेकियों में से जितना चाहे ले लो। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ऐसी हालत में तुम्हारा क्या ख़्याल है (क्या वह उसकी नेकियों में से कुछ नेकियां छोड़ देगा क्योंकि उस वक़्त आदमी एक-एक नेकी को तरस रहा होगा)। (नसाई)

﴿ 96 ﴾ عَنْ أَبِيْ مَسْعُوْدٍ الْأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ بِنَاقَةٍ مَخْطُوْمَةٍ فَقَالَ: هٰذِهِ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَكَ بِهَا، يَوْمَ الْقِيَامَةِ سَبْعُ مِائَةِ نَاقَةٍ، كُلُّهَا مَخْطُوْمَةٌ.

رواه مسلم، باب فضل الصدقة في سبيل الله... ،رقم:٤٨٩٧

96. हज़रत मस्ऊद अन्सारी ﷺ फ़रमाते हैं कि एक आदमी नकेल पड़ी हुई ऊंटनी लेकर आया और रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि मैं यह ऊंटनी अल्लाह तआ़ला के रास्ते में (देता हूं)। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हें

Copyright © O

क़ियामत के दिन उसके बदले में ऐसी सात सौ ऊंटनियां मिलेंगी कि उन सब में नकेल पड़ी हुई होगी। (मुस्लिम)

फ़ायदा : नकेल पड़े होने की वजह से ऊंटनी क़ाबू में रहती है और उस पर सवारी आसान होती है।

﴿ 97 ﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ فَتًى مِنْ أَسْلَمَ قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! إِنِّي أُرِيْدُ الْغَزْوَ وَلَيْسَ مَعِيَ مَا أَتَجَهَّزُ، قَالَ: اِئْتِ فُلاَنًا فَإِنَّهُ قَدْ كَانَ تَجَهَّزَ فَمَرِضَ، فَأَتَاهُ فَقَالَ: إِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يُقْرِئُكَ السَّلَامَ وَيَقُوْلُ: أَعْطِنِي الَّذِيْ تَجَهَّزْتَ بِهِ، قَالَ: يَا فُلاَنَةُ! أَعْطِيْهِ الَّذِيْ تَجَهَّزْتُ بِهِ، وَلَا تَحْبِسِيْ عَنْهُ شَيْئًا، فَوَاللهِ! لَا تَحْبِسِيْ مِنْهُ شَيْئًا فَيُبَارَكَ لَكِ فِيْهِ.

رواه مسلم، باب فضل اعانة الغازى......رقم: ٤٩٠١

97. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं कि क़बीला अस्लम के एक नौजवान ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं जिहाद में जाना चाहता हूं लेकिन मेरे पास तैयारी के लिए कोई सामान नहीं है। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : फ़लां शख़्स के पास जाओ। उन्होंने जिहाद की तैयारी की हुई थी अब वह बीमार हो गए हैं (उनसे कहना कि अल्लाह के रसूल ﷺ तुम्हें सलाम कह रहे हैं और उनसे यह भी कहना कि तुमने जिहाद के लिए जो सामान तैयार किया था वह मुझे दे दो) चुनांचे वह नौजवान उन अन्सारी के पास गए और कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने तुम्हें सलाम कहलवाया है और फ़रमाया है कि आप मुझे वह सामान दे दें जो आपने जिहाद के लिए तैयार किया है। उन्होंने (अपनी बीवी से) कहा फ़्लांनी! मैंने जो सामान तैयार किया था वह इनको दे दो और उस सामान में से कोई चीज़ रोक कर न रखना। अल्लाह तआ़ला की क़सम! तुम इसमें से जो चीज़ भी रोक कर रखोगी उसमें तुम्हारे लिए बरकत नहीं होगी। (मुस्लिम)

﴿ 98 ﴾ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ حَبَسَ فَرَسًا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ كَانَ سِتْرَهُ مِنْ نَارٍ. رواه عبد بن حميد، المسند الجامع ٥/٥٤٧

98. हज़रत ज़ैद बिन साबित ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स ने अल्लाह तआ़ला के रास्ते में घोड़ा वक़्फ़ किया तो उसका यह अ़मल जहन्नम की आग से आड़ बनेगा। (अ़ब्द बिन हुमैद, मुस्नद जामेअ)

Copyright © Of

بسم الله الرحمن الرحيم

# अल्लाह तआला के रास्ते में निकलने के आदाब व आमाल

## कुरआनी आयतें

قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِيْ وَلَا تَنِيَا فِيْ ذِكْرِيْ ۝ اِذْهَبَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۝ فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ۝ قَالَا رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ۝ قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِيْ مَعَكُمَآ اَسْمَعُ وَاَرٰى﴾

[طه: ٤٢-٤٦]

अल्लाह तआला ने जब मूसा ﷺ व हारून ﷺ को फ़िरऔन के पास दावत के लिए भेजा तो फ़रमाया : अब तुम और तुम्हारे भाई दोनों मेरी निशानियां लेकर जाओ और तुम दोनों मेरे ज़िक्र में सुस्ती न करना। तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ वह सरकश हो गया है। फिर वहां जाकर उससे नर्म बात करना शायद वह नसीहत मान ले या अ़ज़ाब से डर जाए। दोनों भाइयों ने अ़र्ज़ किया : ऐ हमारे रब! हम इस बात से डरते हैं कि कहीं वह हम पर ज़्यादती न कर बैठे या वह और ज़्यादा सरकशी न करने लगे (कि जिस ज़्यादती और सरकशी की वजह से हम तब्लीग़ न कर सकें) अल्लाह तआला ने फ़रमाया : बेशक मैं तुम दोनों के साथ हूं, सब कुछ सुनता और देखता हूं, यानी तुम्हारी हिफ़ाज़त करूंगा और फ़िरऔन पर रोब डाल दूंगा, ताकि तुम

Copyright © O

पूरी तब्लीग़ कर सको। (ताहा : 42-46)

وَقَالَ تَعَالَى : ﴿فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِى الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ﴾ [آل عمران:١٥٩]

रसूलुल्लाह ﷺ से ख़िताब है : ऐ नबी! यह अल्लाह तआला की बड़ी मेहरबानी है कि आप उनके हक़ में नर्म दिल वाक़े हुए और अगर कहीं आप तुन्दख़ू और दिल के सख़्त होते तो ये लोग कभी के आपके पास से मुंतशिर हो चुके होते। सो अब आप उनको माफ़ कर दीजिए और उनके लिए अल्लाह तआला से बख़्शिश तलब कीजिए और उनसे अहम कामों में मश्विरा करते रहा कीजिए। फिर जब आप किसी चीज़ का पुख़्ता इरादा कर लें तो अल्लाह तआला पर भरोसा कीजिए। बेशक अल्लाह तआला तवक्कुल करने वालों को महबूब रखता है। (आले इमरान : 159)

وَقَالَ تَعَالَى : ﴿خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ۔ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۗ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ﴾ [الاعراف:١٩٩-٢٠٠]

अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : दरगुज़र करने को आप अपनी आदत बनाइए और नेकी का हुक्म करते रहिए (और जो इस नेकी के हुक्म के बाद भी जिहालत की वजह से न माने, तो ऐसे) जाहिलों से एराज़ कीजिए, यानी उनसे उलझने की ज़रूरत नहीं और अगर (उनकी जिहालत पर इत्तिफ़ाक़न) आपको शैतान की तरफ़ से (ग़ुस्से का) कोई वस्वसा आने लगे, तो इस हालत में फ़ौरन अल्लाह तआला की पनाह मांग लिया कीजिए। बिलाशुब्हा वह ख़ूब सुनने वाले, ख़ूब जानने वाले हैं। (आराफ़ : 199-200)

وَقَالَ تَعَالَى : ﴿وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا﴾ [المزمل:١٠]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : और ये लोग जो तकलीफ़देह बातें करते हैं आप उन बातों पर सब्र कीजिए और ख़ुशउस्लूबी के साथ उनसे इलाहिदा हो जाइए, यानी न तो शिकायत कीजिए और न ही इंतक़ाम की फ़िक्र कीजिए। (मुज़्ज़म्मिल : 10)

Copyright © O

# नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 99 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ حَدَّثَتْ أَنَّهَا قَالَتْ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! هَلْ أَتَى عَلَيْكَ يَوْمٌ كَانَ أَشَدَّ مِنْ يَوْمِ أُحُدٍ؟ فَقَالَ: لَقَدْ لَقِيْتُ مِنْ قَوْمِكِ، وَكَانَ أَشَدُّ مَا لَقِيْتُ مِنْهُمْ يَوْمَ الْعَقَبَةِ، إِذْ عَرَضْتُ نَفْسِيْ عَلَى ابْنِ عَبْدِ يَالِيْلَ بْنِ عَبْدِ كُلَالٍ، فَلَمْ يُجِبْنِيْ إِلَى مَا أَرَدْتُ، فَانْطَلَقْتُ وَأَنَا مَهْمُوْمٌ عَلَى وَجْهِيْ، فَلَمْ أَسْتَفِقْ إِلَّا بِقَرْنِ الثَّعَالِبِ، فَرَفَعْتُ رَأْسِيْ فَإِذَا أَنَا بِسَحَابَةٍ قَدْ أَظَلَّتْنِيْ، فَنَظَرْتُ فَإِذَا فِيْهَا جِبْرَئِيْلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ، فَنَادَانِيْ، فَقَالَ: إِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ قَدْ سَمِعَ قَوْلَ قَوْمِكَ لَكَ وَمَا رَدُّوْا عَلَيْكَ، وَقَدْ بَعَثَ إِلَيْكَ مَلَكَ الْجِبَالِ لِتَأْمُرَهُ بِمَا شِئْتَ فِيْهِمْ، قَالَ: فَنَادَانِيْ مَلَكُ الْجِبَالِ وَسَلَّمَ عَلَيَّ، ثُمَّ قَالَ: يَامُحَمَّدُ! إِنَّ اللهَ قَدْ سَمِعَ قَوْلَ قَوْمِكَ لَكَ، وَأَنَا مَلَكُ الْجِبَالِ، وَقَدْ بَعَثَنِيْ رَبُّكَ إِلَيْكَ لِتَأْمُرَنِيْ بِأَمْرِكَ، فَمَاشِئْتَ؟ (إِنْ شِئْتَ) أَطْبَقْتُ عَلَيْهِمُ الْأَخْشَبَيْنِ، فَقَالَ لَهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: بَلْ أَرْجُوْ أَنْ يُخْرِجَ اللهُ تَعَالَى مِنْ أَصْلَابِهِمْ مَنْ يَعْبُدُ اللهَ وَحْدَهُ، لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا.

رواه مسلم، باب مالقي النبي ﷺ من أذى المشركين والمنافقين، رقم: ٤٦٥٣

99\. उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप पर उहुद के दिन से भी ज़्यादा सख़्त कोई दिन गुज़रा है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे तुम्हारी क़ौम से बहुत ज़्यादा तकलीफ़ें उठानी पड़ीं। सबसे ज़्यादा तकलीफ़ अक़बा (ताइफ़) के दिन उठानी पड़ी। मैंने (अह्ले ताइफ़ के सरदार) इब्ने अ़ब्द यालील बिन अ़ब्दे कुलाल के सामने अपने आपको पेश किया (कि मुझ पर ईमान लाओ, मेरी नुसरत करो और मुझे अपने यहां ठहरा कर दावत का काम आज़ादी से करने दो) लेकिन उसने मेरी बात न मानी। मैं (ताइफ़ से) बहुत ग़मगीन और परेशान होकर अपने रास्ते पर (वापस) चल पड़ा। क़रने सआलिब मक़ाम पर पहुंचकर (मेरे इस ग़म और परेशानी में) कुछ कमी आई तो मैंने अपना सर उठाया तो देखा कि एक बादल का टुकड़ा मुझ पर साया किए हुए है। मैंने ग़ौर से देखा तो उसमें हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम थे। उन्होंने मुझे पुकारा और अ़र्ज़ किया कि अल्लाह तआला ने आपकी क़ौम की वह गुफ़्तगू जो आपसे हुई सुनी और उनके जवाबात सुने और पहाड़ों पर मुतऐय्यन फ़रिश्तों को आपके पास Copyright © Ot उन कुफ़्फ़ार के बारे में जो चाहें उसे हुक्म दें। उसके बाद पहाड़ों के फ़रिश्ते ने मुझे

आवाज़ देकर सलाम किया और अ़र्ज़ किया : ऐ मुहम्मद! अल्लाह तआ़ला ने आपकी क़ौम की वह गुफ़्तगू जो आपसे हुई, सुनी। मैं पहाड़ों का फ़रिश्ता हूं, मुझे आपके रब ने आपके पास इसलिए भेजा है कि आप मुझे जो चाहें हुक्म फ़रमाएं। आप क्या चाहते हैं? अगर आप चाहें तो मैं मक्का के दोनों पहाड़ों (अबू क़ुबीस और अहमर) को मिला दूं (जिससे ये सब दर्मियान में कुचल जाएं) रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नहीं, बल्कि मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला उनकी पुश्तों में से ऐसे लोगों को पैदा फ़रमाएंगे जो अल्लाह तआ़ला की इबादत करेंगे और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करेंगे। (मुस्लिम)

﴿ 100 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فِيْ سَفَرٍ فَاَقْبَلَ اَعْرَابِيٌّ فَلَمَّا دَنَا قَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: اَيْنَ تُرِيْدُ؟ قَالَ: اِلٰى اَهْلِيْ قَالَ: هَلْ لَكَ فِيْ خَيْرٍ؟ قَالَ: وَمَاهُوَ؟ قَالَ: تَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَاشَرِيْكَ لَهُ وَ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ، قَالَ: مَنْ شَاهِدٌ عَلٰى مَاتَقُوْلُ؟ قَالَ: هٰذِهِ الشَّجَرَةُ فَدَعَا هَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَهِيَ بِشَاطِئِ الْوَادِي فَاَقْبَلَتْ تَخُدُّ الْاَرْضَ خَدًّا حَتّٰى جَاءَ تْ بَيْنَ يَدَيْهِ فَاسْتَشْهَدَهَا ثَلَاثًا فَشَهِدَتْ اَنَّهُ كَمَا قَالَ، ثُمَّ رَجَعَتْ اِلٰى مَنْبَتِهَا وَرَجَعَ الْاَعْرَابِيُّ اِلٰى قَوْمِهِ وَقَالَ: اِنْ يَّتَّبِعُوْنِيْ آتِيْكَ بِهِمْ وَاِلَّا رَجَعْتُ اِلَيْكَ فَكُنْتُ مَعَكَ.

رواه الطبراني ورجاله رجال الصحيح ورواه ابو يعلى ايضا والبزار مجمع الزوائد [illegible]

100. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ؓ फ़रमाते हैं कि हम एक सफ़र में रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे, सामने से एक देहाती शख़्स आते हुए नज़र आए। जब वह रसूलुल्लाह ﷺ के क़रीब पहुंचे तो उनसे रसूलुल्लाह ﷺ ने पूछा, कहां का इरादा है? उन्होंने कहा, अपने घर जा रहा हूं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम्हें कोई भली बात चाहिए? उन्होंने कहा, वह भली बात क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम कलिमा-ए-शहादत 'अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अन-न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू० पढ़ लो। उन्होंने कहा जो बात आप कह रहे हैं उस पर कौन गवाह है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह दरख़्त गवाह है, चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ ने उस दरख़्त को बुलाया जो वादी के किनारे पर था। वह दरख़्त ज़मीन को फाड़ता हुआ आप ﷺ के सामने आकर खड़ा हो गया। आप ﷺ ने उससे तीन मर्तबा गवाही तलब फ़रमाई, उसने तीन मर्तबा गवाही दी कि रसूलुल्लाह ﷺ जैसा फ़रमा रहे हैं वैसा ही है, फिर वह दरख़्त अपनी जगह वापस चला गया (वह

Copyright © O

सब कुछ देखकर देहात के रहने वाले वह शख़्स बड़े मुतास्सिर हुए) और अपनी क़ौम के पास वापस जाते हुए उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से अ़र्ज़ किया कि अगर मेरी क़ौम वालों ने मेरी बात मान ली, तो मैं उन सबको आपके पास ले आऊंगा, वरना मैं ख़ुद आपके पास वापस आऊंगा और आपके साथ रहूंगा।

(तबरानी, अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾101﴿ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ لِعَلِيٍّ يَوْمَ خَيْبَرَ: اُنْفُذْ عَلَى رِسْلِكَ، حَتّٰى تَنْزِلَ بِسَاحَتِهِمْ، ثُمَّ ادْعُهُمْ إِلَى الْإِسْلَامِ، وَأَخْبِرْهُمْ بِمَا يَجِبُ عَلَيْهِمْ مِنْ حَقِّ اللهِ فِيْهِ، فَوَاللهِ! لَأَنْ يَهْدِيَ اللهُ بِكَ رَجُلًا وَاحِدًا خَيْرٌ لَكَ مِنْ أَنْ يَكُوْنَ لَكَ حُمْرُ النَّعَمِ. (وهو جزء من الحديث) رواه مسلم باب من فضائل علي بن ابي طالب رضي الله عنه، رقم: ٦٢٢٣

101. हज़रत सह्ल बिन साद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने ग़ज़्वा ख़ैबर के दिन हज़रत अ़ली ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : तुम इत्मीनान से चलते रहो यहां तक कि ख़ैबर वालों के मैदान में पड़ाव डालो। फिर उनको इस्लाम की दावत दो और अल्लाह तआ़ला के जो हुक़ूक़ उन पर हैं उनको बताना। अल्लाह तआ़ला की क़सम! अल्लाह तआ़ला तुम्हारे ज़रिए से एक आदमी को भी हिदायत दे दें ये तुम्हारे लिए सुर्ख़ ऊंटों के मिल जाने से बेहतर है। (मुस्लिम)

फ़ायदा : अरबों में सुर्ख़ ऊंट बहुत क़ीमती माल समझा जाता था।

﴾102﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ آيَةً. (الحديث) رواه البخاري باب ما ذكر عن بني اسرائيل، رقم: ٣٤٦١

102. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी तरफ़ से पहुंचाओ अगरचे एक ही आयत हो। (बुख़ारी)

फ़ायदा : हदीस का मक़सद यह है कि जहां तक हो सके दीन की बात पहुंचाने की कोशिश करनी चाहिए। हो सकता है कि तुम जिस बात को दूसरों तक पहुंचा रहे हो गो वह बहुत मुख़्तसर हो मगर उससे दूसरे को हिदायत मिल जाए जिसका अज्र तुम्हें भी मिलेगा और बेशुमार नेकियों से नवाज़े जाओगे। (मज़ाहिरे हक़)

﴾103﴿ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ عَائِذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا بَعَثَ بَعْثًا قَالَ: تَأَلَّفُوا النَّاسَ، وَتَأَنَّوْا بِهِمْ، وَلَا تُغِيْرُوْا عَلَيْهِمْ حَتّٰى تَدْعُوْهُمْ فَمَا عَلَى الْأَرْضِ مِنْ أَهْلِ بَيْتٍ

Copyright © Ot

مَـدَرٍ وَلَا وَبَـرٍ إِلَّا وَأَنْ تَـأْتُـوْنِيْ بِهِـمْ مُسْلِمِيْنَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ تَقْتُلُوْا رِجَالَهُمْ، وَتَأْتُوْنِيْ بِنِسَائِهِمْ.

المطالب العالية ٢/١٦٦، وذكر صاحب الاصابة بنحوه ٢/١٥٢

103. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन आइज़ ﷺ फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह ﷺ कोई लशकर रवाना करते तो उनको फ़रमाते कि लोगों से उल्फ़त पैदा करो, यानी उनको अपने से मानूस करो, उनके साथ नर्मी का बरताव करो और जब तक उनको दावत न दे दो उन पर हमला न करो क्योंकि रुए ज़मीन पर जितने कच्चे और पक्के मकान हैं यानी जितने शहर और देहात हैं उनके रहने वालों को अगर तुम मुसलमान बना कर मेरे पास ले आओ यह मुझे उससे ज़्यादा महबूब है कि तुम उनके मर्दों को क़त्ल करो और उनकी औरतों को मेरे पास (बांदियां बना कर) ले आओ।

(मतालिब आलिया, इसाबा)

﴿104﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: تَسْمَعُوْنَ وَيُسْمَعُ مِنْكُمْ، وَيُسْمَعُ مِمَّنْ يَسْمَعُ مِنْكُمْ.

رواه ابوداؤد باب فضل نشر العلم رقم: ٣٦٥٩

104. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आज तुम मुझ से दीन की बातें सुनते हो, कल तुम से दीन की बातें सुनी जाएंगी। फिर उन लोगों से दीन की बातें सुनी जाएंगी जिन लोगों ने तुम से दीन की बातें सुनी थीं (लिहाज़ा तुम ख़ूब ध्यान से सुनो और उसको अपने बाद वालों तक पहुंचाओ, फिर वे लोग अपने बाद वालों तक पहुंचाएंगे और यह सिलसिला चलता रहे)।

(अबूदाऊद)

﴿105﴾ عَنِ الْأَحْنَفِ بْنِ قَيْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا أَنَا أَطُوْفُ بِالْبَيْتِ فِيْ زَمَنِ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ إِذْ جَاءَ رَجُلٌ مِنْ بَنِيْ لَيْثٍ وَأَخَذَ بِيَدِيْ فَقَالَ: أَلَا أُبَشِّرُكَ؟ قُلْتُ: بَلٰى! فَقَالَ: هَلْ تَذْكُرُ إِذْ بَعَثَنِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِلٰى قَوْمِكَ بَنِيْ سَعْدٍ فَجَعَلْتُ أَعْرِضُ عَلَيْهِمُ الْإِسْلَامَ وَأَدْعُوْهُمْ إِلَيْهِ فَقُلْتَ أَنْتَ: إِنَّكَ تَدْعُوْ إِلَى الْخَيْرِ وَتَأْمُرُ بِالْخَيْرِ وَإِنَّهُ لَيَدْعُوْ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُ بِالْخَيْرِ فَبَلَّغْتُ ذٰلِكَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِلْأَحْنَفِ بْنِ قَيْسٍ. فَكَانَ الْأَحْنَفُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: مَا مِنْ عَمَلِيْ شَيْءٌ أَرْجٰى لِيْ مِنْهُ.

رواه الحاكم في المستدرك ٣/٦١٤

105. हज़रत अहनफ़ बिन क़ैस ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत उस्मान ﷺ के ज़माने में बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहा था कि इतने में क़बीला बनू लैस के एक आदमी

Copyright © O

आए। उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर कहा, क्या मैं तुमको एक ख़ुशख़बरी न सुना दूं? मैंने कहा, ज़रूर सुना दें। उन्होंने कहा, क्या तुम्हें याद है जबकि रसूलुल्लाह ने मुझे तुम्हारी क़ौम बनी साद के पास (इस्लाम की दावत देने के लिए) भेजा था तो मैंने उन पर इस्लाम को पेश करना शुरू किया और उनको इस्लाम की दावत देने लगा। उस वक़्त तुम ने कहा था कि तुम हमें भलाई की दावत दे रहे हो और भली बात का हुक्म कर रहे हो और वह (रसूलुल्लाह ﷺ) भी भलाई की दावत दे रहे हैं और भली बात का हुक्म कर रहे हैं, यानी तुमने रसूलुल्लाह ﷺ की दावत की तस्दीक़ की तो मैंने तुम्हारी यह बात रसूलुल्लाह ﷺ को पहुंचा दी थी। आप ﷺ ने (तुम्हारी) इस (तस्दीक़) पर फ़रमाया था : "या अल्लाह अहनफ़ बिन कैस की मग़्फ़िरत फ़रमा दीजिए"। हज़रत अहनफ़ ﵁ फ़रमाया करते थे मुझे रसूलुल्लाह ﷺ की इस दुआ से ज़्यादा अपने किसी अ़मल पर उम्मीद नहीं। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿106﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اَرْسَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ رَجُلاً مِنْ اَصْحَابِهِ اِلَى رَاْسٍ مِنْ رُؤُوْسِ الْمُشْرِكِيْنَ يَدْعُوْهُ اِلَى اللهِ فَقَالَ: هٰذَا الْاِلٰهُ الَّذِىْ تَدْعُوْ اِلَيْهِ اَمِنْ فِضَّةٍ هُوَ؟ اَمْ مِنْ نُحَاسٍ هُوَ؟ فَتَعَاظَمَ مَقَالَتُهُ فِىْ صَدْرِ رَسُوْلِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَرَجَعَ اِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَاَخْبَرَهُ فَقَالَ: ارْجِعْ اِلَيْهِ فَادْعُهُ اِلَى اللهِ، فَرَجَعَ فَقَالَ لَهُ مِثْلَ مَقَالَتِهِ فَاَتَى رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فَاَخْبَرَهُ فَقَالَ: ارْجِعْ اِلَيْهِ فَادْعُهُ اِلَى اللهِ، وَرَسُوْلُ اللهِ ﷺ فِى الطَّرِيْقِ لَا يَعْلَمُ فَاَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَاَخْبَرَهُ اَنَّ اللهَ قَدْ اَهْلَكَ صَاحِبَهُ وَنَزَلَتْ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ "وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِى اللهِ". رواه ابويعلى، قال المحقق: اسناده حسن ٣/٥١

106. हज़रत अनस ﵁ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक सहाबी को मुश्रिकीन के सरदारों में से एक सरदार के पास अल्लाह तआ़ला की तरफ़ दावत देने के लिए भेजा (चुनांचे उन्होंने जाकर उसको दावत दी) उस मुश्रिक ने कहा कि जिस माबूद की तरफ़ तुम मुझे दावत दे रहे हो, वह चांदी का बना हुआ है या तांबे का? उस मुश्रिक की बात रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ़ से भेजे हुए क़ासिद को बहुत नागवार गुज़री। वह रसूलुल्लाह ﷺ के पास आए और आपको मुश्रिक की यह बात बताई। आप ﷺ ने सहाबी से इर्शाद फ़रमाया : तुम दोबारा उस मुश्रिक को जाकर दावत दो। चुनांचे उन्होंने दोबारा जाकर दावत दी। मुश्रिक ने अपनी पहली बात दोहराई। वह सहाबी रसूलुल्लाह ﷺ के पास आए और मुश्रिक की बात बताई। आप ﷺ ने फिर इर्शाद फ़रमाया : जाओ उसको दावत दो (चुनांचे वह सहाबी तीसरी मर्तबा

Copyright © O

दावत देने के लिए तशरीफ़ ले गए) फिर वापस आकर रसूलुल्लाह ﷺ को बताया कि अल्लाह तआला ने तो उस मुश्रिक को (बिजली की कड़क भेजकर) हलाक कर दिया है। रसूलुल्लाह ﷺ रास्ते में थे आपको इस वाक़िआ का इल्म नहीं था, उस मौक़े पर रसूलुल्लाह ﷺ पर अल्लाह तआला का यह इर्शाद नाज़िल हुआ। तर्जुमा : और अल्लाह तआला ज़मीन की तरफ़ बिजलियां भेजते हैं, फिर जिस पर चाहे गिरा देते हैं और ये लोग अल्लाह तआला के बारे में झगड़ते हैं। (मुस्नद अहमद, अबूयाला)

﴿107﴾ عن ابن عباس رضي الله عنهما قال: قال رسول الله ﷺ لمعاذ بن جبل رضي الله عنه حين بعثه إلى اليمن: إنك ستأتي قوما أهل كتاب، فإذا جئتهم فادعهم إلى أن يشهدوا أن لا إله إلا الله، وأن محمدا رسول الله، فإن هم أطاعوا لك بذلك فأخبرهم أن الله قد فرض عليهم خمس صلوات في كل يوم وليلة، فإن هم أطاعوا لك بذلك فأخبرهم أن الله قد فرض عليهم صدقة تؤخذ من أغنيائهم فترد على فقرائهم، فإن هم أطاعوا لك بذلك فإياك وكرائم أموالهم، واتق دعوة المظلوم، فإنه ليس بينها وبين الله حجاب.

رواه البخاري، باب اخذ الصدقة من الاغنياء......رقم: ١٤٩٦

107. हज़रत इब्ने अब्बास ؓ फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत मुआज़ बिन जबल ؓ को यमन भेजा, तो उनको यह हिदायत दी कि तुम ऐसी क़ौम के पास जा रहे हो जो अह्ले किताब हैं। जब तुम उनके पास पहुंच जाओ तो उनको इस बात की दावत देना कि वे यह गवाही दें कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं है और मुहम्मद ﷺ अल्लाह तआला के रसूल हैं। अगर वे तुम्हारी बात मान लें, तो फिर उनको बताना कि अल्लाह तआला ने उन पर दिन रात में पांच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं। अगर वे तुम्हारी यह बात भी मान लें तो फिर उनको बताना कि अल्लाह तआला ने उन पर ज़कात फ़र्ज़ की है, जो उनके मालदारों से लेकर उनके ग़रीबों को दी जाएगी। अगर वे तुम्हारी यह बात भी मान लें तो फिर उनके उम्दा मालों के लेने से बचना यानी ज़कात में दर्मियाना दर्जे का माल लेना उम्दा माल न लेना और मज़्लूम की बद-दुआ से बचना, क्योंकि उसकी बद-दुआ और अल्लाह तआला के दर्मियान कोई आड़ नहीं। (बुख़ारी)

﴿108﴾ عن البراء رضي الله عنه أن رسول الله ﷺ بعث خالد بن الوليد إلى أهل
Copyright © O إلى الإسلام، قال البراء: فكنت فيمن خرج مع خالد بن الوليد فأقمنا

سِتَّةَ اَشْهُرٍ يَدْعُوْهُمْ اِلَى الْاِسْلَامِ فَلَمْ يُجِيْبُوْهُ، ثُمَّ اِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ بَعَثَ عَلِيَّ بْنَ اَبِيْ طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَاَمَرَهُ اَنْ يُقْفِلَ خَالِدًا اِلَّا رَجُلًا كَانَ مِمَّنْ مَعَ خَالِدٍ فَاَحَبَّ اَنْ يُعَقِّبَ مَعَ عَلِيٍّ فَلْيُعَقِّبْ مَعَهُ، قَالَ الْبَرَاءُ: فَكُنْتُ فِيْمَنْ عَقَّبَ مَعَ عَلِيٍّ فَلَمَّا دَنَوْنَا مِنَ الْقَوْمِ خَرَجُوْا اِلَيْنَا ثُمَّ تَقَدَّمَ فَصَلّٰى بِنَا عَلِيٌّ ثُمَّ صَفَّنَا صَفًّا وَاحِدًا ثُمَّ تَقَدَّمَ بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَقَرَاَ عَلَيْهِمْ كِتَابَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَاَسْلَمَتْ هَمْدَانُ جَمِيْعًا، فَكَتَبَ عَلِيٌّ اِلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ بِاِسْلَامِهِمْ، فَلَمَّا قَرَاَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ الْكِتَابَ خَرَّ سَاجِدًا ثُمَّ رَفَعَ رَاْسَهُ فَقَالَ: "اَلسَّلَامُ عَلٰى هَمْدَانَ، اَلسَّلَامُ عَلٰى هَمْدَانَ" قال البيهقي: رواه البخاري مختصرا من وجه آخر عن ابراهيم بن يوسف، البداية والنهاية ٥/١٠١

108. हज़रत बरा ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ﷺ को इस्लाम की दावत देने के लिए यमन भेजा। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद के साथ जाने वाली जमाअत में मैं भी था। हम छः महीने वहां ठहरे। हज़रत ख़ालिद उनको दावत देते रहे लेकिन उन्होंने इस दावत को क़ुबूल न किया। फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब ﷺ को वहां भेजा और उनसे फ़रमाया कि हज़रत ख़ालिद को तो वापस भेज दें और उनके साथियों में से जो तुम्हारे साथ वहां रहना चाहें व रह जाएं। चुनांचे हज़रत बरा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं भी उन लोगों में था जो हज़रत अ़ली ﷺ के साथ ठहर गए। जब हम यमन वालों के बिल्कुल क़रीब पहुंचे तो वह भी निकल कर हमारे सामने आ गए। हज़रत अ़ली ﷺ ने आगे बढ़कर हमें नमाज़ पढ़ाई, फिर हमारी एक सफ़ बनाई और हम से आगे बढ़कर उनको रसूलुल्लाह ﷺ का ख़त सुनाया। ख़त सुनकर क़बीला हमदान सारा ही मुसलमान हो गया। हज़रत अ़ली ﷺ ने रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में क़बीला हमदान के मुसलमान होने की ख़ुशख़बरी का ख़त भेजा। जब रसूलुल्लाह ﷺ ने वह ख़त पढ़ा तो (ख़ुशी की वजह से) सज्दा में गिर गए, फिर आप ﷺ ने सज्दा से सर उठाकर क़बीला हमदान को दुआ दी कि हमदान पर सलामती हो, हमदान पर सलामती हो।

(बुख़ारी, बैहक़ी, अलबिदायः वन्निहायः)

﴾109﴿ عَنْ خُرَيْمِ بْنِ فَاتِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ اَنْفَقَ نَفَقَةً فِيْ سَبِيْلِ اللهِ كُتِبَتْ لَهُ بِسَبْعِمِائَةِ ضِعْفٍ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن باب ما جاء في فضل النفقة في سبيل الله، رقم: ١٦٢٥

Copyright © O

109. हज़रत ख़ुरैम बिन फ़ातिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के रास्ते में कुछ ख़र्च करता है वह उसके आ़मालनामा में सात सौ गुना लिखा जाता है। (तिर्मिज़ी)

﴿110﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ الصَّلَاةَ وَالصِّيَامَ وَالذِّكْرَ يُضَاعَفُ عَلَى النَّفَقَةِ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ بِسَبْعِ مِائَةِ ضِعْفٍ۔

رواه ابو داؤد، باب فی تضعیف الذکر فی سبیل اللّٰہ عزّوجلّ رقم: ۲۴۹۸

110. हज़रत मुआ़ज़ ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला के रास्ते में नमाज़, रोज़ा और ज़िक्र का सवाब अल्लाह तआ़ला की राह में माल ख़र्च करने के सवाब से सात सौ गुना बढ़ा दिया जाता है। (अबूदाऊद)

﴿111﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ الذِّكْرَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ يُضَعَّفُ فَوْقَ النَّفَقَةِ بِسَبْعِ مِائَةِ ضِعْفٍ۔ قال یحییٰ فی حدیثہ: بِسَبْعِمِائَةِ اَلْفِ ضِعْفٍ.

رواه احمد ۳/۴۳۸

111. हज़रत मुआ़ज़ ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला के रास्ते में ज़िक्र का सवाब (अल्लाह तआ़ला के रास्ते में) ख़र्च करने के सवाब से सात सौ गुना बढ़ा दिया जाता है। एक रिवायत में है कि सात लाख गुना सवाब बढ़ा दिया जाता है। (मुस्नद अहमद)

﴿112﴾ عَنْ مُعَاذٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَرَاَ اَلْفَ آيَةٍ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ كَتَبَهُ اللهُ مَعَ النَّبِيِّيْنَ، وَ الصِّدِّيْقِيْنَ، وَ الشُّهَدَاءِ، وَالصَّالِحِيْنَ۔

رواه الحاکم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبی ۲/۸۷

112. हज़रत मुआ़ज़ जुहनी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने अल्लाह तआ़ला के रास्ते में हज़ार आयतें तिलावत कीं अल्लाह तआ़ला उसे अम्बिया अलैहि०, सिद्दीक़ीन, शुहदा और नेक लोगों की जमाअत में लिख देंगे। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿113﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مَا كَانَ فِيْنَا فَارِسٌ يَوْمَ بَدْرٍ غَيْرَ الْمِقْدَادِ وَلَقَدْ رَاَيْتُنَا وَمَا فِيْنَا اِلَّا نَائِمٌ اِلَّا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ تَحْتَ شَجَرَةٍ يُصَلِّيْ وَ يَبْكِيْ حَتّٰى اَصْبَحَ

Copyright © O

رواه احمد ۱/۱۲۵

113. हज़रत अली ﷺ फ़रमाते हैं कि बद्र के दिन हज़रत मिक़दाद ﷺ के अलावा हम में और कोई घोड़े पर सवार नहीं था। मैंने देखा कि रसूलुल्लाह ﷺ के अलावा हम सब सोए हुए थे। रसूलुल्लाह ﷺ एक दरख़्त के नीचे नमाज़ पढ़ते रहे और रोते रहे, यहां तक कि सुबह हो गई। (मुस्नद अहमद)

﴿114﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَنْ صَامَ یَوْمًا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ بَاعَدَ اللّٰہُ بَیْنَہُ وَبَیْنَ النَّارِ بِذٰلِكَ الْیَوْمِ سَبْعِیْنَ خَرِیْفًا۔

رواہ النسائی،باب ثواب من صام ... رقم: ۲۲٤۷

114. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स एक दिन अल्लाह तआला के रास्ते में रोज़ा रखे, अल्लाह तआला उस एक दिन के बदले दोज़ख़ और उस शख़्स के दरमियान सत्तर साल का फ़ासला कर देंगे। (नसाई)

﴿115﴾ عَنْ عَمْرِوبْنِ عَبَسَةَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَنْ صَامَ یَوْمًا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ بَعُدَتْ مِنْہُ النَّارُ مَسِیْرَۃَ مِائَۃِ عَامٍ۔

رواہ الطبرانی فی الکبیر والاوسط ورجالہ موثقون، مجمع الزوائد ۳/٤٤٤

115. हज़रत उम्र बिन अबसा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने एक दिन अल्लाह तआला के रास्ते में रोज़ा रखा उससे जहन्नम की आग सौ साल की मुसाफ़त के बक़द्र दूर हो जाएगी। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿116﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَۃَ الْبَاهِلِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ صَامَ یَوْمًا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ جَعَلَ اللّٰہُ بَیْنَہُ وَبَیْنَ النَّارِ خَنْدَقًا کَمَا بَیْنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ۔ رواہ الترمذی وقال: ھذا حدیث غریب، باب ماجاء فی فضل الصوم فی سبیل اللّٰہ رقم: ۱٦٢٤

116. हज़रत अबू उमामा बाहिली ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने अल्लाह तआला के रास्ते में एक दिन रोज़ा रखा, अल्लाह तआला उसके और दोज़ख़ के दर्मियान इतनी बड़ी ख़न्दक़ को आड़ बना देते हैं जितना आसमान व ज़मीन के दर्मियान फ़ासला है। (तिर्मिज़ी)

﴿117﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: کُنَّا مَعَ النَّبِیِّ ﷺ اَکْثَرُنَا ظِلًّا مَنْ یَسْتَظِلُّ بِکِسَائِہٖ، وَاَمَّا الَّذِیْنَ صَامُوْا فَلَمْ یَعْمَلُوْا شَیْئًا، وَاَمَّا الَّذِیْنَ اَفْطَرُوْا فَبَعَثُوا الرِّکَابَ وَامْتَهَنُوْا وَعَالَجُوْا،

Copyright © Ot

فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ذَهَبَ الْمُفْطِرُوْنَ الْيَوْمَ بِالْأَجْرِ.

رواه البخاري،باب فضل الخدمة في الغزو، رقم: ٢٨٩٠

117. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि हम लोग रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे, हममें सबसे ज़्यादा साए वाला शख़्स वह था जिसने अपनी चादर से साया किया हुआ था। जिन्होंने रोज़ा रखा हुआ था वह तो कुछ न कर सके और जिन्होंने रोज़ा नहीं रखा था उन्होंने सवारियों को (पानी पीने और चरने के लिए) भेजा और ख़िदमत के काम मेहनत और मशक़्क़त से किए। यह देखकर रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिन लोगों ने रोज़ा नहीं रखा, वे आज सारा सवाब ले गए। (बुख़ारी)

﴿118﴾ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نَغْزُوْ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فِيْ رَمَضَانَ، فَمِنَّا الصَّائِمُ وَمِنَّا الْمُفْطِرُ، فَلَا يَجِدُ الصَّائِمُ عَلَى الْمُفْطِرِ، وَلَا الْمُفْطِرُ عَلَى الصَّائِمِ، يَرَوْنَ أَنَّ مَنْ وَجَدَ قُوَّةً فَصَامَ، فَإِنَّ ذٰلِكَ حَسَنٌ، وَيَرَوْنَ أَنَّ مَنْ وَجَدَ ضَعْفًا فَأَفْطَرَ، فَإِنَّ ذٰلِكَ حَسَنٌ.

رواه مسلم،باب جواز الصوم والفطر في شهر رمضان ... ،رقم: ٢٦١٨

118. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं कि हम लोग रमज़ान के महीने में रसूलुल्लाह ﷺ के साथ ग़ज़्वा में जाया करते थे, तो हमारे कुछ साथी रोज़ा रख लेते और कुछ साथी रोज़ा न रखते। रोज़ेदार रोज़ा न रखने वालों पर नाराज़ न होते और रोज़ा न रखने वाले रोज़दारों पर नाराज़ न होते। सब यह जानते थे कि जो अपने में हिम्मत महसूस करता है और उसने रोज़ा रख लिया, उसके लिए ऐसा करना ही ठीक है और जो अपने में कमज़ोरी महसूस करता है और उसने रोज़ा नहीं रखा, उसने भी ठीक किया। (मुस्लिम)

﴿119﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ الْخَطْمِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَسْتَوْدِعَ الْجَيْشَ قَالَ: أَسْتَوْدِعُ اللهَ دِيْنَكُمْ وَأَمَانَتَكُمْ وَخَوَاتِيْمَ أَعْمَالِكُمْ.

رواه ابوداؤد،باب في الدعاء عند الوداع، رقم: ٢٦٠١

119. हज़रत अब्दुल्लाह ख़त्मी ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी लश्कर को रवाना फ़रमाने का इरादा करते तो इर्शाद फ़रमाते : तर्जुमा : मैं तुम्हारे दीन को, तुम्हारी अमानतों को और तुम्हारे आमाल के ख़ात्मों को अल्लाह तआला के हवाले करता हूं (जिसकी हिफ़ाज़त में दी हुई चीज़ें ज़ाय नहीं होतीं)। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : अमानतों से मुराद अह्ल व अयाल, माल व दौलत, साज़ व सामान है कि

Copyright © Ot

ये सब चीज़ें अल्लाह तआला की तरफ़ से बन्दे के पास अमानत के तौर पर रखवाई गई हैं, इस तरह ये अमानतें भी मुराद हैं, जो जाने वाले मुसाफ़िर के पास लोगों की रखी हुई हों या लोगों के पास उस मुसाफ़िर ने रखवाई हों। इस मुख़्तसर जुम्ले में कैसी जामे दुआ दी गई है कि अल्लाह तआला तुम्हारे दीन की, अह्ल व अयाल की, माल व दौलत की हिफ़ाज़त फ़रमाए और तुम्हारे आमाल का ख़ात्मा [illegible]

[illegible]

١٢٠- عن علي بن ربيعة رحمه الله قال: شهدت عليًّا رضي الله عنه وأتي بدابة ليركبها، فلما وضع رجله في الركاب قال: بسم الله، فلما استوى على ظهرها قال: الحمد لله، ثم قال: سبحان الذي سخر لنا هذا وما كنا له مقرنين وإنا إلى ربنا لمنقلبون، ثم قال: الحمد لله، ثلاث مرات، ثم قال: الله أكبر ثلاث مرات، ثم قال: سبحانك إني ظلمت نفسي فاغفر لي إنه لا يغفر الذنوب إلا أنت، ثم ضحك، فقيل: يا أمير المؤمنين! من أي شيء ضحكت؟ قال: رأيت رسول الله ﷺ فعل كما فعلت، ثم ضحك فقلت: يا رسول الله! من أي شيء ضحكت؟ قال: إن ربك تعالى يعجب من عبده إذا قال: اغفر لي ذنوبي، يعلم أنه لا يغفر الذنوب غيري.

رواه ابو داؤد باب ما يقول الرجل اذا ركب، رقم: [illegible]

120. हज़रत अली बिन रबीआ रहमतुल्लाह अलैह रिवायत करते हैं कि मैं हज़रत अली ؓ के पास हाज़िर हुआ। आपके सामने सवारी के लिए एक जानवर लाया गया। जब आपने अपना पाँव रकाब में रखा तो फ़रमाया 'बिस्मिल्लाह' फिर जब सवारी की पुश्त पर बैठ गए तो फ़रमाया 'अल-हम्दु लिल्लाह' फिर फ़रमाया :

तर्जुमा : पाक है वह ज़ात जिसने इस सवारी को हमारे क़ाबू में कर दिया जबकि हम तो इसको क़ाबू में करने वाले न थे और बिला शुब्हा हम अपने ही रब की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। फिर तीन मर्तबा 'अल-हम्दु लिल्लाह' और तीन मर्तबा 'अल्लाहु अकबर' कहने के बाद फ़रमाया : तर्जुमा : आप पाक हैं, बेशक मैंने (नाफ़रमानी करके) अपने ऊपर बहुत ज़ुल्म किया, आप मुझे माफ़ फ़रमा दीजिए, आपके सिवा कोई गुनाहों को माफ़ नहीं कर सकता। फिर हज़रत अली ؓ हँसे। आप से पूछा गया : आप किस वजह से हँसे? आपने फ़रमाया : मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इसी तरह करते हुए देखा, जैसे मैंने किया (कि आप ﷺ ने दुआ पढ़ी) फिर हँसे।

Copyright © O

मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप किस बात पर हंसे? तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारे रब अपने बन्दे से ख़ुश होते हैं जब वह कहता है मेरे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दीजिए इसलिए कि बन्दा जानता है कि मेरे सिवा गुनाहों को बख़्शने वाला कोई नहीं। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : रकाब लोहे से बने हुए हल्क़े को कहते हैं जो घोड़े की ज़ीन में दोनों तरफ़ लटकता रहता है और सवार उस पर पांव रखकर घोड़ों पर चढ़ता है।

﴿121﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ اِذَا اسْتَوٰى عَلٰى بَعِيْرِهٖ خَارِجًا اِلٰى سَفَرٍ، كَبَّرَ ثَلاَ ثًا، قَالَ: سُبْحَانَ الَّذِيْ سَخَّرَلَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ، وَاِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ، اَللّٰهُمَّ! اِنَّا نَسْاَلُكَ فِيْ سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَ التَّقْوٰى، وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰى، اَللّٰهُمَّ! هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هٰذَا، وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهٗ، اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ، وَالْخَلِيْفَةُ فِي الْاَهْلِ، اَللّٰهُمَّ! اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ، وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ، وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالْاَهْلِ، وَاِذَا رَجَعَ قَالَهُنَّ، وَزَادَ فِيْهِنَّ: آئِبُوْنَ، تَائِبُوْنَ، عَابِدُوْنَ، لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ.

رواه مسلم،باب استحباب الذكر اذا ركب دابة...، رقم:٣٢٧٥

121. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﵄ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ जब सफ़र में जाने के लिए सवारी पर बैठ जाते तो तीन मर्तबा 'अल्लाहु अकबर' फ़रमाते, फिर यह दुआ पढ़ते :

سُبْحَانَ الَّذِيْ سَخَّرَلَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ، وَاِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ، اَللّٰهُمَّ! اِنَّا نَسْاَلُكَ فِيْ سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَ التَّقْوٰى، وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰى، اَللّٰهُمَّ! هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هٰذَا، وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهٗ، اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ، وَالْخَلِيْفَةُ فِي الْاَهْلِ، اَللّٰهُمَّ! اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ، وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ، وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالْاَهْلِ.

तर्जुमा : पाक है वह ज़ात, जिसने इस सवारी को हमारे क़ाबू में कर दिया जबकि हम तो इसको क़ाबू में करने वाले न थे और बिलाशुब्हा हम अपने रब ही की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। ऐ अल्लाह! हम अपने इस सफ़र में आप से नेकी और तक़्वा और ऐसे अमल का सवाल करते हैं, जिससे आप राज़ी हों। ऐ अल्लाह! हमारे इस सफ़र को हमारे लिए आसान फ़रमा दें और उसकी दूरी को हमारे लिए मुख़्तसर फ़रमा दें। ऐ अल्लाह! आप ही हमारे इस सफ़र में हमारे साथी हैं और हमारे पीछे आप ही हमारे घर वालों के निगहबान हैं। ऐ अल्लाह! मैं आपसे सफ़र की मशक़्क़त

Copyright © Ot

से, सफ़र में किसी तकलीफ़देह मंज़र को देखने से और वापसी पर माल और अहल व अयाल में किसी तकलीफ़देह चीज़ के पाने से पनाह चाहता हूं।

और जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो यही दुआ पढ़ते और इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा फ़रमाते : ''हम सफ़र से वापस आने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं और अपने रब की तारीफ़ करने वाले हैं।'' (मुस्लिम)

﴿122﴾ عَنْ صُهَيْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمْ يَرَ قَرْيَةً يُرِيدُ دُخُولَهَا إِلاَّ قَالَ حِينَ يَرَاهَا: اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوَاتِ السَّبْعِ وَمَا أَظْلَلْنَ، وَرَبَّ الْأَرَضِينَ السَّبْعِ وَمَا أَقْلَلْنَ، وَرَبَّ الشَّيَاطِينِ وَمَا أَضْلَلْنَ وَرَبَّ الرِّيَاحِ وَمَا ذَرَيْنَ فَإِنَّا نَسْأَلُكَ خَيْرَ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ وَخَيْرَ أَهْلِهَا، وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ أَهْلِهَا، وَشَرِّ مَا فِيهَا.

رواه الحاكم وقال هذا حديث صحيح الإسناد ووافقه الذهبي ١٠٠/٢

122. हज़रत सुहैब ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जब भी किसी बस्ती में दाख़िल होने का इरादा फ़रमाते तो उसे देख कर यह दुआ पढ़ते। तर्जुमा: ऐ अल्लाह! जो रब हैं सातों आसमानों के और उन तमाम चीज़ों के जिन पर सातों आसमान साया किये हुए हैं; और जो रब हैं सातों ज़मीनों के और उन तमाम चीज़ों के जिनको सातों ज़मीनों ने उठाया हुआ है; और जो रब हैं तमाम शयातिन के और उन सब के जिनको शयातिन ने गुमराह किया है; और जो रब हैं हवाओं के और उन चीज़ों के जिन्हें हवाओं ने उड़ाया है। हम आपसे इस बस्ती की ख़ैर और इस बस्ती वालों की ख़ैर मांगते हैं, और आपसे इस बस्ती के शर और इस बस्ती वालों के शर और इस बस्ती में जो कुछ है उसके शर से पनाह मांगते हैं। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿123﴾ عَنْ خَوْلَةَ بِنْتِ حَكِيمٍ السُّلَمِيَّةِ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا تَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: مَنْ نَزَلَ مَنْزِلاً ثُمَّ قَالَ: أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ، لَمْ يَضُرَّهُ شَيْءٌ، حَتّٰى يَرْتَحِلَ مِنْ مَنْزِلِهِ ذٰلِكَ.

رواه مسلم باب في التعوذ من سوء القضاء.... رقم ٦٨٧٨

123. हज़रत ख़ौला बिन्ते हकीम सुलमीय्या रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स किसी जगह पर उतर कर पढ़े : ''मैं अल्लाह तआला के सारे (नफ़ा देने वाले, शिफ़ा देने वाले) कलिमात के ज़रिए उसकी तमाम मख़्लूक़ के शर से पनाह चाहता हूं'' तो उसे कोई चीज़ उस जगह से रवाना होने तक नुक़सान नहीं पहुंचाएगी। (मुस्लिम)

Copyright © O

﴾124﴿ عَنْ أَبِيْ سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْنَا يَوْمَ الْخَنْدَقِ يَا رَسُوْلَ اللهِ! هَلْ مِنْ شَيْءٍ نَقُوْلُهُ فَقَدْ بَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ قَالَ: نَعَمْ! اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِنَا وَآمِنْ رَوْعَاتِنَا قَالَ: فَضَرَبَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ وُجُوْهَ أَعْدَائِهِ بِالرِّيْحِ فَهَزَمَهُمُ اللهُ عَزَّوَجَلَّ بِالرِّيْحِ.

رواه احمد ٣/٣

124. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं कि ग़ज़्वा-ए- ख़न्दक़ के दिन हम लोगों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या इस मौक़े पर पढ़ने के लिए कोई दुआ़ है जिसे हम पढ़ें क्योंकि कलेजे मुंह को आ चुके हैं यानी सख़्त घबराहट का हाल है। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हां, यह दुआ़ पढ़ो तर्जुमा : या अल्लाह! (दुश्मन के मुक़ाबले में) जो हमारी कमज़ोरियां हैं उन पर पर्दा डाल दें और हमें ख़ौफ़ की चीज़ों से अम्न अ़ता फ़रमाएं।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं (कि हम ने यह दुआ़ पढ़नी शुरू कर दी जिसकी बरकत से) अल्लाह तआ़ला ने सख़्त हवा भेजकर दुश्मनों के चेहरों को फेर दिया (और यूं) अल्लाह तआ़ला ने उनको हवा के ज़रिए शिकस्त दे दी। (मुस्नद अहमद)

﴾125﴿ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ أَنْفَقَ زَوْجَيْنِ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ دَعَاهُ خَزَنَةُ الْجَنَّةِ، كُلُّ خَزَنَةِ بَابٍ: أَيْ فُلُ هَلُمَّ، قَالَ أَبُوْبَكْرٍ: يَا رَسُوْلَ اللهِ ذَاكَ الَّذِيْ لَاتَوَى عَلَيْهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِنِّيْ لَأَرْجُوْ أَنْ تَكُوْنَ مِنْهُمْ.

رواه البخاري باب فضل النفقة في سبيل الله، رقم: ٢٨٤١

125. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी चीज़ का जोड़ा (मसलन दो घोड़े, दो कपड़े, दो दिरहम, दो ग़ुलाम वग़ैरह) अल्लाह तआ़ला के रास्ते में ख़र्च करेगा, तो उसे जन्नत के दारोग़े बुलाएंगे (जन्नत के) हर दरवाज़े का दारोग़ा (अपनी तरफ़ बुलाएगा) कि ऐ फ़्लां! इस दरवाज़े से (इस पर) हज़रत अबूबक्र ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! फिर तो उस शख़्स को कोई ख़ौफ़ नहीं रहेगा। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे पूरी उम्मीद है कि तुम भी उन्हीं में से होगे (जिन्हें हर दरवाज़े से बुलाया जाएगा)। (बुख़ारी)

﴾126﴿ عَنْ ثَوْبَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَفْضَلُ دِيْنَارٍ دِيْنَارٌ يُنْفِقُهُ الرَّجُلُ عَلَى عِيَالِهِ، وَدِيْنَارٌ يُنْفِقُهُ عَلَى فَرَسِهِ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ، وَدِيْنَارٌ يُنْفِقُهُ الرَّجُلُ عَلَى أَصْحَابِهِ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ.

Copyright © O

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ١٠/٤٢٣

126. हज़रत सौबान ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अफ़ज़ल दीनार वह है जिसे आदमी अपने घर वालों पर ख़र्च करता है, और वह दीनार अफ़ज़ल है जिसे आदमी अल्लाह तआला के रास्ते में अपने घोड़े पर ख़र्च करता है, और वह दीनार अफ़ज़ल है जिसे आदमी अल्लाह तआला के रास्ते में अपने साथियों पर ख़र्च करता है (दीनार सोने के सिक्के का नाम है)। (इब्ने हब्बान)

﴾127﴿ وَيُرْوٰى عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: مَا رَاَيْتُ اَحَدًا اَكْثَرَ مَشُوْرَةً لِاَصْحَابِهٖ مِنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ. رواه الترمذي باب ما جاء في المشورة رقم: ١٧١٤

127. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से ज़्यादा अपने साथियों से मशवरा करने वाला कोई नहीं देखा, यानी आप बहुत ज़्यादा मशवरा फ़रमाया करते थे। (तिर्मिज़ी)

﴾128﴿ عَنْ عَلِيٍّ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ! اِنْ نَزَلَ بِنَا اَمْرٌ لَيْسَ فِيْهِ بَيَانُ اَمْرٍ وَلَا نَهْيٍ فَمَا تَاْمُرُنَا؟ قَالَ: شَاوِرُوْا فِيْهِ الْفُقَهَاءَ وَالْعَابِدِيْنَ وَلَا تُمْضُوْا فِيْهِ رَاْىَ خَاصَّةٍ.

رواه الطبراني في الاوسط ورجاله موثقون من اهل الصحيح مجمع الزوائد ١/٤٢٨

128. हज़रत अली ﷺ से रिवायत है कि मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! अगर हमारे साथ कोई ऐसा मामला पेश आ जाए, जिसमें हमारे लिए आपकी तरफ़ से कोई वाज़ेह हुक्म करने या न करने का न हो तो उस बारे में आप हमें क्या हुक्म फ़रमाते हैं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस सूरत में दीन की समझ रखने वालों और इबादत गुज़ारों से मशवरा कर लिया करो और किसी की इन्फ़िरादी राय पर फ़ैसला न करना। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾129﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ هٰذِهِ الْآيَةُ ﴿وَشَاوِرْهُمْ فِى الْاَمْرِ﴾ الآية قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَمَا اِنَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ غَنِيَّانِ عَنْهَا وَلٰكِنْ جَعَلَهَا اللّٰهُ رَحْمَةً لِاُمَّتِىْ، فَمَنْ شَاوَرَ مِنْهُمْ لَمْ يَعْدِمْ رُشْدًا وَمَنْ تَرَكَ الْمَشُوْرَةَ مِنْهُمْ لَمْ يَعْدِمْ غَنَاءً.

رواه البيهقي ٧٦/٦

129. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि जब यह आयत नाज़िल हुई "और उनसे अहम कामों में मश्विरा करते रहा कीजिए" तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला और उसके रसूल को तो मशवरा की ज़रूरत नहीं है,

Copyright© Ot

अलबत्ता अल्लाह तआला ने उसको मेरी उम्मत के लिए रहमत की चीज़ बना दिया। चुनांचे मेरी उम्मत में से जो शख़्स मशवरा करता है वह सीधी राह पर रहता है और मेरी उम्मत में से जो मशवरा नहीं करता वह परेशान ही रहता है। (बैहक़ी)

﴿130﴾ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: حَرَسُ لَيْلَةٍ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ تَعَالٰى أَفْضَلُ مِنْ أَلْفِ لَيْلَةٍ يُقَامُ لَيْلُهَا وَيُصَامُ نَهَارُهَا. رواه احمد ١/٦١

130. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान ﷛ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआला के रास्ते में एक रात का पहरा देना उन हज़ार रातों से बेहतर है जिनमें रात भर खड़े होकर अल्लाह तआला की इबादत की जाए और दिन में रोज़ा रखा जाए। (मुस्नद अहमद)

﴿131﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ الْحَنْظَلِيَّةِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ (يَوْمَ حُنَيْنٍ): مَنْ يَحْرُسُنَا اللَّيْلَةَ؟ قَالَ أَنَسُ بْنُ أَبِيْ مَرْثَدٍ الْغَنَوِيُّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَا يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: فَارْكَبْ، فَرَكِبَ فَرَسًا لَهُ وَجَاءَ إِلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ لَهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِسْتَقْبِلْ هٰذَا الشِّعْبَ حَتّٰى تَكُوْنَ فِيْ أَعْلَاهُ، وَلَا نُغَرَّنَّ مِنْ قِبَلِكَ اللَّيْلَةَ، فَلَمَّا أَصْبَحْنَا خَرَجَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِلٰى مُصَلَّاهُ فَرَكَعَ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ قَالَ: هَلْ أَحْسَسْتُمْ فَارِسَكُمْ؟ قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! مَا أَحْسَسْنَاهُ، فَثُوِّبَ بِالصَّلَاةِ، فَجَعَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُصَلِّيْ وَهُوَ يَلْتَفِتُ إِلَى الشِّعْبِ حَتّٰى إِذَا قَضٰى صَلَاتَهُ وَسَلَّمَ فَقَالَ: أَبْشِرُوْا فَقَدْ جَاءَكُمْ فَارِسُكُمْ، فَجَعَلْنَا نَنْظُرُ إِلٰى خِلَالِ الشَّجَرِ فِي الشِّعْبِ فَإِذَا هُوَ قَدْ جَاءَ حَتّٰى وَقَفَ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَسَلَّمَ وَقَالَ: إِنِّي انْطَلَقْتُ حَتّٰى كُنْتُ فِيْ أَعْلٰى هٰذَا الشِّعْبِ حَيْثُ أَمَرَنِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ، فَلَمَّا أَصْبَحْتُ اطَّلَعْتُ الشِّعْبَيْنِ كِلَيْهِمَا، فَنَظَرْتُ فَلَمْ أَرَ أَحَدًا، فَقَالَ لَهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: هَلْ نَزَلْتَ اللَّيْلَةَ؟ قَالَ: لَا، إِلَّا مُصَلِّيًا أَوْ قَاضِيًا حَاجَةً، فَقَالَ لَهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قَدْ أَوْجَبْتَ فَلَا عَلَيْكَ أَنْ لَا تَعْمَلَ بَعْدَهَا

رواه ابوداؤد، باب في فضل الحرس في سبيل الله عزوجل، رقم: ٢٥٠١

131. हज़रत सह्ल बिन हनज़लीया ﷛ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने (हुनैन के मौक़े पर) इर्शाद फ़रमाया : आज रात हमारा पहरा कौन देगा? हज़रत अनस बिन अबी मरसद ग़न्वी ﷛ ने फ़रमाया : या रसूलुल्लाह! मैं (पहरा दूंगा) रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सवार हो जाओ। चुनांचे वह अपने घोड़े पर सवार होकर

Copyright © Ot

रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में आए। आप ﷺ ने उनसे इर्शाद फ़रमाया : सामने उस घाटी की तरफ़ चले जाओ और उस घाटी की सबसे ऊंची जगह पहुंच जाओ। (वहां पहरा देना और ख़ूब चौकन्ना होकर रहना) कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी ग़फ़लत और लापरवाही की वजह से आज रात हम दुश्मन के धोखे में आ जाएं (हज़रत सह्ल ﷺ फ़रमाते हैं कि) जब सुबह हुई तो रसूलुल्लाह ﷺ अपनी नमाज़ की जगह पर तशरीफ़ ले गए और दो रकअ़त (फ़ज्र की सुन्नतें) पढ़ीं। फिर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम्हें अपने सवार का कुछ पता लगा? सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! हमें तो उनका कुछ पता नहीं। फिर नमाज़ (फ़ज्र) की इक़ामत हुई, नमाज़ के दौरान रसूलुल्लाह ﷺ की तवज्जोह घाटी की तरफ़ रही। जब रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ पूरी फ़रमा कर सलाम फेरा, तो इर्शाद फ़रमाया : तुम्हें ख़ुशख़बरी हो तुम्हारा सवार आ गया है। हम लोगों ने घाटी के दरख़्तों के दर्मियान देखना शुरू किया तो हज़रत अनस बिन अबी मरसद आ रहे थे। चुनांचे उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होकर सलाम किया और अ़र्ज़ किया कि मैं (यहां से) चला और चलते-चलते उस घाटी की सबसे ऊंची जगह पहुंच गया, जहां जाने का मुझको रसूलुल्लाह ﷺ ने हुक्म दिया था (मैं रात भर वहां पहरा देता रहा) जब सुबह हुई तो मैंने दोनों घाटियों पर चढ़कर देखा, मुझे कोई नज़र न आया। रसूलुल्लाह ﷺ ने उनसे पूछा : क्या तुम रात को किसी वक़्त अपनी सवारी से नीचे उतरे? उन्होंने कहा नहीं, सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने और ज़रूरत पूरी करने के लिए उतरा था। आप ﷺ ने उनसे इर्शाद फ़रमाया कि तुमने (आज रात पहरा देकर अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से अपने लिए जन्नत) वाजिब कर ली है, लिहाज़ा (पहरे के) इस अ़मल के बाद अगर तुम कोई भी (नफ़्ली) अ़मल न करो, तो तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं। (अबूदाऊद)

﴿132﴾ عَنِ ابْنِ عَائِذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ خَرَجَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فِي جَنَازَةِ رَجُلٍ فَلَمَّا وُضِعَ قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ: لَا تُصَلِّ عَلَيْهِ يَارَسُوْلَ اللهِ فَإِنَّهُ رَجُلٌ فَاجِرٌ، فَالْتَفَتَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِلَى النَّاسِ فَقَالَ: هَلْ رَآهُ أَحَدٌ مِنْكُمْ عَلَى عَمَلِ الْإِسْلَامِ، فَقَالَ رَجُلٌ: نَعَمْ يَا رَسُوْلَ اللهِ، حَرَسَ لَيْلَةً فِي سَبِيْلِ اللهِ، فَصَلَّى عَلَيْهِ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَحَثَى التُّرَابَ عَلَيْهِ وَقَالَ: أَصْحَابُكَ يَظُنُّوْنَ أَنَّكَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ وَأَنَا أَشْهَدُ أَنَّكَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ، وَقَالَ: يَا عُمَرُ! إِنَّكَ لَا تُسْأَلُ عَنْ أَعْمَالِ النَّاسِ وَلٰكِنْ تُسْأَلُ عَنِ الْفِطْرَةِ. رواه البيهقي في شعب الايمان ٤٣/٤

Copyright © O

132. हज़रत इब्ने आइज़ ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक शख़्स के जनाज़े

क लिए बाहर तशरीफ़ लाए। जब वह जनाज़ा रखा गया तो हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप उसकी नमाज़े जनाज़ा न पढ़ें, क्योंकि यह क फ़ासिक़ शख़्स था (यह सुनकर) रसूलुल्लाह ﷺ ने लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया : क्या तुममें से किसी ने इसको इस्लाम का कोई काम करते देखा है? क शख़्स ने अर्ज़ किया : जी हां, या रसूलुल्लाह! उन्होंने एक रात अल्लाह तआला क रास्ते में पहरा दिया है। चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ ने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और नकी क़ब्र में मिट्टी भी डाली। उसके बाद (मैयत को मुख़ातब करके) फ़रमाया : हारे साथियों का तो गुमान यह है कि तुम दोज़ख़ी हो और मैं इस बात की गवाही देता हूं कि तुम जन्नती हो। फिर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उमर! तुम से लोगों बुरे आमाल के बारे में नहीं पूछा जा रहा है, बल्कि नेक आमाल के बारे में पूछा जा रहा है। (बैहक़ी)

﴿133﴾ حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ جُمْهَانَ قَالَ: سَأَلْتُ سَفِيْنَةَ عَنِ اسْمِهِ، فَقَالَ: إِنِّيْ مُخْبِرُكَ بِاسْمِيْ، سَمَّانِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ سَفِيْنَةَ، قُلْتُ: لِمَ سَمَّاكَ سَفِيْنَةَ؟ قَالَ: خَرَجَ وَمَعَهُ أَصْحَابُهُ، فَثَقُلَ عَلَيْهِمْ مَتَاعُهُمْ فَقَالَ: اُبْسُطْ كِسَاءَكَ فَبَسَطْتُهُ فَجَعَلَ فِيْهِ مَتَاعَهُمْ، ثُمَّ حَمَلَهُ عَلَيَّ فَقَالَ: احْمِلْ مَاأَنْتَ إِلَّا سَفِيْنَةٌ قَالَ: فَلَوْ حَمَلْتُ يَوْمَئِذٍ وِقْرَ بَعِيْرٍ أَوْ بَعِيْرَيْنِ أَوْ خَمْسَةٍ أَوْ سِتَّةٍ، مَاثَقُلَ عَلَيَّ. حلية الاولياء ١/٣٦٩ وذكره في الاصابة سحوه ٢/٥٨

133. हज़रत सईद बिन जुम्हान रहमतुल्लाह अलैह कहते हैं कि मैंने हज़रत सफ़ीना ﷺ से उनके नाम के बारे में पूछा (कि यह नाम किसने रखा है?) उन्होंने कहा : मैं तुम्हें अपने नाम के बारे में बताता हूं। रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरा नाम सफ़ीना रखा। मैंने पूछा : आपका नाम सफ़ीना क्यों रखा? उन्होंने फ़रमाया : रसूलुल्लाह ﷺ एक मर्तबा सफ़र में तशरीफ़ ले गए और आपके साथ सहाबा ﷺ भी थे। उनका सामान उन पर भारी हो गया था। रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : अपनी चादर बिछाओ, मैंने बिछा दी। आपने इस चादर में सहाबा का सामान बांधकर मेरे ऊपर रख दिया और फ़रमाया : इसे उठा लो तुम तो सफ़ीना (यानी किश्ती ही) हो। हज़रत सफ़ीना ﷺ फ़रमाते हैं कि अगर उस दिन मैं एक या दो तो क्या पांच या छ : ऊंटों का बोझ उठा लेता तो वह मुझ पर भारी न होता। (हुलीया, इसाबा)

﴿134﴾ عَنْ أَحْمَرَ مَوْلَى أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا فِي غَزَاةٍ فَجَعَلْتُ أَعْبُرُ النَّاسَ فِيْ وَادٍ أَوْ نَهْرٍ فَقَالَ لِيَ النَّبِيُّ ﷺ: مَاكُنْتَ فِيْ هٰذَا الْيَوْمِ إِلَّا سَفِيْنَةً. الاصابة ١/٢٣

Copyright © Ot

134. हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के आज़ाद करदा गुलाम हज़रत अ र ﷺ फ़रमाते हैं कि हम लोग एक ग़ज़्वा में रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे, (एक वादी या नहर पर से हम लोगों का गुज़र हुआ) तो मैं लोगों को वादी या नहर पार कराने ल । यह देखकर नबी करीम ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : तुम तो आज सफ़ीना (किश्ती) बन गए हो। (इस )

﴿135﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا يَوْمَ بَدْرٍ كُلُّ ثَلَاثَةٍ عَلٰى بَعِيْرٍ ـالَ: فَكَانَ اَبُوْلُبَابَةَ وَعَلِيُّ بْنُ اَبِيْ طَالِبٍ زَمِيْلَيْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: فَكَانَتْ اِذَا جَاءَتْ عُقْبَةُ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَا: نَحْنُ نَمْشِيْ عَنْكَ، قَالَ: مَا اَنْتُمَا بِاَقْوٰى مِنِّيْ وَمَا اَنَا بِاَغْنٰى عَنِ الْاَجْرِ مِنْكُمَا.

رواه البغوي في شرح السنة، قال المحقق: اسناده حسن ١١/٣٥

135. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि बद्र के दिन हमारी ـة हालत थी कि हम में से हर तीन आदमियों के दर्मियान एक ऊंट था, जिस पर बारी-बारी सवार होते थे। हज़रत अबू लुबाबा और हज़रत अली बिन अबी तालि ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ के ऊंट के शरीके सफ़र थे। हज़रत अब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह ﷺ के उतरने की बारी आती तो हज़रत अबू लुबाबा और हज़ अली ﷺ अर्ज़ करते कि आपके बदले हम पैदल चलेंगे (आप ऊंट पर ही सवार रह) रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाते, तुम दोनों मुझसे ज़्यादा ताक़तवर नहीं हो और मैं अज्र न सवाब का तुमसे कम मुहताज नहीं हूं। (शर्हुस्सुन्

﴿136﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: سَيِّدُ الْقَوْمِ فِي السَّفَرِ خَادِمُهُمْ فَمَنْ سَبَقَهُمْ بِخِدْمَةٍ لَمْ يَسْبِقُوْهُ بِعَمَلٍ اِلَّا الشَّهَادَةَ.

رواه البيهقي في شعب الايمان ٦/٣٣٤

136. हज़रत सहल बिन साद ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाय सफ़र में जमाअत का ज़िम्मेदार उनका ख़ादिम है। जो शख़्स ख़िदमत करने में साथियों से आगे बढ़ गया तो उसके साथी शहादत के अलावा किसी और अमल ज़रिए उससे आगे नहीं बढ़ सकते, यानी सबसे बड़ा अमल शहादत है, उसके बाद ख़िदमत है। (बैहक़ी)

﴿137﴾ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْجَمَاعَةُ رَحْمَةٌ وَالْفُرْقَةُ عَذَابٌ.

(وهو بعض الحديث) رواه عبد الله بن احمد والبزار والطبراني ورجالهم ثقات، مجمع الزوائد ٥/٦٢

Copyright © O

137. हज़रत नोमान बिन बशीर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जमाअत (के साथ मिलकर चलना) रहमत है और जमाअत से अलग होना अ़ज़ाब है। (मुस्नद अहमद, बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿138﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَوْ يَعْلَمُ النَّاسُ مَا فِي الْوَحْدَةِ مَا أَعْلَمُ، مَا سَارَ رَاكِبٌ بِلَيْلٍ وَحْدَهُ. رواه البخاري، باب السير وحده، رقم: ٢٩٩٨

138. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर लोगों को तन्हा सफ़र करने में उन (दीनी और दुन्यावी) नुक़सानों का इल्म हो जाए जो मुझे मालूम हैं, तो कोई सवार रात में तन्हा सफ़र करने की हिम्मत न करे। (बुख़ारी)

﴿139﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: عَلَيْكُمْ بِالدُّلْجَةِ، فَإِنَّ الْأَرْضَ تُطْوَى بِاللَّيْلِ. رواه ابو داؤد، باب في الدلجة، رقم: ٢٥٧١

139. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम जब सफ़र करो तो रात को भी ज़रूर कुछ सफ़र कर लिया करो, क्योंकि रात के वक़्त ज़मीन लपेट दी जाती है। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जब तुम किसी सफ़र के लिए घर से निकलो तो महज़ दिन के चलने पर क़नाअत न करो, बल्कि थोड़ा-सा रात के वक़्त भी चला करो, क्योंकि रात के वक़्त, दिन जैसी रुकावटें नहीं होतीं तो सफ़र आसानी के साथ जल्दी तय हो जाता है। इस मफ़हूम को ज़मीन के लपेट दिए जाने से ताबीर फ़रमाया है। (मज़ाहिरे हक़)

﴿140﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: الرَّاكِبُ شَيْطَانٌ وَالرَّاكِبَانِ شَيْطَانَانِ وَالثَّلَاثَةُ رَكْبٌ. رواه الترمذي وقال: حديث عبدالله بن عمرو احسن، باب ماجاء في كراهية ان يسافر وحده، رقم: ١٦٧٤

140. हज़रत उम्र बिन शोऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक सवार एक शैतान है, दो सवार दो शैतान हैं और तीन सवार जमाअत हैं। (तिर्मिज़ी)

Copyright © O

फ़ायदा : हदीस पाक में सवार से मुराद मुसाफ़िर है। मतलब यह है कि तन्हा सफ़र करने वाला हो या दो सफ़र करने वाले हों, शैतान उनको बड़ी आसानी से

बुराई में मुब्तला कर सकता है। इस बात को वाज़ेह करने के लिए तन सफ़र करने वाले या दो सफ़र करने वालों को शैतान फ़रमाया। इसलिए सफ़र में कम-से-कम तीन आदमी होने चाहिएं, ताकि शैतान से महफ़ू रहें और नमाज़ बाजमाअत अदा करने और दूसरे कामों में एक दूसरे क मददगार हों। (मज़ाहिरे हक़)

﴿141﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الشَّيْطَانُ يَهُمُّ بِالْوَاحِدِ وَالِاثْنَيْنِ فَاِذَا كَانُوْا ثَلَاثَةً لَمْ يَهُمَّ بِهِمْ.

رواه البزار وفيه عبد الرحمن بن ابي الزناد وهو ضعيف وقد وثق، مجمع الزوائد ٣/٢٩١

141. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया शैतान एक दो के साथ बुराई का इरादा करता है, यानी नुक़सान पहुंचाना चाहता है, लेकिन जब तीन हों तो उनके साथ बुराई का इरादा नहीं करता। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿142﴾ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِثْنَانِ خَيْرٌ مِنْ وَاحِدٍ وَثَلَاثٌ خَيْرٌ مِنَ اثْنَيْنِ وَاَرْبَعَةٌ خَيْرٌ مِنْ ثَلَاثَةٍ فَعَلَيْكُمْ بِالْجَمَاعَةِ فَاِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ لَنْ يَجْمَعَ اُمَّتِیْ اِلَّا عَلٰی هُدًی. رواه احمد ٥/١٤٥

142. हज़रत अबूज़र ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया एक शख़्स से दो बेहतर हैं और दो से तीन बेहतर हैं और तीन से चार बेहतर है, लिहाज़ा तुम जमाअत (के साथ रहने) को लाज़िम पकड़ो, क्योंकि अल्लाह तआला मेरी उम्मत को हिदायत पर ही जमा फ़रमाएंगे, (यानी सारी उम्मत गुमराही पर कभी मुज्तमा नहीं हो सकती लिहाज़ा जमाअत के साथ रहने वाला गुमराही से महफ़ूज़ रहेगा।) (मुस्नद अहमद)

﴿143﴾ عَنْ عَرْفَجَةَ بْنِ شُرَيْحِ الْاَشْجَعِیِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ يَدَ اللهِ عَلَى الْجَمَاعَةِ، فَاِنَّ الشَّيْطَانَ مَعَ مَنْ فَارَقَ الْجَمَاعَةَ يَرْكُضُ. (وهو بعض الحديث)

رواه النسائي، باب قتل من فارق الجماعة، رقم: ٤٠٢٥

143. हज़रत अरफ़जा बिन शुरैह अशजई ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला का हाथ जमाअत पर होता है, यानी अल्लाह तआला की ख़ास मदद जमाअत के साथ होती है लिहाज़ा जो शख़्स जमाअत से अलाहिदा हो जाता है, शैतान उसके साथ होता है और उसे उकसाता रहता है।

Copyright © O

(नसाई)

﴾144﴿ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَتَخَلَّفُ فِي الْمَسِيْرِ فَيُزْجِي الضَّعِيْفَ وَيُرْدِفُ وَيَدْعُوْلَهُمْ. رواه ابو داؤد، باب لزوم الساقة، رقم:٢٦٣٩

144. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ सफ़र में (तवाज़ो, दूसरों की मदद और ख़बरगीरी के लिए) क़ाफ़िला से पीछे चला करते थे। चुनांचे आप ﷺ कमज़ोर (की सवारी) को हांका करते और जो शख़्स पैदल चल रहा होता उसको अपने पीछे सवार कर लेते और उन (क़ाफ़िला वालों) के लिए दुआ फ़रमाते रहते। (अबूदाऊद)

﴾145﴿ عَنْ أَبِي سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا خَرَجَ ثَلَاثَةٌ فِيْ سَفَرٍ فَلْيُؤَمِّرُوْا أَحَدَهُمْ. رواه ابو داؤد، باب في القوم يسافرون ... رقم:٢٦٠٨

145. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तीन शख़्स सफ़र में निकलें, तो अपने में से किसी एक को अमीर बना लें। (अबूदाऊद)

﴾146﴿ عَنْ أَبِي مُوْسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ أَنَا وَرَجُلَانِ مِنْ بَنِي عَمِّيْ، فَقَالَ أَحَدُ الرَّجُلَيْنِ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! أَمِّرْنَا عَلَى بَعْضِ مَا وَلَّاكَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ، وَقَالَ الْآخَرُ مِثْلَ ذٰلِكَ، فَقَالَ: إِنَّا وَاللهِ لَا نُوَلِّيْ عَلَى هٰذَا الْعَمَلِ أَحَدًا سَأَلَهُ، وَلَا أَحَدًا حَرِصَ عَلَيْهِ. رواه مسلم، باب النهي عن طلب الامارة والحرص عليها، رقم:٤٧١٧

146. हज़रत अबू मूसा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं और मेरे साथ मेरे दो चचाज़ाद भाई रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उनमें से एक ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआ़ला ने आपको जिन इलाक़ों का वाली बनाया है उनमें से किसी इलाक़े का हमें अमीर मुक़र्रर फ़रमा दीजिए, दूसरे शख़्स ने भी इसी तरह की ख़्वाहिश का इज़्हार किया। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला की क़सम! हम उन उमूर में किसी भी ऐसे शख़्स को ज़िम्मेदार नहीं बनाते जो ज़िम्मेदारी का सवाल करे या उसका ख़्वाहिशमन्द हो। (मुस्लिम)

﴾147﴿ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ فَارَقَ [illegible] لَّ الْإِمَارَةَ لَقِيَ اللهَ وَلَا وَجْهَ لَهُ عِنْدَهُ.

Copyright © O

رواه احمد ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٥/٤٠١

147. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स मुसलमानों की जमाअत से अलग हुआ और अमीर की इमारत को हक़ीर जाना, तो अल्लाह तआला से इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह तआला के यहां उसका कोई रुत्बा न होगा, यानी अल्लाह तआला की निगाह से गिर जाएगा। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿148﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللهَ سَائِلٌ كُلَّ رَاعٍ عَمَّا اسْتَرْعَاهُ أَحَفِظَ أَمْ ضَيَّعَ. رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح على شرطهما ١٠/٣٤٤

148. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बिलाशुब्हा अल्लाह तआला हर निगरां से उसकी ज़िम्मेदारी में दी हुई चीज़ों के बारे में पूछेंगे कि उसने अपनी ज़िम्मेदारी की हिफ़ाज़त की या उसे ज़ाय किया, यानी उस ज़िम्मेदारी को पूरे तौर पर अदा किया या नहीं। (इब्ने हब्बान)

﴿149﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: كُلُّكُمْ رَاعٍ، وَكُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، الْإِمَامُ رَاعٍ وَمَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ فِيْ أَهْلِهِ وَهُوَ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ فِيْ بَيْتِ زَوْجِهَا وَمَسْئُوْلَةٌ عَنْ رَعِيَّتِهَا، وَالْخَادِمُ رَاعٍ فِيْ مَالِ سَيِّدِهِ وَمَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ فِيْ مَالِ أَبِيْهِ وَهُوَ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَكُلُّكُمْ رَاعٍ وَمَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ.

رواه البخاري، باب الجمعة في القرى والمدن، رقم:٨٩٣

149. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : तुम सब ज़िम्मेदार हो, तुममें से हर एक से उसकी अपनी रईय्यत (मातहतों) के बारे में पूछा जाएगा। हाकिम ज़िम्मेदार है उससे अपनी रिआया के बारे में पूछा जाएगा। आदमी अपने घर वालों का ज़िम्मेदार है उससे उसके घर वालों के बारे में पूछा जाएगा। औरत पर अपने शौहर के घर की ज़िम्मेदारी है, उससे उसके घर में रहने वाले बच्चों वग़ैरह के बारे में पूछा जाएगा। मुलाज़िम अपने मालिक के माल का ज़िम्मेदार है, उससे मालिक के माल व अस्बाब के बारे में पूछा जाएगा। बेटा अपने बाप के माल का ज़िम्मेदार है, उससे बाप के माल के बारे में पूछा जाएगा। तुम में से हर एक ज़िम्मेदार है हर एक से उसके मातहतों के बारे में पूछा जाएगा। (बुख़ारी)

Copyright © O

﴾150﴿ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَا يَسْتَرْعِي اللّٰهُ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى عَبْدًا رَعِيَّةً قَلَّتْ اَوْ كَثُرَتْ اِلَّا سَاَلَهُ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى عَنْهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ : اَقَامَ فِيْهِمْ اَمْرَ اللّٰهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى اَمْ اَضَاعَهُ حَتّٰى يَسْاَلَهُ عَنْ اَهْلِ بَيْتِهِ خَاصَّةً.

رواه احمد ٢/١٥

150. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला जिसको भी किसी रईय्यत का निगरान बनाते हैं, ख़्वाह रईय्यत थोड़ी हो, या ज़्यादा तो अल्लाह तआला उसे उसकी रईय्यत के बारे में क़ियामत के दिन ज़रूर पूछेंगे कि उसने उनमें अल्लाह तआला के हुक्म को क़ायम किया था या बरबाद किया था। यहां तक कि ख़ास तौर पर उससे उसके घर वालों के मुतअल्लिक पूछेंगे। (मुस्नद अहमद)

﴾151﴿ عَنْ اَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: يَا اَبَا ذَرٍّ ! اِنِّيْ اَرَاكَ ضَعِيْفًا، وَاِنِّيْ اُحِبُّ لَكَ مَا اُحِبُّ لِنَفْسِيْ، لَا تَاَمَّرَنَّ عَلٰى اثْنَيْنِ وَلَا تَوَلَّيَنَّ مَالَ يَتِيْمٍ.

رواه مسلم، باب كراهة الامارة بغير ضرورة، رقم: ٤٧٢٠

151. हज़रत अबूज़र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने (शफ़क़त के तौर पर हज़रत अबूज़र ﷺ से) इर्शाद फ़रमाया : अबूज़र! मैं तुम्हें कमज़ोर समझता हूं (कि तुम इमारत की ज़िम्मेदारी को पूरा न कर पाओगे) और मैं तुम्हारे लिए वह चीज़ पसन्द करता हूं जो अपने लिए पसन्द करता हूं, तुम दो आदमियों पर भी हरगिज़ अमीर न बनना और किसी यतीम के माल की ज़िम्मेदारी क़ुबूल न करना। (मुस्लिम)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अबूज़र ﷺ से जो इर्शाद फ़रमाया, उसका मतलब यह है कि अगर मैं तुम्हारी तरह कमज़ोर होता तो दो पर भी कभी अमीर न बनता।

﴾152﴿ عَنْ اَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! اَلَا تَسْتَعْمِلُنِيْ؟ قَالَ: فَضَرَبَ بِيَدِهٖ عَلٰى مَنْكِبِيْ، ثُمَّ قَالَ : يَا اَبَاذَرٍّ! اِنَّكَ ضَعِيْفٌ، وَاِنَّهَا اَمَانَةٌ، وَاِنَّهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ خِزْيٌ وَنَدَامَةٌ، اِلَّا مَنْ اَخَذَهَا بِحَقِّهَا وَاَدَّى الَّذِيْ عَلَيْهِ فِيْهَا.

رواه مسلم، باب كراهة الامارة بغير ضرورة، رقم: ٤٧١٩

152. हज़रत अबूज़र ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अर्ज़ किया : या Copyright© O मुझे अमीर क्यों नहीं बनाते? रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरे कांधे पर हाथ मारकर इर्शाद

फ़रमाया : अबूज़र! तुम कमज़ोर हो और यह इमारत एक अमानत है (कि जिसके साथ बन्दों के हुक़ूक़ मुतअल्लिक़ हैं) और यह (इमारत) क़ियामत के दिन रुस्वाई और नदामत का सबब होगी, लेकिन जिस शख़्स ने इस इमारत को सही तरीक़े से लिया और उसकी ज़िम्मेदारियों को पूरा किया (तो फिर यह इमारत क़ियामत के दिन रुसवाई और नदामत का ज़रिया न होगी)। (मुस्लिम)

﴿153﴾ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ سَمُرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ (لِي) النَّبِيُّ ﷺ: يَا عَبْدَ الرَّحْمٰنِ بْنَ سَمُرَةَ: لَا تَسْأَلِ الْإِمَارَةَ فَإِنَّكَ إِنْ أُوْتِيْتَهَا عَنْ مَسْئَلَةٍ وُكِلْتَ إِلَيْهَا، وَإِنْ أُوْتِيْتَهَا مِنْ غَيْرِ مَسْئَلَةٍ أُعِنْتَ عَلَيْهَا.

(الحديث) رواه البخاري، باب قول الله تبارك وتعالى لا يؤاخذكم الله ...، رقم: ٦٦٢٢

153. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन समुरा ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : ऐ अब्दुर्रहमान बिन समुरा! इमारत को तलब न करो, अगर तुम्हारे तलब करने पर तुम्हें अमीर बना दिया गया तो तुम उसके हवाले कर दिए जाओगे (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से तुम्हारी कोई मदद और रहनुमाई न होगी) और अगर तुम्हारी तलब के बग़ैर तुम्हें अमीर बना दिया गया, तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उसमें तुम्हारी मदद की जाएगी। (बुख़ारी)

﴿154﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّكُمْ سَتَحْرِصُوْنَ عَلَى الْإِمَارَةِ، وَسَتَكُوْنُ نَدَامَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَنِعْمَ الْمُرْضِعَةُ وَبِئْسَتِ الْفَاطِمَةُ.

رواه البخاري، باب ما يكره من الحرص على الامارة، رقم: ٧١٤٨

154. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक वक़्त ऐसा आने वाला है जबकि तुम अमीर बनने की हिर्स करोगे, हालांकि इमारत तुम्हारे लिए नदामत का ज़रिया होगी। इमारत की मिसाल ऐसी है जैसे कि एक दूध पिलाने वाली औरत कि इब्तिदा में तो बड़ी अच्छी लगती है और जब दूध छुड़ाने लगती है तो वही बहुत बुरी लगने लगती है। (बुख़ारी)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ के आख़िरी जुम्ले का मतलब यह है कि जब इमारत किसी को मिलती है तो अच्छी लगती है, जैसे बच्चे को दूध पिलाने वाली अच्छी लगती है और जब इमारत हाथ से जाती है तो यह बहुत बुरा लगता है, जैसे दूध छोड़ना बच्चे को बहुत बुरा लगता है।

Copyright © Ot

﴿155﴾ عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنْ شِئْتُمْ أَنْبَأْتُكُمْ عَنِ الْإِمَارَةِ، وَمَا هِيَ؟ فَنَادَيْتُ بِأَعْلَى صَوْتِي ثَلَاثَ مَرَّاتٍ وَمَا هِيَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: أَوَّلُهَا مَلَامَةٌ، وَثَانِيهَا نَدَامَةٌ، وَثَالِثُهَا عَذَابٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَّا مَنْ عَدَلَ، وَكَيْفَ يَعْدِلُ مَعَ قَرَابَتِهِ؟

رواه البزار والطبراني في الكبير والاوسط باختصار ورجال الكبير رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٥/٣٧٥

155. हज़रत औफ़ बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें इस इमारत की हक़ीक़त बताऊं? मैंने बुलन्द आवाज़ से तीन मर्तबा पूछा : या रसूलुल्लाह! इसकी हक़ीक़त क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इसका पहला मरहला मलामत है, दूसरा मरहला नदामत है, तीसरा मरहला क़ियामत के दिन अज़ाब है, अल्बत्ता जिस शख़्स ने इंसाफ़ किया, वह महफ़ूज़ रहेगा, (लेकिन) आदमी अपने क़रीबी (रिश्तेदार वग़ैरह) के मामलों में अद्ल व इंसाफ़ कैसे कर सकता है यानी बावजूद अद्ल व इंसाफ़ को चाहते हुए भी तबीयत से मग़्लूब होकर अद्ल व इंसाफ़ नहीं कर पाता और रिश्तेदारों की तरफ़ झुकाव हो जाता है। (बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जो शख़्स अमीर बनता है, उसको हर तरफ़ से मलामत की जाती है कि उसने ऐसा किया, वैसा किया। उसके बाद वह लोगों की इस मलामत से परेशान होकर नदामत में मुब्तला हो जाता है और कहता है, मैंने इस मनसब को क्यों क़ुबूल किया। फिर आख़िरी मरहला इंसाफ़ न करने की सूरत में क़ियामत के दिन अज़ाब की शक्ल में ज़ाहिर होगा, ग़रज़ यह कि दुनिया में भी ज़िल्लत व रुस्वाई और आख़िरत में भी हिसाब की सख़्ती होगी।

﴿156﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنِ اسْتَعْمَلَ رَجُلًا مِنْ عِصَابَةٍ وَفِي تِلْكَ الْعِصَابَةِ مَنْ هُوَ أَرْضَى لِلّٰهِ مِنْهُ فَقَدْ خَانَ اللهَ وَخَانَ رَسُولَهُ وَخَانَ الْمُؤْمِنِينَ.

رواه الحاكم في المستدرك وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ٤/٩٢

156. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने किसी को जमाअत का अमीर बनाया, जबकि जमाअत के अफ़राद में उससे ज़्यादा अल्लाह तआला को राज़ी करने वाला शख़्स हो, तो उसने अल्लाह तआला से ख़ियानत की और उनके रसूल से ख़ियानत की और ईमान वालों

Copyright © O

से ख़ियानत की। (मुस्तदरक हाकिम)

**फ़ायदा :** अगर अफ़ज़ल के होते हुए किसी दूसरे को अमीर बनाने में कोई दीनी मस्लहत हो तो फिर इस वईद में दाख़िल नहीं। चुनांचे एक मौक़े पर रसूलुल्लाह ﷺ ने एक वफ़्द भेजा जिसमें हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जहश ؓ को अमीर बनाया और यह इर्शाद फ़रमाया कि यह तुममें ज़्यादा अफ़ज़ल नहीं हैं, लेकिन भूख और प्यास पर ज़्यादा सब्र करने वाले हैं।

(मुस्नद अहमद)

﴿157﴾ عَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَا مِنْ اَمِيْرٍ يَلِىْ اَمْرَ الْمُسْلِمِيْنَ ثُمَّ لَا يَجْهَدُ لَهُمْ وَيَنْصَحُ، اِلَّا لَمْ يَدْخُلْ مَعَهُمُ الْجَنَّةَ.

رواه مسلم، باب فضيلة الامير العادل، رقم: ٤٧٣١

157. हज़रत माक़िल बिन यसार ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो अमीर मुसलमानों के मामलों का ज़िम्मेदार बनकर मसुलमानों की ख़ैरख़्वाही में कोशिश न करे वह मुसलमानों के साथ जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकेगा। (मुस्लिम)

﴿158﴾ عَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَامِنْ وَالٍ يَلِىْ رَعِيَّةً مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ فَيَمُوْتُ وَهُوَ غَاشٌّ لَهُمْ اِلَّا حَرَّمَ اللهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ.

رواه البخاري، باب من استرعى رعية فلم ينصح، رقم: ٧١٥١

158. हज़रत माक़िल बिन यसार ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी मुसलमान रईय्यत का ज़िम्मेदार बने, फिर उनके साथ धोखे का मामला करे और इसी हालत पर उसकी मौत आ जाए तो अल्लाह तआ़ला जन्नत को उस पर हराम कर देंगे। (बुख़ारी)

﴿159﴾ عَنْ اَبِىْ مَرْيَمَ الْاَزْدِىِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ وَلَّاهُ اللهُ عَزَّوَجَلَّ شَيْئًا مِنْ اَمْرِ الْمُسْلِمِيْنَ فَاحْتَجَبَ دُوْنَ حَاجَتِهِمْ وَخَلَّتِهِمْ وَفَقْرِهِمْ احْتَجَبَ اللهُ عَنْهُ دُوْنَ حَاجَتِهِ وَخَلَّتِهِ وَفَقْرِهِ.

رواه ابوداؤد، باب فيما يلزم الامام من امر الرعية، رقم: ٢٩٤٨

159. हज़रत अबू मरयम अज़दी ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स को अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों के किसी

Copyright © O

काम का ज़िम्मेदार बनाया और वह मुसलमानों के हालात, ज़रूरियात और उनकी तंगदस्ती से मुंह फेरे यानी उनकी ज़रूरत को पूरा न करे और न उनकी तंगदस्ती के दूर करने की कोशिश करे, तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला उसके हालात, ज़रूरियात और तंगदस्ती से मुंह फेर लेंगे, यानी क़ियामत के दिन उसकी ज़रूरत और परेशानी को दूर नहीं फ़रमाएंगे। (अबूदाऊद)

﴿160﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ اَحَدٍ يُؤَمَّرُ عَلٰى عَشَرَةٍ فَصَاعِدًا لَا يُقْسِطُ فِيْهِمْ اِلَّا جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِي الْاَصْفَادِ وَالْاَغْلَالِ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٤/ ٨٩

160. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स दस या दस से ज़ाइद अफ़राद पर अमीर बनाया जाए और वह उनके साथ अदल व इंसाफ़ का मामला न करे, तो क़ियामत के दिन बेड़ियों और हथकड़ियों में (बंधा हुआ) आएगा। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿161﴾ عَنْ اَبِيْ وَائِلٍ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّ عُمَرَ اسْتَعْمَلَ بِشْرَبْنَ عَاصِمٍ عَلٰى صَدَقَاتِ هَوَازِنَ فَتَخَلَّفَ بِشْرٌ فَلَقِيَهُ عُمَرُ، فَقَالَ: مَاخَلَّفَكَ، اَمَا لَنَا عَلَيْكَ سَمْعٌ وَطَاعَةٌ، قَالَ: بَلٰى! وَلٰكِنْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ وُلِّيَ مِنْ اَمْرِ الْمُسْلِمِيْنَ شَيْئًا اُتِيَ بِهٖ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتّٰى يُوْقَفَ عَلٰى جِسْرِ جَهَنَّمَ. (الحديث) اخرجه البخاري من طريق سويد، الاصابة ١/ ١٥٢

161. हज़रत अबू वाइल रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर ﷺ ने हज़रत बिश्र बिन आ़सिम ﷺ को (क़बीला) हवाज़िन के सदक़ात (वसूल करने के लिए) आ़मिल मुक़र्रर फ़रमाया लेकिन हज़रत बिश्र न गए। हज़रत उमर ﷺ की उनसे मुलाक़ात हुई। हज़रत उमर ﷺ ने उनसे पूछा, तुम क्यों नहीं गए क्या हमारी बात को सुनना और मानना तुम्हारे लिए ज़रूरी नहीं है? हज़रत बिश्र ने अ़र्ज़ किया, क्यों नहीं! लेकिन मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि जिसे मुसलमानों के किसी काम का ज़िम्मेदार बनाया गया उसे क़ियामत के दिन लाकर जहन्नम के पुल पर खड़ा कर दिया जाएगा (अगर ज़िम्मेदारी को सही तौर पर अंजाम दिया होगा तो नजात होगी, वरना दोज़ख़ की आग होगी)। (इसाबा)

﴿162﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ اَمِيْرِ عَشَرَةٍ اِلَّا يُؤْتٰى بِهٖ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَغْلُوْلًا حَتّٰى يَفُكَّهُ الْعَدْلُ اَوْيُوْبِقَهُ الْجَوْرُ.

Copyright © O

رواه البزار والطبراني في الاوسط ورجال البزار رجال الصحيح مجمع الزوائد ٥/ ٣٧٠

162. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हर अमीर चाहे दस आदमियों का ही क्यों न हो क़ियामत के दिन इस तरह लाया जाएगा कि उसकी गर्दन में तौक़ होगा, यहां तक कि उसको तौक़ से उसका अद्ल छुड़वाएगा या उसका ज़ुल्म उसको हलाक कर देगा। (बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿163﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: سَيَلِيْكُمْ اُمَرَاءُ يُفْسِدُوْنَ وَمَا يُصْلِحُ اللهُ بِهِمْ اَكْثَرُ، فَمَنْ عَمِلَ مِنْهُمْ بِطَاعَةِ اللهِ فَلَهُمُ الْاَجْرُ وَعَلَيْكُمُ الشُّكْرُ، وَمَنْ عَمِلَ مِنْهُمْ بِمَعْصِيَةِ اللهِ فَعَلَيْهِمُ الْوِزْرُ وَعَلَيْكُمُ الصَّبْرُ.

رواه البيهقي في شعب الإيمان ١٥/٦

163. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारे कुछ अमीर ऐसे होंगे जो फ़साद और बिगाड़ करेंगे (लेकिन) अल्लाह तआला उनके ज़रिए जो इस्लाह फ़रमाएंगे। वह इस्लाह उनके बिगाड़ से ज़्यादा होगी, लिहाज़ा उन अमीरों में से जो अमीर अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी वाले काम करेगा तो उसे अज्र मिलेगा और उस पर तुम्हारे लिए शुक्र करना ज़रूरी होगा। इसी तरह उन अमीरों में से जो अमीर अल्लाह तआला की नाफ़रमानी वाले काम करेगा तो उसका गुनाह उसके सर होगा और तुम्हें इस हालत में सब्र करना होगा। (बैहक़ी)

﴿164﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ فِيْ بَيْتِيْ هٰذَا: اَللّٰهُمَّ مَنْ وَلِيَ مِنْ اَمْرِ اُمَّتِيْ شَيْئًا فَشَقَّ عَلَيْهِمْ، فَاشْقُقْ عَلَيْهِ وَمَنْ وَلِيَ مِنْ اَمْرِ اُمَّتِيْ شَيْئًا فَرَفَقَ بِهِمْ، فَارْفُقْ بِهِ.

رواه مسلم باب فضيلة الامير العادل رقم: ٤٧٢٢

164. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को अपने उस घर में यह दुआ करते हुए सुना, "ऐ अल्लाह! जो मेरी उम्मत के (दीनी व दुन्यावी) मामलों में से किसी भी मामले का ज़िम्मेदार बने, फिर वह लोगों को मुशक़्क़त में डाले तो आप भी उस शख़्स को मुशक़्क़त में डालिए और जो शख़्स मेरी उम्मत के किसी भी मामले का ज़िम्मेदार बने और लोगों के साथ नर्मी का बरताव करे, आप भी उस शख़्स के साथ नर्मी का मामला फ़रमाइए"। (मुस्लिम)

﴿165﴾ عَنْ جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ وَكَثِيْرِ بْنِ مُرَّةَ وَعَمْرِو بْنِ الْاَسْوَدِ وَالْمِقْدَامِ بْنِ مَعْدِ يْكَرِبَ وَاَبِيْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ الْاَمِيْرَ اِذَا ابْتَغَى الرِّيْبَةَ فِي النَّاسِ اَفْسَدَهُمْ.

رواه ابو داؤد باب في التجسس رقم: ٤٨٨٩

Copyright © O

165. हज़रत ज़ुबैर बिन नुफ़ैर, हज़रत कसीर बिन मुर्रह, हज़रत अम्र बिन अस्वद, हज़रत मिक़दाम बिन मादीकर्ब और हज़रत उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अमीर जब लोगों में शक व शुब्हा की बात ढूंढता है तो लोगों को ख़राब कर देता है। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जब अमीर लोगों पर एतमाद के बजाए उनके ऐब तलाश करने लगे और उन पर बदगुमानी करने लगे, तो वह ख़ुद ही लोगों में फ़साद और इंतिशार का ज़रिया बनेगा, इसलिए अमीर को चाहिए कि लोगों के ऐबों पर पर्दा डाले और उनके साथ अच्छा गुमान रखे। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿166﴾ عَنْ أُمِّ الْحُصَيْنِ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنْ أُمِّرَ عَلَيْكُمْ عَبْدٌ مُجَدَّعٌ أَسْوَدُ يَقُوْدُكُمْ بِكِتَابِ اللهِ فَاسْمَعُوْا لَهُ وَأَطِيْعُوْا.

رواه مسلم باب وجوب طاعة الامراء ... رقم: ٤٧٦٢

165. हज़रत उम्मुल हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर तुम पर किसी नाक, कान कटे हुए काले ग़ुलाम को भी अमीर बनाया जाए तो तुम्हें अल्लाह तआला की किताब के ज़रिए यानी अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ चलाए तो तुम उसका हुक्म सुनो और मानो। (मुस्लिम)

﴿167﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِسْمَعُوْا وَأَطِيْعُوْا، وَإِنِ اسْتُعْمِلَ عَلَيْكُمْ عَبْدٌ حَبَشِيٌّ كَأَنَّ رَأْسَهُ زَبِيْبَةٌ.

رواه البخاري، باب السمع والطاعة للامام ... رقم: ٧١٤٢

167. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अमीर की बात सुनते और मानते रहो, अगरचे तुम पर हब्शी ग़ुलाम ही अमीर क्यों न बनाया गया हो, जिसका सर गोया (छोटे होने में) किशमिश की तरह हो। (बुख़ारी)

﴿168﴾ عَنْ وَائِلٍ الْحَضْرَمِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِسْمَعُوْا وَأَطِيْعُوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِمْ مَا حُمِّلُوْا وَعَلَيْكُمْ مَا حُمِّلْتُمْ.

رواه مسلم باب في طاعة الامراء وان منعوا الحقوق رقم: ٤٧٨٢

Copyright © O

168. हज़रत वाइल हज़रमी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम

अमीरों की बात सुनो और मानो, क्योंकि उनकी जिम्मेदारियों के बारे में उनसे पूछा जाएगा (मसलन इंसाफ़ करना) और तुम्हारी ज़िम्मेदारियों के बारे में तुम से पूछा जाएगा (मसलन अमीर की बात मानना, लिहाज़ा हर एक अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करने में लगा रहे ख़्वाह दूसरा पूरा करे या न करे)। (मुस्लिम,

﴿169﴾ عَنِ الْعِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اُعْبُدُوا اللهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا وَاَطِيْعُوْا مَنْ وَلَّاهُ اللهُ اَمْرَكُمْ وَلَا تُنَازِعُوا الْاَمْرَ اَهْلَهٗ وَلَوْ كَانَ عَبْدًا اَسْوَدَ، وَعَلَيْكُمْ بِمَا تَعْرِفُوْنَ مِنْ سُنَّةِ نَبِيِّكُمْ وَالْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ الْمَهْدِيِّيْنَ، وَعَضُّوْا عَلٰى نَوَاجِذِكُمْ بِالْحَقِّ. رواه الحاكم وقال: هذا اسناد صحيح على شرطهما جميعا ولا اعرف له علة ووافقه الذهبى ١/٩٦

169. हज़रत इरबाज़ बिन सारिया ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला की इबादत करो, उनके साथ किसी को शरीक मत ठहराओ और जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे कामों का ज़िम्मेदार बनाया है उनकी मानो और अमीर से इमारत के बारे में न झगड़ो, चाहे अमीर स्याह ग़ुलाम ही हो और तुम अपने नबी ﷺ की सुन्नत और हिदायतयाफ़्ता ख़ुलफ़ा राशिदीन अजमईन के तरीक़े को लाज़िम पकड़ो, हक़ को इंतिहाई मज़बूती से थामे रहो।

(मुस्तदरक हाकिम)

﴿170﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ اللهَ يَرْضٰى لَكُمْ ثَلَاثًا وَيَسْخَطُ لَكُمْ ثَلَاثًا، يَرْضٰى لَكُمْ اَنْ تَعْبُدُوْهُ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا وَاَنْ تَعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللهِ جَمِيْعًا وَلَا تَفَرَّقُوْا وَاَنْ تَنَاصَحُوْا مَنْ وَلَّاهُ اللهُ اَمْرَكُمْ وَيَسْخَطُ لَكُمْ قِيْلَ وَقَالَ وَاِضَاعَةَ الْمَالِ وَكَثْرَةَ السُّؤَالِ. رواه احمد ٢/٣٦٧

170. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला तुम्हारी तीन चीज़ों को पसन्द फ़रमाते हैं और तीन चीज़ों को नापसन्द फ़रमाते हैं। तुम्हारी इस बात को पसन्द फ़रमाते हैं कि तुम अल्लाह तआ़ला की इबादत करो, उनके साथ किसी को शरीक न ठहराओ, और सब मिलकर अल्लाह तआ़ला की रस्सी को मज़बूती से पकड़े रहो (अलग-अलग होकर) बिखर न जाओ, और जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारा ज़िम्मेदार बनाया है उनके लिए ख़ुलूस, वफ़ादारी और ख़ैरख़्वाही रखो और तुम्हारी उन बातों को नापसन्द फ़रमाते हैं कि तुम फ़ुज़ूल बहस व मुबाहसा करो, माल ज़ाय करो और ज़्यादा सवालात करो। (मुस्नद अहमद)

Copyright © Ot

﴿171﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ اَطَاعَنِيْ فَقَدْ اَطَاعَ اللهَ، وَمَنْ عَصَانِيْ فَقَدْ عَصَى اللهَ، وَمَنْ اَطَاعَ الْاِمَامَ فَقَدْ اَطَاعَنِيْ، وَمَنْ عَصَى الْاِمَامَ فَقَدْ عَصَانِيْ۔ رواه ابن ماجه، باب طاعة الامام،رقم: ٢٨٥٩

171. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने मेरी इताअ़त की, उसने अल्लाह तआ़ला की इताअ़त की और जिसने मेरी नाफ़रमानी की, उसने अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी की और जिसने मुसलमानों के अमीर की इताअ़त की उसने मेरी इताअ़त की और जिसने मुसलमानों के अमीर की नाफ़रमानी की, उसने मेरी नाफ़रमानी की। (इब्ने माजा)

﴿172﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ رَاٰى مِنْ اَمِيْرِهٖ شَيْئًا يَكْرَهُهُ فَلْيَصْبِرْ، فَاِنَّهُ مَنْ فَارَقَ الْجَمَاعَةَ شِبْرًا فَمَاتَ، فَمِيْتَةٌ جَاهِلِيَّةٌ۔

رواه مسلم،باب وجوب ملازمة جماعة المسلمين......رقم: ٤٧٩٠

172. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से जो शख़्स अपने अमीर की ऐसी बात देखे जो उसे नागवार हो, तो उसे चाहिए कि उस पर सब्र करे, क्योंकि जो शख़्स मुसमलानों की जमाअ़त यानी इज्तिमाइयत से बालिश्त भर भी जुदा हुआ (और तौबा किए बग़ैर) उसी हालत में मर गया तो वह जाहिलियत की मौत मरा। (मुस्लिम)

**फ़ायदा :** "जाहिलियत की मौत मरा" से मुराद यह है कि ज़माना जाहिलियत में लोग आज़ाद रहते थे, न वह अपने सरदार की इताअ़त करते थे, न अपने रहनुमा की बात मानते थे। (नव्वी)

﴿173﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَاطَاعَةَ فِيْ مَعْصِيَةِ اللهِ، اِنَّمَا الطَّاعَةُ فِي الْمَعْرُوْفِ۔ (وهو بعض الحديث) رواه ابو داؤد، باب في الطاعة، رقم: ٢٦٢٥

173. हज़रत अ़ली ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी में किसी की इताअ़त न करो, इताअ़त तो सिर्फ़ नेकी के कामों में है। (अबूदाऊद)

﴿174﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اَلسَّمْعُ وَالطَّاعَةُ حَقٌّ عَلَى الْمَرْءِ الْمُسْلِمِ فِيْمَا اَحَبَّ اَوْكَرِهَ اِلَّا اَنْ يُؤْمَرَ بِمَعْصِيَةٍ فَاِنْ اُمِرَ بِمَعْصِيَةٍ فَلَا سَمْعَ عَلَيْهِ وَلَا طَاعَةَ۔ رواه احمد ١٤٢/٢

Copyright © Ot

174. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अमीर की बात सुनना और मानना मुसलमान पर वाजिब है, उन चीज़ों में जो उसे पसन्द हों या नापसन्द हों, मगर यह कि उसे अल्लाह तआला की नाफ़रमानी का हुक्म दिया जाए तो जायज़ नहीं, लिहाज़ा अगर किसी गुनाह के करने का हुक्म दिया जाए तो उसका सुनना और मानना उसके ज़िम्मे नहीं। (मुस्नद अहमद)

﴿175﴾ عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: اِذَا سَافَرْتُمْ فَلْیَؤُمَّکُمْ اَقْرَأُکُمْ، وَاِنْ کَانَ اَصْغَرَکُمْ، وَاِذَا اَمَّکُمْ فَھُوَ اَمِیْرُکُمْ۔

رواہ البزار واسنادہ حسن، مجمع الزوائد ۲/۲۰٦

175. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम सफ़र करो तो तुम्हारा इमाम वह होना चाहिए जिसको क़ुरआन करीम ज़्यादा याद हो (और मसाइल को ज़्यादा जानने वाला हो) अगरचे वह तुम में सबसे छोटा हो और जब वह तुम्हारा नमाज़ में इमाम बना तो वह तुम्हारा अमीर भी है।

(बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : कुछ दूसरी रिवायतों से यह भी मालूम होता है कि आप ﷺ ने कभी किसी ख़ास सिफ़त की वजह से ऐसे शख़्स को भी अमीर बनाया जिनके साथी उनसे अफ़ज़ल थे, जैसा कि हदीस नम्बर 156 के फ़ायदे में गुज़र चुका है।

﴿176﴾ عَنْ عُبَادَۃَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: مَنْ عَبَدَ اللّٰہَ تَبَارَکَ وَتَعَالٰی لَا یُشْرِکُ بِہٖ شَیْئًا فَاَقَامَ الصَّلَاۃَ وَآتَی الزَّکَاۃَ وَسَمِعَ وَاَطَاعَ فَاِنَّ اللّٰہَ تَبَارَکَ وَتَعَالٰی یُدْخِلُہٗ مِنْ اَیِّ اَبْوَابِ الْجَنَّۃِ شَاءَ وَلَھَا ثَمَانِیَۃُ اَبْوَابٍ وَمَنْ عَبَدَ اللّٰہَ تَبَارَکَ وَتَعَالٰی لَا یُشْرِکُ بِہٖ شَیْئًا وَاَقَامَ الصَّلَاۃَ وَآتَی الزَّکَاۃَ وَسَمِعَ وَعَصٰی فَاِنَّ اللّٰہَ تَبَارَکَ وَتَعَالٰی مِنْ اَمْرِہٖ بِالْخِیَارِ اِنْ شَاءَ رَحِمَہٗ وَاِنْ شَاءَ عَذَّبَہٗ۔ رواہ احمد والطبرانی ورجالہ ثقات، مجمع الزوائد ۵/۳۸۹

176. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने अल्लाह तबारक व तआला की इस तरह इबादत की कि उनके साथ किसी को शरीक नहीं ठहराया, नमाज़ को क़ायम किया, ज़कात अदा की और अमीर की बात को सुना और माना अल्लाह तआला उसको जन्नत के दरवाज़ों में से जिस दरवाज़े से वह चाहेगा जन्नत में दाख़िल फ़रमाएंगे। जन्नत के आठ दरवाज़े हैं और जिसने अल्लाह तआला की इस तरह इबादत की कि उनके साथ

Copyright © O

किसी को शरीक न ठहराया, नमाज़ क़ायम की, ज़कात अदा की और अमीर की बात को सुना (लेकिन) उसे न माना तो उसका मामला अल्लाह के सुपुर्द है, चाहे उस पर रहम फ़रमाएं, चाहे उसको अज़ाब दें। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿177﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: الْغَزْوُ غَزْوَانِ فَاَمَّا مَنِ ابْتَغَى وَجْهَ اللهِ، وَاَطَاعَ الْإِمَامَ، وَاَنْفَقَ الْكَرِيْمَةَ، وَيَاسَرَ الشَّرِيْكَ، وَاجْتَنَبَ الْفَسَادَ، فَاِنَّ نَوْمَهُ وَنَبْهَهُ اَجْرٌ كُلُّهُ، وَاَمَّا مَنْ غَزَا فَخْرًا وَرِيَاءً وَسُمْعَةً وَعَصَى الْإِمَامَ، وَاَفْسَدَ فِي الْاَرْضِ، فَاِنَّهُ لَمْ يَرْجِعْ بِالْكَفَافِ. رواه ابوداؤد، باب فيمن يغزو ويلتمس الدنيا، رقم: ٢٥١٥

177. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिहाद में निकलना दो क़िस्म पर है : जिसने जिहाद के लिए निकलने में अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी को मक़्सूद बनाया, अमीर की फ़रमांबरदारी की, अपने उम्दा माल को ख़र्च किया, साथी के साथ नर्मी का मामला किया और (हर क़िस्म के) फ़साद से बचा, तो ऐसे शख़्स का सोना-जागना सबका सब सवाब है और जो जिहाद में फ़ख़्र और दिखलाने और लोगों में अपने चर्चे कराने के लिए निकला, अमीर की बात न मानी और ज़मीन में फ़साद फैलाया, तो वह जिहाद से ख़सारे के साथ लौटेगा। (अबूदाऊद)

﴿178﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَارَسُوْلَ اللهِ! رَجُلٌ يُرِيْدُ الْجِهَادَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ وَهُوَ يَبْتَغِيْ عَرَضًا مِنْ عَرَضِ الدُّنْيَا؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لَا اَجْرَ لَهُ، فَاَعْظَمَ ذٰلِكَ النَّاسُ وَقَالُوْا لِلرَّجُلِ: عُدْ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَلَعَلَّكَ لَمْ تُفْهِمْهُ، فَقَالَ يَارَسُوْلَ اللهِ! رَجُلٌ يُرِيْدُ الْجِهَادَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ وَهُوَ يَبْتَغِيْ عَرَضًا مِنْ عَرَضِ الدُّنْيَا؟ قَالَ: لَا اَجْرَ لَهُ، فَقَالُوْا لِلرَّجُلِ: عُدْ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ لَهُ الثَّالِثَةَ، فَقَالَ لَهُ: لَا اَجْرَ لَهُ.

رواه ابوداؤد، باب فيمن يغزو ويلتمس الدنيا، رقم: ٢٥١٦

178. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने दरयाफ़्त किया : या रसूलल्लाह! एक आदमी अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद के लिए इस नीयत से जाता है कि उसे दुनिया का कुछ सामान मिल जाए? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसे कोई सवाब न मिलेगा। लोगों ने उसको बहुत बड़ी बात समझा और उस शख़्स से कहा तुम इस बात को रसूलुल्लाह ﷺ से दोबारा पूछो, शायद तुम अपनी बात रसूलुल्लाह ﷺ को समझा नहीं सके। उस शख़्स ने दोबारा अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! एक आदमी जिहाद में इस नीयत से जाता है कि उसे दुनिया का कुछ

Copyright © O

सामान मिल जाएगा? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसे कोई सवाब नहीं मिलेग. . लोगों ने उस शख़्स से कहा अपना सवाल फिर से दोहराओ, चुनांचे उस शख़्स ने तीसरी मर्तबा पूछा, आप ﷺ ने तीसरी मर्तबा भी उससे यही फ़रमाया कि उसे क सवाब नहीं मिलेगा। (अबूदाऊद)

﴿179﴾ عَنْ اَبِیْ ثَعْلَبَةَ الْخُشَنِیِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: وَكَانَ النَّاسُ اِذَا نَزَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَنْزِلًا تَفَرَّقُوْا فِی الشِّعَابِ وَالْاَوْدِیَةِ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ تَفَرُّقَكُمْ فِیْ هٰذِهِ الشِّعَابِ وَالْاَوْدِیَةِ اِنَّمَا ذٰلِكُمْ مِنَ الشَّیْطَانِ، فَلَمْ یَنْزِلْ بَعْدَ ذٰلِكَ مَنْزِلًا اِلَّا انْضَمَّ بَعْضُهُمْ اِلٰی بَعْضٍ حَتّٰی یُقَالَ: لَوْ بُسِطَ عَلَیْهِمْ ثَوْبٌ لَعَمَّهُمْ.

رواه ابو داؤد، باب ما يؤمر من انضمام العسكر وسعته، رقم: ٢٦٢٨

179. हज़रत अबू सालबा खुशनी ﷺ फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह ﷺ किसी जगह ठहरने के लिए पड़ाव डाला करते थे, तो सहाबा ﷺ घाटियों और वादियों में बिखकर ठ ठहरते थे। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारा यह घाटियों और वादियों में बिर जाना शैतान की तरफ़ से है (जो तुमको एक दूसरे से जुदा रखना चाहता है) इस इर्शाद के बाद रसूलुल्लाह ﷺ जहां भी ठहरते तमाम सहाबा इकट्ठे मिल- जुलकर ठहरते, यहां त कि उन्हें (एक दूसरे से क़रीब-क़रीब देखकर) यूं कहा जाने लगा कि अगर उन सब पर एक कपड़ा डाला जाए तो वह उन सबको ढांप ले। (अबूदाऊ

﴿180﴾ عَنْ صَخْرٍ الْغَامِدِیِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ: اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لِاُمَّتِیْ فِیْ بُكُوْرِهَا وَكَانَ اِذَا بَعَثَ سَرِیَّةً اَوْ جَیْشًا بَعَثَهَا مِنْ اَوَّلِ النَّهَارِ، وَكَانَ صَخْرٌ رَجُلًا تَاجِرًا، وَكَانَ یَبْعَثُ تِجَارَتَهُ مِنْ اَوَّلِ النَّهَارِ، فَاَثْرٰی وَكَثُرَ مَالُهُ.

رواه ابو داؤد باب في الابتكار في السفر، رقم: ٢٦٠٦

180. हज़रत सख़ ग़ामिदी ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया "या अल्लाह! मेरी उम्मत के लिए दिन के इब्तिदाई हिस्से में बरकत अता फ़रमा दे रसूलुल्लाह ﷺ जब कोई छोटा या बड़ा लश्कर रवाना फ़रमाते, तो उसको दिन के इब्तिदाई हिस्से में रवाना फ़रमाते। हज़रत सख़ ﷺ जो एक ताजिर थे अप तिजारती माल दिन के इब्तिदाई हिस्से में मुलाज़िमीन के ज़रिए फ़रोख़्त के लिए भेजते थे, चुनांचे वह ग़नी हो गए और उनका माल बढ़ गया। (अबूदाऊ

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ में रसूलुल्लाह ﷺ की इस दुआ का मक़सद यह है कि मेरी उम्मत के लोग दिन के इब्तिदाई हिस्से में सफ़र करें या कोई दीनी दुनयावी काम करें तो उसमें उन्हें बरकत हासिल हो।

Copyright © Ot

﴿181﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ لِاَكْثَمَ بْنِ الْجَوْنِ الْخُزَاعِيِّ: يَا اَكْثَمُ! اغْزُ مَعَ غَيْرِ قَوْمِكَ يَحْسُنْ خُلُقُكَ، وَتَكْرُمْ عَلٰى رُفَقَائِكَ، يَا اَكْثَمُ! خَيْرُ الرُّفَقَاءِ اَرْبَعَةٌ، وَخَيْرُ السَّرَايَا اَرْبَعُمِائَةٍ، وَخَيْرُ الْجُيُوْشِ اَرْبَعَةُ آلَافٍ وَلَنْ يُغْلَبَ اِثْنَا عَشَرَ اَلْفًا مِنْ قِلَّةٍ. رواه ابن ماجه، باب السرايا، رقم: ٢٨٢٧

181. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अकसम बिन जौन ख़ुज़ाई ﷺ को इर्शाद फ़रमाया : अकसम! अपनी क़ौम के अलावा दूसरों के साथ मिलकर भी जिहाद किया करो, उससे तुम्हारे अख़्लाक़ अच्छे हो जाएंगे और उन अख़्लाक़ की वजह से तुम अपने रुफ़क़ा और साथियों की नज़र में इज़्ज़त वाले हो जाओगे। अकसम! (सफ़र के लिए) बेहतरीन साथी (कम-से-कम) चार हैं और बेहतरीन सरीया (छोटा लश्कर) वह है जो चार सौ अफ़राद पर मुश्तमिल हो और बेहतरीन जैश (बड़ा लश्कर) चार हज़ार का है। बारह हज़ार अफ़राद अपनी तादाद की कमी की वजह से शिकस्त नहीं खा सकते (अलबत्ता दूसरी कोई वजह शिकस्त की हो तो और बात है जैसे अल्लाह तआला की किसी नाफ़रमानी में मुब्तला हो जाना वग़ैरह)। (इब्ने माजा)

﴿182﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ فِيْ سَفَرٍ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، اِذْ جَاءَهُ رَجُلٌ عَلٰى رَاحِلَةٍ لَهُ، قَالَ: فَجَعَلَ يَصْرِفُ بَصَرَهُ يَمِيْنًا وَشِمَالًا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ كَانَ مَعَهُ فَضْلُ ظَهْرٍ فَلْيَعُدْ بِهِ عَلٰى مَنْ لَا ظَهْرَ لَهُ، وَمَنْ كَانَ لَهُ فَضْلٌ مِنْ زَادٍ فَلْيَعُدْ بِهِ عَلٰى مَنْ لَا زَادَ لَهُ، قَالَ: فَذَكَرَ مِنْ اَصْنَافِ الْمَالِ مَاذَكَرَ، حَتّٰى رَاَيْنَا اَنَّهُ لَا حَقَّ لِاَحَدٍ مِنَّا فِيْ فَضْلٍ. رواه مسلم، باب استحباب المواساة بفضول المال، رقم: ٤٥١٧

182. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं कि एक मौक़े पर हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ सफ़र में थे कि अचानक एक साहब सवारी पर आए और (अपनी ज़रूरत के इज़्हार के लिए) दाएं-बाएं देखने लगे (ताकि किसी ज़रिए से उनकी ज़रूरत पूरी हो सके) उस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसके पास (अपनी ज़रूरत से) ज़ाइद सवारी हो वह उसको दे दे, जिसके पास सवारी न हो और जिसके पास (अपनी ज़रूरत से) ज़ाइद खाने पीने का सामान हो, उसको दे दे, जिसके पास खाने पीने का सामान न हो। रावी कहते हैं कि इस तरह आप ﷺ ने मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मालों का ज़िक्र किया, यहां तक (आप ﷺ की तरग़ीब से) हमें यह एहसास होने लगा कि हम में से किसी का अपनी ज़ाइद चीज़ पर कोई हक़ नहीं है (बल्कि उस चीज़ का हक़दार मुस्तहिक़ वह शख़्स है जिसके पास वह चीज़ नहीं है)। (मुस्लिम)

Copyright© Ot

﴿183﴾ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا حَدَّثَ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَنَّهُ اَرَادَ اَنْ يَغْزُوَ فَقَالَ: يَا مَعْشَرَ الْمُهَاجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ! اِنَّ مِنْ اِخْوَانِكُمْ قَوْمًا لَيْسَ لَهُمْ مَالٌ وَلَا عَشِيْرَةٌ فَلْيَضُمَّ اَحَدُكُمْ اِلَيْهِ الرَّجُلَيْنِ اَوِالثَّلَاثَةَ.

(الحديث) رواه ابوداؤد باب الرجل يتحمل بمال غيره يغزو، رقم: ٢٥٣٤

183. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ ब्यान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ एक ग़ज़्वा पर जाने लगे, तो इर्शाद फ़रमाया : मुहाजिरीन व अन्सार की जमाअ़त! तुम्हारे भाइयों में से कुछ लोग ऐसे हैं जिनके पास न माल है न उनके रिश्तेदार हैं, इसलिए तुममें से हर एक उनमें से दो या तीन को अपने साथ मिला ले। (अबूदाऊद)

﴿184﴾ عَنِ الْمُطْعِمِ بْنِ الْمِقْدَامِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا خَلَّفَ عَبْدٌ عَلٰى اَهْلِهٖ اَفْضَلَ مِنْ رَكْعَتَيْنِ يَرْكَعُهُمَا عِنْدَهُمْ حِيْنَ يُرِيْدُ سَفَرًا.

رواه ابن ابي شيبة حديث ضعيف، الجامع الصغير ٢/٤٩٥، ورد عليه صاحب الاتحاف وملخص كلامه ان الحديث ليس بضعيف، اتحاف السادة ٣/٤٦٥

184. हज़रत मुतइम बिन मिक़दाम ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी जब सफ़र पर जाने लगे तो सबसे बेहतर नायब जिसे वह अपने अह्ल व अ़याल के पास छोड़कर जाए, वह दो रकअ़तें हैं, जो उनके पास पढ़कर जाए। (जामेअ़ सग़ीर)

﴿185﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يَسِّرُوْا وَلَا تُعَسِّرُوْا، وَبَشِّرُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا.

رواه البخاري باب ما كان النبي ﷺ يتخولهم بالموعظة... رقم: ٦٩

185. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगों के साथ आसानी का बरताव करो और उनके साथ सख़्ती का बरताव न करो, ख़ुशख़बरियां सुनाओ और नफ़रत न दिलाओ। (बुख़ारी)

यानी लोगों को नेक काम करने पर अज्र व सवाब की ख़ुशख़बरियां सुनाओ और उनके गुनाहों पर ऐसा मत डराओ कि वे अल्लाह तआ़ला की रहमत से मायूस होकर दीन से दूर हो जाएं।

﴿186﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ هُوَ ابْنُ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: قَفْلَةٌ كَغَزْوَةٍ.

Copyright © Ot

رواه ابوداؤد باب في فضل القفل في الغزو، رقم: ٢٤٨٧

186. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिहाद से लौट कर आना भी जिहाद में जाने की तरह है। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद करने पर जो अज्र व सवाब मिलता है, वही अज्र व सवाब अल्लाह तआ़ला के रास्ते से वापस आने के बाद मक़ाम पर रहते हुए भी मिलता है जबकि नीयत यह हो कि जिस ज़रूरत की वजह से वापस लौटा था, ज्यों ही ज़रूरत पूरी हो जाएगी या जब अल्लाह तआ़ला के रास्ते का बुलावा आएगा, फ़ौरन अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकल जाऊंगा। (मज़ाहिरे हक़)

﴿187﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ اِذَا قَفَلَ مِنْ غَزْوٍ اَوْحَجٍّ اَوْ عُمْرَةٍ يُكَبِّرُ عَلٰى كُلِّ شَرَفٍ مِنَ الْاَرْضِ ثَلَاثَ تَكْبِيْرَاتٍ وَيَقُوْلُ: لَآاِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَاشَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، آيِبُوْنَ تَائِبُوْنَ عَابِدُوْنَ سَاجِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ، صَدَقَ اللهُ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهُ.

رواه ابوداؤد، باب في التكبير على كل شرف في المسير، رقم: ٢٧٧٠

187. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ जब जिहाद, हज या उमरे से लौटते तो हर बुलन्दी पर तीन मर्तबा तकबीर कहते, उसके बाद ये कलिमे पढ़ते :

तर्जुमा : अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं, उनका कोई शरीक नहीं, उन्हीं के लिए बादशाही है, उन्हीं के लिए तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर हैं। हम वापस होने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं और सज्दा करने वाले हैं। अल्लाह तआ़ला ने अपना वादा सच्चा कर दिया और अपने बन्दे की मदद फ़रमाई और उन्होंने तन्हा दुश्मनों को शिकस्त दी। (अबूदाऊद)

﴿188﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَعَاهُ اِلَى الْاِسْلَامِ، وَقَالَ لَهُ: يَاعَمْرَوبْنَ مُرَّةَ: اَنَا النَّبِيُّ الْمُرْسَلُ اِلَى الْعِبَادِ كَافَّةً اَدْعُوْهُمْ اِلَى الْاِسْلَامِ وَآمُرُهُمْ بِحَقْنِ الدِّمَاءِ، وَصِلَةِ الْاَرْحَامِ، وَعِبَادَةِ اللهِ، وَرَفْضِ الْاَصْنَامِ، وَحَجِّ الْبَيْتِ وَصِيَامِ شَهْرِ رَمَضَانَ، شَهْرٍ مِنَ اثْنَيْ عَشَرَ شَهْرًا، فَمَنْ اَجَابَ فَلَهُ الْجَنَّةُ، وَمَنْ عَصٰى فَلَهُ النَّارُ فَآمِنْ بِاللهِ يَاعَمْرُو يُؤْمِنْكَ اللهُ مِنْ هَوْلِ جَهَنَّمَ، قُلْتُ: اَشْهَدُ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَنَّكَ رَسُوْلُ اللهِ، وَآمَنْتُ بِكُلِّ مَا جِئْتَ بِهِ بِحَلَالٍ وَحَرَامٍ، وَاِنْ اَرْغَمَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا مِنَ الْاَقْوَامِ، فَقَالَ النَّبِيُّ

Copyright © O

ﷺ: مَرْحَبًا بِكَ يَاعَمْرَوبْنَ مُرَّةَ، فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ بِاَبِيْ اَنْتَ وَاُمِّيْ، اِبْعَثْنِيْ اِلٰى قَوْمِيْ لَعَلَّ اللهَ اَنْ يَمُنَّ بِيْ عَلَيْهِمْ كَمَا مَنَّ بِكَ عَلَيَّ فَبَعَثَنِيْ اِلَيْهِمْ فَقَالَ: عَلَيْكَ بِالرِّفْقِ وَالْقَوْلِ السَّدِيْدِ، وَلَا تَكُنْ فَظًّا وَلَا مُتَكَبِّرًا وَلَا حَسُوْدًا، فَاَتَيْتُ قَوْمِيْ فَقُلْتُ: يَابَنِيْ رِفَاعَةَ، يَا مَعْشَرَ جُهَيْنَةَ، اِنِّيْ رَسُوْلُ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اِلَيْكُمْ، اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْجَنَّةِ وَاُحَذِّرُكُمُ النَّارَ، وَآمُرُكُمْ بِحَقْنِ الدِّمَاءِ، وَصِلَةِ الْاَرْحَامِ، وَعِبَادَةِ اللهِ، وَرَفْضِ الْاَصْنَامِ، وَحَجِّ الْبَيْتِ، وَصِيَامِ شَهْرِ رَمَضَانَ، شَهْرٍ مِنَ اثْنَيْ عَشَرَ شَهْرًا، فَمَنْ اَجَابَ فَلَهُ الْجَنَّةُ، وَمَنْ عَصٰى فَلَهُ النَّارُ، يَامَعْشَرَ جُهَيْنَةَ، اِنَّ اللهَ -عَزَّوَجَلَّ- جَعَلَكُمْ خِيَارَمَنْ اَنْتُمْ مِنْهُ، وَبَغَّضَ اِلَيْكُمْ فِيْ جَاهِلِيَّتِكُمْ مَا حُبِّبَ اِلٰى غَيْرِكُمْ، مِنْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَجْمَعُوْنَ بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ، وَيَخْلُفُ الرَّجُلُ مِنْهُمْ عَلٰى امْرَاَةِ اَبِيْهِ، وَالْغَزَاةِ فِي الشَّهْرِ الْحَرَامِ، فَاَجِيْبُوْا هٰذَا النَّبِيَّ الْمُرْسَلَ مِنْ بَنِيْ لُؤَيِّ بْنِ غَالِبٍ، تَنَالُوْا شَرَفَ الدُّنْيَا وَكَرَامَةَ الْآخِرَةِ، وَسَارِعُوْا فِيْ ذٰلِكَ يَكُنْ لَكُمْ فَضِيْلَةٌ عِنْدَ اللهِ، فَاَجَابُوْهُ اِلَّا رَجُلًا وَاحِدًا. رواه الطبراني مختصرا من مجمع الزوائد ٨/٤٤١

188. हज़रत अम्र बिन मुर्रा जुहनी ﷺ को रसूलुल्लाह ﷺ ने इस्लाम की दावत दी और फ़रमाया : अम्र बिन मुर्रा! मैं अल्लाह तआला के तमाम बन्दों की तरफ़ नबी बनाकर भेजा गया हूं। मैं उन्हें इस्लाम की दावत देता हूं और मैं उनको हुक्म देता हूं कि वे ख़ून की हिफ़ाज़त करें (किसी को नाहक़ क़त्ल न करें) सिलारहमी करें, एक अल्लाह तआला की इबादत करें, बुतों को छोड़ दें, बैतुल्लाह का हज करें और बारह महीनों में से एक माह रमज़ान में रोज़े रखें जो इन बातों को मान लेगा उसे जन्नत मिलेगी और जो उन्हें नहीं मानेगा उसके लिए जहन्नम होगी। अम्र! अल्लाह तआला पर ईमान लाओ, वह तुम्हें जहन्नम की हौलनाकियों से अम्न अता फ़रमाएंगे। हज़रत अम्र ﷺ ने अर्ज़ किया, मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है और बेशक आप अल्लाह तआला के रसूल हैं और जो आप हलाल व हराम लेकर आए हैं, मैं उस पर ईमान लाया, अगरचे यह बात बहुत-सी क़ौमों को नागवार गुज़रेगी। आप ﷺ ने ख़ुशी का इज़्हार फ़रमाया और कहा, अम्र! तुम्हें मरहबा हो।

फिर हज़रत अम्र ﷺ ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, आप मुझे मेरी क़ौम की तरफ़ भेज दें, हो सकता है कि अल्लाह तआला उन पर भी मेरे ज़रिए से फ़ज़्ल फ़रमा दें, जैसे आपके ज़रिए से मुझ पर फ़ज़्ल फ़रमाया है। चुनांचे आप ﷺ ने मुझे भेजा और यह हिदायत दी कि नर्मी से पेश आना, सही और सीधी बात कहना, सख़्त कलामी और

Copyright © O

बदख़ुल्क़ी से पेश न आना, तकब्बुर और हसद न करना। मैं अपनी क़ौम के पास आया, मैंने कहा : बनी रिफ़ाआ! जुहैना के लोगो! मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह तआला के रसूल ﷺ का क़ासिद हूं। मैं तुम्हें जन्नत की दावत देता हूं और तुम को जहन्नम से डराता हूं। और मैं तुम्हें इस बात का हुक्म देता हूं कि तुम ख़ून की हिफ़ाज़त करो, यानी किसी को नाहक़ क़त्ल न करो, सिला रहमी करो, एक अल्लाह तआला की इबादत करो, बुतों को छोड़ दो, बैतुल्लाह का हज करो और बारह महीनों में से एक माह रमज़ान में रोज़े रखो। जो इन बातों को मान लेगा उसे जन्नत मिलेगी और जो नहीं माने उसके लिए दोज़ख़ होगी। क़बीला जुहैना वालो! अल्लाह तआला ने तुम्हें अरबों में से बेहतरीन क़बीला बनाया है और जो बुरी बातें अरब के दूसरे क़बीलों को अच्छी लगती थीं अल्लाह तआला ने ज़माना जाहिलियत में भी तुम्हारे दिलों में उनकी नफ़रत डाली हुई थी, मसलन दूसरे क़बीला वाले दो बहनों से इकट्ठी शादी कर लेते थे और अपने बाप की बीवी से शादी कर लेते थे और अदब व अज़्मत वाले महीने में जंग कर लेते थे (और तुम ये ग़लत काम ज़माना जाहिलियत में भी नहीं करते थे) लिहाज़ा अल्लाह तआला की तरफ़ से इस भेजे हुए रसूल की बात मान लो, जिनका तअल्लुक़ बनी लूवी बिन ग़ालिब क़बीला से है तो तुम दुनिया की शराफ़त और आख़िरत की इज़्ज़त पा लोगे। तुम उनकी बात क़ुबूल करने में जल्दी करो तुम्हें अल्लाह तआला के यहां से (इस्लाम में पहल करने की) फ़ज़ीलत हासिल होगी, चुनांचे उनकी दावत पर एक आदमी के अलावा सारी क़ौम मुसलमान हो गई।

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : अदब व अज़्मत वाले महीने चार थे, जिनमें अरब जंग नहीं करते थे—मुहर्रम, रज्जब, ज़ीक़ादा, ज़िलहिज्जा। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

﴿189﴾ عَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ لَا يَقْدَمُ مِنْ سَفَرٍ إِلَّا نَهَارًا فِي الضُّحَى، فَإِذَا قَدِمَ، بَدَأَ بِالْمَسْجِدِ، فَصَلَّى فِيْهِ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ جَلَسَ فِيْهِ.

رواه مسلم باب استحباب ركعتين في المسجد ... رقم: ١٦٥٩

189. हज़रत काब बिन मालिक رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ का मामूल था कि दिन में चाश्त के वक़्त सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते और आने के बाद पहले मस्जिद जाते, दो रकअ़त नमाज़ अदा फ़रमाते, फिर मस्जिद में बैठते। (मुस्लिम)

Copyright © O

﴿190﴾ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُوْلُ: فَلَمَّا اَتَيْنَا الْمَدِيْنَةَ قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِئْتِ الْمَسْجِدَ فَصَلِّ رَكْعَتَيْنِ.

رواه البخاري باب الهبة المقبوضة وغير المقبوضة رقم: ٢٦٠٤

190. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि जब हम (सफ़र से वापस) मदीना आ गए, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने (मुझसे) इर्शाद फ़रमाया : मस्जिद जाओ और दो रकअ़त नमाज़ पढ़ो। (बुख़ारी)

﴿191﴾ عَنْ شِهَابِ بْنِ عَبَّادٍ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّهُ سَمِعَ بَعْضَ وَفْدِ عَبْدِ الْقَيْسِ وَهُمْ يَقُوْلُوْنَ: قَدِمْنَا عَلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَاشْتَدَّ فَرْحُهُمْ بِنَا، فَلَمَّا انْتَهَيْنَا إِلَى الْقَوْمِ اَوْسَعُوْا لَنَا فَقَعَدْنَا، فَرَحَّبَ بِنَا النَّبِيُّ ﷺ وَدَعَا لَنَا، ثُمَّ نَظَرَ إِلَيْنَا، فَقَالَ: مَنْ سَيِّدُكُمْ وَزَعِيْمُكُمْ؟ فَاَشَرْنَا بِاَجْمَعِنَا إِلَى الْمُنْذِرِ بْنِ عَائِذٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اَهٰذَا الْاَشَجُّ؟ فَكَانَ اَوَّلَ يَوْمٍ وُضِعَ عَلَيْهِ هٰذَا الْاِسْمُ بِضَرْبَةٍ لِوَجْهِهِ بِحَافِرِ حِمَارٍ، قُلْنَا: نَعَمْ يَا رَسُوْلَ اللهِ! فَتَخَلَّفَ بَعْدَ الْقَوْمِ، فَعَقَلَ رَوَاحِلَهُمْ وَضَمَّ مَتَاعَهُمْ، ثُمَّ اَخْرَجَ عَيْبَتَهُ فَاَلْقَى عَنْهُ ثِيَابَ السَّفَرِ وَلَبِسَ مِنْ صَالِحِ ثِيَابِهِ، ثُمَّ اَقْبَلَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَقَدْ بَسَطَ النَّبِيُّ ﷺ رِجْلَهُ وَاتَّكَا، فَلَمَّا دَنَا مِنْهُ الْاَشَجُّ اَوْسَعَ الْقَوْمُ لَهُ، وَقَالُوْا: هٰهُنَا يَا اَشَجُّ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاسْتَوَى قَاعِدًا وَقَبَضَ رِجْلَهُ: هٰهُنَا يَا اَشَجُّ فَقَعَدَ عَنْ يَمِيْنِ النَّبِيِّ ﷺ فَرَحَّبَ بِهِ وَالْطَفَهُ، وَسَاَلَهُ عَنْ بِلَادِهِ، وَسَمَّى لَهُ قَرْيَةً قَرْيَةً الصَّفَا وَالْمُشَقَّرِ وَغَيْرَ ذٰلِكَ مِنْ قُرَى هَجَرَ، فَقَالَ: بِاَبِيْ وَاُمِّيْ يَا رَسُوْلَ اللهِ! لَاَنْتَ اَعْلَمُ بِاَسْمَاءِ قُرَانَا مِنَّا، فَقَالَ: اِنِّيْ قَدْ وَطِئْتُ بِلَادَكُمْ وَفُسِحَ لِيْ فِيْهَا قَالَ: ثُمَّ اَقْبَلَ عَلَى الْاَنْصَارِ فَقَالَ: يَامَعْشَرَ الْاَنْصَارِ! اَكْرِمُوْا اِخْوَانَكُمْ فَاِنَّهُمْ اَشْبَاهُكُمْ فِي الْاِسْلَامِ، اَشْبَهُ شَيْءٍ بِكُمْ اَشْعَارًا، وَاَبْشَارًا، اَسْلَمُوْا طَائِعِيْنَ غَيْرَ مُكْرَهِيْنَ وَلَا مَوْتُوْرِيْنَ اِذْ اَبَى قَوْمٌ اَنْ يُسْلِمُوْا حَتَّى قُتِلُوْا، قَالَ: فَلَمَّا اَنْ اَصْبَحُوْا قَالَ: كَيْفَ رَاَيْتُمْ كَرَامَةَ اِخْوَانِكُمْ لَكُمْ وَضِيَافَتَهُمْ اِيَّاكُمْ؟ قَالُوْا: خَيْرُ اِخْوَانٍ، اَلَانُوْا فِرَاشَنَا، وَاَطَابُوْا مَطْعَمَنَا، وَبَاتُوْا وَاَصْبَحُوْا يُعَلِّمُوْنَنَا كِتَابَ رَبِّنَا تَبَارَكَ وَتَعَالَى وَسُنَّةَ نَبِيِّنَا ﷺ، فَاَعْجَبَتِ النَّبِيَّ ﷺ وَفَرِحَ بِهَا، ثُمَّ اَقْبَلَ عَلَيْنَا رَجُلًا رَجُلًا، فَعَرَضْنَا عَلَيْهِ مَا تَعَلَّمْنَا وَعُلِّمْنَا فَمِنَّا مَنْ عَلِمَ التَّحِيَّاتِ وَاُمَّ الْكِتَابِ وَالسُّوْرَةَ وَالسُّوْرَتَيْنِ وَالسُّنَنَ.

Copyright © O

(الحديث) رواه أحمد ٣/٤٣٢

191. हज़रत शिहाब बिन अब्बाद रह० फ़रमाते हैं क़बीला अब्दे कैस का जो वफ़्द रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में गया था, उसमें से एक साहब को अपने सफ़र की तफ़सील बताते हुए इस तरह सुना कि जब हम रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए, तो हमारे आने की वजह से मुसलमानों को इंतिहाई ख़ुशी हुई। जिस वक़्त हम रसूलुल्लाह ﷺ की मज्लिस में पहुंचे, लोगों ने हमारे लिए जगह कुशादा कर दी, हम वहां बैठ गए। रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें ख़ुश आमदीद कहा और दुआ दी। फिर हमारी तरफ़ देखकर इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारा सरदार और ज़िम्मेदार कौन है? हम सब ने मुंज़िर बिन आइद की तरफ़ इशारा किया। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या अशज यानी ज़ख़्म के निशान वाले तुम्हारे सरदार हैं? हमने अर्ज़ किया : जी हां, (अशज उसे कहते हैं जिसके सर या चेहरे पर किसी ज़ख़्म का निशान हो) उसके चेहरे पर गधे के खुर लगने के ज़ख़्म का निशान था और यह सबसे पहला दिन था जिसमें उनका नाम अशज पड़ा। ये साथियों से पीछे ठहर गए थे उन्होंने साथियों की सवारियों को बांधा और उनका सामान संभाला। फिर अपनी गठरी निकाली और सफ़र के कपड़े उतार कर साफ़ कपड़े पहने, फिर रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ़ चल दिए। (उस वक़्त) रसूलुल्लाह ﷺ पैर मुबारक फैलाकर टेक लगाए हुए थे। जब हज़रत अशज رضي الله عنه आपके क़रीब आए तो लोगों ने उनके लिए जगह बना दी और कहा! अशज! यहां बैठिए। रसूलुल्लाह ﷺ पांव समेट कर सीधे बैठ गए और फ़रमाया : अशज! यहां आ जाओ। चुनांचे वह रसूलुल्लाह ﷺ की दाएं तरफ़ बैठ गए। आप ﷺ ने उन्हें ख़ुशआमदीद फ़रमाया और शफ़क़त का मामला फ़रमाया। उनसे उनके इलाक़ों के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया और हजर की एक-एक बस्ती सफ़ा, मुशक़र वग़ैरह का ज़िक्र किया। हज़रत अशज رضي الله عنه ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान, आप तो हमारी बस्तियों के नाम हम से ज़्यादा जानते हैं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे लिए तुम्हारे इलाक़े खोल दिए गए, मैं उनमें चला फिरा हूं फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने अन्सार की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया : ऐ अन्सार! अपने भाइयों का इकराम करो, क्योंकि ये तुम्हारी तरह मुसलमान हैं, इनके बालों और खालों की रंगत तुमसे बहुत ज़्यादा मिलती-जुलती भी है। अपनी ख़ुशी से इस्लाम लाए हैं उन पर ज़बरदस्ती नहीं की गई और यह भी नहीं कि (मुसलमानों के लश्कर ने हमला करके उन पर ग़लबा पा लिया हो और) उनका तमाम माल, ग़नीमत का माल बना लिया हो या उन्होंने इस्लाम से इंकार किया हो और उन्हें क़त्ल किया गया हो। (वह वफ़्द अन्सार के यहां रहा) फिर जब सुबह हुई तो आप ﷺ ने इर्शाद

Copyright © O

फ़रमाया : तुमने अपने भाइयों के इकराम और मेहमाननवाज़ी को कैसा पाया? उन्होंने कहा : बहुत अच्छे भाई हैं, हमें नर्म बिस्तर पेश किए, उम्दा खाने खिलाए और सुबह व शाम हमें हमारे रब की किताब और हमारे नबी ﷺ की सुन्नतें सिखाईं। आप ﷺ को यह बात पसन्द आई और उससे आप ﷺ ख़ुश हुए। फिर आप ﷺ ने हममें से एक-एक आदमी की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई। जो हमने सीखा था और जो हमें सिखाया गया था वह हम ने आप ﷺ को बताया। हम में से किसी को अत्तहीय्यात, किसी को सूरा फ़ातिहा, किसी को एक सूरत, किसी को दो सूरतें और किसी को कई सुन्नतें सिखाई गई थीं। (मुस्नद अहमद)

﴿192﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ أَحْسَنَ مَا دَخَلَ الرَّجُلُ عَلَى أَهْلِهِ إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ أَوَّلَ اللَّيْلِ۔ رواه ابو داؤد، باب في الطروق، رقم: ٢٧٧٧

192. हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सफ़र से वापस आने वाले मर्द के लिए अपने घर वालों के पास पहुंचने का बेहतरीन वक़्त रात का इब्तिदाई हिस्सा है (यह इस सूरत में है कि घर वालों को आने के बारे में पहले से इल्म हो या क़रीब का सफ़र हो)। (अबूदाऊद)

﴿193﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: نَهَى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا أَطَالَ الرَّجُلُ الْغَيْبَةَ، أَنْ يَأْتِيَ أَهْلَهُ طُرُوْقًا۔ رواه مسلم، باب كراهة الطروق، رقم: ٤٩٦٧

193. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब किसी इंसान की घर से ग़ैर हाज़िरी का ज़माना ज़्यादा हो जाए, यानी उसको सफ़र में ज़्यादा दिन लग जाएं तो वह (अचानक) रात को अपने घर न जाए। (मुस्लिम)

फ़ायदा : इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि तवील सफ़र के बाद अचानक रात के वक़्त घर जाना मुनासिब नहीं कि इस सूरत में घर वाले पहले से ज़ेहनी तौर पर इस्तिक़बाल के लिए तैयार न होंगे, अलबत्ता अगर आने का इल्म पहले से हो तो रात के वक़्त जाने में कोई हर्ज नहीं। (नववी)

Copyright © O

بسم الله الرحمن الرحيم

# लायानी से बचना

## कुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿وَقُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا﴾ [بنی اسرائیل: ٥٣]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : और आप मेरे बन्दों से फ़रमा दीजिए कि वे ऐसी बात कहा करें जो बेहतर हो (उसमें किसी की दिलआज़ारी न होती हो) क्योंकि शैतान दिलआज़ार बात की वजह से आपस में लड़ा देता है, वाक़ई शैतान इंसान का खुला दुश्मन है। (बनी इसराईल : 53)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ﴾ [المؤمنون: ٣]

अल्लाह तआला ने ईमान वालों की एक सिफ़त यह इर्शाद फ़रमाई कि वे लोग बेकार, लायानी बातों से ऐराज़ करते हैं। (मोमिनून : 3)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّ تَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ۝ وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ۝ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ﴾ [النور: ١٥-١٧]

Copyright © O

(मुनाफ़िक़ों ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा) पर एक मनघड़त तोहमत

लगाई, बाज़ भोले-भाले मुसलमान भी सुनी सुनाई इस अफ़वाह का तज़्किरा करने लगे, इस पर यह आयत नाज़िल हुई) अल्लाह तआला का इर्शाद है : तुम उस वक़्त अज़ाब के मुस्तहिक़ हो जाते जबकि तुम अपनी ज़बानों से इस ख़बर को एक दूसरे से नक़ल कर रहे थे और अपने मुंह से ऐसी बातें कह रहे थे जिनकी हक़ीक़त का तुमको बिल्कुल इल्म न था और तुम उसको मामूली बात समझ रहे थे (कि इसमें कोई गुनाह नहीं है), हालांकि वह अल्लाह तआला के नज़दीक बड़ी सख़्त बात थी और जब तुमने इस बुहतान को सुना था तो उस बुहतान को सुनते ही यूं क्यों न कहा कि हमें तो ऐसी बात का ज़बान से निकालना भी मुनासिब नहीं। अल्लाह की पनाह! यह तो बड़ा बुहतान है। मुसलमानो! अल्लाह तआला तुमको नसीहत करते हैं कि अगर तुम ईमान वाले हो तो आइन्दा फिर कभी ऐसी हरकत न करना (कि बग़ैर तहक़ीक़ के ग़लत ख़बरें उड़ाते फिरो।) (नूर : 15-17)

وقَالَ تَعَالَى: ﴿وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ ۙ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا﴾ [الفرقان: ٧٢]

अल्लाह तआला ने ईमान वालों की एक सिफ़त यह बयान फ़रमाई है : और ये बेहूदा बातों में शामिल नहीं होते अगर इत्तिफ़ाक़न बेहूदा मज्लिसों के पास से गुज़रें, तो संजीदगी और शराफ़त के साथ गुज़र जाते हैं। (फ़ुरक़ान : 72)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿وَإِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ﴾ [القصص: ٥٥]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और जब कोई बेहूदा बात सुनते हैं तो उससे मुंह फेर लेते हैं। (क़सस : 55)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوا أَنْ تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَى مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ﴾ [الحجرات: ٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : मुसलमानो! अगर कोई शरीर तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आए (जिसमें किसी की शिकायत हो) तो इस ख़बर की ख़ूब छान-बीन कर लिया करो कि कहीं ऐसा न हो कि तुम उसकी बात पर एतमाद करके किसी क़ौम को नादानी से कोई नुक़सान पहुंचा दो फिर तुम्हें अपने किए पर पछताना पड़े। (हुजुरात : 6)

Copyright © O

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ﴾ [ق: ١٨]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : इंसान जो भी कोई लफ़्ज़ ज़बान से निकालता है, तो उसके पास एक फ़रिश्ता इंतज़ार में तैयार बैठा है (जो उसे फ़ौरन लिख लेता है)। (क़ाफ़ : 18)

## नबी ﷺ की हदीसें

﴿1﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مِنْ حُسْنِ إِسْلَامِ الْمَرْءِ تَرْكُهُ مَالَا يَعْنِيْهِ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب، باب حديث من حسن اسلام المرء، رقم: ٢٣١٧

1. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी के इस्लाम की ख़ूबी और कमाल यह है कि वह फ़ुज़ूल कामों और बातों को छोड़ दे। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि ग़ैरज़रूरी बातें न करना और फ़ुज़ूल मशग़लों से बचना कमाले ईमान की निशानी है और आदमी के इस्लाम की रौनक़ व ज़ीनत है।

﴿2﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ يَضْمَنْ لِي مَا بَيْنَ لَحْيَيْهِ وَمَا بَيْنَ رِجْلَيْهِ أَضْمَنْ لَهُ الْجَنَّةَ. رواه البخاري، باب حفظ اللسان، رقم: ٦٤٧٤

2. हज़रत सहल बिन साद ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मुझे अपने दोनों जबड़ों और दोनों टांगों के दर्मियान वाले आज़ा की ज़िम्मेदारी दे दे (कि वह ज़बान और शर्मगाह का ग़लत इस्तेमाल नहीं करेगा) तो मैं उसके लिए जन्नत की ज़िम्मेदारी देता हूं। (बुख़ारी)

﴿3﴾ عَنِ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ: أَخْبِرْنِي بِأَمْرٍ أَعْتَصِمُ بِهِ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَمْلِكْ هٰذَا وَأَشَارَ إِلَى لِسَانِهِ.

رواه الطبراني باسنادين واحدهما جيد، مجمع الزوائد ١٠/٣٠٠

Copyright © O

3. हज़रत हारिस बिन हिशाम ؓ से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से

अर्ज़ किया : मुझे कोई ऐसी चीज़ बता दें जिसे मैं मज़बूती से पकड़े रहूं। आप ﷺ ने अपनी ज़बान मुबारक की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया : उसको अपने क़ाबू में रखो। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद

﴿4﴾ عَنْ اَبِىْ جُحَيْفَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَىُّ الْاَعْمَالِ اَحَبُّ اِلَى اللهِ؟ قَالَ: فَسَكَتُوْا فَلَمْ يُجِبْهُ اَحَدٌ قَالَ: هُوَ حِفْظُ اللِّسَانِ. رواه البيهقى فى شعب الايمان ٤/٢٤٥

4. हज़रत अबू जुहैफ़ा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सहाबा से पूछा : अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे पसन्दीदा अमल कौन-सा है? सब ख़ामोश रहे किसी ने जवाब न दिया, तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सबसे ज़्यादा पसन्दीदा अमल ज़बान की हिफ़ाज़त करना है। (बैहक़ी

﴿5﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يَبْلُغُ الْعَبْدُ حَقِيْقَةَ الْاِيْمَانِ حَتّٰى يَخْزُنَ مِنْ لِسَانِهِ. رواه الطبرانى فى الصغير والاوسط وفيه داؤد بن هلال ذكره ابن ابى حاتم ولم يذكر فيه ضعفا وبقية رجاله رجال الصحيح غير زهير بن عباد وقد وثقه جماعة، مجمع الزوائد ١٠/٥٤٢

5. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा जब तक अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त न कर ले ईमान की हक़ीक़त को हासिल नहीं कर सकता। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿6﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! مَا النَّجَاةُ؟ قَالَ: اَمْلِكْ عَلَيْكَ لِسَانَكَ، وَلْيَسَعْكَ بَيْتُكَ، وَابْكِ عَلٰى خَطِيْئَتِكَ.

رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن، باب ماجاء فى حفظ اللسان، رقم ٢٤٠٦

6. हज़रत उक़्बा बिन आमिर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! नजात हासिल करने का तरीक़ा क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपनी ज़बान को क़ाबू में रखो, अपने घर में रहो (फ़ुज़ूल बाहर न फिरो) और अपने गुनाहों पर रोया करो। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : अपनी ज़बान को क़ाबू में रखने का मतलब यह है कि उसका ग़लत इस्तेमाल न हो मसलन ग़ीबत करना, चुग़ली खाना, बेहूदा बातें करना, बिला ज़रूरत बोलना, बग़ैर एहतियात के हर क़िस्म की बातें करना,

Copyright © O

बेहयाई की बातें करना, लड़ाई झगड़ा करना, गाली देना, इंसान या जानवर पर लानत करना, शे'र व शायरी में हर वक़्त लगे रहना, मज़ाक़ उड़ाना, राज़ ज़ाहिर करना, झूठा वादा करना, झूठी क़सम खाना, दो रंग की बातें करना, बिला वजह किसी की तारीफ़ करना और बिला वजह सवालात करना। (एत्तिहाफ़)

﴿ 7 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ وَقَاهُ اللهُ شَرَّ مَا بَيْنَ لَحْيَيْهِ وَشَرَّ مَا بَيْنَ رِجْلَيْهِ دَخَلَ الْجَنَّةَ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح باب ما جاء في حفظ اللسان رقم: ٢٤٠٩

7. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसको अल्लाह तआला ने उन आज़ा की बुराइयों से बचा लिया, जो दोनों जबड़ों और टांगों के दर्मियान हैं (यानी ज़बान और शर्मगाह) तो वह जन्नत में दाख़िल होगा। (तिर्मिज़ी)

﴿ 8 ﴾ عَنْ أَبِي سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! أَوْصِنِيْ، فَقَالَ (فِيْمَا أَوْصَى بِهِ): وَاخْزُنْ لِسَانَكَ إِلَّا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّكَ بِذٰلِكَ تَغْلِبُ الشَّيْطَانَ. (وهو بعض الحديث) رواه ابو يعلى وفي اسناده ليث بن ابي سليم وهو مدلس،

قال المحقق: الحديث حسن مجمع الزوائد ٤/٣٩٢

8. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह ﷺ के पास आए और अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे वसीयत फ़रमा दीजिए। आप ﷺ ने चन्द वसीयतें फ़रमाईं, जिनमें से एक यह है कि अपनी ज़बान को सिवाए ख़ैर के हर क़िस्म की बात से महफ़ूज़ रखो, इससे तुम शैतान पर क़ाबू पा लोगे। (अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 9 ﴾ عَنْ أَبِي سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ رَفَعَهُ قَالَ: إِذَا أَصْبَحَ ابْنُ آدَمَ فَإِنَّ الْأَعْضَاءَ كُلَّهَا تُكَفِّرُ اللِّسَانَ فَتَقُوْلُ: اتَّقِ اللهَ فِيْنَا فَإِنَّمَا نَحْنُ بِكَ، فَإِنِ اسْتَقَمْتَ اسْتَقَمْنَا، وَإِنِ اعْوَجَجْتَ اعْوَجَجْنَا. رواه الترمذي باب ما جاء في حفظ اللسان رقم: ٢٤٠٧

9. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इंसान जब सुबह करता है तो उसके जिस्म के तमाम आज़ा ज़बान से निहायत आजिज़ी के साथ कहते हैं कि तू हमारे रब के बारे में अल्लाह तआला से

Copyright © O

डर, क्योंकि हमारा मामला तेरे ही साथ (जुड़ा हुआ) है। अगर तू सीधी रहेगी तो हम भी सीधे रहेंगे और अगर तू टेढ़ी हो गई तो हम भी टेढ़े हो जाएंगे (और फिर उसकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी)। (तिर्मिज़ी)

﴿ 10 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْ أَكْثَرِ مَا يُدْخِلُ النَّاسَ الْجَنَّةَ، قَالَ: تَقْوَى اللهِ وَحُسْنُ الْخُلُقِ، وَسُئِلَ عَنْ أَكْثَرِ مَا يُدْخِلُ النَّاسَ النَّارَ، قَالَ: الْفَمُ وَالْفَرْجُ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث صحيح غريب،باب ماجاء في حسن الخلق، رقم: ٢٠٠٤

10. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा गया कि किस अ़मल की वजह से लोग जन्नत में ज़्यादा दाख़िल होंगे? इर्शाद फ़रमाया : तक़्वा (अल्लाह तआ़ला का डर) और अच्छे अख़्लाक़। और आप ﷺ से पूछा गया कि किस अ़मल की वजह से लोग जहन्नम में ज़्यादा जाएंगे? इर्शाद फ़रमाया : मुंह और शर्मगाह (का ग़लत इस्तेमाल)। (तिर्मिज़ी)

﴿ 11 ﴾ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَارَسُولَ اللهِ! عَلِّمْنِي عَمَلًا يُدْخِلُنِي الْجَنَّةَ فَذَكَرَ الْحَدِيثَ فِي أَمْرِهِ إِيَّاهُ بِالْإِعْتَاقِ وَفَكِّ الرَّقَبَةِ وَالْمِنْحَةِ وَغَيْرِ ذٰلِكَ ثُمَّ قَالَ: فَإِنْ لَمْ تُطِقْ ذٰلِكَ فَكُفَّ لِسَانَكَ إِلَّا مِنْ خَيْرٍ.

رواه البيهقي في شعب الايمان ٤/٢٣٩

11. हज़रत बरा बिन आ़ज़िब ﷺ से रिवायत है कि एक देहात के रहने वाले (सहाबी) ने रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे कोई ऐसा अ़मल बता दीजिए जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे? रसूलुल्लाह ﷺ ने चन्द आमाल इर्शाद फ़रमाए, जिसमें ग़ुलाम का आज़ाद करना, क़र्ज़दार को क़र्ज़ के बोझ से आज़ाद कराना और जानवर के दूध से फ़ायदा उठाने के लिए दूसरे को देना था, इसके अलावा दूसरे काम भी बतलाए। फिर इर्शाद फ़रमाया : अगर यह न हो सके तो अपनी ज़बान को भली बात के अलावा बोलने से रोके रखो। (बैहक़ी)

﴿ 12 ﴾ عَنْ أَسْوَدَ بْنِ أَصْرَمَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ: يَارَسُولَ اللهِ أَوْصِنِي، قَالَ: تَمْلِكُ يَدَكَ، قُلْتُ: فَمَاذَا أَمْلِكُ إِذَا لَمْ أَمْلِكْ يَدِي؟ قَالَ: تَمْلِكُ لِسَانَكَ، قُلْتُ: فَمَاذَا أَمْلِكُ إِذَا لَمْ أَمْلِكْ لِسَانِي؟ قَالَ: لَا تَبْسُطْ يَدَكَ إِلَّا إِلَى خَيْرٍ وَلَا تَقُلْ بِلِسَانِكَ إِلَّا مَعْرُوفًا.

Copyright © Ot

رواه الطبراني و اسناده حسن، مجمع الزوائد ١٠/٥٣٨

12. हज़रत अस्वद बिन असरम ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे वसीयत फ़रमा दीजिए! इर्शाद फ़रमाया : अपने हाथ को क़ाबू में रखो (कि इससे किसी को तकलीफ़ न पहुंचे) मैंने अ़र्ज़ किया : अगर मेरा हाथ ही मेरे क़ाबू में न रहे तो फिर और क्या चीज़ क़ाबू में रह सकती है? यानी हाथ तो मेरे क़ाबू में रह सकता है। इर्शाद फ़रमाया : अपनी ज़बान को अपने क़ाबू में रखो। मैंने अ़र्ज़ किया : अगर मेरी ज़बान ही मेरे क़ाबू में न रहे तो फिर और किया चीज़ क़ाबू में रह सकती है यानी ज़बान तो मेरे क़ाबू में रह सकती है। इर्शाद फ़रमाया : तो फिर तुम अपने हाथ को भले काम के लिए ही बढ़ाओ और अपनी ज़बान से भली बात ही कहो। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 13 ﴾ عَنْ اَسْلَمَ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اِطَّلَعَ عَلٰى اَبِيْ بَكْرٍ وَهُوَ يَمُدُّ لِسَانَهُ قَالَ، مَا تَصْنَعُ يَا خَلِيْفَةَ رَسُوْلِ اللهِ؟ قَالَ: اِنَّ هٰذَا الَّذِيْ اَوْرَدَنِي الْمَوَارِدَ، اِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَيْسَ شَيْءٌ مِنَ الْجَسَدِ اِلَّا يَشْكُوْ ذَرَبَ اللِّسَانِ عَلٰى حِدَّتِهٖ.

رواه البيهقى فى شعب الايمان ٤/٤٤٤

13. हज़रत असलम रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर ﷺ की नज़र हज़रत अबूबक्र ﷺ पर प . तो (देखा कि) हज़रत अबूबक्र ﷺ अपनी ज़बान को खींच रहे हैं। हज़रत उमर ﷺ ने पूछा : अल्लाह के रसूल के ख़लीफ़ा! आप यह क्या कर रहे हैं? इर्शाद फ़रमाया : यही ज़बान मुझे हलाकत की जगहों में ले आई है। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया था कि जिस्म का कोई हिस्सा ऐसा नहीं है जो ज़बान की बदगोई और तेज़ी की शिकायत न करता हो। (बैहक़ी)

﴿ 14 ﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ رَجُلًا ذَرِبَ اللِّسَانِ عَلٰى اَهْلِيْ فَقُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ قَدْ خَشِيْتُ اَنْ يُدْخِلَنِيْ لِسَانِي النَّارَ قَالَ: فَاَيْنَ اَنْتَ مِنَ الْاِسْتِغْفَارِ؟ اِنِّيْ لَاَسْتَغْفِرُ اللهَ فِي الْيَوْمِ مِائَةً.

رواه احمد ٥/٣٩٧

14. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ फ़रमाते हैं मेरी ज़बान मेरे घर वालों पर बहुत चलती थी, यानी मैं उनको बहुत बुरा-भला कहता था। मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे डर है कि मेरी ज़बान मुझको जहन्नम में दाख़िल कर देगी। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : फिर इस्तग़फ़ार कहां गया? (यानी इस्तग़फ़ार क्यों नहीं करते, जिससे तुम्हारी ज़बान की इस्लाह हो जाए)। मैं तो दिन में सौ मर्तबा इस्तग़फ़ार करता हूं। (मुस्नद अहमद)

Copyright © Ot

﴾ 15 ﴿ عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَيْمَنُ امْرِئٍ وَاَشْاَمُهُ مَابَيْنَ لَحْيَيْهِ. رواه الطبراني ورجاله رجال الصحيح مجمع الزوائد ١٠/٥٣٨

15. हज़रत अदी बिन हातिम ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी की नेकबख़्ती और बदबख़्ती उसके दोनों जबड़ों के दर्मियान है यानी ज़बान का सही इस्तिमाल नेकबख़्ती और ग़लत इस्तेमाल बदबख़्ती का ज़रिया है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾ 16 ﴿ عَنِ الْحَسَنِ رَحِمَهُ اللهُ يَقُوْلُ: بَلَغَنَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: رَحِمَ اللهُ عَبْدًا تَكَلَّمَ فَغَنِمَ اَوْسَكَتَ فَسَلِمَ. رواه البيهقي في شعب الايمان ٤/٢٤١

16. हज़रत हसन रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि हमें यह हदीस पहुंची है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला उस बन्दे पर रहम फ़रमाएंगे जो अच्छी बात करे और दुनिया व आख़िरत में उसका फ़ायदा उठाए या ख़ामोश रहे और ज़बान की लग़्ज़िशों से बच जाए। (बैहक़ी)

﴾ 17 ﴿ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَمَتَ نَجَا. رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب باب حديث من كان يؤمن بالله ..... رقم: ٢٥٠١

17. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो चुप रहा वह नजात पा गया। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जिस शख़्स ने बुरी और फ़ुज़ूल बातों से ज़बान को रोके रखा, उसे दुनिया और आख़िरत की बहुत सी आफ़तों, मुसीबतों और नुक़सानों से नजात मिल गई, क्योंकि आम तौर पर इंसान जिन आफ़तों में मुब्तला होता है, उनमें से अक्सर का ज़रिया ज़बान ही होती है। (मिरक़ात)

﴾ 18 ﴿ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حِطَّانَ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: لَقِيْتُ اَبَا ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَوَجَدْتُهُ فِي الْمَسْجِدِ مُحْتَبِيًا بِكِسَاءٍ اَسْوَدَ وَحْدَهُ فَقُلْتُ: يَا اَبَاذَرٍّ مَا هٰذِهِ الْوَحْدَةُ؟ فَقَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اَلْوَحْدَةُ خَيْرٌ مِنْ جَلِيْسِ السُّوْءِ وَالْجَلِيْسُ الصَّالِحُ خَيْرٌ مِنَ الْوَحْدَةِ وَاِمْلَاءُ الْخَيْرِ خَيْرٌ مِنَ السُّكُوْتِ وَالسُّكُوْتُ خَيْرٌ مِنْ اِمْلَاءِ الشَّرِّ.

رواه البيهقي في شعب الايمان ٤/٢٥٦

Copyright © Of

18. हज़रत इमरान बिन हत्तान रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत है कि मैं हज़रत

अबूज़र ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने उनको मस्जिद में इस हालत में देखा कि एक काली कमली लपेटे हुए अकेले बैठे हैं। मैंने अर्ज़ किया : अबूज़र! यह तन्हाई और यक्सूई कैसी है, यानी आपने बिल्कुल अकेले और सबसे अलग-थलग रहना क्यों अख़्तियार फ़रमाया है? उन्होंने जवाब दिया कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : बुरे साथी के साथ बैठने से अकेले रहना अच्छा है और अच्छे साथी के साथ बैठना तन्हाई से बेहतर है और किसी को अच्छी बातें बताना ख़ामोशी से बेहतर और बुरी बातें बताने से बेहतर ख़ामोश रहना है। (बैहक़ी)

﴿ 19 ﴾ عَنْ اَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: دَخَلْتُ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ اَوْصِنِيْ، فَذَكَرَ الْحَدِيْثَ بِطُوْلِهٖ اِلٰى اَنْ قَالَ: عَلَيْكَ بِطُوْلِ الصَّمْتِ فَاِنَّهٗ مَطْرَدَةٌ لِلشَّيْطَانِ وَعَوْنٌ لَكَ عَلٰى اَمْرِ دِيْنِكَ، قُلْتُ: زِدْنِيْ، قَالَ: اِيَّاكَ وَ كَثْرَةَ الضَّحِكِ فَاِنَّهٗ يُمِيْتُ الْقَلْبَ وَيَذْهَبُ بِنُوْرِ الْوَجْهِ. (وهو بعض الحديث) رواه البيهقي في شعب الايمان ٤/٢٤٢

19. हज़रत अबूज़र ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे वसीयत फ़रमा दीजिए। आप ﷺ ने फ़रमाया : ज़्यादा वक़्त ख़ामोश रहा करो (कि बिला ज़रूरत कोई बात न हो) यह बात शैतान को दूर करती है और दीन के कामों में मददगार होती है। हज़रत अबूज़र ﷺ फ़रमाते हैं मैंने अर्ज़ किया : मुझे कुछ और वसीयत फ़रमाइए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ज़्यादा हंसने से बचते रहना, क्योंकि यह आदत दिल को मुर्दा कर देती है और चेहरे के नूर को ख़त्म कर देती है। (बैहक़ी)

﴿ 20 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ لَقِيَ اَبَاذَرٍّ فَقَالَ: يَا اَبَا ذَرٍّ! اَلَا اَدُلُّكَ عَلٰى خَصْلَتَيْنِ هُمَا اَخَفُّ عَلَى الظَّهْرِ وَاَثْقَلُ فِي الْمِيْزَانِ مِنْ غَيْرِهِمَا؟ قَالَ: بَلٰى يَا رَسُوْلَ اللهِ، قَالَ: عَلَيْكَ بِحُسْنِ الْخُلُقِ وَطُوْلِ الصَّمْتِ وَالَّذِيْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهٖ مَا عَمِلَ الْخَلَائِقُ بِمِثْلِهِمَا. (الحديث) رواه البيهقي ٤/٢٤٢

20. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ की हज़रत अबूज़र ﷺ से मुलाक़ात हुई। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अबूज़र! क्या मैं तुम्हें दो ऐसी ख़सलतें न बता दूं जिन पर अमल करना बहुत आसान है और आमाल के तराज़ू में दूसरे आमाल की बनिस्बत ज़्यादा भारी हैं? अबूज़र ﷺ ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ज़रूर बतला दीजिए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अच्छे अख़लाक़ और ज़्यादा ख़ामोश रहने की आदत बना लो। क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद

Copyright © Ot

की जान है, तमाम मख़्लूक़ात के आमाल में उन दो अमलों जैसे अच्छे कोई अमल नहीं। (बैहक़ी)

﴾ 21 ﴿ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! أَكُلُّ مَا نَتَكَلَّمُ بِهِ يُكْتَبُ عَلَيْنَا؟ فَقَالَ: ثَكِلَتْكَ أُمُّكَ، وَهَلْ يَكُبُّ النَّاسَ عَلٰى مَنَاخِرِهِمْ فِي النَّارِ إِلَّا حَصَائِدُ أَلْسِنَتِهِمْ، إِنَّكَ لَنْ تَزَالَ سَالِمًا مَا سَكَتَّ فَإِذَا تَكَلَّمْتَ كُتِبَ لَكَ أَوْ عَلَيْكَ. قلت: رواه الترمذي باختصار من قوله: إِنَّكَ لَنْ تَزَالَ إلى آخره

رواه الطبراني باسنادين ورجال احدهما ثقات، مجمع الزوائد ١٠/٥٣٨

21. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा : जो बात भी हम करते हैं क्या ये सब हमारे आमालनामे में लिखी जाती हैं (और क्या उन पर भी पकड़ होगी)? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुझको तेरी मां रोए! (अच्छी तरह जान लो कि) लोगों को नाक के बल दोज़ख़ में गिराने वाली उनकी ज़बान ही की बुरी बातें होंगी और जब तक तुम ख़ामोश रहोगे (ज़बान की आफ़त से) बचे रहोगे और जब कोई बात करोगे तो तुम्हारे लिए अज्र या गुनाह लिखा जाएगा। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

**फ़ायदा** : तुझको तेरी मां रोए अरबी मुहावरे के मुताबिक़ यह प्यार का कलिमा है, बददुआ नहीं है।

﴾ 22 ﴿ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: أَكْثَرُ خَطَايَا ابْنِ آدَمَ فِيْ لِسَانِهِ. (وهو طرف من الحديث)

رواه الطبراني ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/٥٣٨

22. हज़रत अब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : इंसान की अक्सर ग़लतियां उसकी ज़बान से होती हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾ 23 ﴿ عَنْ أَمَةٍ بِنْتِ أَبِي الْحَكَمِ الْغِفَارِيَّةِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ الرَّجُلَ لَيَدْنُوْ مِنَ الْجَنَّةِ حَتّٰى مَا يَكُوْنُ بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا قِيْدُ ذِرَاعٍ فَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ فَيَتَبَاعَدُ مِنْهَا أَبْعَدَ مِنْ صَنْعَاءَ. رواه احمد ورجاله رجال الصحيح غير محمد بن اسحاق وقد

... الزوائد ١٠/٥٤٣

Copyright © O

23. हज़रत अबुलहकम की साहबज़ादी की बांदी रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि

मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : एक शख़्स जन्नत के इतने क़रीब हो जाता है कि उसके और जन्नत के दर्मियान एक हाथ का फ़ासला रह जाता है, फिर कोई ऐसा बोल बोल देता है जिसकी वजह से जन्नत से उससे भी ज़्यादा दूर हो जाता है जितना मदीना से (यमन का शहर) सनआ़ दूर है।

(मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 24 ﴾ عَنْ بِلَالِ بْنِ الْحَارِثِ الْمُزَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ صَاحِبِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ اَحَدَكُمْ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مِنْ رِضْوَانِ اللهِ مَا يَظُنُّ اَنْ تَبْلُغَ مَا بَلَغَتْ فَيَكْتُبُ اللهُ لَهُ بِهَا رِضْوَانَهُ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَاهُ، وَاِنَّ اَحَدَكُمْ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مِنْ سَخَطِ اللهِ مَا يَظُنُّ اَنْ تَبْلُغَ مَا بَلَغَتْ فَيَكْتُبُ اللهُ عَلَيْهِ بِهَا سَخَطَهُ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَاهُ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ما جاء في قلة الكلام، رقم: ٢٣١٩

24. हज़रत बिलाल बिन हारिस मुज़नी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : तुममें से कोई शख़्स अल्लाह तआ़ला को ख़ुश करने वाली ऐसी बात कह देता है जिसको वह बहुत ज़्यादा अहम नहीं समझता, लेकिन इस बात की वजह से अल्लाह तआ़ला क़ियामत तक के लिए उससे राज़ी होने का फ़ैसला फ़रमा देते हैं और तुम में से कोई शख़्स अल्लाह तआ़ला को नाराज़ करने वाली ऐसी बात कह देता है, जिसको वह बहुत ज़्यादा अहम नहीं समझता, लेकिन इस बात की वजह से अल्लाह तआ़ला क़ियामत तक के लिए उससे नाराज़ होने का फ़ैसला फ़रमा देते हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿ 25 ﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَرْفَعُهُ قَالَ: اِنَّ الرَّجُلَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ لَا يُرِيْدُ بِهَا بَأْسًا اِلَّا لِيُضْحِكَ بِهَا الْقَوْمَ فَاِنَّهُ لَيَقَعُ مِنْهَا اَبْعَدَ مِنَ السَّمَاءِ. رواه احمد ٣/٣٨

25. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी सिर्फ़ लोगों को हँसाने के लिए कोई ऐसी बात कह देता है जिसमें कोई हर्ज नहीं समझता, लेकिन इसकी वजह से जहन्नम में ज़मीन आसमान के दर्मियानी फ़ैसले से भी ज़्यादा गहराई में पहुंच जाता है। (मुस्नद अहमद)

﴿ 26 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ الْعَبْدَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مِنْ رِضْوَانِ اللهِ لَا يُلْقِيْ لَهَا بَالًا يَرْفَعُ اللهُ بِهَا دَرَجَاتٍ، وَاِنَّ الْعَبْدَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مِنْ سَخَطِ اللهِ لَا يُلْقِيْ لَهَا بَالًا يَهْوِيْ بِهَا فِيْ جَهَنَّمَ. رواه البخاري باب حفظ اللسان، رقم: ٦٤٧٨

Copyright © Ot

26. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा अल्लाह तआला की रज़ामंदी की कोई ऐसी बात कह देता है जिस को वह अहम भी नहीं समझता लेकिन उसकी वजह से अल्लाह तआला उसके दर्जात बुलन्द फ़रमा देते हैं और बन्दा अल्लाह तआला की नाराज़गी की कोई ऐसी बात कह देता है जिस की वह परवाह भी नहीं करता लेकिन उसकी वजह से जहन्नम में गिर जाता है। (बुख़ारी)

﴿ 27 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ الْعَبْدَ لَیَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مَا یَتَبَیَّنُ مَا فِیْهَا یَهْوِیْ بِهَا فِی النَّارِ اَبْعَدَ مَابَیْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ.

رواہ مسلم،باب حفظ اللسان، رقم: ۷٤۸۲

27. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा कभी बे-सोचे-समझे कोई ऐसी बात कह देता है जिसकी वजह से मशरिक़ व मग़रिब के दर्मियानी फ़ासले से भी ज़्यादा दोज़ख़ में गिर जाता है। (मुस्लिम)

﴿ 28 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ الرَّجُلَ لَیَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ لَا یَرٰی بِهَا بَاْسًا یَهْوِیْ بِهَا سَبْعِیْنَ خَرِیْفًا فِی النَّارِ.

رواہ الترمذی وقال: ھذا حدیث حسن غریب،باب ماجاء من تکلم بالکلمة ...، رقم: ۲۳۱٤

28. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इंसान कोई बात कह देता है और उसके कहने में कोई हर्ज नहीं समझता, लेकिन इसकी वजह से जहन्नम में सत्तर साल की मुसाफ़त के बराबर (नीचे) गिर जाता है। (तिर्मिज़ी)

﴿ 29 ﴾ عَنْ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ یَقُوْلُ: لَقَدْ اُمِرْتُ اَنْ اَتَجَوَّزَ فِی الْقَوْلِ فَاِنَّ الْجَوَازَ هُوَ خَیْرٌ.

(رواہ ابوداؤد، باب ماجاء فی التشدق فی الکلام، رقم: ۵۰۰۸)

29. हज़रत अम्र बिन आस ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मुझे मुख़्तसर बात करने का हुक्म दिया गया है, क्यों मुख़्तसर बात करना ही बेहतर है। (अबूदाऊद)

﴿ 30 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ مَنْ كَانَ یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ فَلْیَقُلْ خَیْرًا اَوْلِیَصْمُتْ. (الحدیث) رواہ البخاری،باب حفظ اللسان، رقم ٦٤٧٥

Copyright © O

30. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो अल्लाह तआला पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, उसको चाहिए कि ख़ैर की बात कहे या ख़ामोश रहे। (बुख़ारी)

﴿ 31 ﴾ عَنْ أُمِّ حَبِيْبَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: كَلَامُ ابْنِ آدَمَ عَلَيْهِ لَا لَهُ إِلَّا أَمْرٌ بِمَعْرُوْفٍ، أَوْ نَهْيٌ عَنْ مُنْكَرٍ أَوْ ذِكْرُ اللّٰهِ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب منه حديث كل كلام ابن آدم عليه لا له، الجامع الصحيح لسنن الترمذي، رقم: ٢٤١٢

31. रसूलुल्लाह ﷺ की ज़ौजा मुहतर्मा हज़रत उम्मे हबीबा ﷺ फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नेकी का हुक्म करने या बुराई से रोकने या अल्लाह तआला का ज़िक्र करने के अलावा इंसान की तमाम बातें उस पर वबाल हैं यानी पकड़ का ज़रिया हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿ 32 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَا تُكْثِرِ الْكَلَامَ بِغَيْرِ ذِكْرِ اللّٰهِ، فَإِنَّ كَثْرَةَ الْكَلَامِ بِغَيْرِ ذِكْرِ اللّٰهِ قَسْوَةٌ لِلْقَلْبِ، وَإِنَّ أَبْعَدَ النَّاسِ مِنَ اللّٰهِ الْقَلْبُ الْقَاسِيْ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب منه النهي عن كثرة الكلام الا بذكر الله، رقم: ٢٤١١

32. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के ज़िक्र के अलावा ज़्यादा बातें न करो, क्योंकि इससे दिल में सख़्ती (और बेहिसी) पैदा होती है और लोगों में अल्लाह तआला से ज़्यादा दूर वह आदमी है जिसका दिल सख़्त हो। (तिर्मिज़ी)

﴿ 33 ﴾ عَنِ الْمُغِيْرَةِ بْنِ شُعْبَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ اللّٰهَ كَرِهَ لَكُمْ ثَلَاثًا: قِيْلَ وَقَالَ، وَإِضَاعَةَ الْمَالِ، وَكَثْرَةَ السُّؤَالِ. رواه البخاري، باب قول الله عزوجل لا يسألون الناس الحافا، رقم: ١٤٧٧

33. हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए तीन चीज़ों को नापसन्द फ़रमाया है। एक (बेफ़ायदा) इधर उधर की बातें करना, दूसरे माल को ज़ाया करना, तीसरे ज़्यादा सवालात करना। (बुख़ारी)

﴿ 34 ﴾ عَنْ عَمَّارٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ كَانَ لَهُ وَجْهَانِ فِي الدُّنْيَا، كَانَ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لِسَانَانِ مِنْ نَارٍ. رواه ابو داؤد، باب في ذي الوجهين، رقم: ٤٨٧٣

Copyright © O

34. हज़रत अम्मार ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दुनिया में जिस शख़्स के दो रुख़ हों (यानी मुनाफ़िक़ की तरह मुख़्तलिफ़ लोगों से मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बातें करे) तो क़ियामत के दिन उसके मुंह में आग की दो ज़बानें होंगी। (अबूदाऊद)

﴿ 35 ﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: يَارَسُوْلَ اللهِ مُرْنِيْ بِعَمَلٍ يُدْخِلُنِي الْجَنَّةَ قَالَ: آمِنْ بِاللهِ وَقُلْ خَيْرًا، يُكْتَبُ لَكَ وَلَا تَقُلْ شَرًّا فَيُكْتَبُ عَلَيْكَ.

رواه الطبراني في الاوسط، مجمع الزوائد ١٠/٥٣٩

35. हज़रत मुआज़ ﷺ ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे ऐसा अमल बता दीजिए जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला पर ईमान लाओ और भली बात कहो, तुम्हारे लिए अज्र लिखा जाएगा और बुरी बात न कहो, तुम्हारे लिए गुनाह लिखा जाएगा। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 36 ﴾ عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ حَيْدَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: وَيْلٌ لِلَّذِيْ يُحَدِّثُ بِالْحَدِيْثِ لِيُضْحِكَ بِهِ الْقَوْمَ فَيَكْذِبُ، وَيْلٌ لَهُ وَيْلٌ لَهُ. رواه الترمذي وقال:

هذا حديث حسن، باب ما جاء من تكلم بالكلمة ليضحك الناس، رقم: ٢٣١٥

36. हज़रत मुआविया बिन हीदा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : उस शख़्स के लिए बरबादी है जो लोगों को हँसाने के लिए झूठ बोले। उसके लिए तबाही है, उसके लिए तबाही है। (तिर्मिज़ी)

﴿ 37 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِذَا كَذَبَ الْعَبْدُ تَبَاعَدَ عَنْهُ الْمَلَكُ مِيْلًا مِنْ نَتْنِ مَا جَاءَ بِهِ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن جيد غريب، باب ما جاء في الصدق والكذب، رقم: ١٩٧٢

37. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब बन्दा झूठ बोलता है तो फ़रिश्ता उसके झूठ की बदबू की वजह से एक मील दूर चला जाता है। (तिर्मिज़ी)

﴿ 38 ﴾ عَنْ سُفْيَانَ بْنِ أَسِيْدٍ الْحَضْرَمِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: كَبُرَتْ خِيَانَةً أَنْ تُحَدِّثَ أَخَاكَ حَدِيْثًا هُوَ لَكَ بِهِ مُصَدِّقٌ وَأَنْتَ لَهُ بِهِ كَاذِبٌ.

رواه ابو داؤد، باب في التعاريض، رقم: ٤٩٧١

Copyright © Ot

38. हज़रत सुफ़ियान बिन असीद हज़रमी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ

को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : यह बहुत बड़ी ख़्यानत है कि तुम अपने भाई से कोई झूठी बात ब्यान करो, हालांकि वह तुम्हारी इस बात को सच्चा समझता हो। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि झूठ अगरचे बहुत संगीन गुनाह है लेकिन बाज़ सूरतों में उसकी संगीनी और भी ज़्यादा बढ़ जाती है। उनमें से एक सूरत यह भी है कि एक शख़्स तुम पर पूरा एतमाद करे और तुम उसके एतमाद से नाजायज़ फ़ायदा उठाकर उससे झूठ बोलो और उसको धोखा दो।

﴿ 39 ﴾ عَنْ اَبِىْ اُمَامَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: يُطْبَعُ الْمُؤْمِنُ عَلَى الْخِلَالِ كُلِّهَا اِلَّا الْخِيَانَةَ وَالْكَذِبَ۔ رواه احمد ٥/٢٥٢

39. हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन में पैदाइशी तौर पर सारी ख़स्लतें हो सकती हैं (ख़्वाह अच्छी हों या बुरी) अलबत्ता ख़यानत और झूठ की (बुरी) आदत नहीं हो सकती। (मुस्नद अहमद)

﴿ 40 ﴾ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَيْمٍ رَحِمَهُ اللّٰهُ اَنَّهُ قَالَ: قِيْلَ لِرَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ اَيَكُوْنُ الْمُؤْمِنُ جَبَانًا؟ فَقَالَ: نَعَمْ، فَقِيْلَ لَهُ اَيَكُوْنُ الْمُؤْمِنُ بَخِيْلًا؟ فَقَالَ: نَعَمْ، فَقِيْلَ لَهُ اَيَكُوْنُ الْمُؤْمِنُ كَذَّابًا؟ قَالَ: لَا۔ رواه الامام مالك في الموطا، ما جاء في الصدق والكذب ص ٧٣٢

40. हज़रत सफ़्वान बिन सुलैम रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा गया : क्या मोमिन बुज़दिल हो सकता है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हो सकता है। फिर पूछा गया : क्या बख़ील हो सकता है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हो सकता है। पूछा गया : क्या झूठा हो सकता है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : झूठा नहीं हो सकता। (मुअत्ता)

﴿ 41 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: تَقَبَّلُوْا لِيْ بِسِتٍّ، اَتَقَبَّلْ لَكُمْ بِالْجَنَّةِ قَالُوْا: مَا هِيَ؟ قَالَ: اِذَا حَدَّثَ اَحَدُكُمْ فَلَا يَكْذِبْ، وَاِذَا وَعَدَ فَلَا يُخْلِفْ، وَاِذَا اؤْتُمِنَ فَلَا يَخُنْ، وَغُضُّوْا اَبْصَارَكُمْ وَكُفُّوْا اَيْدِيَكُمْ، وَاحْفَظُوْا فُرُوْجَكُمْ۔

رواه ابو يعلى ورجاله رجال الصحيح الا ان يزيد بن سنان لم يسمع من انس وفي الحاشية: رواه ابو يعلى وفيه سعيد ابو سعد بن سنان وليس فيه يزيد بن سنان وهو حسن الحديث، مجمع الزوائد ١٠/٥٤١

41. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम लोग अपने बारे में मुझे छ : चीज़ों की ज़मानत दे दो, मैं तुम्हारे लिए जन्नत की ज़िम्मेदारी लेता हूं, 1. जब तुम में से कोई बोले तो झूठ न बोले, 2. जब

Copyright © O

वादा करे तो वादाख़िलाफ़ी न करे, 3. जब किसी के पास अमानत रखी जाए, तो ख़यानत न करे, 4. अपनी निगाहों को नीचे रखो, यानी जिन चीज़ों को देखने से मना फ़रमाया गया है उन पर नज़र न पड़े, 5. अपने हाथों को (नाहक़ मारने वग़ैरह से) रोके रखो, 6. अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करो। (अबू'याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 42 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ الصِّدْقَ يَهْدِیْ إِلَى الْبِرِّ، وَإِنَّ الْبِرَّ يَهْدِیْ إِلَى الْجَنَّةِ، وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَصْدُقُ حَتّٰى يُكْتَبَ عِنْدَ اللهِ صِدِّيْقًا، وَإِنَّ الْكَذِبَ يَهْدِیْ إِلَى الْفُجُوْرِ، وَإِنَّ الْفُجُوْرَ يَهْدِیْ إِلَى النَّارِ، وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَكْذِبُ حَتّٰى يُكْتَبَ عِنْدَ اللهِ كَذَّابًا. رواه مسلم باب قبح الكذب ... رقم: ٦٦٣٧

42. हज़रत अब्दुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बिलाशुब्हा सच बोलना नेकी के रास्ते पर डाल देता है और नेकी जन्नत तक पहुंचा देती है। आदमी सच बोलता रहता है, यहां तक कि उसे अल्लाह तआला के यहां सिद्दीक़ (बहुत सच्चा) लिख दिया जाता है। बिलाशुब्हा झूठ बुराई के रास्ते पर डाल देता है और बुराई उसको दोज़ख़ तक पहुंचा देती है। आदमी झूठ बोलता रहता है यहां तक कि अल्लाह तआला के यहां उसे कज़्ज़ाब (बहुत झूठा) लिख दिया जाता है। (मुस्लिम)

﴿ 43 ﴾ عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: كَفٰى بِالْمَرْءِ كَذِبًا أَنْ يُحَدِّثَ بِكُلِّ مَا سَمِعَ. رواه مسلم باب النهى عن الحديث بكل ما سمع، رقم: ٧

43. हज़रत हफ़्स बिन आसिम ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी के झूठा होने के लिए यही काफ़ी है कि वह जो कुछ सुने, उसे (बग़ैर तह्क़ीक़) के ब्यान करे। (मुस्लिम)

फ़ायदा : मतलब यह है कि किसी सुनी-सुनाई बात को बग़ैर तहक़ीक़ के ब्यान करना भी एक दर्जे का झूठ है जिसकी वजह से लोगों का उस आदमी पर से एतमाद उठ जाता है।

﴿ 44 ﴾ عَنْ أَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: كَفٰى بِالْمَرْءِ إِثْمًا أَنْ يُحَدِّثَ بِكُلِّ مَا سَمِعَ. رواه ابو داؤد، باب التشديد فى الكذب، رقم: ٤٩٩٢

44. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी के गुनहगार होने के लिए यही काफ़ी है कि वह हर सुनी सुनाई बात को बग़ैर तहक़ीक़ के ब्यान करे। (अबूदाऊद)

Copyright © O

﴿ 45 ﴾ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ اَبِيْ بَكْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اَثْنٰى رَجُلٌ عَلٰى رَجُلٍ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: وَيْلَكَ قَطَعْتَ عُنُقَ اَخِيْكَ. ثَلَاثًا. مَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَادِحًا لَا مَحَالَةَ فَلْيَقُلْ: اَحْسِبُ فُلَانًا وَاللهُ حَسِيْبُهُ، وَلَا اُزَكِّيْ عَلَى اللهِ اَحَدًا، اِنْ كَانَ يَعْلَمُ.

رواه البخاري، باب ماجاء في قول الرجل ويلك، رقم: ٦١٦٢

45. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बकरः ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ के सामने एक शख़्स ने दूसरे आदमी की तारीफ़ की (और जिसकी तारीफ़ की जा रही थी वह भी वहां मौजूद था) रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अफ़सोस है तुम पर, तुमने तो अपने भाई की गरदन तोड़ दी। आप ﷺ ने यह बात तीन मर्तबा इर्शाद फ़रमाई (फिर फ़रमाया कि) अगर तुम में से कोई शख़्स किसी की तारीफ़ करना ही ज़रूरी समझे और उसको यक़ीन भी हो कि वह अच्छा आदमी है, फिर भी यूं कहे कि फ़्लां आदमी को मैं अच्छा समझता हूं, अल्लाह तआला ही उसका हिसाब लेने वाले हैं (और वही उसको हक़ीक़त में जानने वाले हैं कि अच्छा है या बुरा) मैं तो अल्लाह तआला के सामने किसी की तारीफ़ यक़ीन के साथ नहीं करता। (बुख़ारी)

﴿ 46 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: كُلُّ اُمَّتِيْ مُعَافًى اِلَّا الْمُجَاهِرِيْنَ، وَاِنَّ مِنَ الْمُجَاهَرَةِ اَنْ يَعْمَلَ الرَّجُلُ بِاللَّيْلِ عَمَلًا، ثُمَّ يُصْبِحَ وَقَدْ سَتَرَهُ اللهُ فَيَقُوْلَ: يَا فُلَانُ عَمِلْتُ الْبَارِحَةَ كَذَا وَكَذَا، وَقَدْ بَاتَ يَسْتُرُهُ رَبُّهُ وَيُصْبِحُ يَكْشِفُ سِتْرَ اللهِ عَنْهُ.

رواه البخاري، باب ستر المؤمن على نفسه، رقم: ٦٠٦٩

46. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मेरी सारी उम्मत माफ़ी के क़ाबिल है, सिवाए उन लोगों के जो खुल्लम खुल्ला गुनाह करने वाले होंगे और खुल्लम खुल्ला गुनाह करने में यह भी शामिल है कि आदमी रात में कोई बुरा काम करे और फिर सुबह को बावजूद इस बात के कि अल्लाह तआला ने उसके गुनाह पर पर्दा डाल दिया (उसे लोगों पर ज़ाहिर न होने दिया) वह कहे फ़्लाने! मैंने गुज़श्ता रात फ़्लां-फ़्लां (ग़लत) काम किया था। हालांकि उसने रात इस तरह गुज़ारी थी कि उसके रब ने उसकी पर्दापोशी कर दी थी और यह सुबह को वह पर्दा हटा रहा है जो (रात) अल्लाह तआला ने उस पर डाल दिया था। (बुख़ारी)

﴿ 47 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِذَا قَالَ الرَّجُلُ: هَلَكَ النَّاسُ فَهُوَ اَهْلَكُهُمْ.

Copyright © O

رواه مسلم، باب النهي عن قول هلك الناس، رقم: ٦٦٨٣

47. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर कोई शख़्स यह कहे कि लोग तबाह हो गए, वह शख़्स उनमें सबसे ज़्यादा तबाह होने वाला है (क्योंकि यह कहने वाला दूसरों को हक़ीर समझने की वजह से तकब्बुर के गुनाह में मुब्तला है)। (मुस्लिम)

﴿ 48 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: تُوُفِّيَ رَجُلٌ مِنْ اَصْحَابِهِ فَقَالَ يَعْنِيْ رَجُلًا: اَبْشِرْ بِالْجَنَّةِ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَوَلَا تَدْرِيْ، فَلَعَلَّهُ تَكَلَّمَ فِيْمَا لَا يَعْنِيْهِ اَوْ بَخِلَ بِمَا لَا يَنْقُصُهُ. رواه الترمذي وقال: هذاحديث غريب، باب حديث من حسن اسلام المرء.....رقم: ٢٣١٦

48. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि सहाबा में से एक शख़्स का इंतक़ाल हो गया तो एक दूसरे शख़्स ने (मरहूम को मुख़ातब करके) कहा, तुम्हें जन्नत की बशारत हो। आप ﷺ ने उस शख़्स से इर्शाद फ़रमाया : यह बात तुम किस तरह कह रहे हो जबकि हक़ीक़ते हाल का तुम्हें इल्म नहीं है। हो सकता है कि इस शख़्स ने कोई ऐसी बात कही हो, जो बेफ़ायदा हो या किसी ऐसी चीज़ में बुख़्ल किया हो जो दिए जाने के बावजूद कम नहीं होती (मसलन इल्म का सीखना या कोई चीज़ आरयतन देना या अल्लाह तआला की मरज़ीयात में माल का ख़र्च करना कि ये चीज़ें इल्म और माल को कम नहीं करतीं।) (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि किसी के जन्नती होने का हुक्म लगाने की जुर्अत नहीं करनी चाहिए अलबत्ता आमाले सालिहा की वजह से उम्मीद रखनी चाहिए।

﴿ 49 ﴾ عَنْ حَسَّانَ بْنِ عَطِيَّةَ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: كَانَ شَدَّادُ بْنُ اَوْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فِيْ سَفَرٍ فَنَزَلَ مَنْزِلًا فَقَالَ لِغُلَامِهِ: ائْتِنَا بِالسُّفْرَةِ نَعْبَثْ بِهَا، فَاَنْكَرْتُ عَلَيْهِ، فَقَالَ: مَا تَكَلَّمْتُ بِكَلِمَةٍ مُنْذُ اَسْلَمْتُ اِلَّا وَاَنَا اُخْطِمُهَا وَاَزُمُّهَا غَيْرَ كَلِمَتِيْ هٰذِهِ فَلَا تَحْفَظُوْهَا عَلَيَّ وَاحْفَظُوْا مَا اَقُوْلُ لَكُمْ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِذَا كَنَزَ النَّاسُ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ فَاكْنِزُوْا هٰؤُلَاءِ الْكَلِمَاتِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ الثَّبَاتَ فِي الْاَمْرِ، وَالْعَزِيْمَةَ عَلَى الرُّشْدِ، وَاَسْئَلُكَ شُكْرَ نِعْمَتِكَ، وَاَسْئَلُكَ حُسْنَ عِبَادَتِكَ، وَاَسْئَلُكَ قَلْبًا سَلِيْمًا، وَاَسْئَلُكَ لِسَانًا صَادِقًا، وَاَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا تَعْلَمُ، وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا تَعْلَمُ، وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا تَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ. رواه احمد ٤/١٢٣

Copyright © O

49. हज़रत हस्सान बिन अतीया रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि हज़रत शद्दाद बिन औस ﷺ एक सफ़र में थे। एक जगह पर पड़ाव डाला और अपने गुलाम से कहा : दस्तरख़्वान लाओ, ताकि कुछ शग़ल रहे। (हज़रत हस्सान फ़रमाते हैं) मेरे लिए उनकी यह बात अजीब थी, फिर उन्होंने इर्शाद फ़रमाया : मैं जब से मुसलमान हुआ हूं जो बात भी मैंने कही, हमेशा सोच-समझ कर ही कही (बस आज चूक हो गई) इस बात को याद न रखना, बल्कि अब जो मैं तुमसे कहूंगा उसे याद रखना। मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : लोग जब सोने और चांदी के ख़ज़ाने जमा करने लग जाएं तो तुम इन कलिमों को ख़ज़ाना बना लेना यानी इन्हें कसरत से पढ़ते रहना : तर्जुमा : या अल्लाह! मैं आपसे हर काम में साबित क़दमी और रुश्द व हिदायत पर पुख़्तगी मांगता हूं और आपकी नेमतों का शुक्र अदा करने की तौफ़ीक़ मांगता हूं और आपकी अच्छी तरह इबादत करने की तौफ़ीक़ मांगता हूं और आपसे (कुफ़ व शिर्क से) पाक दिल का सवाल करता हूं और आपसे सच्ची ज़बान का सवाल करता हूं और आपके इल्म में जितनी ख़ैर है उसे मांगता हूं और आपके इल्म में जितने शर हैं, उनसे पनाह मांगता हूं और मेरे जितने गुनाहों को आप जानते हैं, मैं आपसे उन तमाम गुनाहों की मग़फ़िरत चाहता हूं। बेशक आप ही ग़ैब की तमाम बातों को जानने वाले हैं। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

Copyright © O

| | | |
|---|---|---|
| रमज़ान किस तरह गुज़ारें | मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी | 8/- |
| शबे बरात की हक़ीक़त | मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी | 6/- |
| क़ुरआन करीम की दौलत की क़द्र व अज़मत | मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी | 10/- |
| नबी करीम सल्ल० की सीरत और हमारी ज़िन्दगी | मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी | 6/- |
| बारिशे रहमत (मजमूआ नातिया कलाम) | इरशाद अहमद | 8/- |
| तोहफ़तुन निकाह यानी निकाह का तोहफ़ा | मौलाना मुहम्मद इब्राहीम पालनपुरी | 12/- |
| मेरी नमाज़ बा तस्वीर | इरशाद अहमद | 6/- |
| मीलादे अकबर (असली और बड़ी) | ख़्वाजा मुहम्मद अकबर वारसी | 35/- |
| क़ब्र की एक रात | मौलाना आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी | 15/- |
| टी.वी और अज़ाबे क़ब्र | मौलाना अब्दुर्रऊफ़ सखरवी | 8/- |
| मेरी नमाज़ | मौलाना इदरीस अंसारी | 21/- |
| रसूलुल्लाह सल्ल० की सुन्नतें | मौलाना हकीम अख़्तर साहब | 10/- |
| मुसलमान बीवी | मौलाना इदरीस अंसारी | 15/- |
| दिल की बीमारियाँ और रूहानी तबीब की ज़रूरत | मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी | 6/- |
| मुसलमान बच्चों के दिलकश इस्लामी नाम | मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी | 20/- |
| नूर नामा (कलिमा नामा, इस्माइल नामा, अहद नामा) | मुहम्मद नसीम अहमद | 10/- |
| मियां बीवी के हुक़ूक़ | मौलाना मुफ़्ती अब्दुल ग़नी | 10/- |
| पंज सूरह (कलां, मुतर्जिम) | | 30/- |
| आसान नमाज़ | मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी | 12/- |
| आसान सच्ची नमाज़ मअ़ नियत नामा | मौलाना अबुल कलाम अहसनुल क़ादरी | 10/- |
| छः गुनाहगार औरतें | मौलाना अब्दुर्रऊफ़ सखरवी | 9/- |
| मौत को याद रखें मअ़ मुराक़बा मौत | मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी | 6/- |

Copyright © O